ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा बरकतें

इफ़्तिख़ार अहमद अयाज़

ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा उसके लाभ

लेखक

डा० इफ़्तिख़ार अहमद अयाज़

नाम किताब	:	ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा उसके लाभ
Name of Book	:	KHILAFAT KA MAHATTAV TATHA USKE LAABH
लेखक	:	डा. इफ़्तिख़ार अहमद अयाज़
WRITTEN BY	:	Dr. IFTEKHAR AHMAD AYAZ
अनुवादक	:	आसमा तय्यबा, क़ादियान
Translated by	:	AASMA TAYYABA
संख्या	:	1000
Quantity	:	1000
संस्करण	:	प्रथम (हिन्दी)
Edition	:	First (Hindi)
वर्ष	:	नवम्बर 2022 ई.
Year	:	November 2022

विषय सूचि	3
संदेश हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़	17
धन्यवाद ज्ञापन	27
प्रस्तावना **ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया**	29
प्रथम अध्याय **ख़िलाफ़त की परिभाषा**	34
ख़िलाफ़त का शाब्दिक अर्थ	35
नबी और ख़लीफ़ा का चयन	39
ख़िलाफ़त नबुव्वत की परिशिष्ट है	41
ख़िलाफ़त की प्रणाली और सांसारिक प्रणालियों में अन्तर	42
ख़िलाफ़ते राशिदा और उसकी विशेषताएं	44
क्या ख़िलाफ़त के साथ हुकूमत अनिवार्य है?	47
ख़िलाफ़त के ईनाम की विशेषताएं तथा महानताएं	49
आयत इस्तिख़लाफ के बिन्दु	50
शाने नज़ूल	51
द्वितीय अध्याय **हबलुल्लाह (अर्थात ख़िलाफ़ते राशिदा) का प्रादुर्भाव**	54
ख़िलाफ़ते राशिदा का प्रताप	56
प्रथम ख़लीफ़ा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह अन्हो	57
सक़ीफ़ा बनू सईदः और बैअत ख़िलाफ़त	58
ख़िलाफ़त की बैअत	58

हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह अन्हु का ख़ुत्बा	60
दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि अल्लाह अन्हो	62
हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि अल्लाह अन्हु का हुलिया	62
ख़ुदाई वादे का दोबारा पूरा होना	63
उमर फ़ारूक़ के न्याय के गुणगान	65
तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाह अन्हो	69
आपका हुलिया	69
ख़िलाफ़त का चयन	70
चौथे ख़लीफ़ा हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हो	75
ख़िलाफ़त का चुनाव	76
ख़िलाफ़त-ए-राशिदा की विशेषताएं	78
ख़िलाफ़त का चुनाव	78
बादशाहत नहीं ख़िलाफ़त	80
मुशावरती निज़ाम	81
बैतुल माल के अमानत होने का ख़्याल	81
तृतीय अध्याय **इमाम महदी अलैहिस्सलाम का प्रकटन और उनका स्थान**	85
मसीह और महदी	87
हाकिम, कासिरे सलीब	88
मुअल्लिम-ए-क़ुर्आन	88
मसीह मौऊद के नाम में मस्लहत (युक्ति)	89
मसीह मौऊद इस ज़माना में ख़ुदा का मामूर	89
मसीले मसीह (मसीह का समरूप)	90
समय का मुजद्दिद	91
जरी उल्लाह फी हुललिल अंबिया (ख़ुदा का पहलवान नबियों के लिबास में)	92

इमामुज़्ज़मान	94
ख़लीफ़तुल्लाह (अल्लाह का ख़लीफ़ा)	94
फ़रिश्तों का उतरना और सफलता की ख़ुशख़बरी	95
अन्तिम नूर	95
अल्लाह के उपकार	95
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का ज़िल्ली (प्रतिरूपी) नबुव्वत का दावा और उसकी वास्तविकता	98
ثم تكون خلافة على منهاج النبوة नबुव्वत के पद्धति पर ख़िलाफ़त की व्यवस्था	102
ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया ख़ुदाई ख़ुशख़बरियों और भविष्यवाणियों के आलोक में	113
उम्मते मुस्लिमा की ख़िलाफ़त से महरूमी व ख़िलाफ़त की स्थापना हेतु मुस्लिम जगत की पुकार	118
ख़लीफ़ा, इस्लाम की ज़रूरत और उसका महत्व	120
ख़िलाफ़त की स्थापना के लिए पाकिस्तान के मुसलमानों को दावत	125
चतुर्थ अध्याय जमाअत अहमदिया में क़ुदरत-ए-सानिया का प्रादुर्भाव	**129**
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि	129
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि से इक़रार	136
हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि की समानता	138
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि के दौर-ए-ख़िलाफ़त में जमाअत की उन्नतियाँ	141
जमाअत की इमारतें	145
मस्जिद अक़्सा का विस्तार	145
मस्जिद नूर	146
बोर्डिंग तालीमुल इस्लाम हाई स्कूल	146

तालीमुल इस्लाम हाई स्कूल	147
मदर्सा अहमदिया की स्थापना	147
हज़रत मौलाना अब्दुल वाहिद साहिब आफ़ ब्रह्मन बढ़िया, बंगाल की बैअत	148
बैतुल माल (कोषागार) की स्थापना	149
यूरोप में जमाअत अहमदिया का पहला मिशन हाऊस	149
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि का देहान्त और ख़िलाफ़त -ए-सानिया की स्थापना	155
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि अल्लाह अन्हु का देहान्त	156
पांचवां अध्याय ख़िलाफ़त सानिया का क़याम	**158**
हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद अलमुस्लेह मौऊद ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि० का बाबरकत दौर-ए-ख़िलाफ़त	163
आप रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में महान ख़ुशख़बरियाँ	163
होनहार बिरवा के चिकने चिकने पात	168
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि के बारे में समय से पूर्व ख़ुशख़बरियां	172
महमूद का रुहानी चेहरा अन्धकार को दूर करने वाला है	173
रो'या	173
महमूद की हिफ़ाज़त के लिए पाँच फ़रिश्ते हर वक़्त उनके साथ रहते हैं	174
दुआ की क़ुबूलियत के रूप में ख़िलाफ़त सानिया की बरकतों का नुज़ूल	177
हज़ूर की दुआ का चमत्कारपूर्ण प्रभाव	180
اَيۡنَ مَا تَكُوۡنُوۡا يَاۡتِ بِكُمُ اللّٰهُ جَمِيۡعًا	181
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि और धार्मिक स्वाभिमान (ग़ैरत)	188
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि के बारे में एक ख़ुशख़बरी	189
मर्कज़-ए-अहमदियत रब्वा का शिलान्यास सय्यदना मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हु का एक महान कारनामा	191
रब्वह एक पवित्र स्थान है	197
हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि और अलमुबश्शरात	198

अमरीका में अहमदिया मिशन के क़ियाम की ज़बरदस्त भविष्यवाणी	199
कम्यूनिज़म की तबाही के बारे में भविष्यवाणी	200
नई रूसी नसल में बग़ावत की आश्चर्यजनक भविष्यवाणी	201
इस्लाम की विश्वव्यापी हुकूमत की स्थापना की भविष्यवाणी	202
स्पेन में इस्लाम का पर्चम (झण्डा) लहराने की भविष्यवाणी	203
इंग्लिस्तान की सुरक्षा के प्रबन्ध के बारे में एक महान रो'या	203
मलकाना की शुद्धि तहरीक और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि	204
जलसा सीरतुन्नबी का आरम्भ और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि की कोशिशें	211
छठा अध्याय क़ुदरत-ए-सानिया के तीसरे मज़हर का ज़हूर	**221**
हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हु की बीमारी	221
ख़िलाफ़त-ए-सानिया का आख़िरी जुम्अ:और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि का आपको जुम्अ: पढ़ाने का आदेश	222
हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि का देहान्त और आपकी अवस्था	223
ख़िलाफ़त-ए-सालिसा के मुबारक दौर का आरम्भ	224
मुबारक दौर	226
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह की आकाशीय उपाधि "सादिक़"	228
जीवन चरित्र सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह	230
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह और रब्बानी भविष्यवाणियां	231
'हक़ औलाद दर औलाद' की व्याख्या	238
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस की क़बूलीयत-ए-दुआ के निशान	238
सातवां अध्याय क़ुदरत सानिया के चौथे मज़हर का ज़हूर	**247**
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे के समर्थन में आकाशीय गवाही	249

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह का जीवन चरित्र	252
आरम्भिक जीवन	252
ख़िलाफ़त का युग	253
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहिमहुल्लाह और क़ुरआन के ज्ञान	255
पवित्र क़ुरआन से मुहब्बत	255
पवित्र क़ुरआन के अनुवाद	259
आप के द्वारा की गए क़ुरआन के अनुवाद की प्रमुख विशेषताएं	259
MTA (मुस्लिम टेलीविज़न अहमदिया) इंटरनेशनल ख़िलाफ़त राबिया के दौर की एक महान नेअमत	260
हुज़ूर के रिकार्ड किए गए प्रोग्राम	262
नए देशों में अहमदियत का आरम्भ	263
विभिन्न देशों में नई जमाअतों का आरम्भ	263
विश्वव्यापी बैअत के आयोजन	264
वे देश जिन में आप ने ख़लीफ़ा के रूप में दौरा किया	264
मस्जिदों का निर्माण	265
तब्लीग़ के लिए अहमदिया केन्द्रों की स्थापना	265
ख़िलाफ़त राबिया में निर्मित होने वाली कुछ नई इमारतें	266
मज्लिस नुसरत जहां के अधीन स्कूल्ज़	268
मज्लिस नुसरत जहां के अधीन हस्पताल	268
हुज़ूर के कुछ प्रमुख लैक्चरज़	268
आप की प्रसिद्ध पुस्तकें	269
इन्क़िलाब पैदा करने वाली तहरीकें	270
मुबाहला	275
एक महान दौर का समापन	276
ख़लीफ़तुल मसीह (रह) की क़बूलीयत-ए-दुआ की घटनाएं	277
क़बूलीयत-ए-दुआ के चमत्कार	279
सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे के रो'या तथा कश्फ़	284

ख़लीफ़ा बनने के बाद पहला कश्फ़	285
फ्रायडे दि टेंथ	287
सहायता का वादा	287
तबाह करने वाला और दर्दनाक	289
भुट्टो की फांसी	289
अफ़ग़ानिस्तान पर रूसी क़ब्ज़ा	289
क़दीर के एक नए अर्थ	291
आर्थिक सहायता की ख़ुशख़बरी	292
ख़ुदा से सम्बन्ध बढ़ाओ	292
नई मंज़िलों की फ़तह	294
फ्रैंच स्पीकिंग देशों में जमाअत की तरक़्क़ी	295
इबादत को क़ायम करो	296
शोला उतरता दिखाई दिया	297
विश्वव्यापी बैअत का नक़्शा	298
'अस्सलामु अलैकुम' का तोहफ़ा	298
नई सदी का निशान	300
अलैसल्लाहो बेकाफिन अब्दहु	301
नूरुद्दीन बना दिया	301
हुज़ूर नूरुल आलमीन	302
निर्दोषों की रिहाई	303
मिठाई के डब्बे	303
आकाश की सैर	304
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह की जीवनी के कुछ दिलकश पहलू	**305**
मासूम बचपन	305
हमदर्द और दयालु बाप	306
इबादत में रुचि (नमाज़ और तहज्जुद)	307

हज़रत मुहम्मद (स.अ.व) से मुहब्बत	310
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मुहब्बत	311
ख़िलाफ़त का आज्ञापालन	311
मानवता की सेवा	313
बच्चों से स्नेह	316
दूसरों पर उपकार	316
ज्ञान का समुद्र	317
सादगी तथा विनम्रता	319
मेहनत की आदत	321
अल्लाह तआला के मार्ग में क़ैद होने वालों के साथ स्नेह	323
एक ऐतिहासिक भाषण	328
दो स्वर्णिम उपदेश	329
हर ख़लीफ़ा का अपना अलग रंग है	329
नए मुसलमानों की सुरक्षा	330
दूसरों की श्रद्धांजलि	331
आठवाँ अध्याय **क़ुदरत-ए-सानिया के पांचवें द्योतक**	**339**
पवित्र जीवनी और आपके बारे में इल्हाम	340
हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के बारे में इल्हाम	343
ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा के बारे में ख़िलाफ़त के चयन से पहले देखी जाने वाली मुबारक ख़्वाबें	348
ख़िलाफ़त ख़ामसा का मुबारक युग	360
हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी पर आरोप और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह खामिस(अय) द्वारा खण्डन	367
11 फरवरी 2005 ई	371
18 फरवरी 2005 ई	371
25 फरवरी 2005 ई	372

4 मार्च 2005 ई	372
11 मार्च 2005 ई	372
18 मार्च 2005 ई	373
25 मार्च 2005 ई	373
1 अप्रैल 2005 ई	373
8 अप्रैल 2005 ई	373
15 अप्रैल 2005 ई	374
22 अप्रैल 2005 ई	374
15 जुलाई 2005 ई	374
22 जुलाई 2005 ई	375
12 अगस्त 2005 ई	375
19 अगस्त 2005 ई	375
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की मुबारक तहरीकें	**376**
1. जमाअत अहमदिया यू.के और MTA के काम करने वालों के लिए दुआ की तहरीक	377
2. दुआ की तहरीक	377
3. ताहिर फाऊंडेशन की स्थापना की घोषणा	378
4. नुसरत जहां स्कीम के अधीन अहमदी डाक्टरों को वक़्फ़-ए- ज़िन्दगी की तहरीक	378
5. मानवता की सेवा की तहरीक	379
6. इंटरनैट का ग़लत प्रयोग एक सामाजिक बुराई बन कर सामने आ रहा है	380
7. बुरी रस्में छोड़ने की तहरीक	380
8. सिगरेट पीना छोड़ने की तहरीक	381
9. लाटरी हराम है	381
10. जादू-टोने, टोटके से बचने की तहरीक	382

11. निज़ाम-ए-जमाअत की पाबंदी की तहरीक	383
12. दुआ की तहरीक	384
13. सच्चाई का उच्च स्तर स्थापित करने की तहरीक	384
14. शादी विवाह के अवसर पर सादगी और अल्लाह की रज़ा को सम्मुख रखने की नसीहत	385
15 जमाअत की इमारतों के माहौल को साफ़ रखने का बाक़ायदा प्रबन्ध हो	386
16. शादी ब्याह में फ़ुज़ूल खर्ची की मनाही	386
17 अफ़्रीका के प्यासे लोगों को पीने का पानी उपलब्ध हो	387
18. हर अहमदी दावत इलल्लाह के लिए साल में कम से कम दो सप्ताह वक़्फ़ करे	390
19. ज़कात का महत्व और उस की अदायगी की ओर ध्यान दें	391
20. ख़िलाफ़त के साथ सम्पर्क	392
21. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों से लाभ उठाएं	393
22. इज्तिमाओं और जलसों से भरपूर लाभ की नसीहत	394
23. वाक़िफ़ीन-ए-नौ भाषाएं सीखें	394
24. अपनी और अपनी नस्लों की ज़िन्दगियों को पवित्र करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़ पर लब्बैक (हम उपस्थित हैं) कहते हुए वसीयत के आसमानी निज़ाम में शामिल हों	394
25. Humanity First की ओर ध्यान दें।	395
26. बच्चों को अस्सलामो अलैकुम कहने की आदत डालनी चाहिए	396
27. क़ुरआन करीम की तिलावत और अनुवाद पढ़ने की नसीहत	397
28. रिश्ता नाता की समस्याओं के हल की ओर ध्यान दें	398
29. यह वादा करें कि अगर ख़ुदा तआला तौफ़ीक़ दे तो ख़िलाफ़त -ए-ख़ामसा के इस दौर में हम जर्मनी के हर शहर में मस्जिद बनाएंगे	398
30. अहमदियत का पैग़ाम दुनिया के किनारों तक पंहुचाएं	399
31. तहरीक-ए-जदीद के दफ़्तर 5 का आरम्भ	400
32. तहरीक-ए-जदीद दफ़्तर 1 के खातों को ज़िन्दा करने की तहरीक	401

33. मस्जिद हारटले पोल और ब्रैडफोर्ड के लिए चन्दा की तहरीक	402
34. स्पेन में Valencia के स्थान पर एक दूसरी मस्जिद बनाने की महान तहरीक	403
35. आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर आरोपों के जवाब देने के लिए टीमें तैयार करें	406
36. लज्ना इमा इल्लाह, ख़ुद्दामुल अहमदिया और अन्सारुल्लाह के विभागों को मानव सेवा तथा मरीज़ों की इयादत के प्रोग्राम बनाने की नसीहत	407
37. मरियम शादी फ़ंड की ओर ध्यान दें	407
38. ताहिर हार्ट इंस्टीटियूट के लिए माली क़ुर्बानी की तहरीक	408
39. सौ वर्षीय ख़िलाफ़त जुबली का रुहानी प्रोग्राम	410
40. सौ वर्षीय ख़िलाफ़त जुबली 2008 ई और मानवजाति के अधिकारों की अदायगी	411
41. झूठे अंहकारों की समाप्ति के लिए हर अहमदी जिहाद करे	411
42. जमाअत अहमदिया नार्वे को मस्जिद के निर्माण के सिलसिले में बढ़-चढ़ कर माली क़ुर्बानियां करने की ज़ोरदार तहरीक	412
43. चन्दा तहरीक-ए-जदीद और मस्दिजों के निर्माण की ओर ध्यान देने की तहरीक	413
44. लाखों की संख्या में वक़्फ़-ए-नौ चाहिए	414
45. ज़ैली तंज़ीमें अपनी ज़िम्मेदारियां अदा करें	414
46 कर्ज़ों की अदायगी उत्तम ढंग से करें	415
47. शादी ब्याह के आयोजनों के अवसर पर बेहूदा रस्मों, व्यर्थ, फ़ुज़ूल गाने से बचने की नसीहत	415
48. M.T.A से लाभ उठाएं। ज़ैली तंज़ीमें निगरानी करें।	416
49 लज्ना इमा इल्लाह तर्बीयत के निज़ाम को सक्रिय बनाए	416
50. नौ मुबाइयीन को माली निज़ाम का हिस्सा बनाएँ।	417
51. आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपकारों से दुनिया को अवगत कराएं और बहुत अधिक दुरूद शरीफ़ पढ़ें	417

52. जर्नलिज़्म पढ़ने की ओर ध्यान दें	418
53. माली क़ुर्बानियों के जिहाद में हिस्सा लेने की नसीहत	418
54. चन्दा की हर तहरीक में हिस्सा लेने की कोशिश करें	419
55. डाक्टरों को ताहिर हार्ट इंस्टीटियूट में हिस्सा लेने की तहरीक	419
56. हर अहमदी को जमाअत का सक्रिय अंग बनाएँ	419
57. रिश्ता नाता के प्रबंध को सक्रिय होना चाहिए	420
58. बच्चों को नमाज़ बाजमाअत का आदी बनाएँ	420
59 अंहकार के बुत तोड़ने की तहरीक	421
60. मुरब्बी तथा उहदेदार किसी एक की तरफदारी न करें	421
61. मेहमानों से एक जैसा सुलूक करें	421
62. ईद के अवसर पर पड़ोसियों में तोहफ़ा के द्वारा जमाअती परिचय की तहरीक	422
63. मज्लिस सुल्तानुल क़लम को सक्रिय करने की तहरीक	422
64. जमाअतें वक़्फ़ आरिज़ी की ओर ध्यान करें	423
65. पश्चिमी देशों में रिटायरमैंट के बाद वक़्फ़	423
66. बेकारी की आदत ख़त्म करने की तहरीक	424
67. घरेलू झगड़े ख़त्म करने की तहरीक	425
68. समय के ख़लीफ़ा की सम्बोधित पूरी जमाअत होती है	426
69. मानव सेवा के विभाग को सक्रिय बनाने की तहरीक	426
70. तब्लीग़ के लिए लिट्रेचर और सम्पर्क के अन्य नवीन माध्मय धारण करने की तहरीक	427
71. जमाअत का एक-एक पैसा मक़सद के अधीन ख़र्च होना चाहिए	428
72. हॉलैंड में मस्जिदों के निर्माण की तहरीक	429
73. पाकिस्तान तथा हिन्दुस्तान के बाहर के बच्चे वक़्फ़-ए-जदीद का सारा बोझ उठाएं	429
74. सहाबा की औलादें क़ुर्बानियों के आदर्श स्थापित करें	430
75. अरब वालों को हक़ (अहमदियत) के क़बूल करने की दावत	430
76. रब्वाह वालों को उत्तम आदर्श बनने की तहरीक	431

77. योग्य ओहदेदार चुनें	431
78. ईसाई पादरियों और बुरे उलमाओं के उपद्रव से सुरक्षित रहने के लिए दुआ की तहरीक	432
79. रिश्तेदारों के हुक़ूक़ अदा करने की ओर ध्यान करें।	433
80. रिश्तेदारों से सद्व्यवहार की तहरीक	434
81. यतीमों की ख़बर लेने के लिए फ़ंड में दिल खोल कर हिस्सा लेने की तहरीक	434
82. मरियम शादी फ़ंड में हिस्सा लेने के लिए याददिहानी	435
83. ग़ैरज़रूरी ख़र्चों और कर्ज़ों से बचने की तहरीक	435
84. अहमदी सलामती के पैग़ाम को दुनिया में फैलाएं	436
85. अहमदी वकीलों को असाइलम वालों से कम फ़ीस लेने और किसी की मजबूरी का नाजायज़ लाभ न उठाने की तहरीक	437
86. कज़ा के फ़ैसलों के अनुपालन की तहरीक	437
87. ग़रीबों की इज़्ज़त का ख़्याल रखें	438
88. मानव सेवा की तहरीक	439
89. कम से कम 70 प्रतिशत नौमुबाईन को तजनीद में शामिल करने की तहरीक	439
90. इस्लाम की सुन्दर शिक्षा दूसरों तक पहुंचाएं	440
91. निज़ाम-ए-जमाअत के आज्ञापालन की भावना पहले से बढ़कर अपने दिलों में पैदा करें	440
92. ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की नई सदी के लिए दुआओं की तहरीक की याददहानी	441
93. देग साफ़ करने वाली मशीन बनाने की तहरीक	442
94. ख़िलाफ़त जुबली जलसा की तैयारी की तहरीक	442
95. यतीमों (अनाथों) की देखभाल की तहरीक	442
96. तहरीक-ए-जदीद और वक़्फ़-ए-जदीद में नौमुबाईन को ख़ास तौर पर शामिल करें	444
97. किसी के ज़ुल्म का बदला ज़ुल्म से नहीं लेना	444

98. क़लम के द्वारा जिहाद की तहरीक	444
99. अधिक से अधिक बच्चों को वक़्फ़-ए-जदीद में शामिल करने की तहरीक	444
100. जमाअत और ज़ैली तंज़ीमें ऐसे प्रोग्राम बनाएँ जिन से हमारी क़ुर्बानियों के स्तर बुलन्द हों	445
101. भीतरी और बाहरी सफाई की तहरीक	446
102. नमाज़ बाजमाअत की स्थापना की ओर विशेष ध्यान देने की तहरीक	446
103. ख़िलाफ़त से सम्बन्धित पुस्तकों की परीक्षा लेने की मुबारक तहरीक	447
नौंवा अध्याय **अन्तिम शब्द**	**453**
हमारी ज़िम्मेदारियाँ (हमारा दायित्व)	456
ख़ुदा का शुक्र	457
आज्ञापालन और वफादारी	457
समय के ख़लीफ़ा से व्यक्तिगत सम्बन्ध	458
समय के ख़लीफ़ा के उपदेशों को सुनना	460
हर तहरीक पर शौक से लब्बैक कहना	462
औलाद को नसीहत	463
लेखक परिचय	469

संदेश
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़

(सौ वर्षीय ख़िलाफत जोबली 1908 ई -2008 ई)

मेरी जमाअत के प्यारे लोगो !

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहू

आज ख़िलाफ़ते अहमदिया के सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह दिन हमें सौ वर्ष से अधिक अवधि में फैले हुए अहमदिया जमाअत के इतिहास और उस समय का भी स्मरण कराता है जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार मार्च 1889 ई. में अल्लाह तआला के एक प्यारे ने अल्लाह तआला से आदेश पाकर एक पवित्र जमाअत की स्थापना की घोषणा की थी। आपका मिशन और इस जमाअत की स्थापना का उद्देश्य ख़ुदा और बन्दे में सम्बन्ध स्थापित करना, मानव जाति को एक ख़ुदा के सम्मुख नतमस्तक होने की शिक्षा देना और उसके लिए प्रयत्न करना, संसार की जातियों को एक समुदाय बनाकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झण्डे तले एकत्रित करना, मानव को मानव के अधिकारों के प्रदान करने की ओर ध्यान दिलाना था। वह व्यक्ति जिसको ख़ुदा तआला ने युग के इमाम और मसीह व महदी की उपाधि से विभूषित कर के भेजा था। जमाअत की स्थापना और बैअत के प्रारम्भ 1889 ई. से 1908 ई. तक प्राय: उन्नीस वर्ष अल्लाह तआला के विशेष समर्थन व सहयोग से अपने मिशन को सभी प्रकार के विरोधों और प्रतिकूल परिस्थितिओं के बावजूद इस तीव्रता से लेकर आगे बढ़ा कि प्रत्येक विरोधी जो भी इस अल्लाह के पहलवान के मुक़ाबला पर आया तिरस्कार तथा अपमान का मुह देखने वाला बना। अन्तत: अल्लाह तआला के विधान के अनुसार कि प्रत्येक व्यक्ति जो इस नश्वर संसार में आया उसने अन्त में इस संसार को छोड़ना है और वह

व्यक्ति जो अल्लाह का विशेष भक्त और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सच्चा आशिक़ था, वह तो अपने आक़ा की सुन्नत के अनुसरण में सर्वोत्तम मित्र (अल्लाह) से मिलने के लिए हर समय बेचैन रहता था। अल्लाह तआला ने अपने उस बन्दे को जिसे अन्तिम युग का इमाम बनाकर भेजा था, वापसी का संकेत देते हुए यह सान्त्वना दी कि यद्यपि तेरा समय अब निकट है परन्तु चूँकि तुझे मैंने अपनी घोषणा के अनुसार अन्तिम युग का इमाम बनाया है, इसलिए हे मेरे प्यारे ! हे वह व्यक्ति जो ऐकेश्वरवाद की स्थापना और मेरे प्रिय नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेशों को सम्पूर्ण संसार में स्थापित करने के लिए व्याकुल रहता है तू यह चिन्ता न कर कि तेरी मृत्यु के उपरान्त तेरे इस कार्य की पूर्णता चरम सीमा किस प्रकार प्राप्त होगी। तू स्मरण रख कि मेरे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार जिसे मेरा समर्थन प्राप्त है अब नबुव्वत की परम्परा पर आधारित ख़िलाफ़त कयामत तक स्थापित होनी है, इसलिए तेरे पश्चात् यही ख़िलाफ़त की व्यवस्था है जिसके माध्यम से मैं समस्त संसार में अपनी अन्तिम शरीअत को स्थापित करने और उसे दृढ़ता प्रदान करने की व्यवस्था जारी करूँगा अत: अल्लाह तआला की आपको इस सान्त्वना देने के पश्चात् आप अलैहिस्सलाम ने जमाअत को सम्बोधित करते हुए कहा :-

''यह ख़ुदा तआला का विधान है तथा जब से कि उसने मानव को धरती पर पैदा किया सदैव इस विधान को वह जारी करता रहा है कि वह अपने नबियों तथा रसूलों की सहायता करता है तथा उनको विजय प्रदान करता है जैसा कि वह करता है كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ (सूरह: अल् मुजादिला : 22) अर्थात अल्लाह ने लिख छोड़ा है कि मैं और मेरे रसूल अवश्य विजयी होंगे। और विजय से अभिप्राय यह है कि जैसा कि रसूलों और नबियों की यह इच्छा होती है कि ख़ुदा की सत्यता धरती पर सिद्ध हो जाये तथा उसका मुक़ाबला कोई न कर सके इसी प्रकार ख़ुदा तआला सुदृढ़ निशानों के साथ उनकी सच्चाई प्रकट कर देता है और जिस सच्चाई को वे दुनिया में फैलाना चाहते हैं उसका बीजारोपण उन्हीं के हाथ से कर देता है परन्तु उसकी सम्पूर्णता उनके हाथ से नहीं करता बल्कि ऐसे समय में उनको मौत देकर जो

सामान्यत: एक असफलता का भय अपने साथ रखती है, विरोधियों को हँसी और ठठ्ठे और व्यंग और अपशब्द कहने का अवसर देता है और जब वह हँसी ठट्ठा कर चुकते हैं तो पुन: एक दूसरा हाथ अपनी शक्ति का दिखाता है तथा ऐसे साधन उत्पन्न कर देता है जिनके द्वारा वे उद्देश्य जो कुछ मात्रा में अधूरे रह गए थे अपनी सम्पूर्णता को पहुँचते हैं। अत: दो प्रकार की क़ुदरत (शक्ति) प्रकट करता है :

(1) प्रथम स्वयं नबियों के हाथ से अपनी क़ुदरत का हाथ दिखाता है। (2) दूसरे ऐसे समय में जब नबी के देहांत के पश्चात कठिनाइयों का सामना पैदा हो जाता है और शत्रु सशक्त हो जाते हैं और धारणा करते हैं कि अब काम बिगड़ गया और विश्वास कर लेते हैं कि अब यह जमाअत लुप्त हो जायेगी और स्वयं जमाअत के लोग भी चिन्ता में पड़ जाते हैं और उनकी कमर टूट जाती है तथा कई अभागी धर्म त्याग का मार्ग अपना लेते हैं तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी शक्तिशाली क़ुदरत प्रकट करता है और गिरती हुई जमाअत को संभाल लेता है। अत: वह जो अंत तक धैर्य धारण करता है ख़ुदा तआला के उस चमत्कार को देखता है जैसा कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ (रज़ि) के समय में हुआ जब कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु एक असमय मृत्यु समझी गई तथा बहुत से देहाती नासमझ धर्मत्यागी हो गए और सहाबा भी दु:ख के कारण दीवानों की तरह हो गए तब ख़ुदा तआला ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक(रज़ि) को खड़ा करके पुन: अपनी क़ुदरत का उदाहरण दिखाया और इस्लाम को मिटते-मिटते थाम लिया और उस वचन को पूरा किया जो कहा था कि-

وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ (सूरह नूर आयत- 56)

अर्थात् भय की स्थिति के बाद फिर हम उनके पैर जमा देंगे।

(पुस्तक अल-वसिय्यत रूहानी ख़ज़ाइन भाग 20, पृष्ठ 304-305)

फिर आगे वर्णन किया ''अत: ! हे प्रियजनो ! जब कि प्राचीन से अल्लाह का विधान यही है कि वह दो क़ुदरतें दिखाता है ताकि विरोधियों की दो झूठी ख़ुशियों को मिलियामेट करके दिखाए। अत: अब सम्भव नहीं है कि ख़ुदा तआला अपने प्राचीन

विधान को त्याग दे। इसलिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे सम्मुख वर्णन की दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएँ क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना आवश्यक है और उस का आना तुम्हारे लिए उत्तम है क्योंकि वह चिरस्थायी है जिस का सिलसिला प्रलय तक विच्छिन्न नहीं होगा और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ। परन्तु मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदा तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का बराहीन अहमदिया में वचन है और वह वचन मेरे सम्बन्ध में नहीं है बल्कि तुम्हारे सम्बन्ध में है जैसा कि ख़ुदा करता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरे अनुयायी हैं क़यामत तक दूसरों पर विजय प्रदान करूँगा अत: अवश्यक है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आवे ताकि इसके पश्चात वह दिन आवे जो स्थायी प्रतिश्रुति का दिन है वह हमारा ख़ुदा वादों का सच्चा और विश्वसनीय और सत्यवादी ख़ुदा है वह सब कुछ तुम्हें दिखलाऐगा जिस का उसने वादा किया है यद्यपि यह दिन संसार के अन्तिम दिन हैं और बहुत विपत्तियाँ हैं जिन के उतरने का समय है पर अवश्यक है कि यह दुनिया कायम रहे जब तक वे सारी बातें पूरी न हो जाएँ जिनकी ख़ुदा ने ख़बर दी। मैं ख़ुदा की ओर से एक क़ुदरत के रूप में प्रकट हुआ तथा मैं ख़ुदा की एक साक्षात् क़ुदरत स्वरूप हूँ और मेरे बाद कुछ और व्यक्तित्व होंगे जो दूसरी क़ुदरत के प्रकट करने वाले होंगे। अत: तुम ख़ुदा की दूसरी क़ुदरत की प्रतीक्षा में एकत्रित हो कर दुआ करते रहो।" (पुस्तक अल् वसियत रूहानी ख़ज़ाईन भाग 20, पृष्ठ 305-306)

अत: जैसा कि आपने वर्णन किया था वह समय भी आ गया जब आप अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के समक्ष उपस्थित हो गए और प्रत्येक अहमदी का दिल भय और शोक से भर गया परन्तु मोमिनों की दुआओं से इस्लाम की प्रथम उज्जवल अवधि की याद ताज़ा करते हुए पृथ्वी और आकाश ने पुन: एक बार وَ لَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا (अर्थात् और उनकी भय की अवस्था को अवश्य हम शान्ति में परिवर्तित कर देंगे) का दृश्य देखा। वह महान क्रान्ति जो आपने अपने आगमन के साथ उत्पन्न की थी उसे अल्लाह तआला

ने ख़िलाफ़त की महान व्यवस्था के द्वारा जारी रखा। आपके देहान्त पर वकील समाचार पत्र में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने इस प्रकार लिखा :-

''वह व्यक्ति, बहुत महान् व्यक्ति जिसका कलम चमत्कार था और ज़ुबान जादू। वह व्यक्ति जो बौधिक चमत्कारों का रूप स्वरूप था। जिसकी दृष्टि गम्भीर और आवाज़ क्रान्तिकारी थी। जिसकी उंगलियों से क्रान्ति के तार उलझे हुए थे और जिसकी दो मुट्ठियाँ बिजली की दो बेटरियाँ थीं। वह व्यक्ति जो धार्मिक जगत के लिए तीस वर्ष तक भूकम्प और तूफान रहा। जो प्रलय का कोलाहल होकर रातों के निद्राग्रस्तों को जगाता रहा।... मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी की मृत्यु इस योग्य नहीं कि उस से शिक्षा प्राप्त न की जाए और मिटाने के लिए उसे काल चक्र को सौंप कर धैर्य धारण कर लिया जाए। ऐसे लोग जिनसे धार्मिक या बौद्धिक जगत में क्रान्ति उत्पन्न हो सदा संसार में नहीं आते। ऐसे पुरुष जिन पर इतिहास गर्व करे बहुत कम संसार में दिखाई देते हैं और जब आते हैं संसार में क्रान्ति उतपन्न करके दिखा जाते हैं। (अख़बार वकील अमृतसर, तारीख़ अहमदियत भाग 2, पृ. 560)

अत: इस क्रान्ति का हक़दार दूसरों की ज़ुबान और क़लम से स्वीकार करवा कर अल्लाह तआला ने यह बता दिया कि उस व्यक्ति को अल्लाह तआला का विशेष समर्थन प्राप्त था परन्तु दूसरों की दृष्टि इस ओर न गई कि वह (अल्लाह से) समर्थन प्राप्त (व्यक्ति) जिस क्रान्ति को उत्पन्न कर गया है उस क्रान्ति को आपके अनुयायीयों के द्वारा ख़िलाफ़त की नेअमत के द्वारा जारी रखने का भी उस आश्चर्य युक्त और सर्वशक्तिमान सत्ता का वचन है और उसको सच्चा प्रमाणित होते हुए एक दुनिया ने हज़रत मौलाना नूरूद्दीन ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम(रज़ि) के ख़िलाफ़त के निर्वाचन के समय देखा। बावजूद इसके कि विरोधी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की स्थापित एक सुव्यवस्थित जमाअत को देख रहे थे बावजूद इसके कि वे ख़िलाफ़त की स्थापना का दृश्य देख चुके थे परन्तु उन्होंने जमाअत को, उस जमाअत को जो ख़ुदा तआला के हाथ से स्थापित जमाअत थी एक व्यवस्थित प्रयास के द्वारा तोड़ने की कोशिश की जिसके सम्बन्ध में अल्लाह तआला का वचन था:

اُذْکُرْ نِعْمَتِی غَرَسْتُ لَکَ بِیَدِی رَحْمَتِی وَ قُدْرَتِی

''उज़्कुर निअ्मती ग़रस्तु लक बियदी रहमती व क़ुद्रती।" (अर्थात् मेरी निअमत को याद कर मैने तेरे लिए अपने हाथ से अपनी कृपा और अपनी क़ुदरत का वृक्ष लगा दिया है। (तज़किरा पृ. 428)

अत: उक्त वचनानुसार वे सदा की भाँति असफल हुए। यद्यपि यहाँ तक विरोद्ध की तीव्रता में बढ़े कि एक समाचार पत्र ने लिखा :-

''हम से कोई पूछे तो हम ख़ुदा लगती कहने को तैयार हैं कि मुसलमानों से हो सके तो मिर्ज़ा की सम्पूर्ण किताबें सागर में नही किसी जलते हुए तनूर (भट्टी) में झोंक दें। इसी पर बस नहीं अपितु भविष्य में कोई मुस्लिम अथवा ग़ैर मुस्लिम इतिहासकार भारत का इतिहास अथवा इस्लाम के इतिहास में उनका नाम तक न ले।"

(अख़बार वकील अमृतसर 13 जून 1908 ई. तारीख़ अहमदियत, भाग 3 पृष्ठ 205-206)

परन्तु आज अहमदियत का इतिहास साक्षी है। संसार जानता है कि उनका नाम लेने वाला तो कोई नहीं परन्तु ख़िलाफ़त की बरकत से अहमदियत संसार में फूल फल रही है और करोड़ों इसके नाम लेवा हैं।

अपनी अशिष्ट बातों में यहाँ तक बढ़े कि एक अख़बार ''कर्ज़न गज़ट" ने लिखा जिसे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम(रज़ि) ने अपने पहले जलसा के भाषण में वर्णन किया कि :-

''अब मिर्ज़ाईयों में क्या रह गया है। उनका सिर कट चुका है। एक व्यक्ति जो उनका इमाम बना है उससे तो कुछ होगा नहीं हाँ यह है कि तुम्हें किसी मस्जिद में क़ुरआन सुनाया करे।" (तारीख़ अहमदिय्यत भाग 3, पृ. 221)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम(रज़ि) ने कहा सुब्हानल्लाह ! यही तो काम है। ख़ुदा शक्ति प्रदान करे। दुर्भाग्यवश जमाअत के कुछ विशेष व्यक्ति भी ख़िलाफ़त के दर्जा को न समझे। षडयन्त्र होते रहे परन्तु ख़ुदा के हाथ का लगाया हुआ पौधा बढ़ता रहा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ ख़ुदा तआला के वादा के अनुसार प्रियजनों की जमाअत बढ़ती रही और कोई हानि पहुँचाने का प्रयास सार्थक न हुआ।

फिर द्वित्तीय ख़िलाफ़त का दौर आया तो अन्जुमन के कुछ प्रमुख सदस्य स्पष्ट रूप में विरोद्ध में खड़े हो गए परन्तु वे सभी प्रमुख लोग अपने ख़याल में ज्ञान से भरे हुए, अनुभवी, पढ़े लिखे उस पच्चीस साला युवक के सामने ठहर न सके और उसने जमाअत के संगठन, प्रचार, प्रशिक्षण, ज्ञान व कुरआन की समझ में वह दर्जा प्राप्त किया कि कोई उसके सामने ठहर न सका। जमाअत पर संकट और विरोध के बड़े ज़माने आये परन्तु ख़िलाफ़त की बरकत से जमाअत उनमें से सफलता के साथ गुज़रती चली गई। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह द्वित्तीय के बावन वर्ष के ख़िलाफ़त काल के हालात पढ़ें तो ज्ञात हो कि उस अल्लाह के पहलवान के पुत्र ने क्या-क्या महान कार्य किए।

अहमदिया जगत में हज़रत मुस्लेह मौऊद की मृत्यु के पश्चात् पुन: एक बार भय का वातावरण छाया परन्तु अल्लाह तआला ने अपने वचनानुसार उसे कुछ ही घण्टों में शान्ति में परिवर्तित कर द्वित्तीय क़ुदरत के तृतीय द्योतक का उज्वल चन्द्रमा जमाअत को प्रदान किया। सरकारों के टकराने के उपरान्त, अत्याचारपूर्ण विधान के लागू करने के पश्चात्, सम्पूर्ण मुसलमान गुटों के सुव्यवस्थित प्रयास के बावजूद यह समुदाय उन्नति के सोपान पार करता चला गया। प्रेम व सद्भावना के नारे लगाता हुआ, दीन-हीन जातियों के दरिद्र नागरिकों की सेवा करते हुए, उन्हें रसूल अरबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का सन्देश पहुँचाते हुए, आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के झण्डे तले एकत्रित करता चला गया।

फिर वह समय आया कि ईश्वरीय विधान के अन्तर्गत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह तृतीय(रज़ि) भी अपने सृष्टिकर्ता के पास उपस्थित हो गए। पुन: आन्तरिक व बाह्य उपद्रवों ने सर उठाया परन्तु अल्लाह के वचनानुसार जमाअत अहमदिया को चतुर्थ ख़िलाफ़त के रूप में धार्मिक दृढ़ता प्रदान हुई। प्रत्येक उपद्रव स्वयं समाप्त हो गया। अत्याचारपूर्ण कानून का सहारा लेकर हाथ पाँव बाँधने वालों और ''अहमदियत के केंसर'' को समाप्त करने का दावा करने वालों को ख़ुदा तआला ने मलियामेट कर दिया। पाकिस्तान में अत्याचारपूर्ण कानून के कारण वर्तमान ख़लीफ़ा को हिजरत

(प्रवास) करनी पढ़ी परन्तु यह हिजरत जमाअत की उन्नति के नवीन पड़ाव दिखाने वाली बनी। एक बार पुनः غَرَسْتُ لَكَ بِيَدِىْ ''ग़रस्तु लक बियदी'' अर्थात् तेरे लिए मैंने अपने हाथ से पौधा लगाया का वचन हमने पूरा होते देखा। प्रचार के वे मार्ग खुले जो अभी बहुत दूर दिखाई देते थे। ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए गए वादे को कि ''मैं तेरे प्रचार को धरती के किनारों तक पहुचाऊँगा।'' चतुर्थ ख़िलाफ़त काल में मुस्लिम टेलीवीज़न अहमदिया के माध्यम से इस प्रकार पूरा करके दिखाया कि मानवीय बुद्धि अचम्भित रह जाती है। यदि हम अपने संसाधनों को देखें और फिर इस चैनेल के प्रारम्भ को देखें तो ईमान वालों के मुँह से सहसा अल्लाह तआला की स्तुति और प्रशंसा के शब्द निकलते हैं। इसी चैनेल ने आज पूर्व से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक प्रत्येक अहमदियत के विरोधी का मुँह बन्द कर दिया है। अतः वही लोग जो समय के ख़लीफ़ा को निष्क्रीय करने के स्वप्न देख रहे थे, उनके घरों के अन्दर मुस्लिम टेलीवीज़न अहमदिया ने उस वीर पुरुष की आवाज़ पहुँचा दी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के धार्मिक ज्ञान और ख़ुदा तआला के अन्तिम विधि ग्रन्थ पवित्र क़ुर्आन की आध्यात्मिक ज्योति आज प्रत्येक घर में अल्लाह तआला की सहायता से पहुँच गई।

फिर ''कुल्लु मन् अलैहा फान'' अर्थात् जो भी यहाँ पर है वह नाशवान है कि विधानानुसार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ(रज़ि) की मृत्यु के बाद विश्व ने देखा और एम.टी.ए कैमरों ने सेटेलाइट के द्वारा यह दृश्य प्रत्येक घर में पहुँचाया। वह दृश्य जो अपनों और परायों के लिए आश्चर्यजनक था। अपने इस बात पर प्रसन्न कि ख़ुदा तआला ने भय को शान्ति में परिवर्तित किया, पराए इस बात पर आश्चर्य चकित कि यह किस प्रकार के लोग हैं, कैसी जमाअत है जिसे हम सौ वर्ष से समाप्त करने के प्रयास में हैं और यह आगे बढ़ते ही जा रहे हैं। एक विरोधी ने खुल्लम-खुल्ला प्रकट किया कि मैं तुम्हें सच्चा तो नहीं समझता परन्तु इस दृश्य को देख कर ख़ुदा तआला की क्रियात्मक गवाही तुम्हारे साथ लगती है।

मेरे जैसे दुर्बल और कम ज्ञानयुक्त मनुष्य के हाथ पर भी अल्लाह तआला ने जमाअत को एकत्रित कर दिया और प्रत्येक दिन इस सम्बन्ध में दृढ़ता उत्पन्न होती जा रही है। संसार समझता था कि यह व्यक्ति सम्भवत: जमाअत को न सम्भाल सके और हम वह दृश्य देखें जिसकी प्रतीक्षा में हम सौ वर्ष से बैठे हैं परन्तु यह भूल गए कि यह पौधा ख़ुदा तआला के हाथ से लगाया हुआ है। जिस में किसी मानव का कार्य नहीं अपितु ईश्वरीय वचनों और सहयोग के कारण प्रत्येक कार्य हो रहा है। अल्लाह तआला यह इल्हाम (ईश्वरीय वाणी) पूर्ण कर रहा है कि ''मैं तेरे साथ और तेरे प्रियों के साथ हूँ।''

अत: यह ईश्वरीय विधान है। यह उसी ख़ुदा का वादा है जो कभी झूठे वादे नहीं करता कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वे प्रिय जो आपके आदेश अनुसार द्वित्तीय क़ुदरत से चिमटे हुए हैं, उन्होंने संसार पर विजय प्राप्त करनी है क्योंकि ख़ुदा उनके साथ है। ख़ुदा हमारे साथ है। आज इस क़ुदरत को सौ वर्ष हो रहे हैं और प्रत्येक दिन नई शान से हम उस वचन को पूरा होते देख रहे हैं। जैसा कि मैंने जमाअत का संक्षिप्त इतिहास वर्णन करके बताया है। अत: प्रत्येक अहमदी का कर्तव्य है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन को दूसरी क़ुदर अर्थात ख़िलाफत से चिमटकर अपने सम्पूर्ण सामर्थ्य सहित पूरा करने का प्रयत्न करें। आज हमने ईसाइयों को भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के झण्डे तले लाना है। यहूदियों को भी आँहज़रत (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के झण्डे तले लाना है। हिन्दुओं को भी और प्रत्येक धर्म के मानने वाले को भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झण्डे तले लाना है। यह ख़िलाफ़ते अहमदिया है जिसके साथ जुड़कर हम ने संसार के समस्त मुसलमानों को भी मसीह व महदी के हाथ पर एकत्रित करना है।

अत: हे अहमदियो ! जो संसार के किसी भी भूभाग में अथवा देश में निवास करते हो, इस मूल को पकड़ लो और जो कार्य तुम्हारे सुपुर्द ज़माने का इमाम और मसीह व महदी ने अल्लाह तआला से आदेश पाकर किया उसे पूरा करो। जैसा कि आप अलैहिस्सलाम ने ''यह वादा तुम्हारी निस्बत है'' अर्थात् यह वचन तुम्हारे सम्बन्ध में

है के शब्दों में वर्णन करके यह महान दायित्व हमारे सुपुर्द कर दिया है। वाङ्कदे तभी पूरे होते हैं जब उनकी शर्तें भी पूरी की जाएँ।

अत: हे मसीह मुहम्मदी को मानने वालो ! हे वे लोगो जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रिय और आपके व्यक्तित्व रूपी वृक्ष की हरी भरी डालें हो। उठो और ख़िलाफ़त अहमदिया की दृढ़ता के लिए प्रत्येक प्रकार के बलिदान के लिए तैयार रहो ताकि मसीह मुहम्मदी अपने आका के जिस सन्देश को लेकर संसार में अल्लाह तआला की ओर से आया, उस अल्लाह की रस्सी को दृढ़तापूर्वक पकड़ते हुए संसार के कोने-कोने में फैला दो। संसार के प्रत्येक व्यक्ति तक यह सन्देश पहुँचा दो कि तुम्हारा जीवन एक अद्वितीय ख़ुदा से सम्बन्ध स्थापित करने में है। संसार की शान्ति इस महदी व मसीह की जमाअत से जुड़ने से जुड़ी है क्योंकि शान्ति और सुरक्षा की वास्तविक इस्लामी शिक्षा का ध्वज उठाने वाली यही (जमाअत) है, जिसका कोई उदाहरण संसार में नहीं पाया जाता। आज इस मसीह मुहम्मदी के मिशन को संसार में स्थापित करने और एकता की लड़ी में पिरोये जाने का समाधान केवल और केवल ख़िलाफ़ते अहमदिया से जुड़े रहने में निहित है और इसी से ख़ुदा वालों ने संसार में एक क्रान्ति लानी है।

अल्लाह तआला प्रत्येक अहमदी को ईमान की दृढ़ता के साथ इस सुन्दर सच्चाई को संसार के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाने का सौभाग्य प्रदान करे। आमीन !

वस्सलाम

ख़ाकसार

मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह पंचम

धन्यवाद ज्ञापन

अगर हर बाल हो जाए सुख़नवर
तो फिर भी शुक्र है इम्काँ से बाहर

अल्लाह तआला के शुक्र से परिपूर्ण भावनाओं के साथ यह धन्यवाद के शब्द लिख रहा हूँ। अल्लाह तआला का इस तुच्छ विनीत पर अत्यन्त दया तथा उपकार है कि उसने जमाअत की अन्य सेवाओं के साथ-साथ निरन्तर क़लम से सेवाओं का सामर्थ्य प्रदान फ़रमाया है। "वक़्फ़ ज़िन्दगी का महत्व और बरकतें" "इताअत का महत्व और बरकतें" इसी तरह "पर्दा का महत्व एवं बरकतें" इत्यादि विषयों पर पुस्तकें लिखने का सामर्थ्य मिला। अलहम्दो लिल्लाह। जिसे लोगों ने बहुत पसन्द किया।

सन 2008 ई में ख़िलाफ़त की शत वर्षीय जुबली शानदार तरीक़े से आयोजित की गई। इस अवसर पर अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से "ख़िलाफ़त की एहमीयत और बरकात" विषय पर एक पुस्तक प्रकाशित करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई। अल्लाह तआला का लाख-लाख शुक्र है कि उस ने इस किताब को अब 12 साल बाद हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने का सामर्थ्य प्रदान फ़रमाया है।

अल्लाह तआला के शुक्र के बाद अपने प्यारे आक़ा हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का दिल की गहराई से दुआओं के साथ आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। वास्तव में यह पुस्तक हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की दुआओं और हौसला बढ़ाने का परिणाम है।

अल्लाह तआला का हम पर महान उपकार है कि उस ने अपने फ़ज़्ल से हमें युग के इमाम सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद क़ायम होने वाली ख़िलाफ़त पर ईमान लाने का सामर्थ्य प्रदान फ़रमाया। वास्तव में नुबुव्वत के बाद ख़िलाफ़त वह आकाशीय माध्यम है जिसके द्वारा अल्लाह तआला अपनी बरकतें संसार में प्रकट करता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश के अनुसार मसीह मौऊद तथा मह्दी मौऊद के द्वारा अल्लाह तआला ने फिर ख़िलाफ़त की महान नेअमत हमें प्रदान फ़रमाई है। आज अल्लाह के फ़ज़्ल से हम ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के पांचवें द्योतक हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अय्यदहुल्लाह तआला के बरकतों वाले युग से गुज़र रहे हैं।

विनीत के ज्ञान के अनुसार बहुत सारे मुसलमान अब हिन्दी भाषा को सरलता पूर्वक पढ़ते हैं, उर्दू भाषा का पढ़ना उन के लिए कठिन है इसलिए ज़रूरी समझा कि ख़िलाफ़त के महत्त्वपूर्ण विषय पर एक बुनियादी पुस्तक हिन्दी भाषा में अनुवाद की जाए। विनीत के इल्म के अनुसार ख़िलाफ़त के विषय पर उर्दू भाषा में जमाअत की बहुत सारी पुस्तकें उपलब्ध हैं परन्तु हिन्दी भाषा में ख़िलाफ़त के विषय पर ख़ुलफ़ाए-ए-किराम की कुछ मूल पुस्तकों को छोड़ कर कोई पुस्तक नहीं है। इस पुस्तक में विस्तार से ख़िलाफ़त के महत्व और बरकतें, ख़िलाफ़त-ए-राशदीन और ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के बरकत वाले युग की इतिहास को लिपिबद्ध किया गया हो। अल्लाह तआला हिन्दी भाषा बोलने वालों के लिए इस पुस्तक को मार्गदर्शक बनाए।

हिन्दी अनुवाद में मूल उर्दू पुस्तक की तुलना में कुछ अध्यायों का किसी कारणवश अनुवाद नहीं किया गया है। पुस्तक में हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के ख़िलाफ़त के दौर के आरम्भिक सालों की बरकत वाली तहरीकों को भी शामिल किया गया है। अब तो अल्लाह के फ़ज़्ल तथा करम से जमाअत ख़िलाफ़त-ए-ख़ामिसा के निर्देश अनुसार निरन्तर उन्नतियों की नई मंज़िलें तय कर रही है।

इस किताब का हिन्दी अनुवाद आदरणीया आसमा तय्यबा साहिबा निवासी क़ादियान ने किया है। आप एक लम्बे समय तक ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत की मासिक हिन्दी पत्रिका राहे ईमान में उप सम्पादक के रूप में काम करती रही हैं। विनीत आप का भी शुक्रिया अदा करता है।

मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला मेरे इस तुच्छ प्रयत्न को स्वीकार करे और इस पुस्तक के प्रकाशन के उच्च उद्देश्यों की प्राप्ति हो।

विनीत

सर इफ़्तिख़ार अहमद अयाज़ लंदन

फरवरी 2022 ई

प्रस्तावना

अहमदिया ख़िलाफ़त

यह एक प्रमाणित सत्य है कि इन्सान की आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति और क़ौम की एकता और अखण्डता के लिए किसी न किसी आकाशीय व्यवस्था का होना ज़रूरी है। इस क़ीमती बात को समझने के लिए जब हम ब्रह्माण्ड की संगठित तथा दृढ़ व्यवस्था पर दृष्टि डालते हैं तो प्रत्येक स्थान पर हमें अनगिनत उदाहरण नज़र आते हैं। जैसे सौर मण्डल की व्यवस्था का केन्द्र सूर्य है। मानवीय शरीर का केन्द्र दिल है। शहद की मक्खियों का केन्द्र बिन्दु उनकी रानी मक्खी होती है। रेल गाड़ियों के डिब्बों के लिए एक इंजन होता है। भान्ति-भान्ति के फलों से लदे हुए और रंग-बिरंगे फूलों से सजे हुए बाग़ की देखभाल के लिए एक माली की आवश्यकता होती है।

इसी प्रकार किसी भी ख़ुदाई सिलसिले की आध्यात्मिक उन्नति तथा दृढ़ता के लिए उनके अनुयायियों की शिक्षा एवं प्रशिक्षण और एकता एवं अखण्डता के लिए ख़िलाफत की आकाशीय व्यवस्था की आवश्यकता होती है जो अल्लाह तआला के वरदानों में से एक महान वरदान और सबसे क़ीमती सुनहरा ताज होता है जो ख़ुदाई जमाअत को पहनाया जाता है और ख़िलाफ़त ही वह महान शक्ति है जो दिल की प्यास बुझाने के साधन उत्पन्न करती है अत: ख़िलाफ़त ही वह अमन का गहवारा है जिसमें बेक़रार रूहों को शान्ति मिलती है और ख़ौफ के समय बेचैन रूहों को अमन तथा सलामती प्राप्त होती है। इसका वर्णन अल्लाह तआला ने सूर: नूर की आयत 56 में बड़े विस्तार से किया है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद अल्लाह तआला ने अपनी कृपा से मोमिनों को ख़िलाफ़त से सम्बद्ध कर दिया और उसके द्वारा इस्लाम को पुन: उन्नति के पथ पर चलाया। ख़िलाफ़त के महत्व और आवश्यकता को सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम बड़ी अच्छी तरह जानते थे। इसीलिए हज़रत उस्मान रज़ि के ख़िलाफ़त के काल में जब कुछ अराजक तत्वों ने ख़िलाफ़त से बग़ावत की

तो हज़रत हंज़िला अल-कातिब रज़ियल्लाह अन्हो ने मुसलमानों को सचेत करते हुए फ़रमाया

عَجِبْتُ لِمَا يَخُوْضُ النَّاسُ فِيهِ يَرُوْمُوْنَ الْخِلَافَةَ اَنْ تَزُوْلَ
وَلَوْ زَالَتْ لَزَالَ الْخَيْرُ عَنْهُمْ وَلَاقُوْا بَعْدَهَا ذُلًّا ذَلِيْلَا
وَكَانُوْا كَالْيَهُوْدِ اَوِ النَّصَارٰى سَوَاءً كُلُّهُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَا

(तारीख़ इब्ने सीरीन भाग 3 पृष्ठ 73 उद्धृत रसाला अलफ़ुरकान मई 1966 ई)

अनुवाद : मुझे आश्चर्य है कि लोग किन बातों में उलझ रहे हैं। वे चाहते हैं कि ख़िलाफ़त समाप्त हो जाए।

यदि ख़िलाफ़त समाप्त हो गई तो ये लोग प्रत्येक प्रकार की बरकत से वंचित हो जाएँगे और इसके बाद प्रत्येक ओर से अपमान का मुंह देखेंगे।

फिर वे यहूदियों और इसाइयों के समान हों जाएँगे और सीधे मार्ग से भटकने में वे सब एक दूसरे से बराबर होंगे।

दुनिया की कोई व्यवस्था,चाहे वह जमहूरी (प्रजातांत्रिक) व्यवस्था हो या डिक्टेटरशिप का निज़ाम हो, बादशाही व्यवस्था हो या राष्ट्रपति शासन हो यह दावा नहीं कर सकता कि वह उस निज़ाम से जुड़े हुए लोगों की ईमान तथा आस्था, व्यावहारिक व चरित्र और आध्यात्मिक हालतों को ठीक करते हुए सारे समाज के अन्दर एक अनुपमीय सौहार्द और भाईचारा का माहौल पैदा कर सकता है। अतः अल्लाह तआला फ़रमाता है कि दुनिया की सारी दौलत ख़र्च करने के बाद भी कोई मानव जाति के बीच प्रेम और सौहार्द पैदा नहीं कर सकता। अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फ़रमाता है :-

وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ
اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ

(सूरत अन्फाल आयत 64)

अनुवाद : और उसने उनके दिलों को आपस में प्रेम से बांध दिया। यदि तू वह सब कुछ ख़र्च कर देता जो ज़मीन में है तब भी तू उनके दिलों को आपस में प्रेम से

बांध नहीं सकता था। परन्तु यह अल्लाह ही है जिसने उन (के दिलों) को आपस में बांधा। वह नि:सन्देह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) हिकमत(युक्ति) वाला है।

फिर अल्लाह तआला ने प्रेम तथा सौहार्द स्थापित करने का माध्यम नबियों और ख़लीफ़ाओं के अस्तित्व को ठहराया है और उन्हें बरकतों वाला वजूद क़रार दिया है। नबुव्वत के बाद ख़िलाफ़त वह सबसे बड़ा बरदान है जिसका वादा अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन में दिया है। चूंकि ख़लीफ़ा नबी का उत्तराधिकारी होता है और उनके माध्यम से नबियों के हाथ का लगाया हुआ पौधा पूरे तौर पर उन्नति करता है इसीलिए नबी के बाद समसामयिक ख़लीफ़ा इस्लामी दृष्टिकोण से अनुकरणीय इमाम की हैसियत रखता है। अत: आज ख़िलाफत की प्रणाली ही से विश्व स्तर पर मुसलमानों का सुधार और सुदृढ़ता सम्बद्ध है इसीलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को यह ताकीदी वसीयत फरमाई थी कि:

فان رئیت یومئذ خلیفۃ اللہ فی الارض فالزمہ وان نھک جسمک واخذ مالک

(मुस्नद अहमद बिन हंबल भाग 5 पृष्ठ 403)

अर्थात यदि उस युग में ज़मीन पर कोई अल्लाह का ख़लीफ़ा देखो तो उस से सम्बद्ध हो जाना चाहे तुम्हारा शरीर लहु-लुहान कर दिया जाए और तुम्हारी जायदाद लूट ली जाए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस भविष्यवाणी को अल्लाह तआला ने इस रूप में पूरा किया कि इस्लाम के पुनरुद्धार के लिए सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम (1835 ई- 1908 ई) को अल्लाह का ख़लीफ़ा बनाकर, मसीह व महदी के रूप में पैदा किया। आप ने संसार में यह घोषणा कि:

"मैं बैयतुल्लाह (अर्थात काबा शरीफ़) में खड़े होकर यह क़सम खा सकता हूँ कि वह पवित्र वह्यी जो मेरे पर नाज़िल होती है वह उसी ख़ुदा की वाणी है जिस ने हज़रत मूसा और हज़रत ईसा और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अपना कलाम नाज़िल किया था। मेरे लिए ज़मीन ने भी गवाही दी और

आकाश ने भी। इस तरह मेरे लिए आकाश भी बोला और ज़मीन भी, कि मैं अल्लाह का ख़लीफ़ा हूँ।"

(एक ग़लती का इज़ाला, रूहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 210 प्रकाशन 1984 ई लन्दन)

आपके प्रादुर्भाव पर अल्लामा हज़रत मुहम्मद बिन सिरीन (33 हिजरी से 110 हिजरी) की यह भविष्यवाणी भी पूरी हुई कि :

"इस उम्मत में एक ख़लीफ़ा होगा जो हज़रत अबू बकर (रज़ि) और हज़रत उमर (रज़ि) से बढ़कर होगा। पूछा गया कि क्या वह उन दोनों से बढ़कर होगा। उन्होंने फ़रमाया कि क़रीब है कि वह कुछ नबियों से भी बढ़कर हो।"

(हुजजुल किराम: पृष्ठ 386 नवाब सिद्दीक़ हसन खान प्रकाशन शाहजहानी भोपाल)

अव्वलो आख़िर की निस्बत होगी सादिक़ यहाँ
सूरत मअनी शबीय: मुस्तफ़ा पैदा हुआ
देख कर उसको करेंगे लोग रजअत का गुमां
यूँ कहेंगे मोजिज़े से मुस्तफ़ा पैदा हुआ

(दीवान नासिख़ भाग 2 पृष्ठ 54 प्रकाशन नवल किशोर लखनऊ 1923 ई)

अल्लाह तआला की सहायता और समर्थन के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने इस्लाम के पुनरुत्थान के लिए सारा जीवन लगा दिया। परन्तु चूँकि मानवीय जीवन को अमरता नहीं है इसलिए अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त की प्रणाली को स्थापित किया है। इस सम्बन्ध में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम फ़रमाते हैं :

"चूँकि किसी इन्सान के लिए स्थायी तौर पर जीवन नहीं। इसलिए ख़ुदा तआला ने यह इरादा किया के रसूलों के वजूद को जो सारी दुनिया के वजूदों से श्रेष्ठ और उत्तम हैं ज़िल्ली (प्रतिरूपी) तौर पर हमेशा के लिए स्थापित रखे। अत: इसी उद्देश्य से ख़ुदा तआला ने ख़िलाफ़त को चुना ताकि दुनिया कभी और किसी ज़माने में रसूलों की बरकतों से वंचित न रहे।"

(शहादतुल क़ुरआन लेखक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम पृष्ठ 56)

आपके इस वर्णन के आलोक में और पुस्तक "अल-वसीयत" में वर्णन की

गई स्पष्ट भविष्यवाणी के अनुसार जमाअत अहमदिया में 27 मई 1908 ई को ख़िलाफ़त अला मिनहाज-ए-नबुव्वत (नबुव्वत के पथ पर ख़िलाफ़त) स्थापित हुई। और आज सय्यदना हज़रत अक़दस मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ इस महान पद पर आसीन हैं। 27 मई सन 2008 ई को विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया ने ख़िलाफ़त की शत वार्षिकी जुबली के शुभ अवसर पर सारी दुनिया में महान आध्यात्मिक आनंदों और ख़ुशियों से भरे आयोजन किए। अल्लाह तआला का बहुत बड़ा उपकार है कि इस विनीत ने भी अपने जीवन में यह दिन देखा और ख़ुदा तआला के समक्ष शुक्रिया के रूप में ख़िलाफ़त के विषय पर यह पुस्तक लिखने का सामर्थ्य पाया। अल्हम्मदो लिल्लाह। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह मेरी इस कोशिश को स्वीकार करे। आमीन।

विनीत ने इस पुस्तक में ख़िलाफ़त के विभिन्न पक्षों को समेटने की कोशिश की है ताकि नए अहमदी ख़िलाफ़त की आवश्यकता, और उसकी बरकतें और इनामों का अवलोकल एक ही स्थान पर कर सकें और ख़िलाफ़त के अनगिनत इनामों का अपने व्यक्तित्व में अनुभव कर सकें। विनीत ने ख़िलाफ़त के विषय को स्पष्ट करने के लिए इस्लाम के इतिहास के सुनहरे अध्याय "ख़िलाफ़ते राशिदा" पर भी कुछ रोशनी डालने की कोशिश की है। वबिल्लाह तौफीक़।

विनीत

इफ़्तिख़ार अहमद अयाज़

लन्दन

मई 2008 ई

प्रथम अध्याय

ख़िलाफ़त की परिभाषा

ब्रह्माण्ड के एक छोटे से कण ऐटम को लें या बड़े से बड़े किसी और शरीर को, जिसका भी सीना फाड़ कर देखें वहाँ एक धड़कता हुआ दिल, एक केन्द्र पाएँगे जो उस कण या शरीर की हरकत और ज़िन्दगी का आधार होगा। इसी तरह आलमे सग़ीर हो या आलमे-कबीर (शरीर हो या सृष्टि) प्रत्येक स्थान पर ख़ुदा तआला का यह क़ानून काम करता हुआ नज़र आता है। आलम-सग़ीर अर्थात इन्सान के सारे अंगों के लिए दिल यदि एक केन्द्र के तौर पर है तो आलम-कबीर अर्थात ब्रह्माण्ड का भी अपना एक केन्द्र है। कुछ ग्रह मिलकर अपनी एक प्रणाली बनाते हैं जिनका केन्द्र सूर्य होता है और इस प्रकार की कुछ प्रणालियां मिलकर एक गैलेक्सी बनाती हैं।

ब्रह्माण्ड के छोटे से छोटे कण से ले कर गैलेक्सी तक में जो यह समरूपता पाई जाती है,यह जहाँ हमें ख़ुदा तआला की तौहीद(एकेश्वरवाद) की ओर ध्यान दिलाती है वहाँ इसमें मानव जाति की सामाजिक जीवन के लिए भी एक शानदार शिक्षा छिपी है कि दुनिया की कोई भी प्रणाली कोई भी कारोबार अपने केन्द्र के बिना सम्पूर्ण नहीं हो सकती। समाज में मिलजुल कर रहने के लिए एक प्रणाली की आवश्यकता है जिसमें ऐसा केन्द्र होना चाहिए जो उसके जीवन और उन्नति का आधार हो। जिसका अनुकरण प्रत्येक व्यक्ति अपना दायित्व समझे, जिसकी सुरक्षा के लिए प्रत्येक व्यक्ति सारी शर्तों को पूरा करे। उसी पर मानव जाति की सफलता का आधार होगा और उसी पर उसकी उन्नति की नींव होगी।

जहाँ तक इन्सान की शक्ति और सुधबुध का प्रश्न है तो यह संभव ही नहीं कि वह एक ऐसी प्रणाली बना सके जो प्रत्येक रूप से पूर्ण हो जिसमें प्रत्येक के अधिकारों की रक्षा और सुरक्षा का प्रबन्ध हो। बेशक इन्सानों ने विभिन्न युगों में ऐसी कई प्रणालियां बनाने का प्रयास किया है जो उनके लिए लाभदायक और सफलता के उत्तरदायी हों। जैसे अरस्तू की दार्शनिक प्रणाली, मनु की धर्म शास्त्रीय प्रणाली या फिर वर्तमान

समय में मार्क्स का क्मयूनिज़्म या फिर वर्तमान वोट की प्रजातान्त्रिक प्रणाली। परन्तु मानवीय समाज अभी तक भी एक पूर्ण प्रणाली बनाने में असफल है। बल्कि मानवीय समाज में प्रणाली की आवश्यकता का अनुभव अब भी जारी है। दुनिया का प्रत्येक क्षेत्र प्रत्येक देश और प्रत्येक क़बीला इस बात पर गवाह है कि एक पूर्ण प्रणाली होनी चाहिए। मानो प्रणाली का होना मनुष्य की प्रकृति की आवाज़ है। परन्तु इन प्रणालियों में आए दिन होने वाली गड़बड़ियां और परिवर्तन, होने वाली क्रांतियों और होने वाले उपद्रवों के कारण इस बात पर भी विश्वास होता है कि ये वास्तविक पूर्ण प्रणाली नहीं हैं। इनमें केन्द्र की वह क़ुदरती रूह मौजूद नहीं है जो ख़ुदा तआला के व्यावहारिक प्रमाणों के अनुसार हो। इसीलिए सब से अधिक दया करने वाले ख़ुदा तआला ने जो कि दिलों के भेद जानता है बन्दों की कमज़ोरी और कम अक़्ल को ध्यान में रखते हुए अपनी ओर से रसूलों और नबियों का सिलसिला जारी फ़रमाया और उनके द्वारा वह प्रणाली स्थापित की जिस की आवश्यकता थी। जिस का अनुकरण करना सफलता की गारण्टी है। इसका सबसे श्रेष्ठ प्रणाली हमारे हादी और मौला सरवरे कायनात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा इस्लाम धर्म के रूप में प्रकट हुआ है। जिसका कानून एक चिरस्थायी है और पवित्र क़ुरआन के रूप में क़यामत तक के लिए मौजूद है, जो पूर्णता मानवीय प्रकृति के अनुसार है। यही प्रणाली,ख़िलाफ़त की प्रणाली कहलाती है। जिसका बीजारोपण ख़ुदा तआला के रसूलों और नबियों के द्वारा होता है और उनके देहान्त के बाद उसका पोषण उनके ख़लीफ़ा करते हैं और यह प्रणाली उस समय तक जारी रहता है जब तक लोग ईमान तथा नेक कर्म की पाबन्दी करते रहते हैं।

ख़िलाफ़त का शाब्दिक अर्थ

ख़िलाफ़त एक अरबी भाषा का शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ किसी का प्रतिनिधि बनना या किसी के पीछे आना या किसी का उत्तराधिकारी होकर उसकी न्याबत के दायित्व पूर्णत: निभाने के हैं। व्यावहारिक रूप से ख़लीफ़ा का शब्द दो अर्थों में प्रयोग होता है। **प्रथम** वह रब्बानी सुधारक जो ख़ुदा की ओर से दुनिया में किसी

सुधार के काम के लिए मामूर के रूप में भेजा जाता है। अत: इन्हीं अर्थों की दृष्टि से सारे नबी और रसूल अल्लाह का ख़लीफ़ा होते हैं। क्योंकि वह ख़ुदा तआला के उत्तराधिकारी होने की हैसियत से काम करते हैं और ख़ुदा तआला की यह सुन्नत है कि वह अन्धकार के घटा टोप अंधेरों में अपने चुने हुए लोगों को नबुव्वत की चादर से सम्मानित करता है। इन नबियों के द्वारा हिदायत रूपी वृक्ष का बीज बोया जाता है। इन नबियों के द्वारा अल्लाह तआला की प्रथम क़ुदरत का प्रकटन होता है इसीलिए नबी और रसूलों को अल्लाह का ख़लीफ़ा कहा जाता है और पवित्र क़ुरआन ने इन्हीं अर्थों में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को ख़लीफ़ा के नाम से याद किया है। यह स्थान वस्तुत: अल्लाह तआला के प्रत्येक नबी को प्रदान किया जाता है। **द्वितीय** वह चुना हुआ व्यक्ति जो किसी नबी या रसूल के देहान्त के बाद इसके काम को पूर्ण करने के लिए उसका प्रतिनिधि और उसकी जमाअत का इमाम बनता है जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत अबु बकर सिद्दीक रज़ियल्लाह तआला अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाह तआला अन्हो ख़लीफ़ा बने।

अल्लामा इब्ने असीर लिखते हैं :

اَلْخَلِيْفَةُ مَنْ يَّقُوْمُ مَقَامَ الذَّاهِبِ وَيَسُدُّ مَسَدَّهٗ

(अन्निहाया भाग 1 पृष्ठ 315 उद्धृत रसाला अल-फुर्कान मई 1966 ई पृष्ठ 18)

कि ख़लीफ़ा वह होता है जो किसी जाने वाले के स्थान पर खड़ा हो और उसके देहान्त से पैदा होने वाले ख़ाली स्थान को भर दे।

अल्लामा बैज़ावी ने "ख़लीफ़ा" शब्द का अर्थ वर्णन करते हुए अपनी तफ्सीर में लिखा है कि :

اَلْخَلِيْفَةُ مَنْ يَّخْلِفُ غَيْرَهٗ وَيَنُوْبُ مَنَابَهٗ

(तफसीर बैज़ावी भाग 1 पृष्ठ 59 उद्धृत पत्रिका अल-फुर्कान मई 1966 ई पृष्ठ 19)

ख़लीफ़ा उसे कहते हैं जो किसी दूसरे व्यक्ति के बाद आए और उसका प्रतिनिधित्व करे और इसमें जो "ता" अक्षर है वह अतिश्योक्ति के लिए है।

इस बारे में सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि० फ़रमाते हैं:

(1) خليفة: مَنْ يَخْلُفُ غَيْرَهٗ وَيَقُوْمُ مَقَامَهٗ

जो किसी का प्रतिनिधि और उत्तराधिकारी हो।

(2) السُّلْطَانُ الاعظم - हाकिमे आला, शहंशाह

(3) وَفِى الشَّرع الامامُ الَّذِىْ لَيْسَ فَوْقَهٗ امامٌ۔

और शरीयत की दृष्टि से यह अर्थ होंगें के वह अगुआ जिसके ऊपर और कोई अगुआ न हो। और الخلافةُ के अर्थ हैं: اَلْامَارَةُ - हुकुमत, النِّيَابَةُ عَنِ الْغَيْرِ اِمَّا لِغَيْبَةِ الْمُنُوْبِ عَنْهُ اَوْ لِمَوْتِهٖ اَوْ لِعَجْزِهٖ اَوْ لِتَشْرِيْفِ الْمُسْتَخْلَفِ अर्थात दूसरे का जानशीन होना ख़िलाफ़त कहलाता है। चाहे वह जानशीनी असल की अनुपस्थिति के कारण हो या मौत या काम से कमज़ोरी के कारण हो। और कई बार यह उत्तराधिकारी केवल सम्मान के लिए होता है। जैसे अल्लाह तआला अपने बन्दों को ज़मीन पर ख़लीफ़ा बनाता है तो यह केवल उनके सम्मान के लिए होता है न कि किसी और कारण। और शरीयत की दृष्टि से ख़िलाफ़त के शरई अर्थ इमामत के हैं।"(अक़रब) (तफसीर कबीर भाग प्रथम पृष्ठ 272-273)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"ख़लीफ़ा के अर्थ उत्तराधिकारी के हैं जो धर्म का पुनरुत्थान करे। नबियों के युग के बाद जो अन्धेरा फैल जाता है उसको दूर करने के लिए जो उनके स्थान पर आते हैं उनको ख़लीफ़ा कहते हैं।" (मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 383)

एक दूसरे स्थान पर फ़रमाते हैं:

"ख़लीफ़ा उत्तराधिकारी को कहते हैं और रसूल का उत्तराधिकारी वास्तविक अर्थों की दृष्टि से वही हो सकता है जो ज़िल्ली (प्रतिरूपक) रूप से रसूल की विशेषताएं अपने अन्दर रखता हो। इसलिए रसूल करीम ने न चाहा कि अत्याचारी बादशाहों पर ख़लीफ़ा का शब्द बोला जाए। क्योंकि ख़लीफ़ा वस्तुतः रसूल का ज़िल्ल (प्रतिरूप) होता है।" (रूहानी ख़ज़ायन भाग 6 शहादतुल क़ुरआन पृष्ठ 353 प्रकाशन 1984 ई लन्दन)

पवित्र क़ुरआन ने इस बात को एक गूढ़ रहस्य के द्वारा भी वर्णन किया है। सूर:

नूर में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि -

فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَ يُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَ الْاٰصَالِ (सूरत नूर आयत - 37)

अर्थात अल्लाह तआला ही आकाशों और धरती का नूर है। उसके नूर के प्रकटन की विशेष अवस्था यह है कि मानो एक ताकचा हो जिसमें एक चिराग़ जल रहा हो। वह चिराग़ एक चिमनी के अन्दर हो। इस आयत में चिराग़ से अभिप्राय अल्लाह तआला का नूर है जिसके द्वारा दोनों लोकों में उजाला होता है। चिमनी से अभिप्राय नबुव्वत है। जिसके द्वारा ख़ुदा तआला का नूर अत्यन्त चमक-दमक के साथ प्रकट होता है। ताकचा से अभिप्राय वह रिफ्लेक्टर है जो चिराग़ नबुव्वत के पीछे लगाया जाता है अर्थात ख़िलाफ़त। जिस तरह बेड़ियों में रिफलेक्टर के द्वारा रोशनी को बहुत दूर फेंका जा सकता है। इसी तरह से ख़िलाफ़त के रिफलेक्टर के द्वारा नबुव्वत के नूर को बहुत लम्बे युग तक फैलाया जा सकता है। अत: ख़िलाफ़त नबुव्वत की उत्तराधिकारी है। ख़लीफ़ा नबी के शुरू किए हुए महान मिशन को ख़ुदा तआला से मार्गदर्शन प्राप्त करके नबी के आदर्शों पर चलते हुए आगे से आगे बढ़ाता है और न केवल उसकी अधूरी योजना और स्कीमों को चरमोत्कर्ष तक पंहुचाता है बल्कि उसके प्रादुर्भाव के उद्देश्य को पूरा करने के लिए नए नए प्रोग्रामों और मंसूबों की नींव भी डालता है। इस तरह से धर्म का नवीनीकरण करता है। इसी प्रकार ख़िलाफ़त के द्वारा नबी का वजूद ज़िल्ली तौर पर अपने सारे नूरू एवं बरकतों के साथ मोमिनों की जमाअत के मध्य रहता है और दुनिया लम्बे समय तक नबी के नूरू से लाभान्वित होती है। ख़लीफ़ा अपने कर्तव्यों को पूरे तन मन और धन के साथ अदा करता है।

ख़लीफ़ा शब्द अतिश्योक्ति की विभक्ति है जो सच्ची ख़िलाफ़त की धारणा है और ख़ुदा तआला की ओर से स्थापित होती है इसीलिए यह प्रत्येक सांसारिक प्रणाली से प्रत्येक दृष्टिकोण से अधिक बेहतर और अधिक प्रभावशाली है।

ख़िलाफ़त की प्रणाली के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए. सुन्दर स्पष्टीकरण करते हुए फ़रमाते हैं:

"पवित्र क़ुरआन की शिक्षा और रसूलों के आने के इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि जब अल्लाह तआला दुनिया में किसी रसूल और नबी को भेजता है तो इससे उसका उद्देश्य यह नहीं होता कि एक व्यक्ति दुनिया में आए और एक आवाज़ देकर चला जाए बल्कि प्रत्येक नबी के आने के समय ख़ुदा तआला की इच्छा यह होती है कि दुनिया में एक बड़ा इन्कलाब पैदा कर दे। जिसके लिए ज़ाहिरी संसाधानों के अधीन एक लम्बे निज़ाम और निरन्तर कोशिशों की आवश्यकता होती है चूंकि इन्सान की उम्र सीमित होती है इसलिए अल्लाह तआला का यह विधान है कि वह नबी के हाथ से केवल बीज बोने का काम लेता है और उस बीज बोने को अंजाम तक पहुँचाने के लिए नबी के देहान्त के बाद उसकी जमाअत के योग्य और सामर्थ्यवान लोगों को एक के बाद एक उसका उत्तराधिकारी बना कर उसके काम को चरमोत्कर्ष तक पहुंचाता है। यह उत्तराधिकारी होना इस्लामी परिभाषा में ख़लीफ़ा कहलाता है।"

(पत्रिका ख़ालिद , रब्वह मई 1960 ई)

नबी और ख़लीफ़ा का चयन

गहरी हिकमतों के मालिक ख़ुदा तआला ने यह निज़ाम जारी किया है कि वह मानव जाति को हिदायत की राह दिखाने के लिए अपने सानिध्य के तरीके दिखलाने के लिए अपने प्यारों और रसूलों को भेजता रहता है। उनके द्वारा मानव जाति में एकता व सहयोग, क़ौमी भाईचारा, सामूहिकता तथा सन्तोष तथा क़ौम में एकता का बीज बोया जाता है। यह बीज ख़िलाफ़त के द्वारा परवान चढ़ता है और एक विशाल वृक्ष बनता है। ख़ुदा तआला नबियों के कुछ अधूरे कामों को पूरा करने के लिए अपने लगाए हुए बाग़ की देखभाल के लिए ख़िलाफ़त के द्वारा अपनी क़ुदरत का प्रकटन फ़रमाता है और अल्लाह तआला के मार्गदर्शन में मोमिन अपने में से एक नेक बन्दे का चुनाव करते हैं जो वस्तुत: अल्लाह तआला का चुनाव होता है। फिर यह चयनित ख़लीफ़ा नबियों के निम्नलिखित चार बुनियादी कामों की उन्नति के लिए तन मन धन से लग जाता है।

याद रहे कि पवित्र क़ुरआन में अल्लाह तआला ने नबी के चार बुनियादी काम

वर्णन फरमाए हैं। जिनके बीज नबी बोता है फिर नबी के देहान्त के बाद उसकी उन्नति उसके ख़ुलफ़ाए किराम करते हैं।

يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ तब्लीग़ का हक अदा करना और करवाना, दूसरों को इस्लाम की दावत देना, मोमिनों के अकीदों और ईमान को ठीक करना।

يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ शरीयत के फरायज़ (अनिवार्य बातों) से मुसलमानों को सूचित करना और शिक्षा एवं हिदायत पर अनुकरण करवाना।

وَالْحِكْمَةَ फरायज़ और आदेशों की दर्शनिकता बताना ताकि अनुकरण में मज़बूती और रूचि पैदा हो।

وَيُزَكِّيْهِمْ मोमिनों के दिलों को पवित्र करना, उनमें अपनी पवित्र संगति से ऐसी रूह फूँकना कि उन्हें गुनाहों से नफरत पैदा होने लगे।

(सूर: बक़र: आयत नम्बर 130)

कार्य की दृष्टि से ख़िलाफ़त वस्तुत: नबुव्वत की परिशिष्ट है और दोनों के मध्य एक बुनियादी अन्तर है। नबुव्वत उस समय आती है जब प्रत्येक ओर अवज्ञाकारिता की अधिकता हो जाती है और यूँ मालूम होता है कि मानव जाति के लिए हलाकत के सिवाय कुछ नहीं। पवित्र क़ुरआन के शब्दों में : ظَهَرَ الْفَسَادُ فِى الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ (सूर: रोम 42)(अनुवाद : ज्ञानी अज्ञानी दोनों के अन्दर उपद्रव अपने चरमोत्कर्ष को पहुंच जाता है) ऐसे समय में ख़ुदा तआला की प्रथम क़ुदरत का प्रादुर्भाव नबुव्वत के रूप में प्रकट होता है। उसके बाद क़ुदरत-ए-सानिया का प्रादुर्भाव ख़िलाफ़त के रूप में स्थापित होता है। नबी के द्वारा केवल बीज रोपण का काम होता है। अर्थात उसके हाथों से केवल मिशन की शुरूआत होती है। उसके देहान्त के बाद ख़िलाफ़त नबुव्वत का नुस्खा और हिस्सा बन कर वजूद में आती है। यह ख़ुदा की स्थायी सुन्नत है जैसा कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुबारक कथन है कि

مَا كَانَتْ نُبُوَّةٌ قَطُّ اِلَّا تَبِعَتْهَا خِلَافَةٌ

(कन्ज़ुल उम्माल, अलफस्लुल अव्वल बाब फी बाज़ ख़साएसुल अंबिया हदीस न० 3229)

कि प्रत्येक नबुव्वत के बाद ख़िलाफ़त अनिवार्य रूप से स्थापित होती रही है। मान लो कि यदि नबुव्वत के बाद ख़िलाफ़त का सिलसिला न हो तो ख़ुदा तआला

पर आरोप आता है कि उसने मानव जाति की हिदायत के लिए एक प्रोग्राम बनाया और उसके अनुसार नबी को भेज कर अपने प्रोग्राम का बीज बोया, परन्तु अभी यह प्रोग्राम अधूरा ही था कि इस स्थापित किए प्रोग्राम को अपने हाथों ही नष्ट कर दिया। मानो वह एक बुलबुला था जो कुछ क्षणों के लिए समुद्र की लहरों पर प्रकट हुआ और फिर कुछ क्षणों के बाद हमेशा हमेश के लिए मिट गया।

यही कारण है कि नबी और ख़लीफ़ा के चुनाव में एक बुनियादी अन्तर होता है। नबी का चुनाव अल्लाह तआला सीधा करता है। क्योंकि अन्धकार के युग में कोई जमाअत नहीं होती जो चुनाव करे, जबकि इसके विपरीत ख़लीफ़ा का चुनाव अल्लाह तआला मोमेनीन की एक जमाअत के द्वारा करवाता है। देखने में तो यह चुनाव बन्दों का होता है परन्तु इसके पीछे अल्लाह तआला की इच्छा काम कर रही होती है और अल्लाह तआला आयत इस्तिख़लाफ में वर्णन की गई निशानियों के द्वारा सच्चे ख़लीफ़ा के स्थान व मर्तबा को दुनिया के सामने प्रकट कर देता है।

ख़िलाफ़त नबुव्वत की परिशिष्ट है

ख़िलाफ़त का महत्व उस समय सामने आता है जब हम नबी के मिशन की ओर देखते हैं। जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि अल्लाह तआला अपने बन्दों के सुधार के लिए नबी भेजता है। अतः अल्लाह तआला की शान इसी में है कि नबुव्वत के बाद ख़िलाफ़त के सिलसिला को जारी फरमाए। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस दृष्टि से निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त के महत्व के बारे में फ़रमाते हैं कि :

"अल्लाह तआला का कलाम मुझे फ़रमाता है .... वह इस सिलसिला को पूरी उन्नति देगा, कुछ मेरे हाथ से और कुछ मेरे बाद। यह अल्लाह तआला की सुन्नत है और जब से कि उसने इन्सान को ज़मीन में पैदा किया हमेशा इस सुन्नत को प्रकट करता रहा है कि वह अपने नबियों और रसूलों की मदद करता है और उनको विजय देता है........ और जिस सच्चाई को वह दुनिया में फैलाना चाहते हैं उसका बीजरोपण उन्हीं के हाथ से कर देता है परन्तु इसकी पूरी पूर्णता उनके हाथ से नहीं

करता, बल्कि ऐसे समय में उन को देहान्त देकर जो ज़ाहिर में एक असफलता का भय अपने साथ रखता है ....एक दूसरा हाथ अपनी क़ुदरत का दिखाता है और ऐसे साधन पैदा कर देता है जिनके द्वारा वह उद्देश्य जो किसी तरह अधूरे रह गए थे अपनी पूर्णता को पहुँचते हैं।"

(रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 303 -304 प्रकाशन 1984 ई लन्दन)

अत: ख़िलाफ़त की स्थापना की आवश्यकता और उसका महत्व जहाँ भौतिक क़ुदरत के कानून से प्रमाणित है वहाँ अल्लाह तआला के रूहानी निज़ाम की भी यही मांग है और इसका प्राकृतिक विधान भी यही प्रमाणित करता है कि नबुव्वत और ख़िलाफ़त की प्रणाली प्रत्येक अवस्था में स्थापित होनी चाहिए क्योंकि सारी दुनिया की समस्याओं का हल इसी में है।

ख़िलाफ़त की प्रणाली और सांसारिक प्रणालियों में अन्तर

दुनिया में इस समय बहुत सी प्रणालियां मौजूद हैं जो इस बात की दावेदार हैं कि वे इन्सानों का सही मार्ग दर्शन करती हैं। उन्हें सम्पूर्ण आज़ादी और सही चिन्तन देती हैं। इन प्रणालियों में लोकतांत्रिक प्रणाली, डिकटेटरशिप इत्यादि मशहूर हैं। जबकि इन सबके विपरीत इस्लाम धर्म नबुव्वत के बाद ख़िलाफ़त की प्रणाली को प्रस्तुत करता है। इसलिए ज़रूरी है कि इन्सान को यह बताया जाए कि इस्लामी ख़िलाफ़त की प्रणाली और अन्य प्रणालियों विशेष रूप से लोकतंत्र और डिकटेटरशिप में क्या अन्तर है।

बादशाहत जो आज से कुछ शताब्दियों पहले सारी दुनिया में अधिकतर देशों में थी और आज भी कई देशों में मौजूद है इस में यह नियम था कि हकूमत की बागडोर एक व्यक्ति के हाथ में होती है और वह प्रत्येक चीज़ का मालिक होता है? जिसे चाहे पसन्द करे और चाहे न पसन्द करे। कोई उसके सामने कोई उसकी इच्छा के विरुद्ध बात नहीं कर सकता। जबकि इसके विपरीत लोकतंत्र में लोग अपने में से एक व्यक्ति को हटा देते हैं और उसके बदले में दूसरे व्यक्ति को चुन लेते हैं। ज़ाहिर में निज़ाम-ए- ख़िलाफ़त में मोमिनीन के चुनाव के द्वारा ख़लीफ़ा चुना जाता है इसलिए लोकतंत्र और निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त को एक जैसा नहीं समझ लेना चाहिए। इसी तरह

डिकटेटरशिप और ख़िलाफ़त में भी एक बुनियादी अन्तर है और प्रत्येक समझदार व्यक्ति को यह अन्तर अच्छी तरह नज़र आता है और वह अन्तर इस तरह से है।

पहला अन्तर :

सबसे बड़ा अन्तर तो यह है के ख़लीफ़ा को अल्लाह तआला निर्धारित करता है। परन्तु इसके विपरीत कोई कह सकता है कि तानाशाह को भी अल्लाह तआला ही निर्धारित करता है। हालांकि वह तो केवल इसलिए खड़े होते हैं कि अपने स्वार्थों की पूर्णता करे और वे इसी कोशिश में लगे रहते हैं। लोकतंत्र में बेशक प्रधान का निर्धारण चुनाव के द्वारा होता है। परन्तु यह निर्धारण करने वाले मोमेनीन नहीं होते और न ही निर्धारण का तरीका व्यावहारिकता में इन्साफ वाला है।

दूसरा अन्तर :

दूसरी बात यह है कि अल्लाह तआला ख़लीफ़ा चुनने के बाद उसकी सहायता तथा समर्थन भी फ़रमाता है और आने वाले परिवर्तनों और कठिनाइयों के बारे न केवल सूचित कर देता है बल्कि इनसे मुक्ति पाने के लिए तौफीक़ भी देता है। परन्तु तानाशाह या प्रधान के साथ अल्लाह तआला का यह व्यवहार नहीं होता है।

तीसरा अन्तर :

तीसरा अन्तर यह है कि सच्चे ख़लीफ़ा कभी जमाअत का ग़लत मार्गदर्शन नहीं करते या दूसरे शब्द में यह कि कभी नबियों की शिक्षा को नहीं छोड़ते जिन के वे ख़लीफ़ा होते हैं चाहे कितनी ही कठिनाई हो वे उनकी इनकी शिक्षा पर जमे रहते हैं। परन्तु तानाशाहों के लिए कोई पाबन्दी नहीं होती। उनके सामने अपनी जान या अपना देश होता है। जिस तरीके से भी हो वह अपना काम निकालने की कोशिश करते हैं। ऐसा ही लोकतंत्र प्रणाली के प्रधान अपने लाभ के लिए प्रायः कानून बदलते रहते हैं।

चौथा अन्तर :

चौथा अन्तर जो ख़िलाफ़त और डिकटेटरशिप में होता है वह यह है के ख़लीफ़ा हमेशा दिलों पर हुकूमत करता है। लोगों का सम्बन्ध उससे मुहब्बत और श्रद्धा का होता है। जबकि इसके विपरीत तानाशाह लोगों के शरीरों पर राज करता है। लोग

तानाशाह से प्यार, मुहब्बत नहीं करते। बल्कि लोगों की अधिकता उससे भयभीत रहती है और मारे डर कि वे इसकी बात मानने पर विवश होते हैं।

पाँचवा अन्तर :

पाँचवा अन्तर यह है कि ख़लीफ़ा का चुनाव एक बार हो जाने के बाद दुनिया की कोई ताकत उसे ख़िलाफ़त से पद्च्युत नहीं कर सकती। जबकि तानाशाह या सदर के साथ इस प्रकार का कोई कानून नहीं है। ख़िलाफ़त और अन्य प्रणालियों के अन्तर को सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद ने बड़े विस्तार से वर्णन किया है।

ख़िलाफ़त-ए-राशिदा और उसकी विशेषताएं

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद ख़लीफ़तुल मसीह सानी ने जुलाई 1958 ई. को इस्लामी ख़िलाफ़त-ए-राशिदा की अन्य बुनियादी प्रणालियों से स्पष्ट अन्तर वर्णन किया है। इस अन्तर की दृष्टि से इस्लाम का निज़ामे ख़िलाफ़त दुनिया का वह अकेला निज़ाम है जो एक ओर इन्सान को ख़ुदा तआला से जोड़ता है तो दूसरी ओर बन्दों के अधिकार की सही व्याख्या करता है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी इस्लामी ख़िलाफ़त-ए-राशिदा की विशेषताओं का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं:

"इस्लाम में ख़िलाफ़त-ए-राशिदा की सात विशेषताएं वर्णन हुई हैं:

पहला : चयन

अल्लाह तआला फ़रमाता है : إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمٰنٰتِ إِلٰى أَهْلِهَا यहाँ अमानत का शब्द है परन्तु वर्णन चूंकि हुकूमत का है इसलिए अमानत से अभिप्राय हुकूमत वाली अमानत है। आगे चुनाव के तरीका को मुसलमानों पर छोड़ दिया। चूंकि ख़िलाफ़त उस समय राजनीतिक थी परन्तु उसके साथ धार्मिक भी। इसलिए धर्म के स्थापित होने तक उस समय के लोगों ने फैसला किया कि चुनाव सहाबा करें कि वे धर्म को बेहतर समझते हैं। वरना प्रत्येक युग के लिए चुनाव का तरीका अलग हो सकता है। यदि ख़िलाफ़त सहाबा के बाद चलती तो इस पर भी ग़ौर हो जाता कि सहाबा के बाद चुनाव किस तरह हुआ करे। बहरहाल ख़िलाफ़त चुनाव से है और चुनाव के तरीका को अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर छोड़ दिया है।

दूसरा : शरीयत- ख़लीफ़ा पर ऊपर से शरीयत का दबाव है वह मश्वरा को अस्वीकार कर सकता है। परन्तु शरीयत को अस्वीकार नहीं कर सकता। मानो कान्सटी टयूशनल हैड है आज़ाद नहीं।

तीसरा : शूरा - ऊपर के दबाव के अतिरिक्त नीचे का दबाव भी इस पर है। अर्थात इसे सारे अहम कामों में परामर्श लेना और जहाँ तक हो सके इसके अधीन चलना ज़रूरी है।

चौथा : अन्दरूनी दबाव अर्थात अख़लाकी

शरीयत और शूरा के अतिरिक्त उस पर निगरान इसका वजूद भी है। क्योंकि वह धार्मिक मार्गदर्शक भी है और नमाज़ों का इमाम भी। इसी कारण इसका दिमाग़ी और चेतना का दबाव और निगरानी भी उसे सीधे रास्ते पर चलाने वाली है जो पूर्णतः राजनीतिक रूप से चुने हुए या न चुने हुए शासक में नहीं होती।

पाँचवा : बराबरी: ख़लीफ़ा इस्लामी मानवीय अधिकारों में बराबर है जो दुनिया में और किसी हाकिम को प्राप्त नहीं। वह अपने अधिकार अदालत के द्वारा ले सकता है और उस से भी अधिकार अदालत के द्वारा लिए जा सकते हैं।

छठा : इसमते सुग़रा: इसमते सुग़रा उसे प्राप्त है अर्थात उसे धार्मिक मशीन का पुर्ज़ा करार दिया गया है और वादा किया गया है कि ऐसी ग़लतियों से उसे बचाया जाएगा जो तबाह करने वाली हों और विशेष ख़तरों में उसकी पालिसियों में अल्लाह तआला समर्थन करेगा और उसे दुश्मनों पर विजय देगा। मानो अल्लाह तआला की सहायता प्राप्त है और दूसरी तरह के हाकिम इस में सम्मिलित नहीं।

सातवाँ : वह राजनीति से ऊंचा होता है इसलिए उसका किसी पार्टी से सम्बन्ध नहीं हो सकता। वह एक बाप की हैसियत रखता है इसलिए किसी पार्टी में सम्मिलित होना या उसकी ओर झुकना सही नहीं। अल्लाह तआला सूरः निसा आयत- 59 में फ़रमाता है :

وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًا بَصِيْرًا۔ (सूरः निसा, आयत- 59)

(अर्थात जब तुम लोगों के मध्य हकूमत करो तो इन्साफ के साथ हकूमत करो।) अर्थात जब ऐसे व्यक्ति का चुनाव हो तो उसका कर्तव्य है कि वह पूर्ण इन्साफ से फैसला करे किसी एक ओर चाहे व्यक्ति हो या क़ौम, वह न झुके।"

(उद्धृत अल-फुर्कान ख़िलाफ़ते राशिदा नम्बर जुलाई 1958 ई पृष्ठ 3-2)

सारांश यह कि ख़िलाफ़त की प्रणाली को अन्य प्रणालियों पर एक प्राथमिकता प्राप्त है और समय के ख़लीफ़ा को डिक्टेटर या प्रधान के मुकाबला में बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त होता है। समय के ख़लीफ़ा के मुबारक स्थान पर स्थापित होने वाले के लिए हज़रत सय्यद मुहम्मद इस्माईल साहिब शहीद के शब्द हैं:

"ख़लीफ़ा राशीद सारे संसारों के रब की छाया, अंबिया तथा मुरसलीन की छाया, धर्म की उन्नति का मूल और सम्मान्नीय फरिशतों के बारबर हैं। दायरा इम्कान का केन्द्र सारे कारणों में से गर्व का कारण और इरफान वालों का अफसर है ..... उसका दिल रहमान ख़ुदा के अर्श की जलवा दिखाने वाला और उसका सीना रहमत तथा इफ़राह और सौभाग्य शालीनता का प्रतिरूप है।"

(मन्सब इमामत पृष्ठ 86 फारसी उर्दू अनुवाद गीलानी प्रेस लाहौर 1949 ई)

हज़रत सय्यद इस्माईल साहिब ख़लीफ़ा रशीद का उच्च और पवित्र स्थान वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं।

"इमाम, रसूल के आज्ञाकारी बेटे के समान हैं सारे उम्मत के बुज़ुरगान-ए-मिल्लत मुलाज़िमों और सेवा करने वालों और जान कुरबान करने वाले ग़ुलामों की तरह हैं। जिस तरह समस्त सल्तन्त के वज़ीरों तथा हुकूमत के लोगों का शहज़ादा का सम्मान करना ज़रूरी है और उससे सम्बन्ध अनिवार्य है, और उससे मुकाबला नमक हरामी की निशानी और उस पर अहंकार का प्रकटन बुरे अंजाम पर आधारित होता है इसी तरह ही प्रत्येक कमाल वाले के समक्ष विनय और विनम्रता सआदत का कारण है और उसके हुज़ूर अपने कमाल को कुछ समझ बैठना दोनों जहान का दुर्भाग्य है। उसके साथ प्रेम रखना रसूल के साथ प्रेम रखना है और उससे दूरी हो तो ख़ुदा रसूल से दूरी है।"

(मन्सब इमामत पृष्ठ 78 फारसी उर्दू अनुवाद गिलानी प्रैस लाहौर 1949 ई)

अत: यह स्पष्ट हुआ कि समय का ख़लीफ़ा नबी के बाद उच्च स्थान वाला होता है, उसको ख़ुदा तआला खड़ा करता है और उसकी प्रत्येक तरह से सहायता करता है उसे इल्म लदुन्नी (ईशवरीय ज्ञान) प्रदान फ़रमाता है और उसे स्वयं हिकमत सिखाता है। पवित्र क़ुरआन के अर्थ, मर्म, भेद, रहस्यों और हकायक तथा अनुभूति से माला माल करता है। जिसके कारण वह कुरआन करीम की तफसीर सबसे बेहतर समझता और वर्णन करता है। ख़ुदा उसकी प्रत्येक मुश्किल समय पर मार्ग दर्शन करता है प्रत्येक परीक्षा में उसे पूरा उतरने का सामर्थ्य प्रदान फ़रमाता है। इसलिए अनिवार्य है कि प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह मुजतहिद हो या मुकल्लिद, विद्वान हो या अज्ञानी, आरिफ हो या ग़ैर आरिफ, अपने आप को उसके सामने कुछ चीज़ न समझे। उसके सामने अपनी ज़ुबान बन्द रखे उसके अधिकार स्वयं निर्धारित करने की कोशिश न करे।

क्या ख़िलाफ़त के साथ हुकूमत अनिवार्य है?

नबी मानव जाति की हिदायत और मार्ग दर्शन के लिए भेजा होता है। भौतिक हुकूमत स्थापित करना उसका वास्तविक उद्देश्य नहीं होता और न ही यह उसका लक्ष्य होता है। यही कारण है कि बहुत से नबियों को अपनी ज़िन्दगी में हुकूमत प्राप्त नहीं होती। अत: जब नबुव्वत के साथ हुकूमत का होना अनिवार्य नहीं तो ख़िलाफ़त के साथ कैसे हुकूमत को अनिवार्य किया जा सकता है?

अल्लामा इब्ने ख़ुल्दून लिखते हैं :

ان الخلافة قد وجدت بدون الملك اوّلاً ثم السبت معانيها واختلطت ثم انفرد الملك

(मुकद्दमा इब्ने ख़ल्दून पृष्ठ 174 उद्धृत रसाला अलफुर्कान ख़िलाफ़त न० मई 1966 ई पृष्ठ 20)

अर्थात "पहले कई बार ख़िलाफ़त बादशाहत के बिना स्थापित हुई और कई बार हुकूमत और ख़िलाफ़त एक जैसी पाई गई और फिर बादशाहत अलग तौर पर पाई गई।"

हज़रत शाह वली उल्लाह देहलवी नबुव्वत तथा ख़िलाफ़त की व्याख्या सूक्ष्म रंग में करते हुए लिखते हैं कि :

अनुवाद (फारसी से) : "नबुव्वत के द्वारा अल्लाह तआला का इरादा यह होता है कि दुनिया का सुधार किया जाए और उपद्रव फैलाने वालों और कुफ्फार को बुराई से

रोका जाए और पैग़म्बर के कथन और कर्म के अनुसार शरीयत को जारी किया जाए। ख़िलाफत के द्वारा अल्लाह तआला का इरादा यह होता है कि पैग़म्बर की उम्मत में से एक व्यक्ति को ख़लीफ़ा बना कर उसके द्वारा पैग़म्बर के कारनामों की पूर्णता की जाए। पैग़म्बर के नूर का प्रकाशन किया जाए और उसके लाए हुए धर्म को ग़ालिब करने की पूर्ण भावना उसके दिल में पैदा की जाए। ऐसा ख़लीफ़ा अपनी सोचने वाली शक्ति और काम करने वाली शक्ति में पैग़म्बर की हस्ती से ऐसा लगाव रखता है कि वह मुलहम हो जाता है और इसकी फिरासत (दूरदर्शिता) वह्यी रब्बानी से समानता रखती है और उसके कमाल नफस पर विभिन्न करामतें और रूहानी बरकतें अवतरित होती हैं। बहुत ज़रूरी है कि ख़लीफ़ा अपने प्रत्यक्ष रूप में नबी के अनुसार हो अर्थात यदि नबी बादशाह है तो उसका ख़लीफ़ा भी बादशाह हो। यदि नबी ज़ाहरी हुकूमत के बिना दरवेश और पवित्रता के लिबास में प्रकट हुआ हो तो ख़लीफ़ा भी उसी रूप पर होगा .... कभी रसूल बादशाह के रूप में प्रकट हुए हैं। जैसे हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान (अलैहुमा) थे और कई रसूल केवल रब्बानी इल्म से सम्मानित थे। जैसे हज़रत ज़करिया और कई रसूल पवित्रों की अवस्था में प्रकट हुए थे जैसे हज़रत यूनुस और हज़रत यह्या थे।"

(इज़ालतुल ख़ुलफा पृष्ठ 260-259 उद्धृत अलफुर्कान ख़िलाफ़त न० 1966 ई पृष्ठ 35)

इन उद्धरणों से प्रमाणित है कि घटना के होने से और इमामों के प्रमाणिक उद्धरण से हर ख़लीफ़ा के लिए बादशाह होना ज़रूरी नहीं और वास्तव में ख़िलाफ़त की हकीक़त आध्यात्मिक और शाब्दिक रूप में अपने अनुकरण किए जाने वाले नबी से समानता पैदा करना है। ख़िलाफ़त तो अलग नबुव्वत के लिए भी हुकुमत ज़रूरी नहीं है। बहुत से नबी केवल पवित्र और नेक ही गुज़रें हैं। ऐसे नबियों के बाद भी रिसालत का सिलसिला जारी रहा। क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्पष्ट रूप से फ़रमाया है कि : مَا كَانَتْ نُبُوَّةٌ قَطُّ اِلَّا تَبِعَتْهَا خِلَافَةٌ

(कन्ज़ुल अम्माल भाग 6 पृष्ठ 119)

कि प्रत्येक नबुव्वत के बाद ख़िलाफ़त होती रही है।"

निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त की विशेषताएं तथा महानताएं

अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन में कई स्थानों पर निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त-ए-राशिदा का वर्णन फ़रमाया है। परन्तु सबसे अधिक विस्तार से वर्णन सूरः नूर में है:

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ

(सुरत नूर आयत 56)

अनुवाद : तुम में से जो लोग ईमान लाए और पुण्य कर्म किए उनसे अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि वह उन्हें अवश्य धरती में ख़लीफ़ा बनाएगा जैसा कि उस ने उनसे पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया और उनके लिए उनके धर्म को, जो उस ने उनके लिए पसन्द किया अवश्य दृढ़ता प्रदान करेगा और उनकी भयपूर्ण अवस्था के बाद अवश्य उन्हें शान्तिपूर्ण अवस्था में बदल देगा। वे मेरी उपासना करेगें। मेरे साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराएँगें और जो उसके बाद भी कृतघ्नता करे तो यही वे लोग हैं जो अवज्ञाकारी हैं।

इस आयत को "आयत इस्तिख़्लाफ" कहा जाता है इस में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ख़िलाफ़त-ए-राशिदा की स्थापना का वादा दिया है और इसे ईमान और सालेह (नेक) कर्म की दो शर्तों के साथ जोड़ दिया है और निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त की कई नेअमतों और बरकतों का वर्णन फ़रमाया है। ये बरकतें ख़िलाफ़त-ए-राशिदा की विशेष निशानियां भी करार दी जा सकती हैं।

याद रखना चाहिए कि ऊपर वर्णन की गई "आयत इस्तिख़लाफ" में मुसलमानों के बीच स्थापित ख़िलाफ़त की भविष्यवाणी नहीं की गई बल्कि इनाम का एक शर्त वाला वादा किया गया है। जैसे यूँ समझ लें कि ख़िलाफ़त एक सोने का तमग़ा है जो उम्मत मुस्लिमा को इनाम स्वरूप दिया जाएगा और इस इनाम के सिलसिला में मोमिनों के लिए उच्च स्तर की योग्यता शर्त है। अत: ख़िलाफ़त सशर्त है सच्चे ईमान

और विश्वास के साथ। इसी तरह से यह ईमान सशर्त है नेक कर्म के साथ जो ईमान से भी समानता रखे और स्थान और समय से भी। विशेष रूप से ऐसे कर्म जो ख़िलाफ़त की प्रणाली के स्थापना तथा चिरस्थायी होने के लिए अनिवार्य हों।

आयत इस्तिख़लाफ़ के बिन्दु

ख़िलाफ़त की प्रणाली के बारे में आयत इस्तिख़लाफ (अन्नूर-56) केन्द्र बिन्दु है। इस छोटी सी आयत में अल्लाह तआला ने इस्लामी निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त की मज़बूत नींवें वर्णन की हैं। इस पर जितना चिन्तन किया जाए उतनी नई-नई विशेषताएं निकलती जाती हैं। अन्य बिन्दुओं के अतिरिक्त अल्लाह तआला ने इस आयत में निम्नलिखित सात बातों को विस्तार से वर्णन फ़रमाया है :

1. मोमिनों में से ख़िलाफ़त का वादा।
2. ख़लीफ़ाओं की समानता पहले ख़लीफ़ाओं से।
3. ख़लीफ़ाओं के तरीके का समर्थन ।
4. ख़लीफ़ाओं के युग में पैदा होने वाले खौफों को अमन से बदलना ।
5. ख़लीफ़ाओं का तौहीद की उपासना करने वाला होना ।
6. ख़लीफ़ाओं का अल्लाह के अतिरिक्त से निस्पृह होना।
7. ख़लीफ़ाओं के विरोधियों का अंजाम।

इन सात कामों में से पहले चार कामों की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला ने अपने ऊपर ली है। दूसरे दो कामों को ख़लीफ़ाओं का चिन्ह क़रार दिया है और आख़री बात ख़िलाफ़त का इन्कार करने वालों के साथ जोड़ी है।

यह वे सात महान विशेषताएं हैं जिनके कारण इस्लामी निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त एक ख़ुदाई निशान है और दुनिया में किसी व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं कि वह इसका मुकाबला कर सके और कोई बड़ी से बड़ी सोसायटी या शक्ति इसका किसी विशेषता में मुकाबला नहीं कर सकती। ख़लीफ़ा अपने समय में धरती में सबसे प्यारा ख़ुदा का बन्दा होता है। ख़ुदा का सबसे प्यारा इन्सान होने के कारण सफलताएं उसके पैर चूमती हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं :

"ख़िलाफ़त के तो अर्थ ही यह हैं कि जिस समय ख़लीफ़ा के मुँह से कोई शब्द निकले उस समय सब स्कीमों और सब कोशिशों को फेंक दिया जाए और समझ लिया जाए कि अब वही स्कीम वही परामर्श और वही कोशिश लाभदायक है जिसका समय के ख़लीफ़ा की ओर से आदेश मिला है।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 जनवरी 1936 ई अलफज़्ल 31 जनवरी 1936 ई)

अत: वर्तमान समय के मशहूर धर्म के विद्वान अल्लामा अश्शे अत्तनतारी अलजवाहरी अपनी पुस्तक "अलक़ुरआन वलउलूमुल असरिया" पृष्ठ 21 पर आयत इस्तिख़लाफ को लिखते हुए लिखते हैं :

هٰذِهِ الْاٰيَةَ ذَكَرْنَا هَا مَرَّةً اُخْرٰى فِى الْكِتَابِ وَ أَعَدْنَا هَا هٰهُنَا بَعْدَ اَنْ بَيَّنَّا طَرِيْقَ الْاِتِّحَادِ بَيْنَ الْمُسْلِمِيْنَ تِلْكَ الطَّرِيْقَ الَّتِىْ هَدَانَا اللّٰهُ لِاِسْتِخْرَاجِ هَا مِنَ الْكِتَابِ الْعَزِيْزِ لَا سَبِيْلَ اِلٰى اِسْعَادِ الْمُسْلِمِيْنَ بِغَيْرِ هَا وَلَا سَبِيْلَ لِرَاحَتِهِمْ وَ تَمْكِيْنِهِمْ فِى الْاَرْضِ وَ اسْتِخْلَافِهِمْ فِيْهَا وَ تَبْدِيْل خَوْفِهِمْ اَمْنًا اِلَّا بِهٰذِهِ السَّبِيْلِ وَحْدَهَا الْخِلَافَة۔

अर्थात: इस आयत को हमने इस किताब में पुन: वर्णन किया है और मुसलमानों के बीच एकता का तरीका वर्णन करने के बाद हमने फिर इस आयत को दोहराया है। क्योंकि इस तरीका का ज्ञान हमें पवित्र क़ुर्आन से होता है और इसके सिवाए मुसलमानों की सफलता का अन्य कोई उपाय नहीं, न ही इन्हें धरती में ख़ुशहाली और ताकत प्राप्त हो सकती है और न ही हुकूमत उपलब्ध हो सकती है और न उनका भय अमन से तबदील हो सकता है परन्तु केवल और केवल ख़िलाफ़त के द्वारा।"

शाने नुज़ूल (उतरने की पृष्ठभूमि)

(अर्थात आयत इस्तिख़लाफ के अवतरित होने की परिस्थिति और समय)

आयत इस्तिख़लाफ के उतरने के बारे में तफसीर की किताबों में लिखा है कि :

اِنَّ رسول الله ﷺ واصحابہ مکتومًا بمکۃ عشر سنین خائفین

ولمّا ھاجروا کانوا بالمدینۃ یصبحون بالسلاح فنزلت۔

(मदारक तनज़ील नसफी उद्धृत रसाला अल-फुर्कान ख़िलाफ़त न० मई 1966 पृष्ठ 20)

لمّا قدم رسول اللہ و اصحابہ المدینۃ و آوتھم الانصار رمتھم العرب عن قوسٍ واحدۃٍ ۔فکانوا لایبیتون الا بالسّلاح ولا یصبحون الا فیہ فقالوا اترون انا نعیش حتی نبیت آمنین مطمئنین لا نخاف الا اللہ۔

(मज्मऊल ब्यान तफसीर शीया उद्धृत रसाला अल-फुर्कान ख़िलाफ़त मई 1966 पृष्ठ 30)

शिया सुन्नी दोनों मुफस्सरीन (व्याख्याकार) सहमत हैं कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके सहाबा को मदीना में भी दुश्मनों ने अमन से न रहने दिया और सहाबा को मदीना में दिन रात हथियार लगाकर रहना पड़ा तो अल्लाह तआला ने आयत उतार कर उनसे वादा किया कि तुम पर अमन के दिन आँएगे। बल्कि हम तुम्हें शासन और हुकुमत और ख़िलाफ़त भी प्रदान करेंगे।

आयत उतरने की इस पृष्ठभूमि के बारे में सारे व्याख्याकर सहमत हैं कि अल्लाह तआला ने इस वादे को पूरा कर दिया। शिया व्याख्याकार लिखते हैं:

قال مقاتل قد فعل اللہ ذالک بھم و من کان بعدھم من ھذہ الامۃ مکن لھم فی الارض و ابدلھم امناً من بعد خوف و بسط لھم فی الارض فقد البحر موعدہ لھم۔

(मज्मउल ब्यान आयत इस्तिख़लाफ के अन्तर्गत, उद्धृत रिसाला अल-फुर्कान, ख़िलाफ़त न० मई 1966 ई पृष्ठ 30)

कि अल्लाह तआला ने सहाबा और ताबईन के साथ अपना वादा पूरा कर दिया कि उस ने उन्हें धरती में ताकत प्रदान की। उनके डर को अमन से बदल दिया और धरती में सामर्थ्य प्रदान किया। अत: उसका वादा पूरा हो गया।

इसी तरह यह आयत ख़िलाफ़त-ए-राशिदा की सच्चाई पर प्रमाण है। इसलिए इमाम अबुल बरकात लिखते हैं :

و الآیۃ اوضح دلیل علی صحۃ خلافۃ الخلفاء الراشدین رضی اللہ عنھم لان المستخلفین الذین اٰمنوا و عملوا الصالحات ھم ھم۔

(तफसीर नफसी, वर्णित आयत के अन्तर्गत)

कि यह आयत खुलफाए राशेदीन की ख़िलाफ़त के सच्चा होने पर स्पष्ट दलील

है क्योंकि आयत की दृष्टि से जिन नेक और ईमानदारों को ख़लीफ़ा बनाया गया है वह वही थे।"

पहले वाले शाने नुज़ूल से आयत का अर्थ सीमित नहीं हो जाता बल्कि जैसा शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी ने तहकीक़ फ़रमाई है कि शाने नज़ूल का अभिप्राय यह है कि इस अवसर पर भी आयत का अर्थ चरित्रार्थ होता है (अल्फौज़ुल कबीर) अतः आयत इस्तिख़लाफ का वादा किसी एक व्यक्ति या जमाअत तक सीमित नहीं माना जाएगा बल्कि आयत के अवतरण से लेकर क़यामत तक जिन वजूदों पर इस आयत का अर्थ चरित्रार्थ होगा और इस आयत में वर्णन की गई निशानियां जिन पर चरितार्थ होंगी वे सब इसके पात्र होंगे। और स्पष्ट है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद ख़ुलफाए राशेदीन इस आयत के प्रथम पात्र हैं क्योंकि आयत में वर्णन की गई निशानियां सबसे पहले उनके ख़िलाफ़त के युग में पूरी होती हैं। इसके अतिरिक्त निसन्देह यह भी सही है कि जब ख़िलाफ़ते मुहम्मदिया का दामन क़यामत तक फैला है तो इमाम महदी अलैहिस्सलाम भी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक ख़लीफ़ा होगा जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म की दृढ़ता और स्थायित्व के लिए प्रकट होगा।

द्वितीय अध्याय
हबलुल्लाह (अर्थात ख़िलाफ़ते राशिदा) का प्रादुर्भाव

आज से लगभग चौदह सौ वर्ष पहले संसार ने एक आश्चर्य चकित दृश्य देखा जिसका उदाहरण संसार के इतिहास में नज़र नहीं आता। रिसालत के सूर्य का उदय होना था कि घटाटोप अंधकार में डूबी दुनिया अचानक नूर से प्रकाशित हो गई। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भाव से गुमराही के अन्धेरों में भटकने वाली मानवता ने मुक्ति का मार्ग प्राप्त किया। और धरती रूहानियत के सदाबहार खेतों से लहलहाने लगी। एक फना फिल्लाह (अल्लाह तआला में लीन) की अंधेरी रातों की दुआओं ने सारी दुनिया में एक बड़ा इंकलाब पैदा कर दिया कि सदियों के मुर्दे रूहानी तौर पर ज़िन्दा हो गए और गूंगों की ज़बान पर इलाही मआरफ (भेद) जारी हुए। दुनिया में अचानक एक ऐसा इंकलाब पैदा हुआ कि न पहले किसी आँख ने देखा और न किसी कान ने सुना। सम्पूर्ण इन्सान के रूप में अल्लाह तआला के सर्वोत्तम रसूल का यह जलवा बुलन्दियों पर था कि हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त का समय आ पहुँचा। आपके देहान्त पर जान कुरबान करने वाले सहाबा पर क्या गुज़री उनकी ग़म की अवस्था का अंदाज़ा करना कोई आसान बात नहीं। कहने वालों ने सच कहा :

"मदीना हज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कदम से चन्द्रमा की तरह रोशन हो गया और आज हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त पर इससे अधिक अन्धकार पूर्ण स्थान भी हमारी आँखों ने नहीं देखा।"

इस्लाम के शायर (कवि) हज़रत हस्सान बिन साबित रज़ि एक लम्बे समय से अपनी आंखों की रोशनी से वंचित थे परन्तु उस दिन उन्हें पहली बार पूर्णता आभास

हुआ कि वास्तव में आँखों का नूर जाता रहा। कितने दर्द और दुख छुपे हैं उनके शैरों में जो उनकी ज़ुबान पर जारी हुए :

كُنْتَ السَّوَادَ لِنَاظِرِیْ فَعَمِیَ عَلَیْكَ النَّاظِرُ
مَنْ شَاءَ بَعْدَكَ فَلْیَمُتْ فَعَلَیْكَ كُنْتُ اُحَاذِرُ

कि हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तू मेरी आँख की पुतली था आज तेरे मरने से मेरी आँखें अन्धी हो गईं। अब तेरे बाद मुझे क्या परवाह जो चाहे, मरे मुझे तो तेरी ही मौत का डर था।

यह पीड़ादायक अवस्था केवल एक हस्सान बिन साबित रज़ि की ही न थी बल्कि सारे सहाबा ही ग़म के मारे दीवाने हो रहे थे। एक तो वह ग़म था कि वह माँ से भी बढ़कर प्यार करने वाले वजूद की मुहब्बत से जुदा हो गए और दूसरा यह ग़म उनके प्राणों को खाए जा रहा था कि हमारे इस महबूब की इस पवित्र अमानत का कौन ज़िम्मेदार होगा? इस्लाम का क्या बनेगा? कौन इसको सींचेगा और सुरक्षा करेगा? अभी तो बीज रोपण का काम ही हुआ है कौन इसको अपने ख़ून जिगर से सींचेगा और कौन इस मिशन को सम्पूर्णता तक पहुँचाएगा? यह चिन्ता उनकी रूहों को परेशान कर रही थी कि अब इस्लाम का प्रचार-प्रसार और उसकी उन्नति कैसे होगी? इस्लाम की विश्वव्यापी विजय और सहायता, उन्नति व ग़लबा के ख़ुदाई वादे कैसे पूरे होंगे?

इस्लामी इतहिास के इस संगीन मोड़ पर सहाबा किराम की यह हालत थी तभी सच्चे वादों वाले ख़ुदा ने अपने महबूब की उम्मत का हाथ पकड़ा और उसकी रहमत ने ख़िलाफ़त के द्वारा उनके टूटे दिलों को थाम लिया। सामर्थ्यवान ख़ुदा का यह शान्ति प्रदान करने वाला हाथ ख़िलाफ़त की शक्ल में आगे बढ़ा और परेशान दिलों को शान्ति और सन्तोष से भर दिया। मुर्दा दिलों में जान पैदा हो गई कि सामर्थ्यवान ख़ुदा ने एक अनाथ उम्मत के सिर पर हाथ रखकर उन्हें एक मार्गदर्शक प्रदान कर दिया है। जो उनके प्यारे आक़ा का उत्तराधिकारी ठहरा। सहाबा के चेहरे से ख़ुशी चमकने लगी। शरीर को एक सिर मिल गया था। और कारवाँ को एक सालार जिसके सिर पर ख़ुदाई मदद का ताज चमक रहा था। यह प्रादुर्भाव था दूसरी क़ुदरत का, यह

इनाम था ख़िलाफ़त-ए-राशिदा का। यह उस वादे का पूरा करना था जो ख़ुदा तआला ने मोमिनों से कर रखा था। यह पूरा करना था उस शुभ आदेश का कि :

فَعَلَيْكُمْ بِسُنَّتِي وَسُنَّةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِيْنَ الْمَهْدِيِّيْنَ

(तिर्मिज़ी किताबुल इल्म बाब अख़ज़ बिलनुस्ता व इजतिनाब अलबिदअत)

अर्थात: हे मुसलमानो ! तुम पर मेरे और मेरे ख़लीफ़ाओं के आदर्श का अनुकरण अनिवार्य है जिनको ख़ुदा तआला की ओर से हिदायत प्रदान की जाएगी और इस हिदायत की रोशनी में वे मोमिनों का मार्गदर्शन करने वाले होंगे।

ख़िलाफ़त-ए-राशिदा का प्रताप

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की व्यापक और सार्वभौमिक शिक्षा तथा तरबियत और व्यावहारिक मार्गदर्शन के नतीजा में सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम का पवित्र गिरोह इस बात को अच्छी तरह जानता था कि इस्लाम के आदेशों का पालन करने के लिए किस प्रकार की हकूमत की प्रणाली होनी चाहिए। हालांकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने उत्तराधिकारी के बारे में कोई फैसला न किया था बल्कि सहाबा किराम ने क़ुरआन की रोशनी में जान लिया कि इस्लाम में ख़िलाफ़त की प्रणाली स्थापित होनी चाहिए। यह ख़िलाफ़त की प्रणाली ख़ानदानी सीमाओं से ऊपर है इसलिए न वहाँ किसी ख़ानदानी बादशाही की नींव डाली गई, न कोई व्यक्ति शक्ति का प्रयोग करके हुकूमत को पाने वाला बना, न किसी ने ख़िलाफ़त प्राप्त करने के लिए दौड़ धूप की बल्कि चारों सहाबियों को लोग अपनी आज़ाद इच्छाओं से ख़लीफ़ा बनाते चले गए। इन चारों ख़लीफ़ाओं के द्वारा आयत इस्तिख़लाफ में किए गए ख़ुदा तआला के वादे का प्रादुर्भाव दिल प्रतिदिन नई शान में प्रकट हुआ और प्रत्येक बार मोमिनों के दिल ख़ुदा तआला के समक्ष शुक्र की भावना के अनुभव से झुकते चले गए। आइए इन ख़ुलफा किराम के पवित्र ख़िलाफ़त के काल का एक जायज़ा लें ताकि ख़ुदा तआला के वादों की पूर्णता को देखकर आज फिर हम अपने दिलों में ईमान की गर्मी को महसूस करें।

प्रथम ख़लीफ़ा हज़रत अबूबकर सिद्दीक़(रज़ि)

आप का नाम अब्दुल्लाह, कुन्नियत बिन अबू कहाफा, उपाधि सिद्दीक़, और इस्लाम के इतिहास में हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो के नाम से प्रसिद्ध हैं। आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दो साल दो महीने छोटे थे। आप मक्का में पैदा हुए वहीं लालन पालन हुआ। व्यापार के उद्देश्य से आप बाहर सफर पर भी जाया करते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ आपने मक्का से मदीना की ओर हिजरत फरमाई और मदीना में ही देहान्त हुआ।

जाहलियत के युग में कुरैश की शराफत तथा हुकूमत दस ख़ानदानों के अधीन बंटी हुई थी। उन सम्माननीय सरदार ख़ानदानों के नाम निम्नलिखित हैं:

(1) हाशिम (2) अमीर (3) नोफिल (4) अब्दुल वदूद (5) असद (6) तमीम (7) मख़ज़ूम (8) अदी (9) जमअ (10) सहम

हज़रत अबू बकर का सम्बन्ध बनू तमीम से था। आप अपने क़बीला के सरदार और उन दस कुरैश के सरदारों में से एक सरदार थे। माल तथा दौलत में भी प्रभावकारी थे। आप कुरैश में बड़ा उपकार एवं लोगों पर उपकार करने वाले थे। मुसीबतों के समय धैर्य, दृढ़ता से काम लेते और मेहमानों की ख़ूब आतिथ्य करते। सारांश यह कि आप नेकी का पुतला, बुराइयों से दूर, विनम्र प्रकृति और सच्चाई पसन्द करने वाले थे। यही कारण था कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपको इस्लाम की दावत दी तो आपने कुछ भी संकोच न किया और उसी समय स्वीकार कर लिया। आप सहाबा किराम में सबसे अधिक आलिम और नेक थे। जब किसी विषय के बारे में सहाबा किराम में मतभेद होता तो वह विषय हज़रत अबूबकर के सामने प्रस्तुत किया जाता है, आप उस पर जो आदेश देते वह मान्य होता। पवित्र क़ुरआन का ज्ञान आप को सब सहाबा से अधिक था इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपको नमाज़ का इमाम बना दिया। सुन्नत का ज्ञान भी आपको व्यापक तौर से था इसलिए सहाबा

किराम सुन्नत के विषयों में आप ही से पूछा करते थे। आपको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सत्संगति का लाभ आरम्भ से अन्त तक प्राप्त रहा।

सकीफा बनू सईद: और बैअत ख़िलाफ़त

सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बहुत मुहब्बत थी जिस का कारण था कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त का सदमा अचानक सहन करना उनकी अक्लों को समझ नहीं आ रहा था। हज़रत उमर फारूक़ जैसे प्रतापी सहाबी की यह अवस्था थी कि वह आपके देहान्त को स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। ऐसे नाज़ुक अवसर पर हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि की बरकत वाली हस्ती दृढ़ता का पहाड़ बनकर उभरी और सहाबा के लिए पनाह गाह प्रमाणित हुई। जिस समय आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहान्त हुआ हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि वहाँ मौजूद न थे। जब आपको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त का ज्ञान हुआ तो शीघ्र उस कमरे में आए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक माथे को ध्यान से देखा और कहा कि :

"मेरे माता पिता आप पर कुर्बान हों नि:सन्देह आप मृत्यु पा गए हैं जिसे अल्लाह तआला ने आपके लिए मुकद्दर फ़रमाया था और अब हरगिज़ इसके बाद आप को मौत न आएगी।" (उद्धृत तारीख़ इस्लाम भाग प्रथम अकबर शाह नजीब आबादी पृष्ठ 228 प्रकाशक कुतब खाना हमीदिया देहली)

ख़िलाफ़त की बैअत

हज़रत अबूबकर मस्जिद नबवी में तक़रीर कर के सहाबा का आश्चर्य दूर कर चुके थे कि सकीफा बनू सईद: में अन्सार के जमा होने और मुहाजरीन के परामर्श के बिना किसी अमीर या ख़लीफ़ा के बारे में बातचीत होने की ख़बर पहुँची। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद यह इस्लाम पर सबसे अधिक नाज़ुक समय था। यदि इस ख़बर को सुनकर अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह अन्हो ख़ामोश

रहते और इस ओर ध्यान न देते तो अत्याधिक भय था कि मुहाजरीन और अन्सार का भाईचारा एवं प्यार थोड़ी देर में बर्बाद होकर इस्लामी एकता टुकड़े टुकड़े हो जाती परन्तु चूंकि अल्लाह तआला स्वयं इस धर्म की सुरक्षा करने वाला था। उसने अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह अन्हो को हिम्मत तथा दृढ़ता प्रदान की कि प्रत्येक खतरा और प्रत्येक शंका उनकी बुद्धिमत्ता के आगे समाप्त हो गया।

सकीफा बनू सईद: में अमीर या ख़लीफ़ा के बारे में बातचीत की ख़बर सुनकर हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि शीघ्र हज़रत उमर रज़ि अल्लाह और हज़रत अबू उबैदा रज़ि अल्लाह को लेकर सकीफा बनू सईद: की ओर रवाना हुए। यह तीनों बुज़ुर्ग जब भीड़ में पहुँचे तो वहाँ अफरा तफरी मच गई और प्रत्येक बात कर रहा था। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह ने भीड़ को सम्बोधित करके तक़रीर शुरू की। आपने पहले यह परामर्श दिया कि प्रथम मुहाजरीन अमीर हो और अन्सार वज़ीर। आपकी तक़रीर सुनकर हज़रत हुबाब बिन मुन्ज़िर ने फ़रमाया उचित मालूम होता है कि एक अमीर हम (अन्सार) में से हो और एक तुम (मुहाजिर) में से बातचीत के आख़िर में भीड़ से हज़रत बशीर बिन अल-नोमान अल-ख़ज़रज अन्सारी खड़े हुए और उन्होंने फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़बीला क़ुरैश से थे अत: उनकी क़ौम अर्थात कुरैश के लोग ही ख़िलाफ़त के अधिक योग्य हैं। हम लोगों ने बेशक इस्लाम धर्म की मदद की और हम ईमान में प्रथम हैं परन्तु हमारा ईमान लाना और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदद के लिए तत्पर हो जाना केवल इसलिए था कि ख़ुदा तआला हम से राज़ी हो जाए। इसका बदला हम लेना ही नहीं चाहते और न हम ख़िलाफ़त और अमारत के मामला में मुहाजरीन से कोई झगड़ा करना चाहते हैं। इसी तरह आपने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस الائمۃ من قریش अर्थात इमाम क़ुरैश में से होंगे, पढ़ कर लोगों पर हकीक़त स्पष्ट की। जिस पर सारी भीड़ क़ुरैश में से अमीर बनने के हक में हो गई और अन्सार तथा मुहाजरीन का मतभेद अचानक दूर हो गया। अब हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह ने फ़रमाया के ये उमर और अबू उबैदा मौजूद हैं तुम इन दोनों में से

एक को पसन्द कर लो। हज़रत अबू उबैदा रज़ि अल्लाह और हज़रत उमर रज़ि ने कहा कि नहीं हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि मुहाजरीन में सबसे श्रेष्ठ और प्रतिष्ठित हैं। यह गुफा में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी थे और नमाज़ की इमामत भी कराते रहे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इनको अपना प्रतिनिधि बनाया और नमाज़ धर्म के मामले में सबसे प्राथमिक और श्रेष्ठ विषय है। हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह अन्हो के होते हुए कोई दूसरा ख़िलाफ़त अथवा इमारत का अधिकारी नहीं हो सकता। यह कहने के बाद सबसे पहले हज़रत उमर फारूक़ रज़ि ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह के हाथ पर बैअत की और उनके बाद हज़रत अबू उबैदा रज़ि और हज़रत बशीर बिन सअद अन्सारी रज़ि अल्लाह ने बैअत की और इनके बाद चारों ओर से लोग बैअत के लिए टूट पड़े। यह ख़बर बाहर पहुंची तो सारे लोग सुनते ही दौड़ पड़े। फिर सारे मुहाजरीन तथा अन्सार ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहो अन्हो के हाथ पर बिना किसी मतभेद से सर्व सहमति से बैअत कर ली।

हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाहो का ख़ुत्बा

बैयत सकीफा से वापस आकर अगले दिन आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दफनाने से फारिग़ होकर मस्जिद नबवी में हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि ने मेम्बर पर बैठ कर सब लोगों से बैअत ली बाद में खड़े होकर ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया और प्रशंसा तथा नअत के बाद लोगों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि :

"मैं तुम्हारा सरदार बनाया गया हूँ हालांकि मैं तुमसे अधिक बेहतर नहीं हूँ। अतः यदि मैंनेक काम करूँ तो तुम्हारा कर्तव्य है कि मेरी मदद करो और यदि मैं कोई ग़लत रास्ता चुनूं तो कर्तव्य है कि मुझे सीधे रास्ते पर स्थापित करो। सच्चाई अमानत है और झूठ बोलना ख़यानत। तुम में से जो बूढ़ा है वह मेरे निकट मज़बूत है जब तक कि मैं उसका हक न दिलवा दूँ और तुम में से जो दृढ़ है वह मेरे निकट बूढ़ा है जब तक कि मैं उसका हक न ले लूँ, तुम लोग जिहाद को न छोड़ना जब कोई क़ौम जिहाद को छोड़ देती है तो वह अपमानित हो जाती है जब तक कि मैं अल्लाह और

रसूल का आज्ञापालन करूँ तुम मेरी आज्ञापालन करो जब मैं अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करूँ तो तुम मेरा साथ छोड़ दो क्योंकि फिर तुम पर मेरी आज्ञापालन फर्ज़ नहीं है।" (तारीख़ इस्लाम भाग प्रथम लेखक अकबर शाह नजीब आबादी पृष्ठ 257)

उस दिन 33 हज़ार सहाबा किराम रज़ि ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु के हाथ पर बैअत की। बैयत सकीफा के बाद मदीना मुनव्वरा में मुहाजरीन तथा अन्सार में उस मतभेद का कोई नामो निशान भी न रह गया जो बैअत से पहले मुहाजरीन तथा अन्सार में मौजूद था।

हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु के हाथ पर सारी क़ौम का एक साथ जमा हो जाना और आप को अपना ख़लीफ़ा चुनना और आपके द्वारा भय का अमन की अवस्था में बदलना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि ख़लीफ़ा स्वयं अल्लाह तआला चुनता है और आयत इस्तिख़लाफ में जो महान बातें वर्णन हैं उनके अनुसार अल्लाह तआला ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि को अपना ख़लीफ़ा चुना और आपके द्वारा इस्लाम की नींव को सुदृढ़ कर दिया। इस हकीक़त को ख़ुदा तआला के एक और सच्चे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहब ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला ने इन शब्दों में वर्णन किया है। आप फ़रमाते हैं :

"हमारा मानना है कि ख़लीफ़ा ख़ुदा बनाता है। यदि बन्दों पर इसको छोड़ा जाता तो भी बन्दों की नज़र में (जो) बड़ा होता उसे ही वे अपना ख़लीफ़ा बना लेते परन्तु ख़लीफ़ा ख़ुद अल्लाह तआला बनाता है और उसके चुनाव में कोई ख़राबी नहीं। वह एक कमज़ोर इन्सान को चुनता है जिसे वे तुच्छ समझते हैं। फिर अल्लाह तआला इसे चुन कर उस पर अपनी महानता और सामर्थ्य का एक तेज प्रकट करता है तब वह ख़ुदा की क़ुदरतों में छिप जाता है। और अल्लाह तआला उसे उठा कर अपनी गोद में बिठा लेता है और जो उसके विरोधी होते हैं उनसे कहता है कि मुझ से लड़ो यदि तुम में लड़ने की ताकत है। अब यह मेरी पनाह में आ गया है ऐसा क्यों होता है? इसलिए कि ख़ुदा तआला यह प्रमाणित करना चाहता है कि ख़िलाफ़त के चयन के समय उसकी ही इच्छा होती है और बन्दों की अक्लें कोई काम नहीं देती।"

(अलफज़ल 17 मार्च 1967)

दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु

आप क़ुरैश के सम्माननीय लोगों में से थे। जाहिलियत के युग में आपके ख़ानदान से सिफारत विशिष्ट थी अर्थात जब क़ुरैश की किसी दूसरे क़बीला से लड़ाई होती तो आप रज़ि के बुज़र्गों को सफीर (राजदूत) बना कर भेजा जाता था। आप रज़ि का वंश आठँवी पीढ़ी में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वंश से मिल जाता है। आपकी कुन्नियत अबू हफज़ थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपको फारूक़ के उपनाम से विभूषित फ़रमाया था। आप रज़ि हिजरी नब्वी से चालीस वर्ष पूर्व पैदा हुए थे। लड़कपन में ऊंट चराया करते था, जवान होने के बाद अरब के नियमानुसार वंशावली, शस्त्र विद्या, घुड़ासवारी और पहलवानी की शिक्षा प्राप्त की। आप की गिनती अरब के प्रसिद्ध पहलवानों में होती थी।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भाव के समय फ़तूहुल बुलदान की रिवायत के अनुसार क़ुरैश में केवल 17 व्यक्ति ऐसे थे जो लिखना पढ़ना जानते थे उनमें हज़रत उमर रज़ि भी थे। आप चालीस पुरुषों और ग्यारह औरतों के बाद इस्लाम लाए। कुछ लोगों का कथन है कि 39 मर्दों और 30 औरतों के बाद और जब कि कुछ के निकट 45 मर्दों और 11 औरतों के बाद इस्लाम में दाख़िल हुए। आप आरम्भिक ईमान लाने वालों और अशरः मुबश्शरः (वे दस प्रसिद्ध सहाबी जिन को इस संसार में ही आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जन्नती होने की शुभ सूचना दी थी।) में हैं। आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के खुसर भी हैं। आप बड़े बड़े विद्वानों और प्रसिद्ध सहाबा किराम में गिने जाते थे।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि का हुलिया

हज़रत फारूक़ आज़म रज़ि का रंग गोरा था। परन्तु सुर्ख़ी उस पर छायी हुई थी। कद बहुत लम्बा था पैदल चलने में मालूम होता था कि जैसे कि किसी सवारी पर जा

रहे हैं। गालों पर मांस कम था। मूँछे बड़ी, सिर के बाल सामने से झड़ गए थे। इब्नि असाकर ने रिवायत की है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाह अन्हु लम्बे कद और भारी भरकम शरीर वाले थे, रंगत में सुर्खी ग़ालिब थी गाल पिचके हुए और मूँछे बड़ी थीं। और इनके दोनों ओर लाली थी।

ख़ुदाई वादे का पुनः पूरा होना

इंसान इस दुनिया में नश्वर है और एक न एक दिन उसे इस दुनिया को छोड़ कर जाना है। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि ने जब यह महसूस किया कि अब उनका अंतिम समय निकट है तो आपको उम्मत की फिक्र सताने लगी। जमादिउस् सानी 13 हिजरी के महीने के शुरू में आप (अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि) को बुख़ार हुआ। 15 दिन तक लगातार आप को बहुत अधिक बुख़ार रहा। जब आप को यक़ीन हो गया कि आख़री समय निकट आ पहुँचा है तो आप ने सबसे पहले हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ को बुला कर ख़िलाफ़त के बारे में मश्वरा किया। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि से आपने फ़रमाया कि उमर के कठोर हृदय वाला होने का कारण केवल यह है कि मैं उनकी अपेक्षा विनम्र स्वभाव रखता था। मैंने स्वयं अंदाज़ा कर लिया है कि जिस मामले में मैं नर्मी करता था उस में उमर की राय सख़्ती की ओर झुकी हुई नज़र आती थी परन्तु जिन मामलों में मैंने सख़्ती से काम लिया उन में उमर हमेशा नर्मी का पहलू अपनाया करते थे। मेरा विचार है कि ख़िलाफ़त उनको अवश्य नर्म दिल और संतुलित व्यवहार वाला बना देगी। इसके बाद आपने हज़रत उस्मान रज़ि, हज़रत अली करमहुल्लाह अन्हु और हज़रत तलहा रज़ि से इस बारे में मश्वरा किया। फिर आप ने हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि को बुला कर वसीयत नामा लिखने का आदेश दिया। बीमारी अधिक बढ़ जाने के कारण आप रुक-रुक कर बोलते जाते और हज़रत उस्मान लिखते जाते थे इस वसीयत नामा का लेख यह था -

"यह वह अहद है जो अबू बकर, ख़लीफ़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस समय किया है जब कि उसका आख़री समय दुनिया में है और

प्रथम समय आख़िरत का। ऐसी हालत में काफिर भी ईमान लाता और फाजिर भी यकीन ले आता है। मैंने तुम लोगों पर उमर बिन अल्-ख़त्ताब रज़ि को नियुक्त किया है और मैंने तुम लोगों की भलाई और बेहतरी में कोई कोताही नहीं की अत: यदि उमर रज़ि ने धैर्य तथा न्याय से काम लिया तो यह मेरी उसके साथ वाक़फियत थी और यदि बुराई की तो मुझ को ग़ैब का ज्ञान नहीं है और मैंने तो बेहतरी और भलाई का इरादा किया है और प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों के फल से सामना करना पड़ना है।"

जब यह पंक्ति लिखी जा चुकी तो आपने आदेश दिया कि लोगों को पढ़ कर सुना दो और फिर स्वयं उस बीमारी की हालत में ही बाहर पधारे और मुसलमानों को सम्बोधित करके फ़रमाया कि मैंने अपने किसी प्यारे रिश्तेदार को ख़लीफ़ा नहीं बनाया बल्कि उत्तम राय वाले लोगों से परामर्श करने के बाद ख़लीफ़ा बनाया है। अत: क्या तुम लोग उस व्यक्ति के ख़लीफ़ा होने पर राज़ी हो जिसको मैंने तुम्हारे लिए चुना है। यह सुनकर लोगों ने कहा कि हम आपके चयन को और मश्वरा को पसन्द करते हैं। फिर हज़रत सिद्दीक़ अकबर ने फ़रमाया कि तुम को चाहिए के उमर फारूक़ का कहना सुनो और उसका आज्ञापालन करो। अत: सब ने आज्ञापालन का इक़रार किया।

यह तहरीर और वसीयत इत्यादि की कारवाई 22 जमादीउस्सानी 13 हिजरी सोमवार के दिन हुई। इसके उपरान्त 22 और 23 की मध्य रात्रि को नमाज़ मग़रिब के बाद हज़रत अबूबकर रज़ि का देहान्त हो गया। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन।

प्यारे पाठको! अल्लाह तआला ने हज़रत उमर फारूक़ के द्वारा उस बीज को जिसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस्लाम के रूप में बोया था और जिसे हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि ने सींच कर पुन: परवान चढ़ाया और इस्लाम को उन्नति की मंज़िलें प्रदान कीं। हज़रत उमर का ख़िलाफ़त का युग, ख़िलाफ़त-ए-राशिदा का ही सुनहरी युग ख़िलाफ़त है और आपके चुनाव के द्वारा

अल्लाह तआला ने पुनः आयत इस्तिख़लाफ के विषय को मोमेनीन पर प्रकट फ़रमाया और इस बात को प्रमाणित किया कि हज़रत अबूबकर रज़ि का चुनना सही था। हज़रत उमर फारूक़ लगभग 10 वर्ष ख़िलाफ़त के महत्त्वपूर्ण पद पर आसीन रहे। आपके द्वारा ख़ुदा तआला के असंख्य निशान और समर्थन प्रकट हुए। आयत इस्तिख़लाफ में अल्लाह तआला ने ख़लीफ़ाओं की ख़ुदाई सहायता और उनके द्वारा भय को अमन में बदलने का वादा फ़रमाया है। हज़रत उमर रज़ि के ख़िलाफ़त काल में हमें विशेष रूप से अमन तथा शान्ति की हालत नज़र आती है। बेशक मुसलमानों ने हक़ के लिए लड़ाइयां लड़ीं और सफल हुए परन्तु उनके द्वारा हमेशा भय तथा अशान्ति से पीड़ित लोगों को अमन चैन प्राप्त हुआ। यहाँ तक कि कई बार युद्ध क्षेत्र के लोग दुआ करते थे कि मुसलमान पुनः उन पर शासक बनें।

हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हो की विशेषताओं में से एक विशेषता न्याय है जिसके कुछ उदाहरण पढ़ने वालों के ईमान में वृद्धि के लिए प्रस्तुत हैं।

अदल-ए-फारूक़ी के गुणगान

हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो के ख़िलाफ़त के युग में इस्लामी सल्तनत अरब के मरुस्थल से निकल कर रोम तथा फारस की महान सल्तन्तों को अपने अधीन कर चुकी थी और विभिन्न धर्म, सभ्यता और तहज़ीब से सम्बन्ध रखने वाले लोग इस्लामी सल्तनत के अधीन आ चुके थे। वे सब इस्लामी सल्तनत के वफादार और जान कुरबान करने वाले बन चुके थे। उन को कुरबान करने वाला बनाने में जहाँ दूसरी बातें काम कर रही थीं वहां उन में हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो का प्यार तथा मुहब्बत का व्यवहार और फारूक़ी न्याय का विशेष स्थान है। यह अदल फारूक़ी ही था जिस ने उन्हें ईरान के बादशाहों से बेग़ाना बनाकर हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो का फरज़ाना तथा दीवाना बना दिया था। आपके युग में दोस्त दुश्मन का कोई अन्तर न था। अपने पराए, मुसलमान ग़ैर मुस्लिम, अरबी अज्मी में कोई अन्तर न किया जाता था।

आपके के न्याय तथा इंसाफ के विभिन्न किस्से हदीसों तथा इतिहास की पुस्तकों में मिलते हैं। उनमें से कुछ एक प्रस्तुत हैं :

एक बार एक यहूदी और मुसलमान का मुकदमा प्रस्तुत हुआ। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने यहूदी के हक में फैसला दिया। वह अपने आप बोल पड़ा आपने इंसाफ के साथ फैसला किया।

(मौता इमाम मालिक किताबुल कज़ीया बाब अल तरग़ीब फिल कज़ा)

फैसला हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो के खिलाफ भी हो तो दिल से स्वीकार फ़रमाते। एक बार आपने एक व्यक्ति से पसन्द की शर्त पर घोड़ा ख़रीदा और परीक्षा के लिए एक सवार को दिया। घोड़ा सवारी में चोट खाकर दाग़ी हो गया। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने उसको वापस करना चाहा। घोड़े के मालिक ने इन्कार किया इस पर बहस हुई। मामला काज़ी शरीअ की अदालत तक पहुँचा उन्होंने यह फैसला किया के घोड़े के मालिक से आज्ञा लेकर सवारी की गई थी तो घोड़ा वापस हो सकता है। वरना नहीं। (अलफारूक़ लेखक मौलाना शिबली नौमानी पृष्ठ 324)

हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो के ख़िलाफ़त के युग की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि हुकूमत की नज़र में अमीर तथा ग़रीब प्यारे तथा बेगाने सब का एक रुतबा था। सीरिया के एक प्रसिद्ध मुखिया बल्कि बादशाह का किस्सा है जो बाद में मुसलमान हो गया था कि काबा के तवाफ में उसकी चादर का एक किनारा एक व्यक्ति के पैर के नीचे आ गया। बादशाह ने उसके मुँह पर चांटा मारा। उसने भी उत्तर उसी अंदाज़ में दिया। बादशाह क्रोधित हो गया और हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो के पास आया हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने उसकी शिकायत सुनकर कहा "तुम ने जो कुछ किया इसकी सज़ा पाई " उसको सख़्त हैरानी हुई और कहा कि हम इस रूतबे के लोग हैं कि यदि कोई हमारे आगे गुस्ताख़ी करे तो कत्ल का अधिकारी होता है। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने फ़रमाया जाहिलियत में ऐसा ही था परन्तु इस्लाम ने छोटे तथा बड़े को एक कर दिया। उसने कहा यदि इस्लाम ऐसा धर्म है जिसमें शरीफ तथा असभ्य में कुछ अन्तर नहीं तो मैं इस्लाम से दूर होता हूँ। अत: वह छुप कर क़ुिस्तुनतुनिया चला गया परन्तु हज़रत उमर रज़ि अल्लाह

अन्हो ने उसके लिए इंसाफ को बदलना पसन्द न किया।

(अलफारूक़ लेखक मौलाना शिबली नौमानी पृष्ठ 438-439)

हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो का इंसाफ ग़रीब और छोटे बड़े में कोई अन्तर न करता था बल्कि "सच्चाई सच्चे को मिले" वाला मामला था। मिस्र के गवर्नर के एक बेटे ने एक देहाती को मारा और साथ कहा मैं बड़ों की औलाद हूँ जो चाहूँ करूँ। गवर्नर ने उस देहाती को कैद कर दिया कि कहीं अमीरुल मोमेनीन के पास पहुँच कर शिकायत न कर दे। आख़िर जब वह कैद से छूटा तो सीधा मदीना जा पहुँचा और जाकर सारा किस्सा वर्णन कर दिया। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने उसे वहीं ठहराया और मिस्र के गवर्नर और उसके बेटे को बुला भेजा। जब वह आ गए तो हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने बुलन्द आवाज़ में कहा "मिस्री कहाँ है" यह ले कोड़ा और बड़े की औलाद को मार। मिस्री ने इसे ख़ूब मारा जब जी भर के मार चुका और वह वापस जाने लगा तो हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने फ़रमाया गवर्नर को भी मार क्योंकि यदि इसे बाप की हुकूमत का घमन्ड न होता तो हरगिज़ तुझे न मारता। फिर गवर्नर को सम्बोधित होकर फ़रमाया :

"अमीरो तुम ने लोगों को कब से ग़ुलाम बना लिया? उनकी माताओं ने इन्हें आज़ाद पैदा किया था।" (उमर फारूक़ आज़म लेखक मुहम्मद हुसैन हीकल पृष्ठ 595)

हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने एक बूढ़े को भीख मांगते हुए देखा तो पूछा तू भीख क्यों माँगता है उसने कहा मुझ पर जज़िया लगाया गया है हालांकि मैं बिल्कुल ग़रीब हूँ। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो उसे अपने घर ले आए और कुछ नकद रकम देकर बैयतुल माल के अधिकारी को लिखा के इस किस्म के ज़िम्मी दरिद्रों के लिए भी वज़ीफा निर्धारित कर दिया जाए। अल्लाह की क़सम यह इंसाफ नहीं है कि इनकी जवानी से हम फाइदा उठाएं और बुढ़ापे में इनकी ख़बर न लें।

(सैरुस्सहाबा रज़ि अल्लाह अन्हुम, लेखक हबीबुर्रहमान नदवी भाग - 1 पृष्ठ 151)

प्रिय पाठको। आयत इस्तिख़्लाफ में अल्लाह तआला ने मोमिनों से ख़िलाफ़त की स्थापना का वादा फ़रमाया है और ख़लीफ़ाओं की सहायता का वादा फ़रमाया है अर्थात ख़ुदा तआला जिसको ख़लीफ़ा बनाता है उसे अपना समर्थन

भी देता है। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो सच्चे ख़लीफ़ा थे। आप रज़ि अल्लाह अन्हो के द्वारा भी ख़ुदा तआला ने अपने गुणों को प्रकट फ़रमाया और लोगों को समय के ख़लीफ़ा ज्ञान, इरफान तथा इंसाफ के नज़ारे दिखाए। ख़ुदा के एक और सच्चे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीरूद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो फ़रमाते हैं:-

"ख़ुदा तआला जिस व्यक्ति को ख़िलाफ़त पर खड़ा करता है वह उसको युग के अनुसार ज्ञान भी प्रदान करता है यदि वह अज्ञानी, जाहिल और बेवकूफ होता है ..... तो इसके क्या अर्थ हैं कि ख़लीफ़ा स्वयं ख़ुदा तआला बनाता है इसके तो अर्थ ही यह हैं कि जब किसी को ख़ुदा ख़लीफ़ा बनाता है तो उसे अपने गुण देता है यदि वह उसे अपनी ख़ूबी नहीं देता तो ख़ुदा तआला के ख़ुद ख़लीफ़ा बनाने के अर्थ ही क्या हैं।"

(अलफज़ल 22 नवम्बर 1950 ई अलफुरकान मई जून 1967 पृष्ठ 37)

तीसरे ख़लीफ़ा हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि०

ख़ुलफ़ाए राशेदीन के तीसरे चमकदार मोती हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाह अन्हो हैं। आपकी वंशावली उस्मान बिन अफ़्फ़ान बिन अबुल आस बिन उम्मीद बिन अब्दुल शम्स बिन अब्दे मनाफ। आपकी कुनियत अबु उमर तथा अबू अब्दुल्लाह थी। जाहिलियत के युग में आपकी कुनियत अबु उमर थी मुसलमान होने के बाद हज़रत रुकय्या से आपके यहाँ हज़रत अब्दुल्लाह पैदा हुए तब आपकी कुनियत अबू अब्दुल्लाह हो गई। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आपकी वंशावली मिलती है। हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो के अतिरिक्त और कोई दूसरा व्यक्ति नहीं हुआ जिसकी शादी में किसी नबी की दो बेटियां आई हों। इसी कारण आप "ज़ुन्नूरैन" कहलाए। हज़रत रुकय्या रज़ि अल्लाह अन्हा के देहान्त के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उम्मे कुलसूम रज़ि अल्लाह अन्हा का निकाह आप से कर दिया।

आपका हुलिया

आप मध्यम कद के सुन्दर व्यक्ति थे। दाढ़ी घनी थी जिसको मेहंदी से रंगीन रखते थे। आपकी हड्डी चौड़ी थी। रंगत में सुर्ख़ी झलकती थी, पिंडलियां भरी भरी थी, हाथ लम्बे, सिर पर घुंघराले बाल थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हज़म रज़ि अल्लाह अन्हो फ़रमाते हैं कि हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो से अधिक सुन्दर किसी मर्द या औरत को मैंने नहीं देखा।

आप लज्जा के गुण में विशेष रूप से प्रसिद्ध थे। हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ि अल्लाह अन्हो का कहना है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस तरह उस्मान ख़ुदा और इसके रसूल से लज्जा करते हैं फरिश्ते उनसे लज्जा करते हैं। आप ज़ू हिजरतैन (दो हिजरत करने वाले) थे अर्थात आपने हब्शा की हिजरत भी की और मदीना की भी। आप शक्ल तथा आदतों में आँहज़रत

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बहुत मिलते जुलते थे। हज के नियम सबसे अच्छा आप जानते थे। आप शुरू मुसलमानों में से थे। आप अशरा मुबशरा में से थे। इब्ने इस्हाक फ़रमाते हैं कि आप हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हो, हज़रत अबु बकर रज़ि अल्लाह अन्हो, और हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ि अल्लाह अन्हो के बाद चौथे नम्बर पर ईमान लाए थे।

ख़िलाफ़त का चयन

हज़रत फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाह अन्हो ने ख़लीफ़ा चुनने के लिए तीन दिन की छूट दी थी और जिन आदमियों को ख़लीफ़ा बनने के चुना था वे हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो, हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हो, हज़रत ज़ुबैर रज़ि अल्लाह अन्हो, हज़रत सअद रज़ि अल्लाह अन्हो, हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि अल्लाह अन्हो और हज़रत तलहा रज़ि अल्लाहो अन्हो थे। इनके साथ हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाह अन्हो को राय देने की आज्ञा दी थी ताकि सहाबा शूरा के सहाबा ताक (विषम) अर्थात 7 हो जाए। परन्तु हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के लिए पहले से आपने कह दिया था के इनको हरग़िज़ ख़लीफ़ा न चुना जाए। हज़रत उमर फारूक़ के देहान्त तथा दफनाने के बाद ये व्यक्ति ख़लीफ़ा के चुनने के लिए एक स्थान पर जमा हुए। सबसे पहले हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि अल्लाह अन्हो ने खड़े होकर कहा कि जो लोग ख़िलाफ़त के लिए नामंकित किए गए हैं उन में से कौन ऐसा है जो अपने आपको ख़िलाफ़त के लिए अपने हटा ले। उसको यह हक दिया जाएगा कि वह जिसको तुम में से उत्तम तथा योग्य समझे उसको ख़लीफ़ा बना दे। इस बात को सुनकर उन में से किसी ने कोई उत्तर न दिया सब चुप रहे, थोड़ी देर प्रतीक्षा के बाद हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि अल्लाह अन्हो ने फिर घोषणा की कि मैं अपने आपको ख़िलाफ़त से हटाता हूँ और ख़िलाफ़त के चुनाव के काम को अंजाम देने पर तैयार हूँ, यह सुन कर सब ने समर्थन किया और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ को अधिकार दिया कि आप जिस को चाहें हम में से

ख़लीफ़ा चुन लें।

इस बात पर राज़ी हो जाने के बाद भीड़ अलग हो गई और लोग अपने घरों को चले गए। अभी तीन दिन की छूट बाकी थी। इन तीन दिनों में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि अल्लाह अन्हो बराबर महान सहाबा से इनकी राए पूछते रहे स्वयं भी चिन्तन में व्यस्त रहे। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि अल्लाह अन्हो से रिवायत है कि मैंने हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो से अलग जाकर पूछा कि यदि मैं आपसे बैअत न करूँ तो आप मुझे किसकी बैअत करने की राय देते हैं? उन्होंने कहा के आप को हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हो के हाथ पर बैअत करनी चाहिए। फिर मैंने हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हो से अकेले में यही प्रश्न किया तो उन्होंने हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो का नाम लिया। फिर मैंने हज़रत ज़ुबैर रज़ि अल्लाह अन्हो से पूछा तो उन्होंने कहा कि हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हो या हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो दोनों में से किसी एक के हाथ पर बैअत कर लो। फिर मैंने और परामर्श देने वाले लोगों से कहा तो बहुत राय हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो के बारे में प्रकट हुई। तीन दिन छूट की आख़री रात को फिर ऊपर लिखे गए लोग जमा हुए। और परामर्श हुए। इन्हीं बातों में सुबह हो गई। यही सुबह ख़लीफ़ा के चुनाव के ऐलान होने की सुबह थी। लोग प्रतीक्षा कर रहे थे। नमाज़ फजर के बाद सारी मस्जिद नब्वी आदमियों से खचाखच भर गई। सारे लोग मस्जिद में हाज़िर थे और प्रतीक्षा कर रहे थे कि देखें हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि अल्लाह अन्हो क्या फैसला सुनाते हैं।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि अल्लाह अन्हो उठे और भीड़ को सम्बोधित करके कहा जहाँ तक मेरी ताकत में था मैंने प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक गिरोह की राय मालूम कर ली और इस काम में किसी अज्ञानता और कुप्रबन्ध को नहीं आने दिया और मैं अपनी सारी ताकत सही फैसले तक पहुचँने के लिए लगा चुका हूँ। यह कह कर उन्होंने हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाह अन्हो को अपने पास बुलाया और कहा कि ख़ुदा और रसूल के आदेशों और सुन्नत शैख़ैन पर चलने का इक़रार

करो। उन्होंने इक़रार किया कि मैं ख़ुदा और रसूल के आदेश और सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह अन्हो तथा उमर फारूक़ के नमूने पर चलने की कोशिश करूँगा। इनके बाद सब लोग हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो के हाथ पर बैत करने लगे। और यूँ ख़ुदा का मोमेनीन के साथ किया गया वादा फिर प्रकट हुआ, उम्मत को एक सायबान प्राप्त हुआ और इस्लाम फिर उन्नति की राह पर चलने वाला हो गया।

अल्लाह तआला ने आयत इस्तिख़लाफ में ख़लीफ़ा स्वयं बनाने की ज़िम्मेदारी ली है और जिसको ख़ुदा तआला एक बार ख़लीफ़ा बनाता है फिर किसी इंसान के लिए यह संभव नहीं कि वह उसे ख़िलाफ़त से स्थगित कर सके या उसे हटा सके इस तरह ख़ुदा तआला जिसको ख़लीफ़ा बनाता है उससे युग के अनुसार काम भी स्वयं लेता है और जिस काम का महत्व सबसे अधिक होता है समय के ख़लीफ़ा का ध्यान उस ओर हो जाता है। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाह अन्हो के समय में भी बेशक इस्लामी विजय जारी रहें परन्तु आपके युग का सबसे प्रमुख कारनामा इशाअत पवित्र क़ुरआन है।

30 हिजरी की घटना है कि हज़रत हुज़ैफा बिन अलयमान रज़ि अल्लाह अन्हो जब बसरा, कूफा, शाम आदि से होते हुए मदीना मुनव्वरा में वापस तशरीफ लाए तो उन्होंने कहा कि यह अजीब बात है कि इराक वाले पवित्र क़ुरआन को एक अन्य किरत से पढ़ते हैं और शाम वाले किसी दूसरी किरत को पसन्द करते हैं। बसरा वालों की किरत कूफा वालों से और कूफा वालों की किरत फारस के लोगों से अलग है। उचित यह मालूम होता है कि सब को एक ही किरत पर जमा किया जाए।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाह अन्हो ने सहाबा किराम को जमा करके मज्लिस मुशावरत का आयोजन किया सब ने हुज़ैफा बिन अलयमान रज़ि अल्लाह अन्हो की राय को पसन्द किया। इसके बाद हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाह अन्हो ने हज़रत हफसा रज़ि अल्लाह अन्हा के पास से पवित्र क़ुरआन का वह नुस्ख़ा मंगवाया जो ख़िलाफ़त सिद्दीक़ी रज़ि अल्लाह अन्हो में हज़रत ज़ैद बिन

प्रमाणित रज़ि अल्लाह अन्हो और दूसरे सहाबा के द्वारा जमा और संकलित हुआ था और पहले हज़रत अबु बकर रज़ि अल्लाह अन्हो के पास फिर इनके बाद फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाह अन्हो इससे तिलावत करते थे। और फारूक़ आज़म रज़ि अल्लाह अन्हो की शहादत के बाद हज़रत हफसा रज़ि अल्लाह अन्हो के पास था। इस पवित्र क़ुरआन की नकल और लिखने पर हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाह अन्हो ने उचित और उपयुक्त लोगों को निर्धारित किया जब बहुत सी नकलें तैयार हो गईं तो एक-एक नुस्ख़ा बड़े बड़े शहरों में भेज कर साथ ही आदेश भेजा कि सब इसी के अनुसार पवित्र क़ुरआन नक़्ल कराएँ और पहले जो नक़्ल उनके पास हो वे जला दी जाएँ।

हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो का यह कारनामा इतना महान है कि बाकी सारे कारनामे इसके सामने छोटे हैं। आपके इस कारनामा के कारण क़यामत तक के लिए पवित्र क़ुरआन उम्मत में एक हो गया इसी प्रकार इस में से किसी किस्म की लिखने व किरत की ग़लती की संभावना ख़त्म हो गई। आज बेशक उम्मत मुस्लिमा अन्य मस्लों में मतभेद करती है और क़ुफर व तक़फीर तक की नौबत पहुँच जाती है परन्तु पवित्र क़ुरआन के ज़ेर तथा ज़बर के एक जैसे होने में सारी उम्मत की सहमति है और आज सारे फिर्क़े एक पवित्र क़ुरआन की ही तिलावत करते हैं। हज़रत उस्मान ग़नी ख़लीफ़ा सालिस रज़ि अल्लाह अन्हो के द्वारा यह ख़िलाफ़त का एक ऐसा महान कारनामा है कि दुनिया की कोई क़ौम इसका मुकाबला नहीं कर सकती।

हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो की और भी बहुत सी विशेषताएं हैं जिनमें कुछ नीचे वर्णन की जा रही हैं :

"हज़रत इब्न असाकर फ़रमाते हैं कि हज़रत अमीरूल मोमेनीन उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाह अन्हो ने इरशाद फ़रमाया के मेरी ये दस अमानतें ख़ुदा तआला के पास हैं।

1- आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेअसत (प्रादुर्भाव) के बाद

चौथा मुसलमान हूँ।

2- आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेटी का निकाह मुझ से हुआ।

3- जब इनका देहान्त हो गया तो दूसरी बेटी मेरे निकाह में आई।

4- मैंने कभी राग का शोक नहीं किया।

5- बुराई की तमन्ना कभी मेरे दिल में पैदा नहीं हुई।

6- जिस दिन मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बैअत की है अपना दाहिना हाथ शर्मगाह को नहीं लगाया।

7- प्रत्येक जुम्अः को मैंने एक ग़ुलाम आज़ाद किया है यदि संयोग से भूल हुई तो कज़ा अदा की।

8- कभी मैंने व्यभिचार नहीं किया। न जाहिलियत के ज़माने में न इस्लाम में।

9- जाहिलियत के ज़माने में या इस्लाम में कभी चोरी नहीं की।

10- पवित्र क़ुरआन को हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग के अनुसार इकट्ठा किया।

(उद्धृत सीरत उस्मान प्रकाशक ताज कम्पनी लिमीटड लाहौर पृष्ठ 24 -25)

चौथे ख़लीफ़ा हज़रत अली रज़ि०

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ुलफ़ाए राशेदीन की लड़ी के आख़री मोती हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हो हैं। आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचेरे भाई और दमाद भी थे अर्थात हज़रत फातमा रज़ि अल्लाह अन्हा सुपुत्री आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पति थे। आप दरिमयाने क़द वाले थे भारी शरीर सिर के बाल कुछे उड़े हुए बाकी सारे शरीर पर बाल लम्बे और घने, दाढ़ी गेहूएं रंग की थी।

आप बहुत सी विशेषताओं के कारण तारीख़ इस्लाम में अग्रणी हैं। आप बच्चों में सबसे पहले इस्लाम स्वीकार करने वाले थे। आप उन लोगों में से थे जिन्होंने पवित्र क़ुरआन को जमा करके आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में प्रस्तुत किया था। आप बनी हाशिम में सबसे पहले ख़लीफ़ा थे। आप ने बचपन से कभी बुतों की पूजा नहीं की। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब मक्का से मदीना की ओर हिजरत की तो आप को मक्का में इसलिए छोड़ गए कि सारी अमानतें लोगों को पहुँचा दें सिवाए एक जंग तबूक के अन्य सारी लड़ाइयों में आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सम्मिलित हुए। जंग तबूक जाते समय आपको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना का आमिल अर्थात प्रतिनिधि बना गए थे। जंग ख़ैबर में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने झन्डा आपके हाथ में दिया था और पहले से फर्मा दिया था कि ख़ैबर आपके हाथ पर विजय होगा। आपको अपनी कुनियत अबू तुराब बहुत पसन्द थी। जब कोई व्यक्ति आपको इस नाम से पुकारता था तो आप बहुत ख़ुश होते थे। इस नाम का कारण यह है कि एक दिन आप घर से निकल कर मस्जिद में आए और वहीं पर सो गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ लाए और हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हो को उठाया तो इनके शरीर से मिट्टी पोंछते जाते थे और फ़रमाते

जाते थे कि अबू तुराब उठो।

ख़िलाफ़त का चयन

मिस्र कूफा और बसरा के बाग़ियों ने जब मदीना मुनव्वरा में दाख़िल होकर हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाहो अन्हो को शहीद कर दिया तो इसके बाद मदीना में लगभग एक सप्ताह आफती बिन हरब अक़्क़ी बाग़ियों के सरदार की हुकूमत रही। वही प्रत्येक पर हुक्म जारी करता और वही नमाज़ों की इमामत कराता था। इसके बाद बाग़ियों और उपद्रवियों ने एक ऐलान कर दिया कि मदीना वाले ज्ञान तथा बुद्धि वाले हैं और मदीना वाले ही शुरू से ख़लीफ़ा का चयन करते आए हैं और मदीना वालों के परामर्श और चुनाव से चुने ख़लीफ़ा को मुसलमानों ने स्वीकार किया है अत: हम ऐलान करते हैं और मुसलमानों को सूचित कर देते हैं कि तुम को केवल दो दिन की छूट दी जाती है इस दो दिन के समय में कोई ख़लीफ़ा चुन लो वरना दो दिन के बाद हम अली रज़ि अल्लाह अन्हो, तलहा रज़ि अल्लाह अन्हो, ज़ूबैर रज़ि अल्लाह अन्हो तीनों को कत्ल कर देंगें। इस ऐलान को सुन कर मदीना वालों के होश उड़ गए। वे परेशान होकर अपने घरों से निकल कर हज़रत अली के पास गए। इसी तरह बाकी दोनों के पास भी मदीना वालों के वफ़ूद पहुँचे। हज़रत तलहा और ज़ूबैर ने तो साफ इनकार कर दिया और कहा कि हम ख़िलाफ़त का भार अपने कन्धों पर नहीं चाहते। हज़रत अली करमुल्लाह ने भी पहले इन्कार ही किया था परन्तु जब लोगों ने बहुत अधिक मिन्नत की तो वह राज़ी हो गए इनके राज़ी होते ही लोग टूट पड़े और यूँ ख़ुदा तआला का किया हुआ वादा एक बार फिर नई शान से प्रकट हुआ। सच है :

"अल्लाह जब किसी को मनसब ख़िलाफ़त पर सरफराज़ करता है तो इसकी दुआओं की कबूलियत को बढ़ा देता है क्योंकि यदि उसकी दुआएं स्वीकार न हों तो फिर उसके अपने चुनाव का अपमान होता है।"

(उद्धृत मनसिब ख़िलाफ़त लेखक हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह पृष्ठ 32)

हज़रत अली के द्वारा भी अल्लाह तआला ने इस्लाम की उन्नति का मार्ग प्रशस्त कराया। आप रज़ि को ख़ुदा तआला ने अपनी ओर से ताकत तथा प्रभुत्व प्रदान किया

और ज्ञान तथा बुद्धि में बरकत डाली। अत: आपके ज्ञान तथा बुद्धि को आपके दुश्मन भी मानते थे। आप बहुत अधिक मामला हल करने वाले और अक्लमन्द थे। कुछ एक घटनाएं पाठकों की सेवा में प्रस्तुत हैं :

" एक बार दो व्यक्ति खाना खाने बैठे। एक के पास पाँच रोटियाँ थी और दूसरे के पास तीन इतने में एक और व्यक्ति आ गया। उन दोनों ने इसे अपने साथ खाने को बिठा लिया। जब वह तीसरा व्यक्ति खाना खाकर चलने लगा तो उस ने आठ दरहम उन दोनों को देकर कहा जो कुछ मैंने खाया है उसके बदले में समझो। उसके जाने के बाद उन दोनों में दिरहमों को बांटने में झगड़ा हुआ। पाँच रोटियों वाले ने दूसरे से कहा मैं पाँच दिरहम लूँगा और तुझ को तीन मिलेंगी क्योंकि तीन रोटियाँ थीं। तीन रोटियों वाले ने कहा कि मैं तो आधा से कम पर हरगिज़ राज़ी न होऊंगा अर्थात चार दिरहम लेकर छोड़ूँगा। यह झगड़ा यहाँ तक लम्बा हुआ कि दोनों हज़रत अली की सेवा में हाज़िर हुए। आपने इन दोनों का वर्णन सुनकर तीन रोटियों वाले से कहा कि तेरी रोटियां कम थीं। तीन दिरहम तुझ को अधिक मिल रहें हैं बेहतर है कि तू राज़ी हो जा। उसने कहा जब तक मेरा हक न मिले मैं कैसे राज़ी हो सकता हूँ। हज़रत अली ने कहा फिर तेरे हिस्सा में केवल एक दिरहम आएगा यह सुनकर उसको बहुत ही हैरानी हुई और उसने कहा के आप भी चकित करने वाला न्याय कर रहे हैं। ज़रा मुझ को समझा दीजिए के मेरे हिस्से में एक और इसके हिस्से में सात किस तरह आते हैं? हज़रत अली ने फ़रमाया : अच्छा सुनो कुल आठ रोटियां थी और तुम तीन व्यक्ति थे। चूंकि यह बराबर बंट नहीं सकती, अत: प्रत्येक रोटी के तीन टुकड़े करार देकर कुल चौबीस टुकड़े समझो, यह तो पता नहीं चल सकता कि किस ने कम खाया और किस ने अधिक अत: यह मानना पड़ेगा के तीनों ने बराबर खाया और प्रत्येक व्यक्ति ने आठ टुकड़े खाए तेरी तीन रोटियों के नौ टुकड़ो में से एक इस तीसरे व्यक्ति ने खाया और आठ तेरे साथी के हिस्से में आए चूंकि तेरा एक बड़ा टुकड़ा और तेरे साथी के सात टुकड़े कुल आठ टुकड़े खाकर उसने आठ दरहम दिए हैं अत: एक दिरहम तेरा है और सात दिरहम तेरे साथी के हैं यह सुन कर उसने कहा हां मैं अब

राज़ी होता हूँ।"

सम्माननीय पाठको! हज़रत अली का बचपन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निगरानी में ग़ुज़रा था। आपकी गोद में ही हज़रत अली परवान चढ़े थे इसलिए आपका ज्ञान बहुत उच्च स्तर का था। बड़े बड़े मसले आप शीघ्र हल कर दिया करते थे। आपकी बातें हिकमत पर आधारित होती थीं। आपकी बातों को नहजुल बलाग: पुस्तक में विस्तार से देखा जा सकता है।

एक बार का किस्सा है कि एक व्यक्ति ने हज़रत अली की सेवा में हाज़िर होकर निवेदन किया कि मुझे मसला तकदीर समझा दीजिए आप रज़ि ने फ़रमाया अंधेरा रास्ता है मत पूछो। उसने फिर वही निवेदन किया। आपने फ़रमाया कि वह गहरा समुद्र है। इस में ग़ोता मारने की कोशिश न कर। उसने फिर वही निवेदन किया। आपने फ़रमाया यह ख़ुदा का भेद है तुझ से छुपा कर रखा गया है तू क्यों इसकी छानबीन करता है। उसने फिर ज़िद्द किया तो आपने फ़रमाया कि अच्छा यह बताओ कि ख़ुदा तआला ने तुझ को अपनी मर्ज़ी से बनाया है आपने फ़रमाया के बस फिर जब वह चाहे तुझे प्रयोग करे तुझे इसमें क्या अधिकार है।

ख़िलाफ़त राशिदा की विशेषताएं

ख़िलाफ़त राशिदा इस्लामी इतिहास का वह सुनहरी युग है जो एक रोशनी के मीनार का काम देती है जिसकी ओर बाद के सारे युगों में फुक्हा तथा मुहद्दिसीन और साधारण लोग हमेशा देखते रहे और इसको इस्लाम के धार्मिक, राजनीतिक इख़लाकी और सामूहिक निज़ाम के मामला में कसौटी समझते रहे। यह युग आरम्भ से लगभग 30 साल तक जारी रहा परन्तु इन तीस सालों का मुकाबला इस्लामी इतिहास का कोई युग नहीं कर सकता। इसी युग में इस्लाम की पूरी व्यावहारिक तस्वीर हमें नज़र आती है। आइए देखें के ख़िलाफ़त राशिदा किन बातों की कारण इस्लामी इतिहास का सुनहरी युग कहलाता है।

ख़िलाफ़त का चयन

चारों ख़ुल्फा की जीवनी का अध्ययन करने और इस्लामी इतिहास की समीक्षा करने

से यह बात प्रमाणित हो जाती है के इन ख़ुल्फा क़िराम ने स्वयं ख़लीफ़ा बनने की इच्छा नहीं की बल्कि मुसलमानों ने आपस के परामर्श के बाद अपने में से बेहतरीन वजूदों का चुनाव ख़लीफ़ा के रूप में किया।

नबी के उत्तराधिकारी के लिए हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह अन्हो को हज़रत उमर फारूक़ रज़ि अल्लाह अन्हो ने सकीफा बनु सअदा ही में चुना और मदीना के सारे लोगों ने बिना मतभेद, बिना किसी दबाव और लालच के इस चुनाव को स्वीकार किया और हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह अन्हो के हाथ पर बैअत की।

हज़रत अबू बकर ने अपने देहान्त के समय हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो के बार में वसीयत लिखवाई और फिर मस्जिद नब्वी में लोगों को जमा करके कहा :

"क्या तुम इस व्यक्ति पर राज़ी हो जिसे मैं अपना उत्तराधिकारी बना रहा हूँ। ख़ुदा की क़सम मैंने राय सुदृढ़ करने के लिए अपने ज़ेहन में ज़ोर डालने में कोई कमी नहीं की और अपने किसी रिश्तेदार को नहीं बल्कि उमर बिन अलख़त्ताब रज़ि को उत्तराधिकारी बनाया है अत: तुम उसकी सुनो और उसकी आज्ञा पालन करो। इस पर लोगों ने कहा "हम सुनेंगे और आज्ञा पालन करेंगे।"

(तिबरी, तारीख़ुल उमुम वाली अलमलूक भाग 2 पृष्ठ 612)

हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने अपने देहान्त के समय ख़िलाफ़त का फैसला करने के लिए एक चुनावी मज्लिस स्थापित की जिसके सदस्यों में से हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ ने लोगों के परामर्श और रुझान की समीक्षा कर के हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो को ख़लीफ़ा चुना।

हज़रत उस्मान की शहादत के बाद जब कुछ लोगों ने हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हो को ख़लीफ़ा बनाना चाहा तो उन्होंने कहा। तुम्हें ऐसा करने का हक नहीं है। यह तो शूरा वालों और बदर वालों का काम है। जिसको शूरा वाले और बदर वाले ख़लीफ़ा बनाना चाहेंगे वही ख़लीफ़ा होगा। तिबरी की रिवायत में हज़रत अली रज़ि अल्लाह अन्हो के शब्द यह हैं :

"मेरी बैअत छुपे तरीके से नहीं हो सकती यह मुसलमानों की इच्छा से होनी चाहिए।" (तिबरी भाग 3 पृष्ठ 450)

इन घटनाओं से साफ प्रकट है कि ख़िलाफ़त को वह मुसलमानों की आपस के परामर्श और आज़ाद रज़ामन्दी से समझते थे। विरसा में या ताकत से हुकूमत में आने वाली अमारत उनकी राय में ख़िलाफ़त नहीं बल्कि बादशाही थी। हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि अल्लाह अन्हो के यह शब्द ध्यान देने योग्य हैं:

ان الامارة ما اوتمر فيها وان الملك غلب عليه بالسيف

अनुवाद : अमारत (ख़िलाफ़त) वह है जिसे स्थापित करने में परामर्श किया गया हो और बादशाही वह है जिस पर तलवार के ज़ोर से आधिपत्य प्राप्त किया गया हो।"

(कनज़ुल उम्माल भाग 5 पृष्ठ 2281)

बादशाहत नहीं ख़िलाफ़त

यूनान और रोम का इतिहास एक थोड़े समय को छोड़ आरम्भ से लेकर फ्रांस की क्रांति(1789 ई) तक दुनिया का अकेला निज़ाम हुकूमत-ए-मुलुकियत अर्थात बादशाहत रहा। ख़िलाफ़त राशिदा के युग में भी दुनिया के प्रत्येक देश में बादशाहत जारी थी परन्तु ख़िलाफ़त राशिदा का सियासी निज़ाम इन सबसे बढ़कर था और बादशाहत से उसका दूर तक कोई सम्बन्ध न था। ख़िलाफ़त राशिदा में जो सियासी निज़ाम जारी था उसे आजकल के पश्चिमी विचारक लोकतांत्रिक प्रणाली ख़्याल नहीं करते क्योंकि उनके विचार में इसमें हाकमियत और उच्च हुकमूत लोगों को प्राप्त न थी परन्तु अपनी शैली की दृष्टि से ख़िलाफ़ते राशिदा प्रत्येक युग के लोकतंत्र से बढ़कर लोकतंत्र है क्योंकि इस प्रणाली में हाकमियत केवल अल्लाह की समझी जाती थी। अल्लाह और रसूल के बाद सारे अधिकार लोगों को प्राप्त थे और किताब और सुन्नत के आदर्श उसूलों की सीमा में सम्पूर्ण अधिकार रखते थे। अल्लाह की हाकमियत ने ख़िलाफ़त-ए-राशिदा को अत्याचार तथा अन्याय से सुरक्षित कर दिया। यह प्रणाली यद्यपि 30 साल के थोड़े समय तक जारी रहा परन्तु यह इस्लामी इतिहास का सुनहरी युग है। इस प्रणाली में जहाँ एक ओर अल्लाह की हाकमियत की धारणा थी वहाँ इसमें लोकतंत्र की भावना भी मौजूद थी। ख़िलाफ़त राश्दा की नीचे लिखी विशेषताएं इसे लोकतांत्रिक भावना प्रदान करती हैं।

मुशावरती निज़ाम (मरामर्श की व्यवस्था)

लोकतंत्र की भावना राय की आज़ादी है और यह भावना ख़िलाफ़त राशिदा में पूरी तरह मौजूद थी। ख़लीफ़ा को रियासत के उच्च अधिकारी की हैसियत से अधिकार थे परन्तु वह दो बातों का पाबन्द था। एक इस्लामी शरीयत का पाबन्द दूसरे राय वालों से परामर्श लेने का। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो का कहना है لَا خِلَافَةَ إِلَّا عَنِ الْمَشْوَرَةِ अर्थात ख़िलाफ़त परामर्श के बिना नहीं है। हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो पर सारे ख़ुल्फा कराम में सबसे अधिक आरोप लगाए गए और आलोचना हुई परन्तु कभी भी आप रज़ि अल्लाह अन्हो ने ज़बरदस्ती लोगों के मुँह बन्द न किए बल्कि सब लोगों के सामने सफाई दी।

बैतुल माल के अमानत होने का विचार

लोकतांत्रिक प्रणाली में एक ख़ूबी यह है कि लोगों के व्यवहार से हुकुमत चलती है और लोग सरकार चलाने के लिए टैक्स की शक्ल में रूपया देते हैं परन्तु इस तरीका में कमी यह रहती है कि जिन लोगों को चुन कर सरकार चलाने की जिम्मेदारी दी जाती है प्राय: वही ख़यानत करने वाले हो जाते हैं और सरकारी माल में ख़यानत करते हैं।

प्यारे पाठको ! ख़िलाफ़त राश्दा हमें इस ख़तरनाक बीमारी से पाक तथा साफ नज़र आती है। बैयतुल माल को ख़ुलफ़ाए किराम ख़ुदा और सृष्टि की अमानत ख़्याल करते थे और इस बात को उचित न समझते थे कि बैयतुल माल से अपने लिए अनुचित रूपया प्राप्त करें। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने एक बार हज़रत सलमान फारसी रज़ि अल्लाह अन्हो से पूछा कि "मैं बादशाह हूँ या ख़लीफ़ा?"

उन्होंने बढ़े ध्यान से जवाब दिया कि "यदि आप मुसलमान की ज़मीन से एक दिरहम भी हक के ख़िलाफ वसूल करें और उसको हक के ख़िलाफ ख़र्च करें तो आप बादशाह हैं न कि ख़लीफ़ा।"

एक और अवसर पर हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने अपनी मज्लिस में कहा "ख़ुदा की क़सम मैं अभी तक यह नहीं समझ सका कि मैं बादशाह हूँ कि ख़लीफ़ा। यदि मैं बादशाह हो गया हूँ तो यह बड़ी सख्त बात है।"

इस पर किसी ने कहा हे अमीरूल मोमेनीन ! इन दोनों में बड़ा अन्तर है। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह अन्हो ने पूछा वह क्या है ? उन्होंने कहा ख़लीफ़ा कुछ नहीं लेता परन्तु हक के अनुसार और कुछ ख़र्च नहीं करता परन्तु हक के अनुसार। आप ख़ुदा के फज़ल से ऐसे ही हैं। रहा बादशाह तो वे लोगों पर ज़ुल्म करते हैं एक लोगों से व्यर्थ में लेता और दूसरे को व्यर्थ में देता है।

(तबकात इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 306 - 307)

ख़िलाफ़ते राश्दा में पवित्र हुकूमत की प्रणाली, हुकूमत का ख़ुदाई निज़ाम और सामाजिक न्याय, विजयों में जिहाद की इस्लामी भावना स्पष्ट नज़र आती है। ये वे बातें हैं जिनके कारण इस्लामी ख़िलाफ़त राश्दा इस्लाम के इतिहास के प्रत्येक युग से स्पष्ट है बल्कि सच यह है कि देश के प्रबन्ध, सियासत और समाज के सुधार के मैदान में इन तीस सालों में जो कारनामे अंजाम दिए गए वे न केवल इस्लामी इतिहास में बल्कि संसार के इतिहास में मील के पत्थर की हैसियत रखते हैं और ख़िलाफ़त-ए-राशिदा का युग अपने सकारात्मक और ठोस कारनामों और विशेष विशेषताओं के कारण आने वाली नस्लों के लिए एक मिसाली और अनुकरणीय नमूना बन गया है और आज भी इस्लामी दुनिया में इसकी यह हैसियत है।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मौऊद अलैहिस्सलाम

तृतीय अध्याय
इमाम महदी अलैहिस्सलाम का प्रकटन और उनका स्थान

इस्लाम के समस्त आदेशों का केन्द्र तथा बुनियादी विषय तौहीद (एकेश्वरवाद) है और यह तौहीद का अक़ीदा प्रत्येक शाख़ और सूरत में इस्लाम का मूलभूत नियम है। और अल्लाह तआला ने मुसलमानों के लिए उनकी सारी चीज़ों में एकता रखी है उनकी शरीयत, उनका कानून, उनकी पुस्तक, उनकी क़ौमीयत, उनका किब्ला, उनका काबा और उनके जमा होने का केन्द्र, इस तरह उनकी हुकूमत भी एक थी अर्थात सारी धरती पर मुसलमानों का केवल एक ख़लीफ़ा और एक इमाम हो। अतः ख़ुलफ़ाए राशेदीन के बाद केवल बनु उमय्या के शुरूआती युग तक मुसलमानों में वहदत और एकता की मामूली सी झलक नज़र आती है। इसके बाद कोई ऐसा युग नज़र नहीं आया जब सारी इस्लामी सल्तनत एक ताकत पर इकट्ठी रही हो। दूसरे समयों में अलग अलग दावेदार थे, जिसका पैर जम गया डिक्टेटरशिप जारी करने लगा और मुसलमान मतभेद तथा फूट का शिकार हो गए जिस के फलस्वरूप मुसलमानों के दिलों से ख़िलाफ़त और इमामत की क़दर भी जाती रही।

जब मुसलमानों ने ख़ुदा तआला द्वारा दी गई उस बरकत वाली इस्लामी नेअमत की अवमानना की तो पतन की ओर गिरने लगे। उन्नति के स्थान पर अवनति, चरम के स्थान पर पतन, सम्मान के स्थान पर अपमान और हुकूमत की स्थान पर अधीनता, अन्त में जीवन के स्थान पर मौत उन पर छा गई। इसलिए वे उन बरकतों से अलग हो गए जो ख़िलाफ़त-ए-राशिदा से जुड़ी थीं। ऐसे अन्धकारपूर्ण पतन के युग में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने महान आध्यात्मिक पुत्र के आने की

खुशखबरी दी थी कि वह धर्म के पुनरुद्धार और शरीयत की स्थापना और इस्लाम के पुन: जागरण का मिशन लेकर खड़ा होगा। ख़ुदा इसके द्वारा समस्त क़ौमों को समाप्त करके सारी धरती पर इस्लाम को प्रभुत्व प्रदान करेगा। इस महान विश्वव्यापी उद्देश्य के लिए आने वाले मौऊद का समर्थन तथा सहायता करना प्रत्येक मुसलमान के लिए अनिवार्य ठहराया था। इसलिए आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

" فَاِذَا رَأَيْتُمُوْهُ فَبَايِعُوْهُ وَلَوْ حَبْوًا عَلَى الثَّلْجِ فَاِنَّهٗ خَلِيْفَةُ اللّٰهِ الْمَهْدِيُّ "

(अबूदाऊद भाग 2 बाब ख़रूजुल महदी) (बिहारुल अनवार भाग 13 पृष्ठ 21 इब्ने माजा, प्रकाशन फारूक़ी देहली पृष्ठ 310 बाब ख़रूजुल महदी)

अर्थात हे मुसलमानो! जब तुम्हें इस बात का ज्ञान हो जाए तो शीघ्र उसकी बैअत करो चाहे तुम्हें बर्फ पर से घुटनों के बल जाना पड़े। क्योंकि वह ख़ुदा का ख़लीफ़ा महदी होगा।

इसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो उसे पहचान ले तो " فَلْيَقْرَئْهُ مِنِّي السَّلَامَ " उसे मेरी ओर से सलाम कहे।

(दुर्रे मन्सूर भाग 2 पृष्ठ 445, बिहारुल अनवार भाग 13 पृष्ठ 183, प्रकाशन ईरान, उद्धृत अख़बार बदर क़ादियान मई 2007 ई पृष्ठ 24)

अत: क़ुर्आन मजीद और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सालम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत (1835 -1908) ने ख़ुदा तआला से इल्हाम पाकर भारत की एक गुमनाम बस्ती क़ादियान (पंजाब) में यह दावा किया कि अल्लाह तआला ने आपको इस युग के सुधार के लिए सुधारक बना कर भेजा है। और आप ही चौदहवीं सदी के मुजद्दिद, इमाम महदी और मसीह मौऊद हैं। आप वही महदी और मसीह हैं जिसके प्रकटन की ख़बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी थी जिसके द्वारा इस्लाम का समस्त धर्मों पर प्रभुत्व निर्दिष्ट है।

आप ने 23 मार्च 1889 ई को हिन्दुस्तान के शहर लुधियाना में चालीस श्रद्धालुओं से बैअत ली और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहमद नाम की सदृश्यता से इस जमाअत का नाम अहमदिया मुस्लिम जमाअत रखा। आपने 80 से

अधिक पुस्तकें लिखी। और जीवन भर ईसाइयों,आर्यों,और अन्य धर्मों की ओर से इस्लाम पर होने वाले हमलों का उत्तर दिया। 1908 ई में आप अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद जमाअत अहमदिया में ख़िलाफ़त की प्रणाली स्थापित हुई। और अब जमाअत के पाँचवे ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहो तआला हैं जो आज कल लन्दन में रहते हैं। ख़िलाफ़त प्रणाली की बरकत से यह जमाअत आज संसार के कोने-कोने में पहुँच चुकी है। और करोड़ों लोग इस ख़ुदाई जमाअत में सम्मिलित हो चुके हैं।

अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब का दावा आपके अपने शब्दों में प्रस्तुत है।

मसीह और महदी

1 . "मुझे ख़ुदा तआला की पाक और पवित्र वह्यी से सूचना दी गई है कि मैं उसकी ओर से मसीह मौऊद और महदी मौऊद और भीतरी तथा बाहरी मतभेदों का हकम हूं।"

(अरबईन न० 1, पृष्ठ 3 रूहानी ख़ज़ायन भाग 17 पृष्ठ 344 प्रकाशन 1984 लन्दन)

2 . "जो ख़ुदा की ओर से पुनः जागरण करने के लिए आने वाला था वह मैं ही हूँ ताकि वह ईमान जो धरती से उठ गया है उसको पुनः स्थापित करूँ और ख़ुदा से शक्ति पाकर उसी के हाथ की कशिश से दुनिया को सुधार और तकवा और सच्चाई की ओर खींचू और उनकी आस्था की व्यावहारिक ग़लतियों को दूर करूँ और फिर जब इस पर कुछ साल ग़ुज़रे तो ख़ुदाई वह्यी के द्वारा मेरे पर स्पष्ट रूप से खोला गया कि वह मसीह जो इस उम्मत के लिए शुरू से मौऊद (वादा दिया गया) था और वह आख़री महदी जो इस्लाम के पतन के समय और गुमराही के फैलने के युग में सीधा ख़ुदा से हिदायत पाने वाला और उस आकाशीय माइदा को नए सिरे से इन्सानों के आगे प्रस्तुत करने वाला ख़ुदाई तक़दीर में निर्धारित किया गया था जिसकी सुख़बर आज से तेरह सौ वर्ष पूर्व रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी थी वह मैं ही हूँ।"

(तज़किरतुश्शहादतैन रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 4 -3 प्रकाशन 1984 ई लन्दन)

3 . "मैं उस ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ जिसके हाथ में मेरी जान है कि मैं वही मसीह मौऊद हूँ जिसकी रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहीह हदीसों में ख़बर दी है। जो सहीह बुखारी और मुस्लिम और दूसरी सिहाह सित्ता में वर्णित है। وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا"

(मल्फ़ूज़ात भाग प्रथम पृष्ठ 313)

हाकिम, कासिरे सलीब (सलीब को ताड़ने वाला)

"हे भाईयो ! मैं सामर्थ्यवान अल्लाह से इल्हाम दिया गया हूँ और वलायत के ज्ञानों में से मुझे ज्ञान प्रदान हुआ है फिर मैं सदी के सिर पर भेजा गया ताकि इस उम्मत के धर्म का पुनः जागरण करूँ और एक हाकिम (न्यायक) बनकर उनके मतभेदों को बीच से उठाऊं। और सलीब को आकाशीय निशानों के साथ तोड़ूँ और ख़ुदाई शक्ति के साथ धरती में परिवर्तन पैदा करूँ और अल्लाह तआला ने स्पष्ट इल्हाम और सही वह्यी से मुझे मसीह मौऊद और महदी मौऊद के नाम से पुकारा। और मैं धोखा देने वालों में से नहीं और न मैं ऐसा हूँ कि मेरी ज़बान पर झूठ जारी होता और मैं लोगों को बुराई में डालता।"

(नजमुल हुदा, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 14 पृष्ठ 59 संस्करण 1984 ई लन्दन)

मुअल्लिम-ए-क़ुर्आन (क़ुर्आन का सिखाने वाला)

"मैं प्रत्येक मुसलमान की सेवा में विनम्रता पूर्वक कहता हूँ कि इस्लाम के लिए जागो कि इस्लाम बड़े फित्ना में पड़ा है इसकी मदद करो कि अब यह असहाय है और मैं इसीलिए आया हूँ और मुझे ख़ुदा तआला ने इल्मे क़ुर्आन प्रदान किया है और अपनी पुस्तक के अध्यात्म ज्ञान मुझ पर खोले हैं और चमत्कार मुझे प्रदान किए हैं। अतः मेरी ओर आओ तो इस नेमत से तुम भी हिस्सा पाओ। मुझे क़सम है उस हस्ती की जिसके हाथ में मेरी जान है कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से भेजा गया हूँ..... अतः शीघ्र ही मेरे कामों के साथ तुम मेरी पहचान करोगे। प्रत्येक जो ख़ुदा तआला की ओर से आया, उस समय के उलमा की नासमझी उसकी राह की रुकावट हुई। आख़िर

जब वह पहचाना गया तो अपने कामों से पहचाना गया। कड़वा पेड़ मीठे फल नहीं ला सकता और ख़ुदा अन्य को वे बरकतें नहीं देता जो प्रियों को दी जाती हैं।"

(बरकतुद्दुआ, रूहानी ख़ज़ायन,भाग 6 पृष्ठ 36 संस्करण 1984 ई लन्दन)

मसीह मौऊद के नाम में मस्लहत (युक्ति)

"इस युग के मुजद्दिद (सुधारक) का नाम मसीह मौऊद रखना इस मस्लहत पर आधारित मालूम होता है कि इस मुजद्दिद का महान काम ईसाइयत का ग़लबा(सीलीबी विचारधार) तोड़ना और उनके हमलों को दूर करना और उनके दर्शन को जो क़ुरआन के विरुद्ध है ठोस तर्कों के साथ तोड़ना और उन पर इस्लाम की अकाट्य और निर्णायक हुज्जत पूरी करना है क्योंकि सबसे बड़ी आफत जो इस युग में इस्लाम के लिए है वह अल्लाह तआला के समर्थन के बिना दूर नहीं हो सकती और वह ईसाइयों के दार्शनिक हमले और धार्मिक आरोप हैं जिनके दूर करने के लिए अवश्यक था कि ख़ुदा तआला की ओर से कोई आए।"

(आईना कमालाते इस्लाम पृष्ठ 341 रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 संस्करण 1984 ई लन्दन)

मसीह मौऊद इस युग में ख़ुदा का मामूर

"इस युग में गन्दी तहरीरों के द्वारा इतना आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और इस्लाम का अपमान किया गया है कि कभी किसी ज़माने में किसी नबी का अपमान नहीं हुआ.............. और वास्तव में यह ऐसा युग आ गया है कि शैतान अपनी सारी सन्तानों के साथ नाख़ूनों तक ज़ोर लगा रहा है ताकि इस्लाम को ख़त्म कर दिया जाए और चूंकि निसन्देह सच्चाई की झूठ के साथ यह आख़री जंग है। इसलिए यह युग भी इस बात का पात्र था कि इसके सुधार के लिए ख़ुदा का कोई मामूर आए। अत: वह मसीह मौऊद है जिस का वादा दिया गया है और युग पात्रता रखता था कि इस नाज़ुक समय में आकाशीय निशानों के साथ ख़ुदा तआला की दुनिया पर हुज्जत(समझाने का अन्तिम प्रयास) पूरी हो। अत: आकाशीय निशान प्रकट हो रहे हैं और आकाश जोश में है कि इतने आकाशीय निशान प्रकट करे कि

इस्लाम की विजय का डंका सारे देशों में और दुनिया के प्रत्येक हिस्सा में बज जाए। हे सामर्थ्यवान ख़ुदा ! तू शीघ्र वे दिन ला कि जिस फैसला का तूने इरादा किया है वह प्रकट हो जाए और दुनिया में तेरा जलाल चमके और तेरे धर्म और तेरे रसूल की फतह हो। आमीन सुम्मा आमीन।"

(चश्मा मअरफत पृष्ठ 86 -87 रूहानी ख़ज़ायन भाग 23 प्रकाशन 1984 ई लन्दन)

मसीले मसीह (मसीह का समरूप)

"मैं इन सारी बातों पर ईमान रखता हूँ जो क़ुर्आन करीम और सहीह हदीसों में वर्णित हैं और मुझे मसीह इब्ने मरयम होने का दावा नहीं और न मैं आवागमन का मानने वाला हूँ बल्कि मुझे तो केवल मसीले मसीह होने का दावा है। जिस तरह मुहद्दसियत नबुव्वत से समतुल्य है ऐसा ही मेरी आध्यात्मिक अवस्था मसीह इब्ने मरयम की आध्यात्मिक अवस्था से बहुत अधिक समानता रखती है। सार यह कि मैं एक मुसलमान हूँ। ایها المسلمون انا منکم بامر اللہ تعالیٰ सारांश यह है कि मैं अल्लाह की ओर से मुहद्दिस हूँ और अल्लाह की ओर से मामूर हूँ। और इसी तरह मुसलमानों में से एक मुसलमान हूँ जो चौदहवीं सदी के लिए मसीह इब्ने मरयम की विशेषता और रंग में मुजद्दिद होकर धरती और आसमानों के रब्ब की ओर से आया हूँ। मैं मुफतरी नहीं हूँ وقد خاب من افترى ख़ुदा तआला ने दुनिया पर नज़र की और इसको अन्धकार में पाया। और लोगों की भलाई के लिए अपने विनीत इस बन्दा को विशिष्ट कर दिया। तुम्हें इससे हैरानी है कि वादा के अनुसार सदी के सिर पर एक मुजद्दिद भेजा गया और जिस नबी के रंग में ख़ुदा ने चाहा उसको पैदा किया। क्या अवश्य न था कि सच्ची ख़बर देने वाले आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी अवश्य पूरी होती ?

भाइयो ! मैं सुधारक हूं, बिदअती नहीं और अल्लाह की पनाह मैं किसी बिदअत को फैलाने के लिए नहीं आया। सच के इज़हार के लिए आया हूँ और प्रत्येक बात जिस का असर और निशान क़ुर्आन और हदीस में न पाया जाए उसके ख़िलाफ हूं वह मेरे निकट कुफ्र और बे-ईमानी है। परन्तु ऐसे लोग थोड़े हैं जो कलामुल्लाह की

तह तक पहुचँते और रब्बानी भविष्यवाणियों के गूढ़ से गूढ़ भेदों को समझते हैं। मैंने धर्म में कोई कमी या ज़यादती नहीं की। भाइयो ! मेरा वही धर्म है जो तुम्हारा धर्म है और वही रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे मुक्तदा (जिनका अनुकरण किया जाए) हैं और वही क़ुर्आन शरीफ मेरा हादी है और मेरा प्यारा है और मेरा दस्तावेज़ है जिसका मानना तुम पर भी फर्ज़ है। हां यह सच है और बिल्कुल सच है कि मैं हज़रत मसीह इब्ने मरयम को मृत्यु प्राप्त और मौत पा चुका यक़ीन रखता हूँ और जो आने वाले मसीह के बारे में भविष्यवाणी है वह अपने हक़ में निसन्देह और पूर्ण रूप से विश्वास रखता हूँ। परन्तु हे भाइयो! यह आस्था मैं अपनी ओर से और अपने विचार से नहीं रखता बल्कि ख़ुदा तआला ने अपने इल्हाम और कलाम के द्वारा मुझे सूचना दी है कि मसीह इब्ने मरयम के नाम पर आने वाला तू ही है और मुझ पर क़ुर्आन मजीद और सहीह हदीसों के वे विश्वसनीय तर्क खोल दिए हैं। जिन से विश्वसनीय तथा प्रमाणिक रूप से हज़रत ईसा इब्ने मरयम रसूलुल्लाह का देहान्त पा जाना सिद्ध है। और मुझे उस क़ादिर ने बार बार अपनी विशेष वाणी से शरफ और सम्बोधित करके फ़रमाया कि आख़री युग की यहूदियत दूर करने के लिए तुझे ईसा इब्ने मरयम के रूप और विशेषता में भेजा गया है। अत: मैं रूपक के तौर पर इब्ने मरयम हूँ। जिसका यहूदियत के युग में और ईसाइयों के ग़लबा के युग में आने का वादा था। जो ग़रीबी और रूहानी ताकत और रूहानी हथियार के साथ प्रकट हुआ।"

(तबलीग़ रिसालत भाग 2 पृष्ठ 21)

समय का मुजद्दिद

"इस समय केवल अल्लाह तआला के लिए इस ज़रूरी बात से सूचना देता हूँ कि मुझे ख़ुदा तआला ने इस चौदहवीं सदी के सिर पर अपनी ओर से मामूर करके इस्लाम के सुधार और समर्थन के लिए भेजा है ताकि मैं इस अंधकारमय युग में क़ुर्आन की अच्छाइयां और हज़रत रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की महानताएं प्रकट करूँ और उन सारे दुश्मनों को जो इस्लाम पर हमला कर रहें हैं उन नूरों और बरकतों और चमत्कारों और उलूमे लदुन्निया (अल्लाह तआला की ओर से प्रदत्त ज्ञान) की मदद

से उत्तर दूँ जो मुझ को प्रदान किए गए हैं।"

(बरकातुद्दुआ रूहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 34 प्रकाशन 1984 ई लन्दन)

इसी तरह फ़रमाते हैं कि

"और इस लेखक को भी इस बात का ज्ञान दिया गया है कि वह समय का मुजद्दिद है। और रूहानी तौर पर इसके कमालात मसीह इब्ने मरयम से समान हैं। और एक को दूसरे से बहुत अधिक समानता और सदृशता है।"

(इश्तिहर मुनसिल्का आईना कमालात इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 657 प्रकाशन 1984 ई लन्दन)

जरी उल्लाह फी हुललिल अंबिया
(अर्थात ख़ुदा का पहलवान नबियों के लिबास में)

"मैं ही हूं जिस का ख़ुदा ने वादा किया था। हां मैं वही हूं जिस का सारे नबियों की ज़ुबान पर वादा हुआ।" (मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 65)

"ख़ुदा तआला ने मेरा नाम ईसा ही नहीं रखा। बल्कि शुरू से अन्त तक जितने नबियों अलैहिस्सलामों के नाम थे वे सब मेरे नाम रख दिए हैं। अत: बराहीन अहमदिया पहले हिस्सों में मेरा नाम आदम रखा। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है اَرَدْتُ اَنْ اَسْتَخْلِفَ فَخَلَقْتُ اٰدَمَ

इस तरह बराहीने अहमदिया के प्रथम हिस्सों में मेरा नाम इब्राहीम भी रखा गया है। जैसा कि फ़रमाया سَلَامٌ عَلَيْكَ يَا اِبْرَاهِيْمُ अर्थात हे इब्राहीम तुझ पर सलाम। इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़ुदा तआला ने बहुत बरकतें दी थीं। और वह हमेशा दुश्मनों के हाथ से सलामत रहा। अत: मेरा नाम इब्राहीम रख कर ख़ुदा तआला यह इशारा करता है कि ऐसा ही इस इब्राहीम को बरकतें दी जाएंगी और दुश्मन इसको कुछ नुकसान नहीं पहुँचा सकेंगे......।

इसी तरह बराहीन अहमदिया के प्रथम हिस्सों में मेरा नाम यूसुफ भी रखा गया है और ऐसा ही बराहीन अहमदिया के प्रथम हिस्सों में मेरा नाम मूसा रखा गया। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है-

تلطف بالناس و ترحم علیھم و انت فیھم بمنزلۃ موسیٰ و اصبر علی ما یقولون

अर्थात लोगों से नरमी से व्यवहार कर और उन पर रहम कर। तू इन में मूसा के स्तर पर है। जो वे कहते हैं इस पर सब्र कर।"

इसी तरह अल्लाह तआला ने बराहीन अहमदिया के प्रथम हिस्सों में मेरा नाम दाऊद भी रखा। जिसका विस्तार शीघ्र अपने अवसर पर आएगा। ऐसा ही बराहीन अहमदिया के प्रथम हिस्सों में ख़ुदा तआला ने मेरा नाम सुलैमान भी रखा और इसका विस्तार भी शीघ्र आएगा। ऐसा ही बराहीन अहमदिया के प्रथम हिस्सों में ख़ुदा तआला ने मेरा नाम अहमद और मुहम्मद भी रखा और यह इस बात की ओर इशारा है कि जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातम-ए-नबुव्वत हैं वैसा ही यह विनीत ख़ातम-ए-विलायत है। और इसके बाद मेरे बारे में बराहीने अहमदिया के प्रथम हिस्सों में यह भी फ़रमाया جری اللہ فی حلل الانبیاء अर्थात ख़ुदा का रसूल सारे पहले नबियों के लिबास में। इस इलाही वह्यी का अनुवाद यह है कि आदम से लेकर अन्त तक जितने अंबिया अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला की ओर से दुनिया में आऐ हैं चाहे वे इस्राईली हैं या ग़ैर इस्राईली, उन सब की विशेष घटनाओं या ख़ास गुणों में से इस विनीत को कुछ हिस्सा दिया गया है और एक नबी भी ऐसा नहीं गुज़रा जिसके गुणों या विशेषताओं में से इस विनीत को हिस्सा नहीं दिया गया। प्रत्येक नबी की प्रकृति का नक्श मेरी प्रकृति में है। इसी पर ख़ुदा ने मुझे ख़बर दी.....।

इस युग में ख़ुदा ने चाहा कि जितने भी नेक और सच्चे पवित्र नबी गुज़र चुके हैं एक ही व्यक्ति के वजूद में उनके नमूने प्रकट किए जाऐ। अत: वह मैं हूँ...... इसी तरह ख़ुदा ने मेरा नाम ज़ुलक़रनैन भी रखा। क्योंकि ख़ुदा तआला की मेरे बारे में यह पवित्र वह्यी कि जरी उल्लाह फी हुललिल अंबिया जिसका यह अर्थ है कि ख़ुदा का रसूल सारे नबियों की शैली में, चाहती है कि मुझ में ज़ुलक़रनैन के भी विशेषताएं भी हों। क्योंकि सुर: क़हफ से प्रमाणित है कि ज़ुलक़रनैन भी ख़ुदा की ओर से वह्यी पाने वाला था।"

(बराहीन अहमदिया भाग 5 रूहानी ख़ज़ायन भाग 21 पृष्ठ 112 से 118 1984 ई लन्दन)

इमामुज़्ज़मान (समय का सुधारक)

"मैं इस समय बे-धड़क कहता हूँ कि ख़ुदा के फज़ल और रहम से वह इमामुज़्ज़मान मैं हूँ और मुझ में ख़ुदा तआला ने वे सारी निशानियां और शर्तें जमा की हैं और इस सदी के सिर पर मुझे भेजा है याद रहे कि इमामुज़्ज़मान के शब्द में नबी, रसूल, मुहद्दिस, मुजद्दिद सब सम्मिलित हैं। परन्तु जो लोगों के इरशाद और हिदायत के लिए मामूर नहीं और न वे कमाल उनको दिए गए चाहे वे वली हों या अब्दाल हों, इमामुज़्ज़मान नहीं कहला सकते।"

(ज़रूरतुल इमाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 13 पृष्ठ 495 संस्करण 1984 ई लन्दन)

"अब एक ज़रूरी प्रश्न यह है कि इमामुज़्ज़मान किस को कहते हैं और इसकी निशानी क्या है और इसको दूसरे मुल्हमों और ख़्वाब देखने वालों और कश्फ वालों पर क्या प्राथमिकता है? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि इमामुज़्ज़मान उस व्यक्ति का नाम है जिसकी रूहानी तरबीयत का ख़ुदा तआला अभिभावक होकर उसकी प्रकृति में एक ऐसी इमामत की रोशनी रख देता है कि वह सारे जहाँ के बुद्धजीवियों और दार्शनिकों से प्रत्येक शैली में मुबाहसा करके उनको पराजित कर देता है। वह प्रत्येक प्रकार के गंभीर आरोपों का ख़ुदा से शक्ति पाकर ऐसी सुन्दरता से उत्तर देता है कि अन्त में मानना पड़ता है कि वह दुनिया के सुधार का पूरा सामान लेकर इस संसार में आया है। इसलिए उसको किसी दुश्मन के सामने लज्जित होना नहीं पड़ता। वह आध्यात्मिक रूप से मुहम्मदी फौजों का सेनानायक होता है। और ख़ुदा तआला का इरादा होता है कि उसके हाथ पर धर्म को पुनः विजयी करे। और वे सारे लोग जो उसके झंडे के नीचे आते हैं इनको भी ऊँचे दरजे का ज्ञान दे। और वे सारी शर्तें जो सुधार के लिए ज़रूरी होती हैं और वे सारे ज्ञान जो आरोपों के दूर करने और इस्लामी विशेषताओं के प्रस्तुत करने के लिए आवश्यक हैं, उसको दिए जाते हैं।"

(ज़रूरतुल इमाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 13 पृष्ठ 476-477 संस्करण 1984 ई लन्दन)

अल्लाह का ख़लीफ़ा

"मैं बैतुल्लाह (खाना काबा) में खड़े होकर यह क़सम खा सकता हूँ कि वह पवित्र

वह्यी जो मेरे पर उतरी होती है वह उसी ख़ुदा की वाणी है जिसने हज़रत मूसा और हज़रत ईसा और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अपना कलाम उतारा था। मेरे लिए धरती ने भी गवाही दी और आकाश ने भी। इसी तरह मेरे लिए आकाश भी बोला और धरती भी कि मैं अल्लाह का ख़लीफ़ा हूँ।"

(एक ग़लती का इज़ाला रूहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 210 प्रकाशन 1984 ई लन्दन)

फ़रिश्तों का उतरना और सफलता की ख़ुशख़बरी

"चूंकि यह विनीत सद्मार्ग और सच्चाई के साथ ख़ुदा तआला की ओर से आया है इसलिए तुम सत्यता के निशान प्रत्येक ओर पाओगे। वह समय दूर नहीं बल्कि बहुत निकट है कि जब तुम फ़रिश्तों की फौजें आकाश से उतरती और एशिया और यूरोप और अमरीका के दिलों पर उतरते हुए देखोगे। यह तुम क़ुर्आन शरीफ से ज्ञात कर चुके हो कि अल्लाह के ख़लीफ़ा के उतरने के साथ फ़रिश्तों का उतरना आवश्यक है ताकि दिलों को सच्चाई की ओर फेरे। इसलिए उस निशान की प्रतीक्षा करो। यदि फ़रिश्तों का उतरना न हुआ और उनके उतरने के स्पष्ट प्रभाव तुम ने दुनिया में न देखे और सच्चाई की ओर दिलों की हरकत को न पाया तो तुम समझना कि आकाश से कोई अवतरित नहीं हुआ। परन्तु यदि ये सब बातें प्रकटन में आ गईं तो तुम इन्कार से रुक जाओ। ताकि तुम ख़ुदा तआला के निकट एक उद्दंड क़ौम न ठहरो।"

(फत्ह इस्लाम रूहानी ख़ज़ान भाग 3 पृष्ठ 13 प्रकाशन 1984 ई लन्दन)

अन्तिम नूर

"मुबारक हो जिसने मुझे पहचाना। मैं ख़ुदा की समस्त मार्गों में से अन्तिम मार्ग हूं और मैं उसके समस्त नूरों में से अन्तिम नूर हूं। अभागा है वह जो मुझे छोड़ता है क्योंकि मेरे बिना सब अंधेरा है। (रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 61 प्रकाशन लंदन 1984 ई)

अल्लाह के उपकार

फ़रमाया: - 1. ख़ुदा ने मुझे क़ुरआन के ज्ञान प्रदान किए हैं।

2. ख़ुदा ने मुझे क़ुरआन की भाषा (अरबी) में चमत्कार प्रदान किया है।

3. ख़ुदा ने मेरी दुआओं में सबसे बढ़कर क़बूलियत रखी है।

4. ख़ुदा ने मुझे आकाश के चिन्ह दिए हैं।

5. ख़ुदा ने मुझे ज़मीन से चिन्ह दिए हैं।

6. ख़ुदा ने मुझे वादा दे रखा है कि तुझ से प्रत्येक मुकाबला करने वाला पराजित होगा।

7. ख़ुदा ने मुझे ख़ुशख़बरी दी है कि तेरा अनुकरण करने वाले हमेशा अपनी दलीलों और सच्चाई में विजयी रहेंगे और दुनिया में प्राय: वे और उनकी नस्ल बड़ी बड़ी इज्जतें पाएंगे ताकि उन पर सिद्ध हो कि जो ख़ुदा की ओर से आता है वह कुछ नुकसान नहीं उठाता।

8. ख़ुदा ने मुझे वादा दे रखा है कि क़यामत तक और जब तक कि दुनिया का सिलसिला ख़त्म ना हो जाए मैं तेरी बरकतें प्रकट करता रहूंगा यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकतें ढूंढेंगे।

9. ख़ुदा ने आज से 20 वर्ष पहले मुझे ख़ुशख़बरी दी थी है कि तेरा इन्कार किया जाएगा लोग तुझे स्वीकार नहीं करेंगे पर मैं तुझे स्वीकार करूंगा और बड़े ज़ोरदार हमलों से तेरी सच्चाई प्रकट करूंगा।

10. और ख़ुदा ने मुझे वादा दिया है कि तेरी बरकतों का पुन: नूर प्रकट करने के लिए तुझ ही से और तेरी नस्ल से एक व्यक्ति खड़ा किया जाएगा जिसमें रूहुल कुदुस की बरकतें फूंकूंगा और वह नेक दिल और ख़ुदा से बहुत संबंध रखने वाला होगा और अल्लाह की सच्चाई और महानता की ओर से आएगा। मानो ख़ुदा आकाश से अवतरित हुआ और यह 10 पूर्ण बातें हैं। देखो वह युग चला आता है बल्कि निकट है कि ख़ुदा इस सिलसिले को दुनिया में बड़ा सम्मान और वृद्धि देगा और यह सिलसिला पूरब से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण में फैलेगा और दुनिया में इस्लाम से अभिप्राय यही सिलसिला होगा। ये बातें इन्सान की नहीं उस ख़ुदा की हैं जिसके आगे कोई बात अनहोनी नहीं।

(तोहफा गोलड़विया, रूहानी खज़ायन भाग 17 पृष्ठ 181 प्रकाशन 1984 ई लंदन)

नज़्म

क्यों अजब करते हो गर मैं आ गया होकर मसीह
ख़ुद मसीहाई का दम भरती है यह बादे बहार
आसमां पर दावते हक के लिए इक जोश है
हो रहा है नेक तबओं पर फ़रिश्तों का उतार
इस्मऊ सौतस्समाअ जाअल मसीह जाअल मसीह
नीज़ बिशनो अज़ ज़मी आमद इमामे कामगार
आसमां बारिद निशां अल्वक़्त मी गोयद ज़मी
ईं जो शाहिद अज़ पये मन नारा ज़न चूं बेक़रार
अब इसी गुलशन में लोगो राहतो आराम है
वक्त है जल्द आओ ऐ आवारगाने दश्ते ख़ार
इक ज़मा के बाद अब आई है यह ठण्डी हवा
फिर ख़ुदा जाने कि कब आवें यह दिन और यह बहार

(दुर्रे समीन उर्दू पृष्ठ 156-157 प्रकाशन 2004 ई)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ज़िल्ली (प्रतिरूपी) नबुव्वत का दावा और उसकी वास्तविकता

प्रिय पाठको! सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विभिन्न दावों और आपके सम्मान के बारे में आप पिछले पृष्ठों में पढ़ चुके हैं यहां हम आपके एक और दावा, ज़िल्ली नबुव्वत को वर्णन कर रहे हैं। सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूर्णता मुहब्बत के कारण अल्लाह तआला ने ज़िल्ली नबुव्वत का स्थान प्रदान किया चूंकि ख़िलाफ़त प्रणाली का आरम्भ भी इस नबुव्वत के आरम्भ से होता है इसलिए नबुव्वत के दावे को स्पष्ट करना आवश्यक है। आपके इस नबुव्वत के दावा की वास्तविकता को न समझने के कारण मुसलमानों का एक बड़ा भाग आप को नऊज़ु बिल्लाह नबुव्वत का इन्कार करने वाला कहता है इस तरह आपके मानने वालों में से एक वर्ग अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए आपके दावा से हट गया। इसलिए आपके इस दावा का महत्त्व अन्य दावों से बहुत बड़ा है और आप का सबसे उच्च स्थान है जो आपको अल्लाह तआला की ओर से प्रदान किया गया है।

प्रिय पाठको जैसा कि हम जानते हैं कि आज से लगभग 14 सौ वर्ष पूर्व ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो वसल्लम ने उम्मते मुहम्मदिया में हकम व न्याय करने वाले एक महान इमाम मसीह मौऊद, महदी मौऊद के आने की सुख़बर दी थी और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस मौऊद के लिए चार बार स्पष्ट रूप से "नबी उल्लाह" (अर्थात अल्लाह के नबी) के शब्द प्रयोग किए थे।(देखें सही मुस्लिम) और हुज़ूर ने उम्मत के उस अकेले और वाहिद वजूद का वर्णन करते हुए फ़रमाया था لَيْسَ بَيْنِيْ وَبَيْنَهٗ نَبِيٌّ (अबू दाऊद) अर्थात मेरे और उसके मध्य कोई नबी नहीं होगा अर्थात एक मैं नबी हूं और एक वह नबी

होगा। केवल यही नहीं बल्कि हुज़ूर ने उम्मते मुहम्मदिया के उस मौऊद की नबुव्वत के सम्मान का कारण वर्णन करते हुए फ़रमाया था।

اَبُوْ بَکْرٍ اَفْضَلُ ھٰذِہِ الْاُمَّۃِ اِلَّا اَنْ یَّکُوْنَ نَبِیٌّ

(कुनूज़ुल हक़ायक लिउस्ताज़ सय्यद अब्दुर्रऊफ अल्मुनादी)

अर्थात: अबू बकर इस उम्मत के सबसे उत्तम व्यक्ति हैं सिवाए इसके कि कोई नबी पैदा हो जाए।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इन सुख़बरों के अनुसार फिर वह मुबारक घड़ी आई जब वह पवित्र वुजूद क़ादियान की पवित्र बस्ती में प्रकट हुआ और अल्लाह तआला ने अपने पवित्र संबोधन में उसे नबी और रसूल के स्थान पर खड़ा किया। "बराहीने अहमदिया" जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की एक प्रसिद्ध किताब 1880 ई से 1884 ई तक प्रकाशित हुई उस में यह इल्हाम वर्णित हैं।

प्रिय पाठको ! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब अल्लाह तआला से वार्तालाप का सम्मान पाया और ख़ुदा के कलाम में जब बार-बार हुज़ूर को नबी, रसूल और मुर्सल कहकर पुकारा गया तो आप मुसलमानों की सर्व साधारण आस्था और 1300 वर्षों से रिवाज पा चुकी नबुव्वत की परिभाषा के आधार पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने शब्दों को भौतिक अर्थों पर आधारित करने के स्थान पर उसके तात्पर्य की ओर ध्यान दिया।

नबुव्वत की ऊपर वर्णन की गई आस्था के अनुसार जो मुसलमानों में प्रचलित थी उस से बचने के लिए नबी और रसूल का प्रयोग अपने लिए बहुत कम करते थे और जब अल्लाह तआला की वह्यी में आप को नबी कहा जाता तो आप उस पुरानी आस्था के कारण जो उस समय मुसलमानों में प्रचलित थी अर्थात यह कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं आ सकता अपने आप को नबी कहने के स्थान पर उन शब्दों से यह अभिप्राय लेते थे कि नबी से अभिप्राय केवल आंशिक नबुव्वत पर आधारित नबी अर्थात "मुहद्दस" है परन्तु चूंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के निकट नबी थे और ख़ुदा तआला

बार-बार और निरन्तर बारिश की तरह अपनी वह्यी में हुज़ूर को नबी और रसूल के शब्दों से सम्बोधित करता था। इसलिए उस वह्यी ने आप को पहले विचारों पर स्थापित न रहने दिया। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ख़ुद फ़रमाते हैं-

"आरम्भ में मेरी यही आस्था थी कि मुझ को मसीह पुत्र मरियम से क्या समानता है वह नबी है और ख़ुदा के सम्माननीय लोगों में से है और यदि कोई बात मेरी प्रतिष्ठा के बारे में प्रकट होती है तो मैं उसको एक आंशिक सम्मान क़रार देता था परन्तु बाद में ख़ुदा तआला की वह्यी बारिश की तरह मेरे पर उतरी। इस ने मुझे इस अक़ीदा पर स्थापित न रहने दिया और स्पष्ट तौर पर नबी का ख़िताब मुझे दिया गया। परन्तु इस तरह से कि एक पहलू से नबी और एक पहलू से उम्मती।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग न 22 हकीक़तुल वह्यी पृष्ठ 153-154 तबअ लन्दन ऐडिशन 1984 ई)

इसके बाद आपने हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम से प्रत्येक शान में बेहतर होने का ऐलान फ़रमा दिया। अत: जब यह बात ख़ुदा तआला की ओर से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर स्पष्ट की गई कि लोगों में प्रचलित नबुव्वत की परिभाषा सारगर्भित तथा मानेअ (ठोस और तार्किक) नहीं है और यह कि नबी के लिए शरीयत का लाना ज़रूरी नहीं और न ही ज़रूरी है कि वह पिछली शरीयत के कुछ आदेशों को अस्वीकार करे और पहले नबी का उम्मती न हो हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने नबुव्वत और रिसालत की वास्तविकता इन शब्दों में वर्णन फरमाई

"मेरी नबुव्वत से अभिप्राय केवल ख़ुदाई वार्तालाप तथा बातचीत की प्रचुरता है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण से प्राप्त होती है। अत: अल्लाह तआला से वार्तालाप तथा बातचीत के आप लोग ही मानने वाले हैं मैं इसकी प्रचुरता का नाम अल्लाह तआला के आदेश से नबुव्वत रखता हूँ।"

(रूहानी ख़ज़ायन भाग न 22 पृष्ठ 503 परिशिष्ट हकीक़तुल वह्यी पृष्ठ 68 1984 ई लन्दन)

"मेरे निकट नबी उसको समझते हैं जिस पर अल्लाह का कलाम यक़ीनी, और अत्यधिक उतरा हो, जो ग़ैब पर आधारित हो। इसलिए ख़ुदा ने मेरा नाम नबी रखा।"

(रूहानी ख़ज़ायन भाग- 20 पृष्ठ 412 तजल्लीयात इलाहिया पृष्ठ 20 1984 ई लन्दन)

"यदि ख़ुदा तआला से ग़ैब की ख़बरें पाने वाला नबी का नाम नहीं रखता तो फिर किस नाम से उसको बुलाया जाए ? यदि कहो उसका नाम मुहद्दस रखना चाहिए तो मैं कहता हूँ तहदीस का अर्थ किसी कोष की पुस्तक में इज़हारे ग़ैब नहीं है। परन्तु नबुव्वत के अर्थ ग़ैब की बात को प्रकट करना है।"

(एक ग़लती का इज़ाला, रूहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 209 प्रकाशन 1984 ई लन्दन)

प्यारे पाठको! नबुव्वत की परिभाषा जो उस समय प्रचलित थी उसमें इंक्लाबी परिवर्तन के बाद अर्थात लगभग 1901 ई से लेकर अपने देहान्त तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट रूप से और पूरी स्पष्टता के साथ अपनी ज़ात पर नबी रसूल और मुर्सल के शब्दों का प्रयोग फ़रमाया परन्तु हमेशा हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने यह सावधानी बरती कि कहीं लोग किसी भूल का शिकार न हो जाएं। इसलिए हुज़ूर अलैहिस्सलाम जब भी अपने लिए नबी या रसूल का शब्द प्रयोग करते तो यह खोल कर वर्णन कर देते कि नबुव्वत से मेरा मक़सद वह प्रचलित नबुव्वत नहीं है जिसके लिए नई शरीयत लाना ज़रूरी है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम हमेशा इस बात को स्पष्ट रूप से वर्णन करते हैं कि मैं रसूल करीम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उम्मती हूँ और मुझे जो कुछ मिला है आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फैज़ से मिला है और मेरी नबुव्वत हुज़ूर अलैहिस्सलाम के नबुव्वत के स्तर हरगिज़ विरुद्ध नहीं है। अतः आप फ़रमाते हैं:

"मैं नई शरीयत और नए नाम के रूप से रसूल और नबी नहीं हूँ और मैं रसूल और नबी हूँ अर्थात पूर्णता प्रतिरूप के रूप में जो आइना के सदृश्य है जिसमें मुहम्मदी शक्ल और मुहम्मदी नबुव्वत का सम्पूर्ण प्रतिबिम्ब है।"

(रूहानी ख़ज़ायन भाग 18, पृष्ठ 381 नुज़ूल मसीह पृष्ठ 5 प्रकाशन 1984 ई लन्दन)

और फ़रमाते हैं

"जिस स्थान पर मैंने नबुव्वत या रिसालत से इन्कार किया है केवल इन अर्थों से किया है कि मैं स्थायी रूप से कोई शरीयत लाने वाला नहीं हूँ और न ही आज़ाद रूप से नबी हूँ परन्तु इन शब्दों से कि मैंने अपने अनुकरण किए जाने वाले रसूल से बातिनी लाभ पाकर और अपने लिए उसका नाम पाकर उसके माध्यम से ख़ुदा की ओर से ग़ैब

का ज्ञान पाया है, रसूल और नबी हूँ परन्तु बिना किसी नई शरीयत के। इस तरीके का नबी कहलाने से मैंने इन्कार नहीं किया इन्हीं अर्थों से ख़ुदा ने मुझे नबी और रसूल करके पुकारा है अत: अब भी मैं इन अर्थों से नबी और रसूल होने से इन्कार नहीं करता।"

(एक ग़लती का इज़ाला, रूहानी ख़ज़ायन भाग न० 18 पृष्ठ 211 - 212, प्रकाशन 1984 ई लन्दन)

और मार्च 1908 ई में और अधिक स्पष्ट करते हुए फ़रमाते हैं:

"हमारा दावा है कि हम रसूल और नबी हैं। वास्तव में यह शाब्दिक मतभेद है ख़ुदा तआला जिसके साथ ऐसी बातचीत करे जो गणना की दृष्टि से दूसरों से बहुत बढ़कर हो और उसमें भविष्यवाणियां भी प्रचुरता से हों उसे नबी कहते हैं। यह परिभाषा हम पर सच्ची होती है। हम नबी हैं, हां शरीयत वाली नबुव्वत नहीं जो अल्लाह की किताब को स्थगित करे।" (बदर 5 फरवरी 1908 ई)

प्यारे पाठको ! नबुव्वत के दावा का सारांश यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फैज़ से प्रकाशित होकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की आज्ञा से प्रतिरूप नबी का दावा फ़रमाया और आप अलैहिस्सलाम की प्रतिरूप नबुव्वत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुकरण और सौन्दर्य के प्रकटन के लिए है। आरंम्भिक ज़िन्दगी से ही आप अलैहिस्सलाम ने रिवाज पा चुकी आस्था के अनुसार ख़ुदा के शब्द नबी से सम्बोधन करने के बावजूद उसके अर्थ मुहद्दस किए हैं। परन्तु जब आप पर बहुत अधिक बारिश की तरह यह बात स्पष्ट कर दी गई कि आप प्रतिरूप नबी हैं तो आप ने सब का सामने इस बात को खोल कर वर्णन किया कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से नबी के रूप में हूं।

ثم تكون خلافة على منهاج النبوة

अर्थात नबुव्वत की पद्धति पर ख़िलाफ़त की व्यवस्था

बाग़ मुरझाया हुआ था गिर गए थे सब समर
मैं ख़ुदा का फ़ज़्ल लाया फिर हुए पैदा सिमार

हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों

के अनुसार आवश्यकता के समय इस्लाम के पुनरुत्थान और इस्लाम के समस्त धर्मों पर विश्वव्यापी प्रभुत्व के लिए क़ादियान की पवित्र बस्ती में अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम को उम्मती नबी और मसीह तथा महदी बना कर पैदा किया। आप ने घोषणा की

वक़्त था वक़्त मसीहा न किसी और का वक़्त
मैं न आता तो कोई और ही आया होता

इसी तरह फ़रमाया :

"सच्चाई की विजय होगी और इस्लाम के लिए फिर उस ताज़गी तथा रोशनी का दिन आएगा जो पहले समयों में आ चुका और वह सूर्य अपने पूरे कमाल के साथ चढ़ेगा जैसा कि पहले चढ़ चुका है।" (फ़तह इस्लाम पृष्ठ 10)

इस्लाम की विजय और धर्म के सुधार का महान कार्य चूँकि निरन्तर कोशिशों और क़ुर्बानियों को चाहता था जिसकी निरन्तर निगरानी और उत्थान के लिए किसी ऐसी आध्यात्मिक प्रणाली की आवश्यकता थी जो क़यामत तक जारी रहता। इसलिए आपने अल्लाह तआला से सुख़बर पाकर अपनी जमाअत को 1905 ई. में पुस्तक अलवसीयत में यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि भविष्य में जमाअत में ख़ुदा तआला की ओर से क़ुदरत-ए-सानिया (अर्थात ख़िलाफ़त) जारी होगी जो क़यामत तक जारी रहेगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों से क़ुदरत-ए-सानिया की स्थापना की ख़ुशख़बरियां वर्णन की जाती रही हैं। इन ख़ुशख़बरियों से एक और एक दो की तरह प्रमाणित हो जाता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद जमाअत में ख़िलाफ़त की प्रणाली जारी रहेगी और यह ख़िलाफ़त व्यक्तिगत ख़िलाफ़त होगी और ख़िलाफ़त राशिदा की शैली और तरीक़ा पर होगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी नबुव्वत और नबुव्वत के बाद इलाही सुन्नत का वर्णन करते हुए अपने बाद ख़िलाफ़त की प्रणाली को ज़रूरी क़रार देते हुए उसको अल्लाह तआला की दया और उसकी बरकतों के अवतरण का कारण क़रार देते हुए अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "अलवसीयत" में जो आप ने अपने

देहान्त से कुछ समय पहले लिखी है, फ़रमाते हैं:

"यह ख़ुदा तआला की आदत है तथा जब से कि उसने मानव को धरती पर पैदा किया सदैव इस आदत को वह प्रकट करता रहा है कि वह अपने नबियों तथा रसूलों की सहायता करता है तथा उनको विजय देता है जैसा कि वह फ़रमाता है -

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِیْ (अल् मुजादल: आयत 22)

और विजय से अभिप्राय यह है कि जैसा कि रसूलों और नबियों की यह इच्छा होती है कि ख़ुदा का तर्क धरती पर पूर्ण हो जाए तथा उसका मुक़ाबला कोई न कर सके इसी प्रकार ख़ुदा तआला आकाशीय निशानों के साथ उनकी सच्चाई प्रकट कर देता है। तथा जिस नेक आदत को वे दुनिया में फ़ैलाना चाहते हैं उसका बीजरोपण उन्हीं के हाथ से कर देता है। परन्तु उसका चरमोत्कर्ष उनके हाथ से नहीं करता बल्कि ऐसे समय में उनको मौत देकर जो सामान्यत: एक असफलता का भय अपने साथ रखती है, विरोधियों को हँसी और ठट्ठे और व्यंग और अपशब्द कहने का अवसर दे देता है। और जब वह हँसी ठट्ठा कर चुकते हैं तो फिर एक दूसरा हाथ अपनी शक्ति का दिखाता है। और ऐसे साधन पैदा कर देता है जिनके द्वारा वे उद्देश्य जो कुछ सीमा तक अधूरे रह गए थे अपनी चरमोत्कर्ष को पहुँचते हैं। अर्थात दो प्रकार की क़ुदरत प्रकट करता है:

(1) प्रथम स्वयं नबियों के हाथ से अपनी क़ुदरत का हाथ दिखाता है।

(2) दूसरे ऐसे समय में जब नबी के देहान्त के पश्चात् कठिनाइयों का सामना पैदा हो जाता और दुश्मन ज़ोर में आ जाते हैं और समझते हैं कि अब काम बिगड़ गया और विश्वास कर लेते हैं कि अब यह जमाअत मिट जाएगी और स्वयं जमाअत के लोग भी चिन्ता में पड़ जाते हैं और उनकी कमरें टूट जाती हैं तथा कई अभागे विमुख होने का मार्ग धारण कर लेते हैं। तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी शक्तिशाली क़ुदरत प्रकट करता है और गिरती हुई जमाअत को सम्भाल लेता है। अत: वह जो अन्त तक धैर्य रखता है ख़ुदा तआला के इस चमत्कार को

देखता है जैसा कि हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ के समय में हुआ कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का देहान्त एक असमय की मृत्यु समझी गई और बहुत से नासमझ देहाती विमुख हो गए और सहाबा भी दुःख के कारण दीवानों की तरह हो गए। तब ख़ुदा तआला ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक को खड़ा करके पुनः अपनी शक्ति का नमूना दिखाया। और इस्लाम को मिटते-मिटते थाम लिया और उस वादे को पूरा किया जो फ़रमाया था,

وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا

(अन्नूर, आयत -56)

अर्थात् भय के बाद फिर हम उनके पैर जमा देंगे ऐसा ही हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के समय में हुआ। जबकि हज़रत मूसा मिस्र और कन्आन के मार्ग में बनी इस्राईल को वादे के अनुसार निर्धारित मंज़िल तक पहुँचाने से पहले देहान्त हो गए। और बनी इस्राईल में उनके मरने से एक बड़ा शोक पड़ गया जैसा कि तौरेत में लिखा है कि बनी इस्राईल इस असमय मृत्यु के दुःख से और हज़रत मूसा की अचानक जुदाई से चालीस दिन तक रोते रहे। ऐसा ही हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथ घटित हुआ और सलीब की घटना के समय समस्त हवारी तितर-बितर हो गए और उन में से एक विमुख भी हो गया।

अतः हे प्रियजनो ! जब कि पुरातन से अल्लाह का विधान यही है कि ख़ुदा तआला दो क़ुदरतें दिखलाता है ताकि विरोधियों की दो झूठी ख़ुशियों को मिटाकर दिखला दे अतः अब सम्भव नहीं है कि ख़ुदा तआला अपनी पुरातन पद्धति को छोड़ दे। इस लिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास वर्णन की, दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएं क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना आवश्यक है और उसका आना तुम्हारे लिए उत्तम है क्योंकि वह सदैव है जिस का समय कयामत तक नहीं टूटेगा और वह दूसरी क़ुदरत तब तक नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊँ। परन्तु मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो सदा तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का बराहीन अहमदिया में वादा है जैसा कि ख़ुदा कहता है कि मैं इस

जमाअत को जो तेरे मानने वाले हैं क़यामत तक दूसरों पर विजय दूंगा अतः आवश्यक है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आए ताकि इसके पश्चात् वह दिन आए जो चिरस्थायी वादे का दिन है वह हमारा ख़ुदा वादों का सच्चा और निष्ठावान और सच्चा ख़ुदा है वह सब कुछ तुम्हें दिखाएगा जिस का उसने वादा दिया। यद्यपि यह दिन दुनिया के आख़री दिन हैं और बहुत बलाएँ हैं जिनके उतरने का समय है पर अवश्य है कि यह दुनिया स्थापित रहे जब तक वह सारे वादे पूरे न हो जाएँ जिनकी ख़ुदा ने सूचना दी, मैं ख़ुदा की ओर से क़ुदरत के रूप में प्रकट हुआ तथा मैं ख़ुदा की एक साक्षात् क़ुदरत हूं। तथा मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत के द्योतक होंगे। इसलिए तुम ख़ुदा की दूसरी क़ुदरत के इंतज़ार में एकत्र होकर दुआ करते रहो। और चाहिए कि प्रत्येक नेकों की जमाअत प्रत्येक देश में एकत्र होकर दुआ में लगे रहें। और दूसरी क़ुदरत आकाश से उतरे। और तुम्हें दिखाए कि तुम्हारा ऐसा सामर्थ्यवान ख़ुदा है। अपनी मौत को निकट समझो तुम नहीं जानते कि किस समय वह घड़ी आ जाएगी और चाहिए कि जमाअत के बुज़ुर्ग जो पवित्र आत्मा रखते हैं मेरे नाम पर मेरे बाद लोगों से बैअत लें।

(अलवसीयत पृष्ठ 5-8 प्रकाशन फ़ज़ले उमर प्रैस क़ादियान सन प्रकाशन 2004 ई)

सम्माननीय पाठको ! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वर्णन की गई उपरोक्त पंक्तियों से कई परिणाम निकलते हैं :

पहला नतीजा: यह है कि क़ुदरत ऊला से अभिप्राय नबी ख़ुद होते हैं और क़ुदरत-ए-सानिया ख़िलाफ़त का ही दूसरा नाम है क़ुदरत-ए-सानिया के ख़िलाफ़त होने पर हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि के वजूद को गवाह के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जैसा कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"तब ख़ुदा तआला ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि को खड़ा करके पुनः अपनी क़ुदरत का नमूना दिखाया।"

दूसरा नतीजा: इस इबारत से यह निकलता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क़ुदरत ऊला को नबी क़रार देकर क़ुदरत-ए-सानिया के प्रकटन को

नबियों के बाद चिरस्थायी सुन्नत क़रार देकर जमाअत अहमदिया को इसका विश्वसनीय वादा दिया है।

तीसरा नतीजा: इस पंक्ति से यह निकलता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम "आयत इस्तिख़लाफ़" से अभिप्राय केवल मामूरियत वाली ख़िलाफ़त ही नहीं लेते बल्कि उसको उमूमियत का रंग देते हैं और उस ख़िलाफ़त को भी "आयत इस्तिख़लाफ़" का चरितार्थ ही समझते हैं जिसके उत्तराधिकारी हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि हुए हैं। अत: ख़लीफ़ाओं का वह क्रम भी आयत इस्तिख़लाफ़ का चरितार्थ क़रार पाता है जिसका आरम्भ हज़रत अबूबकर रज़ि की हस्ती से हुआ।

चौथा नतीजा: इस पंक्ति से यह निकलता है कि क़ुदरत-ए-सानिया मेरे जाने के बाद होगी। क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"मैं जब जाऊंगा तब फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा।"

अत: इस पंक्ति से यह बात भी स्पष्ट होती है कि क़ुदरत-ए-सानिया से अभिप्राय सदर अंजुमन अहमदिया नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद कुछ लोगों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि क़ुदरत-ए-सानिया से अभिप्राय अंजुमन है। परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ऊपर लिखी पंक्ति से उनकी इस बात का खण्डन हो जाता है। क्योंकि अंजुमन तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के युग में बन चुकी थी। जैसा कि आपने वर्णन फ़रमाया कि मैं जब जाऊंगा तब फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा। सदर अंजुमन अहमदिया एक ऐसी संस्था थी जिसकी नींव हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बरकत वाले जीवन में ही रखा जा चुका था। अत: इससे प्रमाणित हुआ कि क़ुदरत-ए-सानिया से अभिप्राय अंजुमन नहीं बल्कि ख़िलाफ़त का बरकतों से भरी प्रणाली है।

पांचवां नतीजा: इस पंक्ति से यह निकलता है कि नबियों के बाद कठोर परीक्षाओं का आना निर्दिष्ट होता है और उन परीक्षाओं का ख़लीफ़ाओं के द्वारा

अमन में बदलना अल्लाह तआला का पुरातन विधान है। प्रत्येक नबी की उम्मत से यह मामला हुआ है। और यह पुरानी सुन्नत सिलसिला अहमदिया में भी ज़रूर पूरी होगी। जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया

"अत: अब संभव नहीं कि ख़ुदा तआला अपनी पुरातन सुन्नत को तर्क कर दे।"

अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद भी जमाअत को कठोर परीक्षाएं आऐंगी और भय की अवस्था पैदा होगी। परन्तु पुरातन सुन्नत के अनुसार आपके ख़लीफ़ाओं द्वारा उस भय को अमन में बदल दिया जाएगा और परीक्षाओं को दूर कर दिया जाएगा और यह अटूट सत्य है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद जमाअत पर कठोर परीक्षाएं आईं परन्तु ख़ुदा तआला ने ख़लीफ़ा के हाथ से उनको दूर किया और इस तरह अल्लाह तआला की पुरातन सुन्नत पूरी हुई।

छठा नतीजा: इस पंक्ति से यह निकलता है कि इस पंक्ति में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुदरत-ए-सानिया को चिरस्थायी क़रार दिया है जैसा कि हुज़ूर फ़रमाते हैं:

"क्योंकि वह स्थायी है जिसका सिलसिला क़यामत तक विच्छेद नहीं होगा।"

अर्थात जब ख़लीफ़ा स्थापित हो जाएगा तो वह इस जमाअत की बुनियादी कड़ी होगा और उसके बाद भी एक के बाद दूसरी क़ुदरत-ए-सानिया के द्योतक होते चले जाएँगे और ख़ुदा तआला ख़िलाफ़त के क्रम को निरन्तरता प्रदान करता चला जाएगा और क़यामत तक ख़लीफ़ा सिलसिला अहमदिया में आते रहेंगे। जमाअत की प्रणाली दिन प्रतिदिन मज़बूत से मज़बूत होती चली जाएगी और ऐसी दृढ़ता प्राप्त हो जाएगी कि ख़िलाफ़त का क्रम क़यामत तक जारी रहेगा।

सातवाँ नतीजा : इस पंक्ति से यह निकलता है कि क़ुदरत-ए-सानिया आकाश से अवतरित होगी जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं ताकि दूसरी क़ुदरत आकाश से अवतरित हो। अर्थात ऐसे ख़लीफाओं का चयन भी

आकाशीय समर्थन से होगा। और उनके चयन में एक प्रकार से ख़ुदा तआला का दख़ल होगा।

ये सब परिणाम जो पुस्तक अलवसीयत के उद्धरण से निकलते हैं सिद्ध करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद ख़िलाफ़त का क्रम जारी रहेगा और व्यक्तिगत ख़िलाफ़त की अवस्था में होगा जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग में हुआ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी किताब "हमामतुल बुशरा" में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक दूसरी हदीस भी लिखी है कि :

ثم یسافر المسیح الموعود او خلیفة من خلفائہ الیٰ ارض دمشق۔

अर्थात: कि ख़ुद मसीह मौऊद या उसके ख़लीफ़ाओं में से कोई ख़लीफ़ा दमिशक़ देश की ओर सफ़र करेगा।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तक में यह लिखकर दो अत्यधिक स्पष्ट गवाहियाँ ख़िलाफ़त के विषय में वर्णन फ़रमाई हैं। एक तो यह कि हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मसीह मौऊद के उत्तराधिकारी और ख़लीफ़ा होंगे और उन में से कोई ख़लीफ़ा दमिशक़ की यात्रा भी करेगा। दूसरी गवाही आपकी अपनी है कि मानो आपने इस हदीस को स्वीकार किया और इस तरह आपके बाद जो कुछ होने वाला था उसका प्रकटन इस हदीस को वर्णन करके कर दिया और अपने देहान्त से पंद्रह साल पहले यह गवाही दे दी कि मेरे बाद बार-बार खलीफा होंगे और उनमें से कोई एक ख़लीफ़ा दमिशक़ की यात्रा भी करेगा।

अत: घटनाओं ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस व्याख्या पर गवाही दे दी कि अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो को मन्सब ख़िलाफ़त पर स्थापित फ़रमाने के बाद यह सामर्थ्य प्रदान किया और आपने दमिशक़ की यात्रा की और इस हदीस को वास्तविक रूप में पूरा कर दिया।

सब्ज़ इश्तिहार में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि :

दूसरा तरीक़ा रहमत के अवतरित होने का नबियों, रसूलों औलियाओं तथा ख़लीफ़ाओं के भेजने से है ताकि उनके अनुकरण से लोग सीधे रास्ते की हिदायत पर आ जाएं और उनके आदर्शों पर चल कर मुक्ति पा जाएं। अतः ख़ुदा तआला ने चाहा कि इस विनीत की औलाद के द्वारा ये दोनों बातें प्रकट हो जाएं।

(रूहानी ख़ज़ाइन भाग नम्बर 2 पृष्ठ 462 सब्ज़ इश्तिहार हाशिया पृष्ठ 16, 1984 ई लंदन)

यह वर्णन भी बता रहा है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में ख़िलाफ़त का क्रम जारी रहेगा और कुछ ख़लीफ़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की औलाद में से भी होंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ग़ैर मुस्लिम क़ौमों को सुलह का सन्देश देते हुए अपनी जमाअत की पोज़ीशन स्पष्ट करते हुए अपने जीवन के अन्तिम तहरीर अर्थात पुस्तक "पैग़ाम सुलह" में लिखा:

"जो लोग हमारी जमाअत से अभी बाहर हैं वास्तव में वे सब परेशान तबीयत और परेशान विचार वाले हैं किसी ऐसे लीडर के अधीन वे लोग नहीं हैं जो उनके निकट आज्ञापालन के योग्य है।"

स्पष्ट है कि आज्ञापालन के योग्य लीडर धार्मिक जमाअत के नबी के बाद ख़लीफ़ा ही होता है इसके बिना प्रणाली में एकता स्थापित नहीं रह सकती। इससे यह प्रमाणित होता है कि ख़िलाफ़त का क्रम जमाअत अहमदिया में जारी रहे ताकि यह जमाअत परेशान तबीयत और परेशान विचार वाली न बन जाए।

इस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पुस्तक पैग़ाम सुलह में सुलह की शर्तें लिखने के बाद फ़रमाते हैं कि:

"यदि ग़ैर मुस्लिम सुलह पर स्थापित न रहें तो एक बड़ी रक़म जुर्माना की जो तीन लाख रुपए से कम नहीं होगी अहमदी सिलसिला के इमाम की सेवा में प्रस्तुत करेंगे। (पैग़ाम सुलह)

सम्माननीय पाठको ! यह पुस्तक अर्थात पैग़ाम सुलह हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद 21 जून 1908 ई को पंजाब यूनीवर्सिटी

हाल लाहौर में पढ़ी गई थी चूँकि हुज़ूर अलैहिस्सलाम देहान्त पा चुके थे इसलिए हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हो ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल ने अहमदी सिलसिला के इमाम की हैसियत से इसकी स्वीकारिता का ऐलान किया जिसका वर्णन अख़बार अल्हकम जिल्द 12 नम्बर 40 पृष्ठ 2 में इस तरह वर्णित है।

ख़्वाजा साहिब (ख़्वाजा कमालुद्दीन) ने एक पत्र हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि का प्रस्तुत करके पढ़ा जिसमें हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह (अव्वल) ने ख़्वाजा साहिब को हज़रत अक़दस की इस पुस्तक अर्थात पैग़ाम सुलह के पढ़ने का आदेश इमाम होने की हैसियत से दिया था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पंक्ति और आपके देहान्त पर ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि के व्यवहार से यह प्रमाणित है कि अहमदी सिलसिला में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निकट प्रत्येक युग में एक आज्ञापालन के योग्य इमाम का होना ज़रूरी है वर्ना मुआहिदा की सूरत व्यर्थ हो जाएगी।

* हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने देहान्त से डेढ़ महीने पहले लाहौर में एक तक़रीर की थी जिसमें ख़िलाफ़त के बारे में स्पष्ट वर्णन मौजूद है। हुज़ूर फ़रमाते हैं:

"सूफ़िया ने लिखा है कि जो व्यक्ति किसी शेख़ या रसूल और नबी के बाद ख़लीफ़ा होने वाला होता है तो सबसे पहले ख़ुदा की ओर से उसके दिल में सच्चाई डाली जाती है। जब कोई रसूल या मशाइख़ वफ़ात पा जाते हैं तो दुनिया पर एक ज़लज़ला आ जाता है और वह एक बहुत ही ख़तरे का समय होता है परन्तु ख़ुदा किसी ख़लीफ़ा के द्वारा उसको मिटाता है और फिर मानो इस बात की पुनः उस ख़लीफ़ा के द्वारा दृढ़ता होती है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क्यों अपने बाद ख़लीफ़ा निर्धारित न किया। इस में भी यही भेद था कि आपको ख़ूब ज्ञात था कि अल्लाह तआला ख़ुद एक ख़लीफ़ा निर्धारित करेगा क्योंकि यह ख़ुदा ही का काम है।" (अल्हकम 14 अप्रैल 1905 ई)

फिर फ़रमाया

"एक इल्हाम में अल्लाह तआला ने हमारा नाम भी शेख़ रखा है-

انت الشیخ المسیح الذی لا یضاع وقتہ۔

(अल्हकम 14 अप्रैल 1905 ई)

इस इल्हाम से भी स्पष्ट है कि हुज़ूर के बाद ख़लीफ़ा होंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"क़ुरआन शरीफ़ में لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ आया है जिससे क़यामत तक ख़लीफ़ाओं के होते रहना प्रमाणित है।"

(बदर 2 जून 1908 ई)

इन समस्त उद्धरणों से सूर्य के समान सिद्ध होता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निकट आपके देहान्त के बाद ख़िलाफ़त का सिलसिला इसी तरह जारी रहेगा जैसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद ख़िलाफ़त का सिलसिला अल्लाह तआला ने जारी किया था।

ख़िलाफ़त अहमदिया ख़ुदाई शुभसूचनाओं और भविष्यवाणियों के आलोक में

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के अतिरिक्त इस्लाम के अन्य बुज़ुर्गों के उपदेशों से भी यह बात सूर्य के समान सिद्ध हो जाती है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद आपके उत्तराधिकारियों का क्रम जारी होना मुक़द्दर था।

अहमदिया ख़िलाफ़त से अभिप्राय हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत के देहान्त के बाद आपके उत्तराधिकारियों का क्रम जारी होना है। इस अवसर पर केवल उन भविष्यवाणियों को वर्णन करता हूँ जिन से प्रमाणित होता है कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी के बाद क़ुदरत-ए-सानिया का आरम्भ केवल संयोग की घटना न थी बल्कि यह ख़ुदा तआला की तक़दीरों में से एक तक़दीर थी। वास्तव में यह मन्सूबा अल्लाह तआला का अटल मन्सूबा था जिसने अवश्य जारी होना था। इसकी स्थापना के बारे में हज़ारों साल से अल्लाह के प्रिय बंदे अल्लाह तआला से सूचना पाकर बताते चले आए हैं जैसा कि यहूद की शरीयत की पुस्तक तालमूद में लिखा है।

अनुवाद: यह भी कहा जाता है कि वह (अर्थात मसीह) निधन हो जाएगा और उसकी सल्तनत उसके बेटे और पोते को मिलेगी। इसके प्रमाण में 'यसयाह अध्याय 42 आयत 4' को प्रस्तुत किया जाता है जिसमें कहा गया है कि वह न थकेगा और न हिम्मत हारेगा जब तक कि अदालत को धरती पर स्थापित न करे।

(बार जोज़फ़ बर्कले अध्याय 5 प्रकाशन लंदन 1878 ई)

इस भविष्यवाणी में दो बातों को वर्णन किया गया है प्रथम यह कि मसीह मौऊद के बाद उसकी ख़िलाफ़त का क्रम जारी होगा। द्वितीय यह कि उसकी सन्तान अर्थात बेटों और पोतों में से उसके उत्तराधिकारी होंगे और उसकी ख़ुदाई सल्तनत के वारिस बनेंगे।

दूसरी बात यह कि हज़रत ज़रतुश्त अलैहिस्सलाम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से एक हज़ार साल पहले ईरान में गुज़रे हैं। उनके धर्म के मुजद्दिद सासान प्रथम ने ज़रतश्ती धर्म के धार्मिक पुस्तक दुसतहीर में नीचे लिखी महान भविष्यवाणी फ़ारसी भाषा में वर्णन की है जिस का अनुवाद इस प्रकार है :

"फिर अरबी शरीयत पर हज़ार साल व्यतीत हो जाएँगे तो मतभेदों से धर्म ऐसा हो जाएगा कि यदि ख़ुद मूल संस्थापक के सामने प्रस्तुत किया जाए तो वह भी उसे पहचान न सकेगा..... और उनके अंदर मतभेद पैदा हो जाएगा और दिन प्रतिदिन मतभेद और आपसी दुश्मनी में बढ़ते चले जाएँगे...जब ऐसा होगा तो तुम्हें सुख़बर हो कि यदि युग में से एक दिन भी शेष रह जाएगा तो तेरे लोगों (फ़ारसी नस्ल) से एक व्यक्ति को खड़ा करूँगा जो तेरी खोई हुई इज़्ज़त तथा सम्मान को वापस लाएगा और पुनः स्थापित करेगा। मैं पैग़म्बरी तथा पेशवाई (नबुव्वत तथा ख़िलाफ़त या क़ुदरत ऊला तथा क़ुदरत-ए-सानिया) तेरी नस्ल से नहीं उठाऊंगा।"

(सफ़रनग दुसहतीर पृष्ठ 190 मलफ़ूज़ात हज़रत ज़रतुशत प्रकाशन 1280 प्रकाशन सिराजी दिल्ली उद्धृत सवानिह फ़ज़्ल उम्र भाग 1 पृष्ठ 67)

इस भविष्यवाणी में निम्नलिखित बातों का स्पष्टतः वर्णन मिलता है:

1. रसूल अरबी के एक हज़ार साल बाद धर्म मतभेदों का शिकार हो जाएगा अर्थात बहुत फ़िर्क़े तथा सम्प्रदाय हो जाएँगे।

2. इन फ़िर्क़ों की आपसी शत्रुता, दुश्मनियों का रूप धारण कर जाएंगी और बढ़ती चली जाएँगी।

3. उस युग में अल्लाह तआला फ़ारसी नस्ल वाले व्यक्ति को सुधार के लिए खड़ा करेगा।

4. इस फ़ारसी नस्ल वाले व्यक्ति का प्रादुर्भाव अटल तक़दीर है।

5. इसके बाद उसकी ख़िलाफ़त का क्रम चलेगा। उसके उत्तराधिकारी उसकी नस्ल में से भी होंगे।

भविष्यवाणियों में सबसे अधिक महान भविष्यवाणियां इस बारे में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हैं। आप ने कई तरीके से इस क्रम के जारी होने का वर्णन किया है अत: एक ओर तो आप ने आने वाले मसीह मौऊद को नबी उल्लाह क़रार दिया (देखें मुस्लिम किताबुल फ़ितन बाब ख़ुरूज अद्दजाल) दूसरी ओर आप ने फ़रमाया कि प्रत्येक नबुव्वत के बाद ख़िलाफ़त जारी होती है।

(कनज़ुल-आमाल भाग नम्बर 11 पृष्ठ 259 प्रकाशन बेरूत 1979 ई)

इन दोनों बातों पर नज़र डालने से यह स्पष्ट परिणाम निकलता है कि मसीह मौऊद के बाद भी उसकी ख़िलाफ़त का क्रम जारी होगा।

मसीह मौऊद का वर्णन करते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

"मसीह तशरीफ़ लाकर शादी करेंगे और उनके यहाँ सन्तान भी होगी।"

(मिश्कात मुज्तबाई किताबुल फ़ितन पृष्ठ 480 अध्याय 1)

इस में स्पष्ट भविष्यवाणी है कि मसीह मौऊद की शादी भी साधारण लोगों से अलग होगी और उसके बाद उसके उत्तराधिकारी उसके रूप वाले, उसकी औलाद होगी। वर्ना यह कोई वर्णन योग्य बात न थी क्योंकि साधारण लोग शादियां भी करते हैं और औलाद भी पैदा होती है।

वास्तविकता यह है कि अल्लाह तआला अपने नबियों को जब भी सन्तान की सुख़बर देता है तो इससे अभिप्राय महान सन्तान हुआ करती है जो कि अपने बाप की वास्तविक उत्तराधिकारी बनती है। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फ़रमाते हैं।

ففی ھذا اشارۃ الی ان اللہ یعطیہ ولداً صالحاً یشابہ اباہ ولا یاباہ ویکون من عباد اللہ المکرمین

(आईना कमालात इस्लाम पृष्ठ 578 हाशिया)

अर्थात इस मुबारक हदीस (यतज़व्वजो व यूलदु लहु) में इशारा है कि अल्लाह

तआला उस मसीह मौऊद को एक नेक पुत्र प्रदान करेगा जो कि अपने पिता के समान होगा और उसका अवज्ञाकारी न होगा और अल्लाह के सम्माननीय बंदों में से होगा।

सारी बात का सार यह कि इसमें भविष्यवाणी थी कि:

मसीह मौऊद की एक शादी विशेष और स्पष्ट रूप अपने अंदर रखती होगी। उसके यहाँ सन्तान होगी। उसकी सन्तान अपने बाप की वास्तविक उत्तराधिकारी होगी।

हज़रत नेअमतुल्लाह वली जो कि उम्मते मुस्लिमा में साहिबे कश्फ़ और इल्हाम वाले बुज़ुर्ग हुए हैं मसीह मौऊद के वर्णन में फ़रमाते हैं:

दूर ओ चूँ शवद तमाम बकाम
पिसरश अज़ यादगार मी बीनम

(अलारबईन फ़ी अहवालुल महदिय्यीन लेखक हज़रत शाह इस्माईल शहीद प्रकाशन नवम्बर 1851 ई मिस्री गंज कलकत्ता)

जिसका अनुवाद यह है कि जब महदी और मसीह मौऊद का युग सम्पूर्ण हो जाएगा और गुज़र जाएगा उसके बाद उसका बेटा यादगार के रूप में रह जाएगा।

इस भविष्यवाणी में हज़रत नेअमतुल्लाह साहिब ने निम्नलिखित बातें वर्णन की हैं। महदी मसऊद के बाद उसकी ख़िलाफ़त अर्थात उत्तराधिकारी का क्रम चलेगा। उसके उत्तराधिकारियों में से उसका बेटा महान उत्तराधिकारी होगा जो उसकी यादगार होगा।

सम्माननीय पाठको ! सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की क़ुदरत-ए-सानिया की स्थापना और अपने बाद ख़िलाफ़त की स्थापना की भविष्यवाणियों के अनुसार आज से ठीक 114 साल पहले जमाअत अहमदिया में दूसरी क़ुदरत अर्थात नबुव्वत के पथ पर ख़िलाफ़त की स्थापना हुई और ख़िलाफ़त की स्थापना का होना ही इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि आज इस्लामी जगत में केवल जमाअत अहमदिया ही मोमिनों की वह जमाअत है जो सच्चे ईमान के साथ नेक कर्म पर स्थापित है। इन नेक कर्मों और हब्लुल्लाह (अर्थात क़ुदरत-ए-सानिया)

की विशेषता ही है कि आज जमाअत अहमदिया अपनी कम संख्या के बावजूद सारे संसार में उन्नति कर रही है जबकि अन्य मुसलमान ख़िलाफ़त के न होने के कारण असफलता के दलदल में धंसते चले जा रहे हैं।

सम्माननीय पाठको ! क़ुदरत-ए-सानिया के दूसरे द्योतक सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद अल्मुस्लेह मौऊद के यह शब्द कितने सच्चे हैं कि:

"ख़िलाफ़त इस्लाम के अहम विषयों में से एक महत्त्वपूर्ण विषय है और इस्लाम कभी उन्नति नहीं कर सकता जब तक ख़िलाफ़त न हो। हमेशा खलीफ़ाओं के द्वारा इस्लाम ने उन्नति की है और भविष्य में भी इसके द्वारा ही उन्नति करेगा और हमेशा ख़ुदा तआला ख़लीफ़ा निर्धारित करता रहा है और भविष्य में भी ख़ुदा तआला ही ख़लीफ़ा निर्धारित करेगा।"

(उद्धृत तफ़सीर सूरह नूर 71 दर्सुल क़ुरआन)

ख़िलाफ़त नूर रब्बुल आलमीं है
ख़िलाफ़त ज़िल्ले ख़त्मुल मुर्सलीं है
ख़िलाफ़त हिर्ज़े जाने मोमिनीं है
ख़िलाफ़त दीं का एक हिस्ने हसीं है
ख़िलाफ़त पासबाने मोमिनीं है
ख़िलाफ़त ही से शाने मोमिनीं है

(मौलाना मुहम्मद सिद्दीक़ साहिब अमृतसरी)

मुस्लिम उम्मत की ख़िलाफ़त से महरूमी
तथा ख़िलाफ़त की स्थापना के लिए मुस्लिम दुनिया की पुकार

ख़िलाफ़त एक बहुत ही पवित्र मन्सब और प्रणाली है और यह अल्लाह तआला उन्हीं क़ौमों को प्रदान करता है जो उचित रंग में नेक कर्म करते हैं जैसा कि पवित्र क़ुरआन में है:

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَ لَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ O (सूरः नूर आयत- 56)

अनुवाद : तुम में से जो लोग ईमान लाए और पुण्य कर्म किए उनसे अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि उन्हें अवश्य धरती में ख़लीफ़ा बनाएगा जैसा कि उस ने उनसे पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया और उनके लिए उनके धर्म को, जो उस ने उनके लिए पसन्द किया अवश्य दृढ़ता प्रदान करेगा और उनकी भयपूर्ण अवस्था के बाद अवश्य उन्हें शान्तिपूर्ण अवस्था में बदल देगा। वे मेरी उपासना करेगें। मेरे साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराएँगें और जो उसके बाद भी कृतघ्नता करे तो यही वे लोग हैं जो अवज्ञाकारी हैं।

पवित्र क़ुर्आन की इस आयत में ख़ुदा तआला ने मुसलमानों से वादा फ़रमाया है कि यदि तुम नेक कर्म करते रहे, तक़्वा की राहों पर चलते रहे तो जिस प्रकार पहली क़ौमों को ख़िलाफ़त की नेअमत प्रदान की गई थी उसी तरह तुम्हें भी ख़िलाफ़त की नेअमत प्रदान की जाएगी।

यहां इसका हरगिज़ यह अभिप्राय नहीं कि तुम धरती में ख़िलाफ़त के लिए मांग शुरू कर दो। इसके लिए जलसे, बड़ी बड़ी मज्लिसें और सेमिनार आयोजित करो,जलूस निकालो और लोगों को बताओ कि हमने ख़िलाफ़त की प्रणाली

स्थापित करनी है तो तब हम तुम्हें ख़िलाफ़त की नेअमत प्रदान करेंगे, क्योंकि ख़िलाफ़त कोई सांसारिक पद नहीं है। यह तो केवल और केवल अल्लाह तआला की प्रदान की गई नेअमत है। इतिहास गवाह है कि आज तक कभी कोई ऐसी घटना नहीं हुई कि किसी व्यक्ति या क़ौम ने ख़िलाफ़त की मांग या इच्छा प्रकट की इसके लिए जलसे किए हों तो उन को ख़िलाफ़त मिली हो क्योंकि ख़लीफ़ा ख़ुदा बनाता है और इस में मानवीय हाथ बिल्कुल नहीं होता।

इस्लाम का इतिहास इस बात पर गवाह है कि अल्लाह तआला स्वयं ख़लीफ़ा चुनता है और इसके नतीजा में धर्म उन्नति के मार्ग पर चलने लगता है।

इस्लाम के आरम्भिक इतिहास में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ख़िलाफ़त राशिदा की दौलत प्रदान की। चाहिए तो यह था कि मुसलमान उसका सम्मान करते और उस नेअमत की सुरक्षा के लिए नेक कर्म करते परन्तु बदक़िस्मती से मुसलमानों में ख़िलाफ़त राशिदा का सुनहरी युग केवल 30 साल तक स्थापित रहा और इसके बाद अत्याचारी हुक्मरानों और जाबिर सुल्तानों का युग जारी हुआ और उम्मत मुस्लिमा एक के बाद दूसरी निराशा और पतन की ओर गिरती रही। इस पतन और निराशा का एक ही इलाज था जोकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वर्णन फ़रमाया था अर्थात इमाम महदी अलैहिस्सलाम का प्रादुर्भाव और आपके बाद ख़िलाफ़त का पथ।

पिछले पृष्ठों में हम इमाम महदी का स्थान और आपके बाद ख़िलाफ़त की स्थापना की विभिन्न भविष्यवाणियों के बारे में वर्णन कर चुके हैं सम्माननीय पाठको! एक ओर तो ख़ुदा तआला की तक़दीर यह घोषणा कर रही है कि ख़िलाफ़त की स्थापना ख़ुदा तआला का काम है जबकि दूसरी ओर उम्मत मुस्लिमा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बताए हुए इलाज से मुंह मोड़ कर बल्कि विरोध करके ख़ुद ही ख़िलाफ़त स्थापित करना चाहती है हालाँकि वास्तविकता यह है कि इमाम महदी अलैहिस्सलाम के इन्कार और ख़िलाफ़त की नेअमत से वंचित होने के कारण ही मुसलमान धड़ा धड़ फ़िर्क़ों में बट रहे हैं और प्रत्येक

फ़िर्क़ा दूसरे फ़िर्क़े को आलोचना का निशाना बना रहा है। एक मुसलमान दूसरे मुसलमान भाई के ख़ून का प्यासा है। एक दूसरे की इज़्ज़त का किसी को भी ध्यान नहीं। यहां तक कि कुछ फ़िर्क़े एक साथ बैठ कर खाना भी पसन्द नहीं करते और इस्लाम के शत्रु प्रत्येक क्षण मुसलमानों को हानि पहुंचाने और मुसलमान हुकूमतों की समाप्ति के लिए कोशिश कर रहे हैं परन्तु इसके बावजूद मुसलमान इस्लाम दुश्मनों के इन इरादों को जानकर उनसे बचने और मुक़ाबला करने के स्थान पर स्वयं इन इस्लाम दुश्मन शक्तियों का साधन बन रहे हैं और उनके साथ मिलकर दूसरे मुसलमान भाइयों की तबाही के मंसूबे बना रहे हैं।

मुसलमानों में से जो समझदार हैं वे जानते हैं कि इन मुसीबतों का इलाज क्या है वे ख़ुदाई आदेश की अवज्ञा करके अपने आप ख़िलाफ़त स्थापित करना चाहते हैं और कई ऐसे हैं जो ख़िलाफ़त से वंचित होने का शोर मचा रहे हैं। नीचे हम ख़िलाफ़त की स्थापना के लिए मुस्लिम दुनिया की पुकार की समीक्षा करते हैं ताकि पाठको को अंदाज़ा हो सके कि ख़िलाफ़त से वंचित रहने की उम्मत के बड़े लोगों को कितनी व्याकुलता और कितना दुख है और किस तरह विभिन्न फिर्कों के इस्लामी उलमा को इस ख़िलाफ़त के मुबारक निज़ाम से जोड़ने के लिए तहरीक और नसीहत कर रहे हैं।

एक ख़लीफ़ा इस्लाम की ज़रूरत, और इसका महत्व

साप्ताहिक तर्जुमान दिल्ली 18 फरवरी 1994 ई का एक नोट "ख़ैरुल उम्मत से फ़र्याद" को देखें।

"बिरादराने इस्लाम! क्या आपको याद भी है कि हमारी ज़िन्दगी का प्रोग्राम क्या है? ख़ुदा तआला ने ख़ैरुल अनाम की ख़ैरुल उम्मत का क्या बेहतरीन प्रोग्राम निर्धारित किया है? यह ऐसी ध्यान योग्य बात है जिस से किसी नेक प्रकृति इन्सान को जिसने दिल की गहराई से कलिमा तय्यबा ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह पढ़ा है हरगिज़ इन्कार नहीं कर सकता परन्तु क्या निवेदन करूँ कि इस दृष्टिकोण से मुस्लिम भाइयों के व्यावहारिक कारनामे ज़रूरत से कौसों दूर हैं। जाहिल लोगों से आगे गुज़र कर वर्तमान युग के अमीरों तथा फ़क़ीरों, उलमा,

राहनुमाए मिल्लत जिन को ख़ुदा तआला द्वारा प्राप्त नेअमत पर कुछ गर्व भी है यदि उनके व्यवहार को ध्यानपूर्वक देखा जाए तो वे भी सच्चे प्रोग्राम पर चलने वाले थोड़े ही नज़र आएँगे। काश कि यह सामर्थवान लोग उम्मते मुहम्मदिया के मार्गदर्शक केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए सहमत और एक साथ होकर उसी चीज़ की ओर अपनी-अपनी दौड़ धूप पर ध्यान लगते तो परिणाम यह होता कि 25 करोड़ बिना निगरान के ऊंट जैसे मुसलमानाने हिंद की बागडोर का ज़िम्मेदार एक सिपहसालार होता और इस्लाम का प्रचार, व्यवस्था और बैयतुल माल का केन्द्र एक होता। हिन्दुस्तान के 25 करोड़ मुसलमान ही नहीं बल्कि सारी धरती के मुसलमान वजूद से भरपूर होते, और मुसलमानों की शिक्षा, प्रचार, तन्ज़ीम बैतुल माल की मर्कज़ी हैसियत एक इस्लाम के ख़लीफ़ा के अधीन होती क्योंकि इसमें मुसलमानों और इस्लाम की बहुत अधिक उन्नति और सफलता का राज़ है। ध्यान योग्य बात है कि जब मुसलमानों का ख़ुदा इबादत के योग्य और क़ानून की पुस्तक पवित्र क़ुरआन, क़िब्ला और इस्लाम धर्म और पेश्वा ख़ातमुल अम्बिया एक हो तो यह असंभव बात है कि इस्लाम की शिक्षा, प्रचार, तंज़ीम और बैतुल माल का एक केन्द्र न हो। मुसलमानों की बिखरी कोशिशें शर्म के योग्य हैं। अब हमारे अपमान तथा गुमनामी की जो अवस्था है इसका भी कारण यही है कि हिन्दुस्तान के वर्तमान युग के मुसलमानों ने विशेष रूप से दयनीय इस्लाम के अयोग्य पेश्वाओं ने क़ुरआन के आदेशों से मुंह मोड़ लिया और ध्यान न दिया जिसका परिणाम सूर्य की तरह स्पष्ट है हमारे पास न सल्तनत है न व्यापार है न नौकरी है न ज्ञान और कर्म है न युद्ध का सामान है न मिल्लत की एकता है अब भी समय है कि अज्ञानता की नींद से जाग जाओ। अपनी अपनी मन-मानी छोड़ दो। सहमत और एक होकर इस्लामी प्रोग्राम को प्रकट करने वाले तथा प्रस्तुत करने वाले बन जाओ और इस्लाम के सेवक बनकर सच्चाई को बुलन्द करने के लिए इस्लाम शब्द के नीचे जमा हो जाओ।"

(उद्धृत साप्ताहिक तर्जुमान दिल्ली 18 फरवरी 1994 ई)

इमामुल हिन्द मौलाना अबुल-कलाम आज़ाद अपनी पुस्तक में समय के

इमाम की आवश्यकता और उसके महत्व पर विस्तार पूर्वक समीक्षा करते हुए लिखते हैं:

"पाँच समय की बाजमाअत नमाज़ में जमाअत की प्रणाली का सम्पूर्ण नमूना मुसलमानों को दिखलाया गया क्योंकि नमाज़ ही वह महान कर्म है जो इस्लाम के समस्त अक़ीदों तथा कर्मों का ठोस और व्यापक नमूना है। किस तरह सैंकड़ों हज़ारों बिखरे हुए लोग विभिन्न स्थानों, विभिन्न क्षेत्रों, विभिन्न शक्लों और विभिन्न वस्त्रों में आते हैं, परन्तु अचानक तक्बीर की आवाज़ शरीर की भान्ति सब को एक सम्पूर्ण एकता रूपी शरीर में परिवर्तित कर देती है यहां तक कि हज़ारों अंगों में फैले हुए यह अवयव बिल्कुल एक शरीर का रूप धारण कर लेते हैं। सब के वजूद एक ही सफ़ में जुड़े हुए सब के कंधे एक दूसरे से मिले हुए सब के क़दम एक ही सीध में सब के चेहरे एक ही ओर, क़ियाम की अवस्था है तो सब एक शरीर की तरह खड़े हैं। झुकाव है तो सब सफ़ें एक साथ झुकी हुई हैं। स्पष्ट है सब के साथ भीतर भी एक साथ मुत्तहिद सबके दिल एक ही याद में डूबी हुए सबकी ज़बाने एक ही ज़िक्र में मुतरन्निम। फिर देखो सब के आगे केवल एक ही हस्ती इमाम नज़र आता है जिसके अधिकार में जमाअत के समस्त लोगों और कर्मों की डोर होती है जब चाहे सब को झुका दे जब चाहे सब को खड़ा कर दे।"

(उद्धृत मसला ख़िलाफ़त मौलाना अबुल-कलाम आज़ाद। एतिक़ाद पब्लिशिंग हाऊस प्रकाशन नई दिल्ली फरवरी 1978 ई)

आगे चल कर इसी विषय पर बहस करते हुए इस्लामी जगत को जागरुक करने के लिए अमारत की आवश्यकता, ख़िलाफ़त की आवश्यकता, इमामत की आवश्यकता के विषय पर रोशनी डालते हुए लिखते हैं:

"...जमाअत व्यर्थ है यदि उसकी प्रणाली न हो और कोई सरदार और रहनुमा न हो, तुम पाँच आदमियों की भी कोई मज्लिस आयोजित करते हो तो सबसे पहले एक सभापति का चुनाव करते हो और कहते हैं कि जब तक किसी को सदर मज्लिस न मान लेंगे पाँच आदमियों की मज्लिस भी नियमित काम न कर सकेगी। फ़ौज तय्यार करते हो तो

वहां भी बिना एक अफ़्सर के नहीं छोड़ते। उसका आज्ञापालन अधीनों के लिए अनिवार्य समझते हो और विश्वास करते हो कि बिना उसके फ़ौज की प्रणाली नहीं चल सकती। पाँच दस व्यक्ति भी यदि बिना अमीर के काम नहीं कर सकते तो क़ौमें कैसे बिना अमीर के अपने कर्तव्य पूर्ण कर सकती हैं।" (मसला ख़िलाफ़त पृष्ठ 59)

सम्माननीय पाठको ! ख़िलाफ़त राशिदा के महत्व और ज़रूरत से कौन इन्कार कर सकता है। यही कारण है कि कुछ विद्वानों ने उसको देखने की तीव्र इच्छा व्यक्त की है।

सम्पादक तंज़ीम अहले हदीस लाहौर ने 12 सितम्बर 1969 ई को बहुत दुख से लिखा।

"यदि ज़िन्दगी के इन अन्तिम क्षणों में एक बार भी नबुव्वत की पद्धति पर ख़िलाफत का दृष्य प्राप्त हो गया तो हो सकता है कि मिल्लत इस्लामिया की बिगड़ी सँवर जाए और रूठा हुआ ख़ुदा फिर से मान जाए और भंवर में घिरी हुई मिल्लत इस्लामिया की नाव शायद किसी तरह भंवर के चक्कर से निकल कर शान्ति तथा सुरक्षा के किनारे जा लगे।"

फिर अख़बार वकील (अमृतसर)15 जनवरी 1927 ई. में लिखता है:

"इस बीमारी का आरम्भ आज से नहीं बल्कि आज से बहुत पहले आरम्भ हो चुका था। मुसलमानों ने पहले व्यक्तिगत ज़िन्दगी में यहूदियों तथा ईसाइयों का अनुकरण किया और अब सामूहिक जीवन में करने लगे हैं इसका परिणाम ख़िलाफ़त का नष्ट होना है।"

इसी तरह अख़बार अल-जमीअत दिल्ली 14 अप्रैल 1926 ई. को लिखता है:

"अचानक पर्दा उठ गया दुनिया को साफ़ नज़र आ गया कि उम्मत मुस्लिमा यदि किसी एक शीराज़ा और किसी बंधी हुई तस्बीह का नाम है तो सही अर्थों में आज उम्मते मुस्लिमा मौजूद ही नहीं है। बल्कि फैले हुए पन्ने हैं और कुछ बिखरे हुए दाने हैं। कुछ भटकी हुई भेड़ें हैं जिनका न कोई रेवड़ है और न निगरान।"
अहमदियत के विरोधी मौलाना अबुल हसन नदवी ने लिखा:

"इस समय इस्लामी जगत ख़िलाफ़त की इस ज़रूरी संस्था और इस मुबारक प्रणाली से वंचित है जिसकी स्थापना के लिए मुसलमान उम्मते वाहिदा बनाए गए

थे और जिससे वंचित होने का हर्जाना वे विभिन्न रूपों में अदा कर रहे हैं।"

इस तरह शायर-ए-मशरिक़ अल्लामा इक़बाल ने ख़िलाफ़त को पुनः वापस लाने की इच्छा इन शब्दों में की है कि :

ता ख़िलाफ़त की बिना दुनिया में हो फिर उस्तवार
ला कहीं से ढूंढ कर अस्लाफ़ का क़ल्बो जिगर

पाकिस्तान के एक रिटायर्ड जज जनाब ए.आर.चंगेज़ी निबन्ध "एक रिटायर्ड जज मुल्ज़िम के कटहरे" में नवाए वक़्त 31 अक्तूबर 1977 ई. लिखते हैं:

"तुम ने पाकिस्तान की स्थापना की कोशिश के सिलसिला में अल्लाह तआला से वादा किया था कि पाकिस्तान में तुम अपना जीवन क़ुरआन तथा सुन्नत के अनुसार गुज़ारोगे और ख़िलाफ़त स्थापित करोगे। परन्तु पाकिस्तान बनते ही तुमने इस वादा को भुला दिया और आज तक ख़िलाफ़त की प्रणाली को स्थापित नहीं किया। मौलाना अबुल हसन नदवी ख़िलाफ़त के महत्व और वर्तमान युग में इसकी आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं:

"इस्लामी जगत ख़िलाफ़त से वंचित है, इस समय इस्लामी जगत ख़िलाफ़त की उस ज़रूरी संस्था और उस मुबारक प्रणाली से वंचित है जिसकी स्थापना के मुसलमान ज़िम्मेदार बनाए गए हैं और जिससे वंचित होने का हर्जाना वे विभिन्न रूपों में अदा कर रहे हैं।" (तामीरे हयात लखनऊ)

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद लिखते हैं कि:

"समस्त लोग किसी एक साहिब-ए-इल्म और सच्चे मुसलमान के हाथ पर जमा हो जाएं और वह उनका इमाम हो, जो कुछ शिक्षा दे ईमान तथा सच्चाई के साथ स्वीकार करें। क़ुरआन तथा सुन्नत के अधीन जो कुछ आदेश हों उनकी बिना किसी आलोचना के आज्ञापालन करें। सब ज़बानें गूँगी हों केवल उसी की ज़बान बोले। सब के दिमाग़ बेकार हो जाएं केवल उसी का दिमाग़ चले। लोगों के पास न ज़बान हो न दिमाग़ केवल दिल हो जो स्वीकार करे। केवल हाथ पांव हों जो अनुकरण करें। यदि ऐसा नहीं है तो एक भीड़ है, एक झुण्ड है, जानवरों का एक जंगल है, कंकर पत्थर का एक ढेर है, परन्तु न तो जमाअत, न क़ौम, न इज्तिमा। ईंटें हैं परन्तु

दीवार नहीं, कंकर हैं परन्तु पहाड़ नहीं, क़तरे हैं परन्तु दरिया नहीं, कड़ियाँ हैं जो टुकड़े टुकड़े कर दी जा सकती हैं परन्तु ज़ंजीर नहीं जो बड़े बड़े जहाज़ों को गिरफ़्तार कर सकती है।" (मसला ख़िलाफ़त पृष्ठ 314, एतिक़ाद पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली)

इसी तरह मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी सम्पादक "सिदक़ जदीद" ने "ख़िलाफ़त के बिना अंधेरा" का नाम देकर लिखा:

"इतने मतभेदों और परेशानियों के बावजूद कभी का भी दिमाग़ इस ओर नहीं जाता कि इराक़ का मुँह किधर शाम का रुख़ किस ओर है मिस्र किधर और हिजाज़ और यमन की मंज़िल कौन सी है और लीबिया की कौन सी? एक ख़िलाफ़त-ए-इस्लामिया आज होती तो इतनी छोटी छोटी टुकड़ियों में आज इस्लामी सल्तनत क्यों बार-बार बंटती। एक इस्राईल के मुक़ाबला पर सब अलग अलग फ़ौजें क्यों लानी पड़तीं। तुर्क और दूसरे शासक आज तक ख़िलाफ़त को स्थगित करने की सज़ा भुगत रहे हैं और ख़िलाफ़त को छोड़कर क़ौमियतों की जो अफीम शैतान ने कान में फूंक दी है वह दिमाग़ों से नहीं निकलती।" (सिदक़ जदीद 1 मार्च 1979 ई)

सम्माननीय पाठको ! ऊपर वर्णन किए गए समस्त उद्धरणों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ख़िलाफ़त का महत्व इस्लाम के उलमा के निकट कितनी महत्तवपूर्ण है अकेले इन्सानों की कोशिशों के छोड़कर अब तो राजनीतिक ख़िलाफ़त की स्थापना के लिए कमर बांधें हैं। जैसा कि मौलाना दोस्त मुहम्मद शाहिद साहिब ऐसी ही एक संस्था की ओर इशारा करते हुए लिखते हैं:

ख़िलाफ़त की स्थापना के लिए पाकिस्तान के मुसलमानों को दावत

एक राजनीतिक संस्था "हिज़्बुल तहरीर पाकिस्तान" इन दिनों ख़िलाफ़त की स्थापना के लिए पाकिस्तान के मुसलमानों को आम दावत देने में व्यस्त है। इस क्रम में इसकी ओर से नवम्बर 2000 ई. में रिसाला ख़िलाफ़त पूरे देश में फैलाया गया है जो पुस्तक आकार के 64 पृष्ठों पर आधारित है और उसका प्रकाशन अलख़िलाफ़: पब्लीकेशन्ज़् पी ओ बक्स 1992 ई. लाहौर पाकिस्तान ने किया है

(उद्धृत अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 25 से 31 मई 2001 ई)

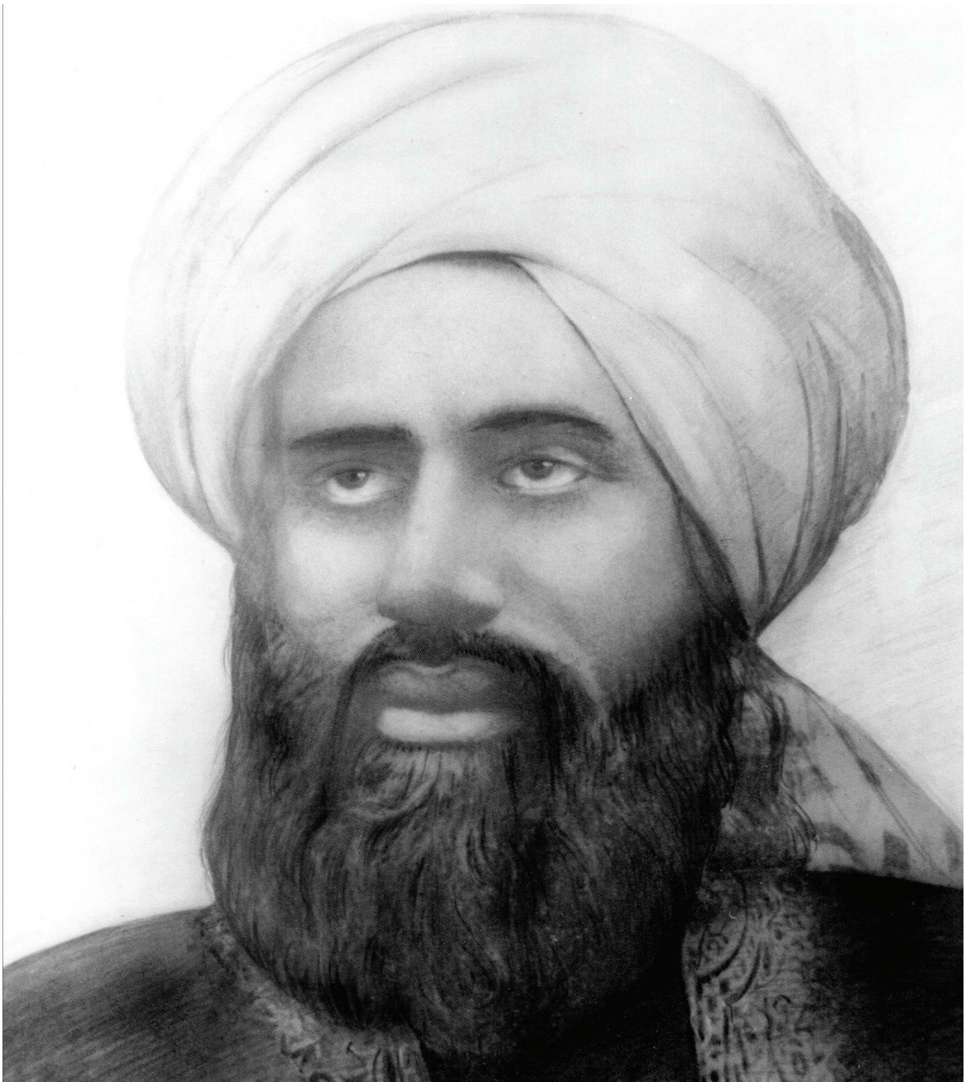

हज़रत हाफिज़ हाजी मौलाना हकीम नूरुद्दीन साहिब
ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाह तआला अन्हो

चतुर्थ अध्याय
जमाअत अहमदिया में क़ुदरते सानिया (अर्थात ख़िलाफ़त) का प्रादुर्भाव

बाग़ में मिल्लत के है, कोई गुले रअना खिला
आई है बादे सबा, गुलज़ार से मस्ताना वार

सम्माननीय पाठको ! नबुव्वत के बाद ख़िलाफ़त वह सबसे बड़ी नेअमत है जिसका वादा अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन में किया है। चूँकि ख़लीफ़ा नबी का उत्तराधिकारी होता है और नबियों के हाथ का लगाया हुआ पौधा ख़लीफ़ाओं के द्वारा पूरे तौर पर बढ़ता है। इसलिए नबी के बाद समसामयिक ख़लीफ़ा इस्लामी दृष्टिकोण से आज्ञापालन योग्य इमाम की हैसियत रखता है। अल्लाह तआला ने आयत इस्तिख़लाफ में वर्णन किए गए वादा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद जमाअत अहमदिया को भी इस नेअमत से नवाज़ा और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद जमाअत के पहले ख़लीफ़ा हज़रत मौलाना हक़ीम नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हो चुने गए और सारी जमाअत इस बात पर सहमत हुई कि आप अलवसीयत के अनुसार ख़लीफ़तुल मसीह हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद आपका वजूद एक आज्ञापालन योग्य इमाम की हैसियत रखता है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि

सम्माननीय पाठको ! हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन साहिब रज़िल्लाहु अन्हो ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि की नस्ल में से थे। आपका

जन्म लगभग 1841 ई में भैरा में हुआ। आपके पिता जी का नाम हाफ़िज़ ग़ुलाम रसूल साहिब था। आपका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कोई सांसारिक रिश्ता नहीं था परन्तु अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से आप को ख़ुदा के मसीह के दरबार तक पहुंचा दिया था। आप एक प्रसिद्ध विद्वान और अल्लाह तआला पर भरोसा करने वाले इन्सान थे। अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से आपको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर जान कुरबान करने वाला सेवक बनने का सौभाग्य प्रदान किया। ख़ुदा तआला से आपका बड़ा गहरा सम्पर्क था और अल्लाह तआला भी आपका प्रत्येक स्थान पर सहायक रहा। एक दो घटनाएं उदाहरण के रूप में प्रस्तुत हैं:

आपकी जीवनी "मिर्क़ातुल यक़ीन फ़ी हयाते नूरुद्दीन" में आपकी एक घटना लिखी है: आप लिखते हैं कि

"मैं कश्मीर में था। एक दिन दरबार में जा रहा था यार मुहम्मद ख़ां एक व्यक्ति मेरी अरदली में था। किसी ने रास्ता में मुझ से कहा कि आपके पास जो पशमीना की चादर है यह ऐसी है कि मैं उसको ओढ़ कर आपकी अरदली में भी नहीं चल सकता। मैंने उससे कहा कि तुझ को यदि बुरी मालूम होती है तो मेरे ख़ुदा को मुझ से भी अधिक मेरा ध्यान है। मैं जब दरबार में गया तो वहां महाराजा ने कहा कि आपने हैज़ा की बीमारी में बड़ा यत्न किया है आप को तो चादर मिलनी चाहिए। उसमें जो चादर थी वह बहुत ही क़ीमती थी। मैंने यार मुहम्मद ख़ां से कहा कि देखो हमारे ख़ुदा तआला को हमारा कितना ध्यान है।" (मिर्क़ातुल यक़ीन पृष्ठ 244)

आप लिखते हैं कि

"मैं पंद्रह सोलह वर्ष तक एक ग़ैर मुस्लिम (महाराजा कश्मीर) का नौकर रहा। मुझ को एक बार भी सलाम न करना पड़ा। केवल एक बार ऐसा संयोग हुआ कि सारे दरबार वालों को नज़रें दिखाना अनिवार्य था। नज़र दिखलाना भी एक किस्म का सलाम ही है। अवसर कुछ ऐसा ही था कि मैंने भी नज़र दिखलाने का इरादा किया। रुपए हाथ में लेकर जब मैं नज़र दिखलाने वाला था। वैसे ही बिना किसी विचार के मेरी दृष्टि रुपए पर पड़ी। मैं हथेली पर रुपए लिए हुए स्वयं ही जब उसको देख

रहा था तो महाराज ने मुझ को आवाज़ देकर कहा कि मौलवी साहब ! आप नज़र दिखलाते हैं या रुपए देखते हैं। मैंने शीघ्र कहा कि महाराज रुपए को देखता हूँ कि यह रुपए ही हैं जिसके कारण मुझे नज़र दिखाने की ज़रूरत पड़ी। यह सुनकर महाराज ने शीघ्रता से कहा कि हाँ आपको नज़र दिखलाने की ज़रूरत नहीं। आप तो नज़र दिखलाने से आज़ाद हैं। सब हंस पड़े और इस तरह बात हंसी में टल गई और मुझ को नज़र भी न दिखानी पड़ी।" (मिर्क़ातुल यक़ीन 245-246)

हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद सरवर शाह साहिब ने अपने ख़ुत्बा जुमा दिनांक 30 जनवरी 1914 ई. में इस तरह वर्णन फ़रमाया कि:

"कुछ लोगों से ख़ुदा तआला का वादा होता है कि जब तुम्हें कोई आवश्यकता हो तो हम उसी समय पूरी कर देंगे। फिर वे खुले दिल से ख़र्च कर सकते हैं और तंगदिल नहीं होते। उदाहरण के लिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह को देख लो। उन्हें जो आवश्यकता हो उसी समय पूरी हो जाती है और कोई रोक या देर नहीं होती। उनसे अल्लाह तआला का वादा है कि जब तुम्हें आवश्यकता हो हम देंगे। एक बार का वर्णन है मेरे सामने एक व्यक्ति आया उसने दो सौ रुपया अमानत के रूप में दो साल के लिए दिया और कहा कि मैं दो साल के बाद आकर वापस ले लूँगा। यदि आपको इस बीच किसी समय आवश्यकता हो तो ख़र्च कर सकते हैं। तो आपने वह रुपए लेकर रख लिए। एक व्यक्ति जिसने आप से एक सौ रुपया क़र्ज़ मांगा हुआ था। वह भी पास बैठा हुआ था। आपने एक सौ उसे दे दिया और रसीद लेकर उस थैली में रख ली और थैली रुपयों की घर भिजवा दी। थोड़ी देर के बाद वही अमानत रखने वाला फिर आया और कहा कि मेरा इरादा बदल गया है। वह रुपए आप मुझे दे दें। आपने फ़रमाया- कब जाओगे उसने कहा एक घंटे में। आप ने फ़रमाया अच्छा तुम यक्का इत्यादि करो और एक घंटा में आकर मुझसे रुपए ले लेना। मैं उस समय आपके पास ही बैठा था आपने फ़रमाया देखो इन्सान पर भरोसा करना कैसी ग़लती है। मैंने ग़लती की ख़ुदा ने बता दिया कि देखो! तुमने ग़लती की। अब देखो ! मेरा मौला मेरी कैसी सहायता करता है। वह एक सौ रुपया एक घंटे के अंदर-अंदर आपको मिल गया

और आप ने उसे दे दिया।"(हयाते नूर पृष्ठ 609)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावों का परिणाम था कि हज़रत मौलाना नूरुद्दीन जमाअत अहमदिया में दाख़िल हुए। आपकी बैयत का कारण सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का वह इश्तिहार बना जो आपने 1884 ई. में इस्लाम के विरोधियों के लिए निशान दिखाने की दावत के लिए लिखा था। संयोग से वह इश्तिहार आपको रियासत जम्मू कश्मीर के वज़ीर आज़म के माध्यम से मिल गया। आप ने इस घटना को स्वयं वर्णन किया है आप लिखते हैं:

"इस इश्तिहार के अनुसार इस बात की तहक़ीक़ के लिए क़ादियान की ओर चल पड़ा और रवाना होने से पहले और सफ़र के बीच और फिर क़ादियान के निकट पहुंच कर क़ादियान को देखते ही बहुत व्याकुलता और कपकपा देने वाले दिल से दुआएं कीं। जब मैं क़ादियान पहुंचा तो जहां मेरा यक्का ठहरा वहां एक बड़ा मेहराब वाला दरवाज़ा नज़र आया। जिसके अंदर चारपाई पर एक बड़े सम्मान वाला व्यक्ति बैठा नज़र आया। मैंने यक्का वाले से पूछा कि मिर्ज़ा साहिब का मकान कौन सा है? जिसके जवाब में उसने उस दाढ़ी वाले की ओर जो उस चारपाई पर बैठा था इशारा किया कि यही मिर्ज़ा साहिब हैं। परन्तु ख़ुदा की शान! उसकी शक्ल देखते ही मेरे दिल में ऐसी घृणा पैदा हुई कि मैंने यक्का वाले से कहा कि ज़रा ठहरो, मैं भी तुम्हारे साथ ही जाऊंगा और वहां मैंने थोड़ी देर के लिए भी ठहरना पसन्द न किया। उस व्यक्ति की शक्ल ही मेरे लिए ऐसी सदमा वाली थी कि जिसको मैं ही समझ सकता हूँ। अन्त में न चाहते हुए मैं उस (मिर्ज़ा इमामुद्दीन) के पास पहुंचा। मेरा दिल ऐसा खिन्न और उसकी शक्ल से घृणित था कि मैंने अस्सलामो अलैकुम तक भी न कहा क्योंकि मेरा दिल सहन ही नहीं करता था। अलग एक ख़ाली चारपाई पड़ी थी। उस पर मैं बैठ गया और दिल में ऐसी परेशानी और कष्ट था कि जिसके वर्णन करने में डर लगता है कि लोग अतिश्योक्ति न समझें। बहरहाल मैं वहां बैठ गया। दिल में बहुत हैरान था कि मैं यहां आया क्यों? ऐसे परेशानी और सोच की हालत में उस मिर्ज़ा ने स्वयं ही मुझ से पूछा कि आप कहाँ से आए हैं? मैंने बहुत रूखे शब्दों और परेशान

दिल से कहा कि पहाड़ की ओर से आया हूँ। तब उसने जवाब में कहा कि क्या आप का नाम नूरुद्दीन है ? और आप जम्मू से आए हैं और शायद आप मिर्ज़ा साहिब से मिलने आए होंगे ? अत: ये शब्द थे जिन्होंने मेरे दिल को कुछ ठंडा किया और मुझे विश्वास हुआ कि यह व्यक्ति जो मुझे बताया गया है मिर्ज़ा साहिब नहीं हैं। मेरे दिल ने यह भी सहन न किया कि मैं उससे पूछता कि आप कौन हैं? मैंने कहा हाँ, यदि आप मुझे मिर्ज़ा साहिब के मकान का पता दें तो बहुत ही अच्छा होगा। जिस पर उसने एक व्यक्ति मिर्ज़ा साहिब की सेवा में भेजा और मुझे बताया कि उनका मकान इस मकान से बाहर है। इतने में हज़रत अक़्दस ने उस व्यक्ति के हाथ लिख भेजा कि नमाज़ अस्त्र के समय आप मुलाक़ात करें। यह बात मालूम करके मैं शीघ्र उठ खड़ा हुआ।

अत: आप उस समय सीढ़ियों से उतरे तो मैंने देखते ही दिल में कहा कि यही मिर्ज़ा है और इस पर मैं सारा ही क़ुर्बान हो जाऊं।

हज़रत अक़्दस तशरीफ़ लाए और मुझ से फ़रमाया कि मैं सैर के लिए जाता हूँ क्या आप भी हमारे साथ चलेंगे ? मैंने निवेदन किया कि हाँ। अत: आप दूर तक मेरे साथ चले गए और मुझे यह भी फ़रमाया कि उम्मीद है कि आप शीघ्र वापस आ जाएँगे। हालाँकि मैं नौकर था और बैअत इत्यादि का सिलसिला भी नहीं था। अत: फिर मैं आ गया और ऐसा आया कि यहीं का हो कर रह गया। मोमिन में एक फ़िरासत होती है रास्ते में मैंने अपना एक रो'या वर्णन किया जिसमें मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा था और निवेदन किया था कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि को आपकी हदीसें बहुत अधिक याद थीं? और क्या वह आपकी बातों को एक लम्बे समय तक नहीं भूला करते थे ? आपने फ़रमाया, हाँ। मैंने निवेदन किया कि क्या कोई तरीका हो सकती है कि जिससे आपकी हदीस न भूले? आपने फ़रमाया कि वह पवित्र क़ुरआन की एक आयत है जो मैं तुम्हें कान में बता देता हूँ। अत: आपने अपना मुबारक मुँह मेरे कान की ओर झुकाया और दूसरी ओर अचानक एक व्यक्ति नूरुद्दीन नामक मेरे शागिर्द ने मुझे जगा दिया और कहा कि ज़ुहर का समय है आप उठें। यह एक मर्म समझने की बात थी कि मैंने मिर्ज़ा साहिब के सामने उसे

पेश किया कि क्यों वह मामला पूरा न हुआ? इस पर आप खड़े हो गए और मेरी ओर मुँह करके नीचे का शेर पढ़ा:

मन ज़र्रा रा अफशानम हम अज़ आफ़ताब करीम
न शबम न शब बरशम कि हदीसे ख़्वाब गरीम

फिर फ़रमाया कि जिस व्यक्ति ने आप को जगाया था उसके जैसे अर्थों वाली कोई आयत पवित्र क़ुरआन की है और वह यह है

لا یمسہ الا المطھرون

अत: यह तो एक पहला बीज था जो मेरे दिल में बोया गया और हज़रत मिर्ज़ा साहिब की सादगी भरा जवाब और उच्च आचरण और वर्णन शैली ने मेरे दिल में एक विशेष प्रभाव किया।"

(हयाते नूर शेख़ अब्दुल क़ादिर, भूतपूर्व सौदागर मल पृष्ठ 115-117)

अत: आपने इस पहली मुलाक़ात में ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में निवेदन किया कि हुज़ूर मेरी बैअत लें। आपने फ़रमाया कि मैं अल्लाह तआला के आदेश के बिना इस विषय में कोई क़दम नहीं उठा सकता। इस पर हज़रत मौलाना ने निवेदन किया कि फिर हुज़ूर वादा करें कि जब भी अल्लाह तआला की ओर से बैअत लेने का आदेश आ जाए सबसे पहले मेरी बैअत ली जाए। आपने फ़रमाया ठीक है और वास्तव में भी यही हुआ कि जब सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा तआला के आदेश अनुसार 23 मार्च 1889 ई. को बैअत लेने के लिए लोगों को दावत दी और लोगों की बैअत ली तो सबसे प्रथम आप ने हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन रज़ि की बैअत ली। आपने अपनी सारी ज़िन्दगी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का आज्ञापालन करने वाला और फ़िदाई बन कर व्यतीत की। आप को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि आपके द्वारा क़ुदरत-ए-सानिया का प्रकटन हुआ। इस बात का विवरण यह है कि सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम 26 मई 1908 ई को मंगलवार साढ़े दस बजे लाहौर में देहान्त पा गए। उसी समय सुबह आप को दफनाने की तैयारी की गई और जब नहलाने इत्यादि से फ़ारिग़ हुए

तो तीन बजे दोपहर बाद हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब ख़लीफ़ा अव्वल रज़ि ने लाहौर की जमाअत के साथ ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब के मकान में नमाज़ जनाज़ा अदा की और फिर शाम की गाड़ी से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का जनाज़ा बटाला पहुंचाया गया जहां से रातों रात रवाना होकर मुख़लिस दोस्तों ने अपने कंधों पर उसे सुबह की नमाज़ के क़रीब 12 मील का पैदल सफ़र करके क़ादियान पहुंचाया। क़ादियान पहुंचकर आपके जनाज़ा को उस बाग़ में रखा गया जो बहश्ती मक़बरा के साथ है और लोगों को अपने प्रिय आक़ा के अन्तिम दर्शन का अवसर दिया गया। और फिर 27 मई 1908 ई. को लगभग 1200 सौ अहमदियों की उपस्थिति में जिनमें एक बड़ी संख्या बाहर से आई हुई थी। हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब भैरवी को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पहला ख़लीफ़ा चुना गया और आपके हाथ पर ख़िलाफ़त की बैअत की गई और इस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का वह इल्हाम पूरा हुआ कि

"सत्ताईस को एक घटना हमारे बारे में।"

पहली बैअत का दृश्य बहुत ईमान वर्धक था और लोग उस बैअत के लिए यूं टूटते थे जिस तरह एक मुद्दत का प्यासा पानी को देखकर लपकता है उनके दिल ग़म तथा दुख से भरे हुए थे कि उनका प्यारा आक़ा उनसे विदा हो गया है परन्तु दूसरी ओर उनके माथे ख़ुदा के आगे शुक्र की भावनाओं के साथ सिज्दा में थे कि अल्लाह तआला ने अपने वादा के अनुसार उन्हें फिर एक हाथ पर जमा कर दिया है।

(उद्धृत सिलसिला अहमदिया लेखक मिर्ज़ा बशीर अहमद एम-ए पृष्ठ 186-187)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि की बैअत जमाअत की पूर्ण एकता के साथ हुई थी जिसमें एक व्यक्ति भी ख़िलाफ़त का विरोधी न था और न केवल जमाअत के लोग बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़ानदान ने भी आपकी ख़िलाफ़त को स्वीकार किया बल्कि सदर अंजुमन अहमदिया ने भी एक सर्व सम्मति के फ़ैसले से यह घोषणा प्रकाशित की कि :

"हुज़ूर अलैहिस्सलाम का जनाज़ा क़ादियान में पढ़े जाने से पहले आपकी पुस्तक अलवसीयत के अनुसार परामर्श के बाद वर्तमान मोअतमद सदर अन्जुमन अहमदिया

क़ादियान और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के रिश्तेदारों एवं हज़रत उम्मुल मोमिनीन की आज्ञा से सारी क़ौम ने जो क़ादियान में मौजूद थी और जिस की संख्या उस समय बारह सौ थी हज़रत हाजी उल-हरमैन अश्शरीफ़ैन जनाब हकीम नूरुद्दीन साहिब सल्लमहू को आपका उत्तराधिकारी और ख़लीफ़ा स्वीकार किया और आपके हाथ पर बैअत की। मोअतमदीन में से निम्नलिखित पढ़े लिखे लोग थे। मौलाना हज़रत मौलवी सय्यद मुहम्मद अहसन साहिब, साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब, जनाब नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब, शेख़ रहमतुल्लाह साहिब, मौलवी मुहम्मद अली साहिब, डाक्टर मिर्ज़ा याक़ूब बेग साहिब। डाक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहिब। (विनीत ख़्वाजा कमालुद्दीन)

यह ख़त सूचना के लिए सारे सिलसिला के सदस्यों को लिखा जाता है कि वे इस ख़त को पढ़ने के बाद शीघ्र हज़रत हकीमुल उम्मत ख़लीफ़तुल मसीह व महदी की सेवा में स्वयं हाज़िर होकर या पत्र के द्वारा बैअत करें।"

(ख़्वाजा कमालुद्दीन वकील सैक्रेटरी अंजुमन अहमदिया बदर 2 जून 1908 ई पृष्ठ प्रथम)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि से इक़रार

इस घोषणा के अतिरिक्त नीचे लिखा इक़रार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि की बैअत से पहले जमाअत अहमदिया के सदस्यों की ओर से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह के समक्ष पढ़ा गया:

"तत्पश्चात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के फ़रमान लिखित पुस्तक अलवसीयत के अनुसार हम अहमदी जिनके हस्ताक्षर इस में लिखे हैं इस बात पर सच्चे दिल से सहमत हैं कि अव्वलुल मुहाजरीन हज़रत हाजी मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब जो हम सब में से बड़े विद्वान और सब से तक़्वा वाले हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के सबसे अधिक श्रद्धालु और पुराने दोस्त हैं और जिनको स्वयं हज़रत इमाम अलैहिस्सलाम उत्तम आदर्श क़रार दे चुके हैं जैसा कि आपके शेर:

च: ख़ुश बूदे गर हर-यक ज़ा उम्मत नूरे दीं बूदे
हमीं बूदे गर हर दिल पुर अज़ नूरे यक़ीं बूदे

से स्पष्ट है कि हाथ पर अहमद के नाम पर समस्त वर्तमान अहमदी और भविष्य में नए आने वाले मैंबर बैअत करें और हज़रत मौलवी साहिब महोदय का आदेश हमारे लिए भविष्य में ऐसा ही हो जैसा कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम का था।

हस्ताक्षर करने वाले :-

रहमतुल्लाह (मालिक इंग्लिश वीइर हाऊस लाहौर) साहिबज़ादा मिर्ज़ा महमूद अहमद, मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ अफी अल्लाह अन्हो, सय्यद मुहम्मद अहसन अमरोहवी, सय्यद मुहम्मद हुसैन अस्सिटैंट सर्जन लाहौर, मौलवी मुहम्मद अली सम्पादक रिव्यू आफ़ रीलीजन्ज़, ख़्वाजा कमालुद्दीन, डाक्टर मिर्ज़ा याक़ूब बेग, ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन असिस्टैंट सर्जन, मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श, शेख़ याक़ूब अली सम्पादक अलहकम, अकबर शाह ख़ां नजीबाबादी, नवाब मुहम्मद अली ख़ान रईस मालेरकोटला, डाक्टर बिशारत अहमद असिस्टैंट सर्जन इत्यादि और हज़रत मीर नासिर नवाब साहिब ने इस अवसर पर खड़े होकर इस बात को दर्द भरे शब्दों में समर्थन किया कि हम में से अब मसीह का उत्तराधिकारी और बैअत लेने के योग्य हज़रत मौलवी साहिब महोदय ही हैं।

जब बीवी साहिबा हज़रत उम्मुल मोमिनीन से पूछा गया तो उन्होंने भी यही फ़रमाया कि हज़रत मौलवी साहिब से बढ़कर कौन इसके योग्य हो सकता है कि हज़रत अक़दस का उत्तराधिकारी हो। हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ने भी इससे सहमति की।" (बदर दिनांक 2 जून 1908 ई)

इसी हस्ताक्षर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि ने जो नसीहत की वह ध्यान देने योग्य भी है और अनुकरण योग्य भी, आपने फ़रमाया

"यदि तुम मेरी ही बैअत करना चाहते हो तो सुन लो कि बैअत बिक जाने का नाम है। एक बार हज़रत ने मुझे इशारा में फ़रमाया कि देश का ख़्याल भी न करना। अत: उसके बाद मेरा सारा मान और सारा विचार उन्हीं से जुड़ गया और मैंने कभी देश का विचार तक नहीं किया। अत: बैअत करना एक मुश्किल विषय है। एक व्यक्ति दूसरे

के लिए अपनी सारी आज़ादी और बुलन्द परवाज़ियों को छोड़ देता है।"

(अख़बार बदर 2 जून 1908 ई)

इसी तक़रीर में अन्त में हुज़ूर ने यह इरशाद भी फ़रमाया :

"याद रखो कि सारे गुण एकता ही में हैं, जिस (क़ौम) का कोई मुखिया नहीं वह मर चुकी।" (अख़बार बदर 2 जून 1908 ई)

ख़िलाफ़त के मन्सब पर आसीन होने के बाद एक अवसर पर आपने फ़रमाया

"अब मैं तुम्हारा ख़लीफ़ा हूँ। यदि कोई कहे कि अल-वसीयत में हज़रत साहिब ने नूरुद्दीन का वर्णन नहीं किया, तो हम कहते हैं कि ऐसा ही आदम अलैहिस्सलाम और अबू बकर रज़ि का वर्णन भी पहली भविष्यवाणियों में नहीं.....सारी क़ौम मेरी ख़िलाफ़त पर सहमत हो गई है। अब जो सहमति के विरुद्ध करने वाला है वह ख़ुदा का विरोधी है.... अतः कान खोल कर सुनो, अब यदि इस इक़रार के विरुद्ध करोगे तो اَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ के पात्र बनोगे।" (बदर 21 अक्तूबर 1909 ई)

हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि की समानता

सम्माननीय पाठको ! जैसा कि लिखा जा चुका है 27 मई 1908 ई को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल का च्यन ख़लीफ़तुल मसीह के रूप में हुआ। इस तरह आप को यह गौरव प्राप्त हुआ कि आप ख़िलाफ़त के महल की पहली बुनियादी ईंट बने जो बहुत सुन्दर और इस महल की रौनक तथा सुन्दरता का कारण बनी। आप को बैअत के प्रारम्भ से ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से केवल ख़ुदा के लिए लगाव और श्रद्धा तथा मुहब्बत थी। एक स्थान पर आप अपनी श्रद्धा का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि:

"मैं आपकी राह में क़ुर्बान हूँ। जो कुछ है मेरा नहीं आपका है।"

इसी तरह लिखा कि:

"दुआ करें कि मेरी मौत सिद्दीक़ों की मौत हो।"(फ़तह इस्लाम)

ख़िलाफ़त के चयन के द्वारा अल्लाह तआला ने आपको मोमिनीन के हाथों चुनवा

कर आपकी इस इच्छा को पूरा कर दिया और आपको सिद्दीक़ों का स्थान प्रदान किया। आपकी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि से कुछ निम्नलिखित समानताएं हैं:

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अलवसीयत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद क़ुदरत-ए-सानिया के प्रादुर्भाव के उदाहरण में हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि की ख़िलाफ़त का उदाहरण प्रस्तुत किया है और यह आश्चर्यजनक बात है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद भी अल्लाह तआला ने जिस व्यक्ति के हाथ पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा रज़ि को जमा किया वह हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि से बहुत बातों में समानता रखता था। जैसे:

1. हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि मर्दों में से पहले व्यक्ति थे जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दावा पर बिना किसी शंका और शक के ईमान लाए। जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं :

اِنّی قُلْتُ یَا یُّھَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰہِ اِلَیْکُمْ جَمِیْعًا فَقُلْتُمْ کَذَبْتَ وَقَالَ اَبُوْبَکْرٍ صَدَقْتَ

(बुख़ारी किताबुत्तफसीर)

और फ़रमाया

مَا دَعَوْتُ اَحَدًا اِلَی الْاِسْلَامِ اِلَّا کَانَتْ لَہٗ کَبْوَۃٌ وَ تَرَدُّدٌ وَ نَظَرٌ اِلَّا اَبَا بَکْرٍ مَا عَتَّمَ عَنْہُ حِیْنَ ذَکَرْتُہٗ وَمَا تَرَدَّدَ فِیْہِ۔ (इब्ने हश्शाम भाग 1)

अर्थात: मैंने तुम लोगों से कहा कि मैं तुम सब की ओर रसूल हूँ तो तुमने कहा कि यह झूठ है परन्तु अबूबकर ने तस्दीक़ की और मैंने जिस किसी को भी इस्लाम की ओर बुलाया उसने उसके स्वीकार करने में शंका और शक प्रकट किया परन्तु अबूबकर वह व्यक्ति था जिसने बिना किसी शंका और बिना किसी देरी के उसे स्वीकार कर लिया।

इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत अलहाज हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब रज़ि के बारे में फ़रमाते हैं :

“उन्होंने उस समय बिना किसी सन्देह के मुझे स्वीकार कर लिया कि जब चारों

ओर से तक्फ़ीर की आवाज़ें ऊंची हो रही थीं और कइयों ने बैअत करने के बाद बैअत का अहद तोड़ दिया था और बहुत सुस्त और शंका में पड़ गए थे। तब सबसे पहले मौलवी साहिब ममदूह का ही पत्र इस विनीत के इस दावा की तस्दीक़ में कि मैं ही मसीह मौऊद हूँ क़ादियान में मेरे पास पहुंचा जिसमें यह शब्द लिखे थे:

آمَنَّا وَصَدَّقْنَا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِيْنَ

(इज़ाला औहाम, रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 521 प्रकाशन 1984 ई लंदन)

इसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि के हक़ में फ़रमाया :

وَمَا نَفَعَنِيْ مَالُ اَحَدٍ قَطُّ مَا نَفَعَنِيْ مَالُ اَبِيْ بَكْرٍ

(तिर्मिज़ी)

अर्थात: मुझे किसी व्यक्ति के माल से कभी ऐसा लाभ नहीं पहुंचा जैसा कि अबूबकर के माल से।

इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत मौलवी नूरुद्दीन रज़ि के उपकारों का वर्णन करते हुए अपनी पुस्तक इज़ाला औहाम में लिखते हैं :

"उनके माल से जितनी मुझे सहायता पहुंची है मैं कोई ऐसा उदाहरण नहीं देखता जो उनके मुक़ाबला पर वर्णन कर सकूं।"

और आइना कमालात इस्लाम में लिखते हैं:

अनुवाद: मुझ को किसी व्यक्ति के माल ने इतना लाभ नहीं पहुंचाया जितना कि उसके माल ने जो उसने अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए दिया और कई साल से दे रहा है।

(अनुवाद अरबी आईना कमालात इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 582 प्रकाशन 1984 ई लंदन)

जिस प्रकार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद समस्त सहाबा रज़ि अल्लाह ने हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि को आप का प्रथम ख़लीफ़ा स्वीकार किया उसी तरह ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद समस्त जमाअत के लोगों ने हज़रत अल-हाज हकीम मौलवी नूरुद्दीन रज़ि को आपका प्रथम ख़लीफ़ा स्वीकार किया।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि. की ख़िलाफ़त के दौर में जमाअत की उन्नतियां

सम्माननीय पाठको ! सय्यदना हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन साहिब रज़ि 27 मई 1908 ई को ख़िलाफ़त के पद पर आसीन हुए और आपका देहान्त 13 मार्च 1914 ई. को हुआ। इस तरह आप लगभग छः साल ख़िलाफ़त के महान पद पर ख़लीफ़तुल मसीह के रूप में आसीन रहे। आपने जमाअत की उन्नतियों के लिए जो सबसे पहला और आधारभूत काम किया वह जमाअत को एक तंज़ीम में बाँधने का काम था। आपने जमाअत को ख़िलाफ़त की मज़बूत रस्सी से बांध दिया और अपनी तक़रीरों और तहरीरों के द्वारा जमाअत के सामने ख़िलाफ़त का महत्व स्पष्ट किया। यही वह बुनियादी ईंट थी जो आगे चलकर जमाअत की उन्नति का माध्यम बनी और उसके परिणाम स्वरूप ख़िलाफ़त सानिया के समय जमाअत के अधिकतर लोग ख़िलाफ़त के साथ जुड़ गए।

सम्माननीय पाठको ! अल्लाह तआला ने आपकी ख़िलाफ़त के द्वारा इस प्रश्न को हमेशा के लिए हल कर दिया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तक अलवसीयत के अनुसार ख़िलाफ़त व्यक्तिगत होगी या अंजुमन आपकी उत्तराधिकारी होगी और नए ख़लीफ़ा की प्रत्येक अहमदी की बैअत करना और उसके आदेशों का पालन करना अनिवार्य होगा या नहीं। अल्लाह तआला ने अपनी महान युक्ति से उन समस्त लोगों की गर्दनों को, जो बाद में मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद जारी होने वाली ख़िलाफ़त के विषय में मतभेद करने वाले थे,आपके सामने झुका दिया और उन्हीं के द्वारा और उन्हीं के अपने हस्ताक्षरों से ख़िलाफ़त के बारे में सारी कार्रवाई पूर्णता को पहुंची और जब आपके ख़िलाफ़त के युग में कुछ ने मुंह मोड़ना चाहा तो आपने पूर्ण दृढ़ता से उस फित्ने को कुचल दिया और निडर किश्ती चलाने वाले की तरह अहमदियत को सुरक्षित और मज़बूत ख़िलाफ़त की रस्सी से बांध कर उन्नतियों की मंज़िलें तय कराईं। और ख़िलाफ़त के महत्व को मिटाने वालों को

अहमदिया बिल्डिंग लाहौर की मस्जिद में 1912 ई. में तक़रीर करते हुए अत्यन्त रौद्र में फ़रमाया कि:

"मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ कि मुझे भी ख़ुदा ने ख़लीफ़ा बनाया है.... यदि कोई कहे कि अंजुमन ने ख़लीफ़ा बनाया है तो वह झूठा है। इस प्रकार के विचार हलाक़त की सीमा तक पहुंचाते हैं। तुम उनसे बचो। फिर सुन लो कि मुझे न किसी इन्सान ने और न किसी अन्जुमन ने ख़लीफ़ा बनाया है और न मैं किसी अन्जुमन को इस योग्य समझता हूँ कि वह मुझे ख़लीफ़ा बनाए और न मैं उसके बनाने को महत्व देता हूँ और उनके छोड़ देने पर थूकता भी नहीं और न अब किसी में शक्ति है कि वह इस ख़िलाफ़त की चादर को मुझ से छीन ले।

अब प्रश्न होता है कि ख़िलाफ़त का अधिकार किस का है ? एक मेरा अत्यधिक प्यारा महमूद है जो मेरे आक़ा और मुहसिन का बेटा है। फिर दामादी की दृष्टि से नवाब मुहम्मद अली को कह दें। फिर ख़ुसर की हैसियत से नासिर नवाब का अधिकार है या उम्मुल मोमिनीन का अधिकार है जो हज़रत साहिब की पत्नी हैं। यही लोग हैं जो ख़िलाफ़त के अधिकारी हैं परन्तु यह कैसी अजीब बात है कि लोग ख़िलाफ़त के बारे में बहस करते हैं और कहते हैं कि उनका अधिकार किसी और ने ले लिया है। वे यह नहीं सोचते कि ये सब के सब मेरे वफ़ादार और आज्ञाकारी हैं और उन्होंने अपना दावा उनके सामने प्रस्तुत नहीं किया..... मिर्ज़ा साहिब की औलाद दिल से मेरी फ़िदाई है मैं सच कहता हूँ कि जितना आज्ञापालन मेरा प्यारा महमूद,बशीर,शरीफ़,नवाब नासिर,नवाब मुहम्मद अली ख़ां करता है तुम में से एक भी नज़र नहीं आता।

मैं किसी दृष्टि से नहीं कहता बल्कि मैं सच्ची बात का ऐलान करता हूँ। उनको ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए मुहब्बत है, बीवी साहिबा के मुँह से कई बार मैंने सुना है कि मैं तो आपकी दासी हूँ .....मियां महमूद वयस्क है उससे पूछ लो कि वह सच्चा आज्ञाकारी है। हाँ एक आलोचक कह सकता है कि सच्चा आज्ञाकारी नहीं। परन्तु नहीं मैं ख़ूब जानता हूँ कि वह मेरा सच्चा आज्ञाकारी है और ऐसा आज्ञाकारी कि तुम

में से एक भी नहीं। जिस तरह अली रज़ि,फ़ातिमा रज़ि,अब्बास रज़ि ने अबूबकर की बैअत की थी उससे भी बढ़कर मिर्ज़ा साहिब के ख़ानदान ने मेरी आज्ञाकारिता की है और एक-एक उनमें से मुझ पर फ़िदा है कि मुझे कभी वहम भी नहीं आ सकता कि मेरे बारे में उन्हें कोई वहम आता है।..... अल्लाह तआला ने अपने हाथ से जिसको हक़दार समझा ख़लीफ़ा बना दिया जो उसका विरोध करता हो वह झूठा और दुराचारी है। फ़रिश्ते बनकर आज्ञापालन और आज्ञाकारिता धारण करो। इब्लीस न बनो.... तुम ख़िलाफ़त का नाम न लो न तुमको किसी ने ख़लीफ़ा बनाना है न मेरी ज़िन्दगी में कोई और बन सकता है। मैं जब मर जाऊंगा तो फिर वही खड़ा होगा जिसको ख़ुदा चाहेगा और ख़ुदा उसको आप खड़ा करेगा।

तुम ने मेरे हाथ पर इक़रार किया है। तुम ख़िलाफ़त का नाम न लो। मुझे ख़ुदा ने ख़लीफ़ा बनाया है और अब न तुम्हारे कहने से पदच्युत हो सकता हूँ और न किसी में शक्ति है कि वह पदच्युत करे।" (बदर 4 जुलाई 1912 ई)

इसी से स्पष्ट है कि आपके निकट सच्चे ख़लीफ़ा के चुनाव का जो ढंग, कोई शैली हो वास्तव में स्वयं ख़ुदा तआला उसको निर्धारित फ़रमाता है और ख़ुदा तआला की ओर से जो ख़िलाफ़त उसे प्रदान होती है उसको कोई इन्सान छीन नहीं सकता और न उसे पदच्युत कर सकता है।

इसी तरह लाहौर में अपनी एक तक़रीर में कहते हैं:

"ख़िलाफ़त केसरी की दुकान का सोडा वाटर नहीं है। तुम इस बखेड़े से कुछ लाभ उठा नहीं सकते। न तुमको किसी ने ख़लीफ़ा बनाना है और न मेरी ज़िन्दगी में और कोई बन सकता है। मैं जब मरूँगा तो फिर वही खड़ा होगा जिसको ख़ुदा चाहेगा और ख़ुदा उसे स्वयं खड़ा करेगा.....मुझे ख़ुदा ने ख़लीफ़ा बना दिया है और अब न तुम्हारे कहने से पदच्युत हो सकता हूं, न अब किसी में शक्ति है कि पदच्युत करे।"

(बदर 4 जुलाई 1912)

ख़िलाफ़त का स्थान और उसके महत्व को इससे बढ़कर वर्णन करना संभव न था। जहां आप ख़िलाफ़त का इन्कार करने वालों और उसकी गरिमा गिराने वालों को ख़िलाफ़त की महानता तथा सच्चाई वर्णन करते हुए दिखाई देते हैं वहां आप जमाअत की

उन्नतियों के लिए जमाअत को आज्ञापालन की शिक्षा सिखा रहे थे। आप फ़रमाते हैं:

"अब तुम्हारे विचार चाहे जिस ओर हों तुम्हें मेरे आदेशों का पालन करना होगा। यदि यह बात तुम्हें स्वीकार हो तो मैं न चाहते हुए भी इस बोझ को उठाता हूँ। वह बैअत की दस शर्तें बदस्तूर स्थापित हैं उनमें विशिष्ट रूप से मैं पवित्र क़ुरआन को सीखने और ज़कात का प्रबन्ध करने उपदेशकों के पहुंचाने और उन मामलों को जो समय-समय पर अल्लाह मेरे दिल में डाले, सम्मिलित करता हूँ। फिर दीनयात की शिक्षा, धार्मिक मदर्सा की शिक्षा मेरी इच्छा और आज्ञा के अनुसार करनी होगी और मैं इस बोझ को केवल अल्लाह के लिए उठाता हूँ जिस ने फ़रमाया

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ

अर्थात: याद रखो कि सारी खूबियां एकता में हैं जिसका क़ौम का कोई सिर नहीं वह मर चुकी।" (अल्हकम 6 जून 1908 ई पृष्ठ 7-8)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल ने जमाअत की उन्नति की जो नींव स्थापित की वह एकता थी कि सारी जमाअत को अल्लाह तआला ने एक हाथ पर जमा करके इसकी उन्नति की राहों को आसान कर दिया। इस एकता के द्वारा आपके ख़िलाफ़त के युग में जमाअत ने बहुत उन्नति की। भविष्य में हुई उन्नति के लिए भी यही बात मील का पत्थर प्रमाणित हुई।

सम्माननीय पाठको! आपके ख़िलाफ़त के ज़माना में जमाअत ने अत्याधिक उन्नतियां कीं। इन उन्नतियों में से नीचे लिखी घटनाएं विशेष रूप से वर्णन करने योग्य हैं :

1. मुहल्ला दारुल उलूम की ज़मीन ख़रीदी गई।
2. मदर्सा तालीमुल इस्लाम तथा बोर्डिंग हाऊस की शानदार इमारतें तैयार हुईं।
3. मस्जिद नूर की इमारत बनाई गई।
4. नूर हस्पताल बना।
5. मदर्सा अहमदिया स्थापित हुआ।
6. ब्रहमन बड़िया (वर्तमान बंग्लादेश) के मशहूर आलिम मौलाना अब्दुल वाहिद

साहिब सिलसिला अहमदिया में दाख़िल हुए और उनके द्वारा सैंकड़ों लोगों ने बैअत की।

7. अख़बार नूर जारी हुआ।

8. अख़बार अल्फ़ज़्ल जारी हुआ।

9. बहुत से शहरों में अहमदी और ग़ैर अहमदियों के मध्य मुबाहसे हुए।

10. वाअज़ीन सिलसिला ने हिन्दुस्तान के विभिन्न भागों में तब्लीग़ी दौरे किए।

11. ग़ैर अहमदी लोगों ने वाअज़ीन सिलसिला को अपने जलसों में बुलाना आरम्भ किया।

12. लंदन में एक इस्लामी मिशन स्थापित हुआ जिसके द्वारा ख़्वाजा कमालुद्दीन और चौधरी फ़तह मुहम्मद साहिब लन्दन पहुंचे।

(उद्धृत मिर्क़ातुल यक़ीन पृष्ठ 307-308)

सम्माननीय पाठको ! ऊपर लिखी गई उन्नतियों में से कुछ एक को विस्तार से वर्णन किया जाता है ताकि बात अच्छी तरह स्पष्ट हो कि ख़ुदा तआला अपने सच्चे ख़लीफ़ा के द्वारा किस तरह धर्म को दृढ़ता प्रदान करता है और किस तरह ख़िलाफ़त का इन्कार करने वालों को असफल तथा नामुराद करता है।

जमाअत की इमारतें

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि के युग में जमाअत ने ज्यों- ज्यों उन्नति की उसके साथ-साथ जमाअत की जरूरतों को पूरा करने के लिए नई-नई इमारतों की भी आवश्यकता सामने आई और आपके ख़िलाफ़त के युग में बहुत सारी जमाअत की इमारतें भी बनाई गईं।

मस्जिद अक़्सा का विस्तार

जमाअत की संख्या को बढ़ते हुए देखकर मस्जिद अक़्सा बहुत छोटी दिखाई देती थी। इसमें औरतों के नमाज़ पढ़ने का भी प्रबन्ध न था और यह मस्जिद अक़्सा को बढ़ाए बिना सम्भव न था। अत:1910 ई में आप ही के ख़िलाफ़त के युग में मस्जिद अक़्सा का विस्तार हुआ और मीनारतुल मसीह जो बन रहा था उसके साथ

एक चबूतरा भी बना दिया गया था और उस समय एक बड़ा कमरा और एक लंबा बरामदा तैयार किया गया था।

(तारीख़-ए-अहमदियत भाग 2 पृष्ठ 333)

क़ादियान की बढ़ती आबादी को देखते हुए यह ज़रूरी दिखाई देता था कि पुरानी आबादी से निकल कर नए मुहल्ले आबाद किए जाएं। इसलिए क़ादियान के पूर्वी ओर जो आरम्भ में मुहल्ला भुट्टा या छावनी कहलाता था एक नया मुहल्ला प्लैनिंग के साथ आबाद करना शुरू किया। इस मुहल्ला में बहुत सी भव्य इमारतें बनाई गईं। इस मुहल्ला में स्कूल कॉलेज और बोर्डिंग हाऊस बनाए गए जिस कारण इस मुहल्ला का नाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि ने "दारुल उलूम" रखा।

मस्जिद नूर

मुहल्ला दारुल उलूम की आबादी का आरम्भ मस्जिद नूर से हुआ। इस मस्जिद की नींव स्वयं हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि ने अपने मुबारक हाथ से 5 मार्च 1910 ई. को रखी। इस अवसर पर अहमदियों की बहुत बड़ी संख्या उपस्थित थी। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि ने दर्द भरी दुआओं के साथ पहली ईंट रखी और ईंटों के ढेर पर बैठ कर इमारतों और मस्जिदों के वास्तविक दर्शन पर एक मर्मस्थ तक़रीर की। (बदर 12-24 मार्च 1910 ई पृष्ठ 2 कालम नम्बर 3)

बोर्डिंग तालीमुल इस्लाम हाई स्कूल

क़ादियान में बाहर के छात्र बड़ी संख्या में शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से क़ादियान आने लगे थे। उनके निवास के लिए कोई उचित स्थान न था। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि ने मुहल्ला दारुल उलूम में 1910 ई में ही एक भव्य और बड़ी इमारत की नींव रखी जिसमें दो सौ छात्रों के निवास की गुंजाइश थी। इस इमारत के तीन हिस्से शीघ्र ही सितम्बर 1910 ई तक सम्पूर्ण हो गए। बाद में शेष भाग भी सम्पूर्ण हो गया। इस बोर्डिंग हाऊस में सारी सुविधाएं थीं।

(तारीख़-ए-अहमदियत भाग 4 पृष्ठ 330)

तालीमुल इस्लाम हाई स्कूल

तालीमुल इस्लाम स्कूल का आरम्भ वस्तुत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के युग में ही हो गया था। परन्तु बढ़ती आवश्यकताओं के सम्मुख एक बड़े और व्यापक स्कूल की ज़रूरत थी। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि ने मुहल्ला दारुल उलूम ही में 25 जुलाई 1912 ई. को तालीमुल इस्लाम स्कूल की नई इमारत की नींव रखी। इस इमारत में आम कमरों के अलावा साईंस रुम और बड़े हाल भी थे। इस तरह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि ने जमाअत की उन्नति के लिए जिस वस्तु की आवश्यकता थी उसको पूरा किया ताकि जमाअत के नौजवान धार्मिक परिवेश में रहकर उच्च शिक्षा प्राप्त करें और सिलसिला के सेवक हों।

मदर्सा अहमदिया की स्थापना

सय्यदना हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के युग में जब हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब स्यालकोटी रज़ि. का देहान्त हुआ तो आपको यह अनुभव हुआ कि हमारी जमाअत में से बड़े-बड़े उलमा वफ़ात पाते जा रहे हैं और जो हैं वे भी अन्तिम आयु में पहुंचे हुए हैं। इसलिए आपकी यह बहुत इच्छा थी कि कोई ऐसा मदर्सा आरम्भ हो जिसमें उलमा तैयार हों और उनके सम्मुख केवल धर्म की सेवा हो। इस इच्छा का वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं:

"हमारा उद्देश्य इस मदर्सा के आरम्भ होने से केवल यह है कि धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता दी जाए। इस समय जारी शिक्षा को इसलिए साथ रखा है ताकि ये ज्ञान धर्म के सेवक हों। हमारा यह उद्देश्य नहीं कि एफ़.ए या बी.ए पास करके दुनिया की तलाश में मारे-मारे फिरें। हमारे समक्ष तो यह बात है कि ऐसे लोग धर्म की सेवा के लिए जीवन व्यतीत करें और इसलिए मदर्सा को ज़रूरी समझता हूँ कि शायद धर्म की सेवा के लिए काम आ सके।" (अल्हकम 10 दिसम्बर 1905 ई पृष्ठ 5)

पाठको ! यदि तंज़ीम भी हो और रुपया पैसा भी हो परन्तु धर्म में चिन्तन करने वाले और क़ुरआन का ज्ञान रखने वाले उलमा न हों तो ये दोनों बातें ही धर्म की सेवा के मार्ग में कुछ लाभ नहीं पहुंचा सकतीं। इस बात के सम्मुख सय्यदना हज़रत मसीह

मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने जीवन ही में जनवरी 1902 ई में एक धार्मिक कक्षा का आरम्भ फ़रमाया था। परन्तु हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि ने ख़िलाफ़त पर आसीन होने के शीघ्र बाद ही जमाअत की उन्नति को देखते हुए एक धार्मिक दर्सगाह की आवश्यकता को बड़ी तीव्रता से अनुभव किया। यद्यपि कुछ लोगों ने इसका विरोध भी किया परन्तु आपने जमाअत की उन्नति के इस तीसरे स्तम्भ की नींव 1909 ई में डाली और 1 मार्च 1909 ई को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हार्दिक इच्छा को मदर्सा अहमदिया की नींव रखकर पूरा किया। हम में से प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि इसी मदर्सा अहमदिया से पास होने वाले वाक़फीन और मुबल्लिग़ीन ने सारे संसार में फैल कर जमाअत की उन्नति का ज़बरदस्त काम किया। आज अल्लाह तआला की कृपा से इसी मदर्सा अहमदिया की दुनिया के विभिन्न देशों में शाख़ाएं स्थापित हैं। सारे संसार में फैले उलमा के द्वारा होने वाली उन्नितयों में आपके द्वारा स्थापित हुए मदर्सा अहमदिया का बहुत बड़ा हाथ है।

हज़रत मौलाना अब्दुल वाहिद साहिब आफ़ ब्रहमन-बढ़िया बंगाल की बैअत

हज़रत मौलाना अब्दुल वाहिद साहिब ब्रहमन बढ़िया बंगाल के विख्यात तथा प्रसिद्ध विद्वान थे। उनकी बैअत की घटना इस तरह है कि आपको 1903 ई. में एक स्थान से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ इश्तिहार और दावे मिले और उन्होंने बड़े शौक़ एवं चाव से हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के बारे में तहक़ीक़ शुरू कर दी। इस क्रम में उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को पत्र भी लिखे जिसका उत्तर हुज़ूर ने बराहीन अहमदिया हिस्सा 5 में विस्तार से दिया है। आपको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के जीवन में क़ादियान आने का अवसर न मिला परन्तु 1912 ई. के आख़िर में आप तीन लोगों के साथ ठोस तहक़ीक़ करने और किसी फ़ैसला पर पहुंचने के लिए क़ादियान रवाना हुए।

मौलाना साहिब रास्ता में लखनऊ, बरेली, टोंक, दिल्ली के बड़े बड़े उलमा जैसे शिब्ली नोमानी, मौलवी रज़ा ख़ान बरेलवी, सनाउल्लाह अमृतसरी इत्यादि से विचार

विमर्श करते हुए क़ादियान पहुंचे और अन्ततः 1 नवम्बर 1912 ई. को जुम्अः की नमाज़ के बाद अपने साथियों सहित हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि के हाथ पर बैअत करके सिलसिला आलिया अहमदिया में सम्मिलित हो गए। फ़ल्हमदो लिल्लाह अला ज़ालिक।

आपकी विख्यात तथा प्रसिद्ध व्यक्तित्व का ब्रहमन बढ़िया के क्षेत्र के लोगों पर बहुत प्रभाव था जिसके नतीजा में शीघ्र ही वहां सैंकड़ों लोगों ने बैअत कर ली।

(उद्धृत बदर 25 सितम्बर 1913 पृष्ठ 7)

आपने अपने सफ़र के दिलचस्प हालात अपनी आपबीती "जज़्बातुल हक" में विस्तार से लिखे हैं। आपबीती पढ़ने योग्य है।

बैतुल माल की स्थापना

सय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ुदाई सिलसिला को चलाने के लिए अल्लाह तआला के मार्ग में माल ख़र्च करने की नसीहत की। आपके इस आदेश पर इस्लाम के चाहने वालों ने आर्थिक क़ुर्बानियों में भाग लिया। हुज़ूर अलैहिस्सलाम के युग में इसके लिए कोई विभाग स्थापित नहीं था। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि ने अहमदियत की उन्नति के दूसरे स्तम्भ के रूप में पर इस कार्य के लिए अलग बैतुल माल स्थापित फ़रमाया और आदेश दिया कि अब ज़कात के पैसा को सदक़ों के पैसे से अलग करके बैतुल माल में सम्मिलित किया जाए अर्थात ज़कात का पैसा भी बैतुल माल में आया करे और इसके लिए उचित नियम भी बनाए। (अल्हकम 7 जनवरी 1909 में उद्धृत तारीख़-ए-अहमदियत)

यूरोप में जमाअत अहमदिया का पहला मिशन हाऊस

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि. के युग ख़िलाफ़त में ही एक बहुत बड़ी सफलता यह प्राप्त हुई कि 1913 ई. में हज़रत मौलाना फ़तह मुहम्मद साहिब स्याल रज़ि को लंदन मुबल्लिग़ के रूप में भेजा गया जहां आपकी कोशिशों से जमाअत अहमदिया का पहला मिशन स्थापित हुआ। इसके बाद दूसरे देशों में जमाअत की

उन्नति के तेज़ी से दरवाज़े खुलने लगे और आपकी ख़िलाफ़त के युग में अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से भारत के बाहर अठारह स्थानों पर जमाअतें स्थापित हो चुकी थीं या फिर वहां लोग अहमदी हो चुके थे। अल्हमदो लिल्लाह।

सारांशत: आपके युग-ए-ख़िलाफ़त पर नज़र डालने से यह बात प्रमाणित हो जाती है कि जमाअत ने उस युग में एक ग़ैरमामूली उन्नति की और वे बीज जो ख़िलाफ़त ऊला में बोए गए वे अगली ख़िलाफ़तों में विशाल वृक्ष बनते चले गए।

सम्माननीय पाठको ! अल्लाह तआला ने आपके द्वारा क़ुदरत-ए-सानिया को ज़ाहिर फ़रमाया और आपके द्वारा ख़िलाफ़त का महत्व, सम्मान और उसका वास्तविक स्थान प्रकट हुआ। बेशक आप एक महान इन्सान थे और एक आलिम बाअमल थे। परन्तु आपकी समस्त बड़ाई और प्रतिष्ठा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से रूहानी रूप से जुड़ने के कारण थी। आप स्वयं फ़रमाते हैं कि मैं सारी आमदनियों को छोड़कर जो दूसरे शहरों में मुझे हो सकती हैं क्यों क़ादियान में रहने को प्राथमिकता देता हूँ?

इसका संक्षिप्त उत्तर मेरी ओर से यह है कि मैंने यहां वह दौलत पाई है जो अनश्वर है जिसको चोर और डाकू नहीं ले जा सकता। मुझे वह मिला है जो तेरह सौ वर्षों के अंदर इच्छा करने वालों को नहीं मिला। फिर क्या मैं ऐसी दौलत को छोड़कर मैं कुछ दिन की दुनिया के लिए मारा-मारा फिरूँ? मैं सच- सच कहता हूँ कि अब कोई मुझे एक लाख क्या,एक करोड़ रुपया प्रतिदिन भी दे और क़ादियान से बाहर रखना चाहे मैं नहीं रह सकता। हाँ इमाम अलैहिस्सलाम के आदेश के अनुकरण में फिर चाहे मुझे एक कौड़ी भी न मिले। अत: मेरे दोस्त, मेरा माल, मेरी आवश्यकता उस इमाम के अनुकरण तक हैं और दूसरी सारी जरूरतों को उस एक वजूद पर क़ुर्बान करता हूँ।

(सूरत जुम्अः तफ़सीर पृष्ठ 63)

और जलसा सालाना पर आए हुए लोगों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाते हैं:

"हमारे बारे में कुछ भी विचार न करो हम क्या और हमारी हस्ती क्या। हम यदि बड़े थे तो घर पर रहते, पवित्र थे तो फिर इमाम की ज़रूरत ही क्या थी।

यदि किताबों से यह उद्देश्य प्राप्त हो सकता तो फिर हमें क्या ज़रूरत थी हमारे पास बहुत सी पुस्तकें थीं परन्तु नहीं, इन बातों से कुछ नहीं बनता..... इस तरह हम जितने यहां हैं अपनी-अपनी बीमारियों में पीड़ित हैं ..... और यहां इलाज के लिए बैठे हैं तो फिर हमारी किसी हरकत पर नाराज़ होना अक़्लमंदी नहीं....सच्चा मामूर एक ही है जो मसीह और महदी होकर आया है। अतः ख़ुदा से मदद माँगो। अल्लाह के ज़िक्र की ओर आओ। जो निर्लज्जता और बुरी बातों से बचाने वाला है। इसी को आदर्श बनाओ और इसी के नमूना पर चलो जो एक ही अनुकरण योग्य, आज्ञापालन योग्य इमाम है

(हक़ायक़ुल फ़ुर्क़ान सूरत जुम्अः की तफ़सीर)

सम्माननीय पाठको ! हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव की उद्देश्यों में से एक उद्देश्य क़ुरआन के ज्ञानों का प्रकाशन था। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ि ने अपने ख़िलाफ़त के युग में जमाअत में क़ुरआन के ज्ञान सीखने और सिखाने की ओर विशेष ध्यान दिया। जिसके नतीजा में कई अहमदियों ने पवित्र क़ुरआन की तफ़सीर लिखने की कोशिश की। इन्हीं कोशिशों में से एक मौलाना सय्यद सरवर शाह साहिब की कोशिश थी। यह तफ़्सीर बहुत विस्तारित थी परन्तु अफ़सोस कि आठ पारों से अधिक न हो सकी।

अल्लाह तआला समस्त अहमदियों को आप जैसा नूर और ईमान और तक़्वा प्रदान करे और आपके पद चिन्हों पर चलने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब
ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाह तआला अन्हो

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि० का देहान्त और ख़िलाफ़त सानिया की स्थापना

सम्माननीय पाठको ! हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहिब रज़ि 1910 ई. के आख़िर में एक बार घोड़े से गिर कर बहुत ज़ख़्मी हो गए थे और एक लंबा समय बीमार रहने के बाद पुनः बड़ी हिम्मत से ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारियाँ पहले की तरह अदा करने लग गए थे परन्तु आपकी सेहत पर इस दुर्घटना के प्रभाव बहुत गहरे और बुरे पड़े। इस दुर्घटना ने आपके शरीर को बहुत खोखला कर दिया था। 1913 ई. के जलसा सालाना की घटना है कि तबीयत की ख़राबी के बावजूद जमाअत के लोगों की दिलदारी के लिए तक़रीर के लिए तशरीफ़ ले आए। परन्तु अभी कुछ ही शब्द कहे थे कि अचानक बीमारी इतनी बढ़ गई कि और अधिक ठहरना संभव न रहा। फिर एक महीना बाद अर्थात जनवरी 1914 ई. में रात बिस्तर से उठने पर चक्कर आया और सीने के बल ज़मीन पर गिरने से बहुत चोटें आईं। और चलने फिरने से वंचित हो गए और बिस्तर पर लेट गए। इस हालत में भी जब तबीयत ठीक होती आप लेटे-लेटे पवित्र क़ुरआन का दर्स देते। जमाअत के श्रद्धालुओं पर आपकी इस बीमारी का जो बाद में मौत की बीमारी बन गई बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उनके दिमाग़ परेशान और चिन्तनीय थे और दिल अपने महबूब आक़ा की कष्ट से पिघले जाते थे।

27 फरवरी को आप माहौल और हवा पानी के परिवर्तन की उद्देश्य से शहर से बाहर नवाब मुहम्मद अली साहिब की कोठी दारुस्सलाम में पधारे। आपके ख़ानदान और आने जाने वाले मेहमानों के लिए भी कोठी में ही निवास और खाने इत्यादि का प्रबन्ध किया गया। 4 मार्च को असर की नमाज़ के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि की तबीयत बहुत ख़राब हो गई और कमज़ोरी बहुत अनुभव होने लगी। मौलवी सय्यद सरवर शाह साहिब पास बैठे हुए थे। उन्हें फ़रमाया क़लम दवात और

काग़ज़ ले आएं। आपने लेटे-लेटे काग़ज़ हाथ में लिया और निम्नलिखित वसीयत लिखी:

بسم اللہ الرحمن الرحیم۔ نحمدہٗ و نصلی علیٰ رسولہ الکریم وآلہٖ مع التسلیم

विनीत अपने होश में लिखता है لا الٰہ الا اللہ محمد رسول اللہ ला-इलाह इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह। मेरे बच्चे छोटे हैं। हमारे घर माल नहीं। उनका अल्लाह हाफ़िज़ है। उनकी परवरिश यतीम तथा मिस्कीन फ़ंड से नहीं। कुछ क़र्ज़ा जमा किया जाए। योग्य लड़के अदा करें या किताबें जायदाद औलाद के लिए वक़्फ़ हो। मेरा उत्तराधिकारी मुत्तक़ी (संयमी) हो। सर्वप्रिय, आलिम बाअमल हो। हज़रत साहिब के पुराने और नए दोस्तों से क्षमा और माफी का व्यवहार करे। मैं सब की भलाई चाहने वाला था। वह भी भलाई चाहने वाला रहे। क़ुरआन तथा हदीस का दर्स जारी रहे। वस्सलाम। नूरुद्दीन, 4 मार्च 1914 ई।

(अल्हकम 7 मार्च 1909 ई उद्धृत हयात नूर लेखक अब्दुल क़ादिर सौदागर मल पृष्ठ 702-703)

इस वसीयत को उस समय मौजूद लोगों के सामने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि के आदेश पर मौलवी मुहम्मद अली साहिब ने ऊंची आवाज़ से पढ़कर सुनाया और बाद में असल काग़ज़ नवाब साहिब के सपुर्द कर दिया। नवाब साहिब ने मौजूदा हाज़रीन के गवाह के रूप में हस्ताक्षार लिए जिनमें मौलवी मुहम्मद अली साहिब,मिर्ज़ा याक़ूब बेग साहिब, साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब इत्यादि थे। इसके बावजूद कि वसीयत में ख़लीफ़ा अव्वल रज़ि ने स्पष्टत: बता दिया था कि:

"मेरा जानशीन मुत्तक़ी हो, हर दिल अज़ीज़ हो, आलिम बाअमल हो।" मौलाना मुहम्मद अली साहिब और उनके साथ वालों ने इस वसीयत पर अनुकरण न किया।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़िल्लाहु अन्हो का देहान्त

13 मार्च 1914 ई. को जुम्अ: का दिन था। पहले की तरह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल ने साहिबज़ादा मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब को ख़ुत्बा देने का आदेश दिया। जुम्अ: से कुछ देर पहले अचानक आपकी तबीयत बिगड़ने लगी। प्राय दोस्त

जुम्अः के लिए मस्जिद में जा चुके थे। आपने देहान्त का समय निकट देखकर अपने साहिबज़ादा अब्दुल हई को बुलाया और नीचे लिखे शब्दों में अलविदा कहा:

لا اله الا الله محمد رسول الله ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह पर मेरा ईमान रहा और इस पर मरता हूँ और हज़रत नबी करीम के सब सहाबा को मैं अच्छा समझता हूँ। इसके बाद मैं हज़रत बुख़ारी साहिब की किताब को ख़ुदा तआला का प्रिय समझता हूँ। हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब को मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़ुदा का चुना हुआ इन्सान समझता हूँ मुझे उनसे इतनी मुहब्बत थी कि जितनी मैंने उनकी औलाद से की तुम से नहीं की। क़ौम को ख़ुदा के सपुर्द करता हूँ और मुझे पूरा सन्तोष है कि वह नष्ट नहीं करेगा। तुम को मैं नसीहत करता हूँ कि ख़ुदा की किताब को पढ़ना, पढ़ाना और अनुकरण करना। मैंने बहुत कुछ देखा पर क़ुरआन जैसी चीज़ न देखी। निःसन्देह यह ख़ुदा तआला की अपनी पुस्तक है। बाक़ी ख़ुदा के सपुर्द।

(अल्हकम 14 मार्च 1914 ई, उद्धृत हयाते नूर लेखक अब्दुल क़ादिर सौदागर मल पृष्ठ 710)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि. का देहान्त ठीक जुम्अः के समय हुआ। हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद जुम्अः से फ़ारिग़ होकर दारुस्सलाम जाने से पहले अपने घर तशरीफ़ ले गए तो अचानक हज़रत नवाब मुहम्मद अली साहिब का नौकर घबराया हुआ आया कि नवाब साहिब ने घोड़ा गाड़ी भेजी है। आप शीघ्र तशरीफ़ ले आएं। उसी समय आप गाड़ी में सवार होकर चल दिए। परन्तु अभी रास्ता ही में थे कि एक दूसरा नौकर दौड़ता हुआ आया और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि. के देहान्त की ख़बर दी। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन।

आप अपने बुज़ुर्ग उस्ताद की मुबारक लाश के पास पहुंचे और सिर से लेकर पैर तक उस नूरे वजूद के लिए बड़ी दर्द से दुआ की। उसी समय लोग भी जमा हो गए और सारे दुखी लोगों का जन-समूह कोठी दारुस्सलाम में ही होने लगा। नमाज़ अस्र सारे लोगों ने मस्जिद नूर में ही अदा की। नमाज़ के बाद हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ने एक संक्षिप्त तक़रीर की और लोगों को विशेष रूप से दुआ करने की ओर ध्यान दिलाया और इसी तरह लोगों में से जिसे रोज़ा का सामर्थ्य हो उन्हें अगले दिन रोज़ा रखने और ख़ुदा तआला से हिदायत मांगने की दुआ करे।

पांचवां अध्याय

ख़िलाफ़त सानिया का क़याम

एक ओर तो ख़िलाफ़त के परवाने ख़िलाफ़त की स्थापना के लिए मौला करीम से दुआओं से मदद मांग कर रहे थे। दूसरी ओर ख़िलाफ़त के विरोधियों की यह अवस्था थी कि उन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि. के देहान्त की ख़बर सुनकर विभिन्न जमाअतों में अपने लोग दौड़ाए और ख़िलाफ़त से इन्कार के बारे में एक बीस इक्कीस पृष्ठों का रिसाला वितरित करना शुरू कर दिया। इस रिसाला में जमाअतों को उभारा गया था कि वे किसी आज्ञापालन योग्य ख़िलाफ़त पर राज़ी न हों। इस रिसाला के फैलने के कारण जमाअत के लोगों में बेचैनी की हालत फैलती जा रही थी।

इस हालत को दूर करने के लिए हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ने आपसी समझौते के लिए एक आख़िरी कोशिश ज़रूरी समझी। अत: दोनों पक्षों के कुछ बड़े-बड़े लोग इस उद्देश्य के लिए नवाब मुहम्मद अली साहिब की कोठी में जमा हुए। हज़रत साहिबज़ादा साहिब की ओर से यह बात स्पष्ट की गई कि इस समय प्रश्न मूल का है किसी के व्यक्तित्व का नहीं। यदि आप लोग ख़िलाफ़त के मूल को स्वीकार करेंगे तो हम ख़ुदा को हाज़िर जानकर वादा करते हैं कि मोमिनों की अधिकतर राय से जो भी ख़लीफ़ा चुना जाएगा चाहे वह किसी जमाअत का हो, हम सब दिल से उसकी ख़िलाफ़त को स्वीकार करेंगे परन्तु ख़िलाफ़त का इन्कार करने वालों ने इस हार्दिक पेशकश को अस्वीकार कर दिया और समझौते से इन्कार कर दिया। (तारीख़-ए-अहमदियत भाग 4 पृष्ठ 582)

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ि. ने व्यक्तिगत रूप से भी मौलवी मुहम्मद अली साहिब से बातचीत की परन्तु सारी कोशिशों के बावजूद ख़िलाफ़त का इन्कार करने वाले, ख़िलाफ़त के मूल पर सहमत न हुए और किसी हालत में ख़िलाफ़त की प्रणाली को स्थापित रखने पर राज़ी न हुए तो दिनांक

14 मार्च 1914 ई. दिन शनिवार को क़ादियान में मौजूद अहमदी लोग अस्र की नमाज़ के बाद ख़िलाफ़त के चुनाव के लिए मस्जिद नूर में जमा हुए। लगभग 2000 की संख्या थी। सबसे पहले नवाब मुहम्मद अली ख़ान साहिब ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि. की वसीयत पढ़ कर सुनाई। जिसमें लोगों को एक हाथ पर जमा होने की नसीहत थी। इसके बाद मौलाना मुहम्मद अहसन साहिब अमरोही रज़ि. ने लोगों को ख़िलाफ़त की आवश्यकता तथा महत्व बता कर परामर्श दिया कि हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ि. के बाद मेरी राय में हम सब को हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद के हाथ पर जमा हो जाना चाहिए क्योंकि वही सबसे अधिक ख़लीफ़ा बनने के योग्य हैं। इस बात पर प्रत्येक ओर से हज़रत मियां साहिब! हज़रत मियां साहिब! की आवाज़ें ऊंची होने लगीं।

दूसरी ओर सय्यद मीर हामिद शाह साहिब रज़ि. खड़े हो गए। वह कुछ कहना चाहते थे परन्तु उनके मुक़ाबला पर मौलवी मुहम्मद अली साहिब अपने विचार पहले बताना चाहते थे। इसी मामला को लेकर आपस में बातचीत होती रही। इस समय शेख़ याक़ूब अली साहिब इर्फ़ानी रज़ि. ने निवेदन किया कि इन झगड़ों में यह क़ीमती समय नष्ट नहीं होना चाहिए। हमारे आक़ा हमारी बैअत क़बूल करें। इस पर मज्लिस में हाज़िर लोग बिना किसी देरी के लब्बैक-लब्बैक कहते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब की ओर लपके।

यह दृश्य और लोगों का जोश किसी देखने वाले को भूल नहीं सकता। लोग चारों ओर से बैअत के लिए टूट पड़े। यूं मालूम होता था कि फ़िदाई फ़रिश्ते लोगों को पकड़-पकड़ कर ला रहे हैं। जो लोग निकट न आ सकते थे उन्होंने एक दूसरे के ऊपर पगड़ियाँ फैला फैला कर दूसरों की पीठों पर हाथ रखकर बैअत के लिए तैयारी कर ली। चारों ओर से आवाज़ें उठ रही थीं कि हुज़ूर हमारी बैअत स्वीकार कर लें। हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब रज़ि. ने कुछ पल ठहरने के बाद बड़े ग़ौर तथा चिन्ता के बाद अपनी ज़िम्मेदारी को अनुभव करते हुए अपना हाथ बैअत के लिए बढ़ा दिया और बैअत लेना शुरू कर दी। इस तरह पुस्तक अलवसीयत में लिखी ख़ुशख़बरी का एक बार फिर बड़ी शान के साथ प्रकट हुई।

बैअत के बाद एक लम्बी दुआ हुई और फिर उसके बाद हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. ने एक बहुत सन्तोष देने वाली तक़रीर फ़रमाई। आपने फ़रमाया कि:

"दोस्तो ! मेरा यक़ीन और पूर्ण विश्वास है कि अल्लाह तआला एक है और उसका कोई साझी नहीं। मेरे प्यारो ! फिर मेरा विश्वास है कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह, अल्लाह के रसूल और ख़ातमुल अम्बिया हैं। मेरा विश्वास है कि आपके बाद कोई ऐसा व्यक्ति नहीं आ सकता जो आपकी दी हुई शरीयत में से एक कण मात्र कुछ भी स्थगित कर सके। मेरे प्यारो ! मेरा वह प्रिय आक़ा सय्यदुल अम्बिया ऐसी महान शान रखता है कि एक व्यक्ति उसकी दासता में दाख़िल होकर पूरी आज्ञापालन और वफ़ादारी के बाद नबियों का पद पा सकता है यह सच है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही की ऐसी शान और महानता है कि आपकी सच्ची ग़ुलामी में नबी पैदा हो सकता है। यह मेरा ईमान है और पूरे विश्वास से कह सकता हूँ। फिर मेरा विश्वास है कि पवित्र क़ुरआन वह प्यारी पुस्तक है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अवतरित हुई है और वह ख़ात्मुल क़ुतुब और ख़ात्म शरीयत है फिर मेरा पूर्ण विश्वास है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वही नबी थे जिस की ख़बर मुस्लिम में है और वही इमाम थे जिसकी ख़बर बुख़ारी में है फिर मैं कहता हूँ कि शरीयत इस्लामी में कोई हिस्सा अब स्थगित नहीं हो सकता सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन के कर्मों का अनुकरण करो। वह नबी करीम की दुआओं और व्यापक तरबियत का नमूना थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद दूसरा जो इज्मा हुआ वह ख़िलाफ़त हक़्क़ा राशिदा का सिलसिला है। ख़ूब ध्यान से देख लो और इस्लाम के इतिहास में पढ़ लो कि इस्लाम की जो उन्नति ख़ुलफ़ाए राशिदीन के युग में हुई और जब ख़िलाफ़त केवल बादशाहों के रंग में तब्दील हो गई तो उन्नति घटती गई यहां तक कि अब जो इस्लाम और इस्लाम वालों की हालत है तुम देखते हो। तेरह सौ साल के बाद अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वादों के अनुसार और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्पूर्ण अनुकरण में एक व्यक्ति को मसीह

व महदी बनाकर नबी के रूप में भेजा और उसके देहान्त के बाद फिर वही सिलसिला ख़िलाफ़त-ए-राशिदा का चला है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ि. उनका दर्जा महानतम विभूतियों में हो अल्लाह तआला करोड़ों रहमतें और बरकतें उन पर नाज़िल करे, जिस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मुहब्बत उनके दिल में भरी हुई थी और उनके वजूद से झलकती थी उसी तरह जन्नत में भी अल्लाह तआला उन्हें पवित्र वजूदों और प्यारों के सानिध्य में इकट्ठा करे। आप इस सिलसिला के पहले ख़लीफ़ा थे और हम सब ने इसी अक़ीदा के साथ उनके हाथ पर बैअत की थी। और जब तक यह सिलसिला चलता रहेगा इस्लाम सांसारिक और आध्यात्मिक रूप से उन्नति करता रहेगा। ...

मैं तुम्हें सच-सच कहता हूँ कि मेरे दिल में एक ख़ौफ़ है और अपने वजूद को बहुत ही कमज़ोर पाता हूँ। हदीस में आया है कि तुम अपने ग़ुलाम को वह काम मत बताओ जो वह कर नहीं सकता। तुम ने मुझे इस समय ग़ुलाम बनाना चाहा है तो वह काम मुझे न बताना जो मैं न कर सकूं। मैं जानता हूँ कि मैं कमज़ोर और गुनहगार हूँ मैं किस तरह दावा कर सकता हूँ कि दुनिया की हिदायत कर सकूँगा और हक़ और सच्चाई को फैला सकूँगा। हम थोड़े हैं और इस्लाम के दुश्मनों की संख्या बहुत अधिक है परन्तु अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और रहम और करम से उसकी कृपा दृष्टि पर हमारी उम्मीदें बहुत अधिक हैं तुम ने यह बोझ मुझ पर रखा है तो सुनो ! इस ज़िम्मेदारी को पूरा होने के लिए मेरी मदद करो और वह यही है कि ख़ुदा तआला से फ़ज़्ल और तौफ़ीक़ चाहो और अल्लाह तआला की रज़ा और फ़रमांबर्दारी में मेरी आज्ञापालन करो। मैं इन्सान हूँ और कमज़ोर इन्सान मुझसे कमज़ोरियाँ होंगी तो तुम अनदेखा करना। तुम से गलतियां होंगी तो मैं ख़ुदा तआला को हाज़िर नाज़िर समझ कर अहद करता हूँ कि मैं अनदेखा करूंगा और क्षमा से काम लूंगा और मेरा और तुम्हारा संयुक्त काम इस सिलसिला की उन्नति और इसके उद्देश्य को व्यावहारिक रंग में पैदा करना है। अत: अब जो तुम ने मेरे साथ एक सम्बन्ध बांधा है इसको वफ़ादारी से पूरा करो। तुम मुझ से और मैं तुम से चश्मपोशी ख़ुदा के फ़ज़्ल से करता रहूँगा। तुम्हें नेकी के कामों में मेरी आज्ञापालन

और फ़रमांबर्दारी करनी होगी..... हाँ मैं फिर कहता हूँ और फिर कहता हूँ कि नेकी के कामों में मेरा विरोध न करना यदि आज्ञापालन और फ़रमांबर्दारी से काम लोगे और इस वादे को मज़बूत करोगे तो याद रखो अल्लाह तआला का फ़ज़्ल हमारा हाथ पकड़ेगा। और हमारी संयुक्त दुआएं सफल होंगी। जिस काम को मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जारी किया था अपने अवसर पर अमानत मेरे सपुर्द हुई है। अतः दुआएं करो और सम्बन्धों को बढ़ाओ और क़ादियान आने की कोशिश करो और बार-बार आओ। मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से सुना है और बार-बार सुना है कि जो यहां बार-बार नहीं आता अंदेशा है कि उसके ईमान में कमज़ोरी हो। इस्लाम का फैलाना हमारा पहला काम है मिलकर कोशिश करो ताकि अल्लाह तआला के उपकारों और फ़ज़्लों की बारिश हो। मैं तुम्हें कहता हूँ फिर कहता हूँ और फिर कहता हूँ अब जो तुमने बैअत की है और मेरे साथ एक सम्बन्ध हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के बाद बांधा है इस सम्बन्ध में वफ़ादारी का नमूना दिखाओ और मुझे अपनी दुआओं में याद रखो, मैं ज़रूर तुम्हें याद रखूँगा। हाँ याद रखता भी रहा हूँ। कोई दुआ मैंने आज तक ऐसी नहीं की जिसमें मैंने सिलसिला के लोगों के लिए दुआ न की हो, परन्तु अब आगे से भी अधिक याद रखूँगा। मुझे कभी पहले भी दुआ के लिए कोई ऐसा जोश नहीं आया जिसमें अहमदी क़ौम के लिए दुआ न की हो। फिर सुनो कि कोई काम ऐसा न करना जो अल्लाह तआला का वादा तोड़ने वाले किया करते हैं। हमारी दुआएं यही हैं कि हम मुसलमान जिएँ और मुसलमान मरें। आमीन।

दुआ और तक़रीर के बाद हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़िल्लाहु अन्हो ने तालीमुल इस्लाम हाई स्कूल के उत्तरी मैदान में लगभग अढ़ाई हज़ार जमाअत के मुख़्लिसीन के साथ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और फिर आपके साथ लोग हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो की मुबारक लाश को लेकर बहश्ती मक़बरा की ओर रवाना हुए और वहां पहुंच कर उस मुबारक वजूद को हज़ारों दुआओं के साथ उसके प्रिय आक़ा के पहलू में दफ़्न किया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद अलमुस्लेह मौऊद ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. का बाबरकत दौर-ए-ख़िलाफ़त

सम्माननीय पाठको! हम इस बात को जानते हैं और पिछले पृष्ठों में पढ़ चुके हैं कि ख़िलाफ़त ख़ुदा तआला की एक महान नेअमत है। जो नबुव्वत के बाद जारी होती है। ख़ुदा तआला ने आयत इस्तिख़लाफ़ में इसका स्थायी वादा फ़रमाया है। इस आयत पर ग़ौर करने से जहां बहुत सी गूढ़ और अध्यात्म की बातें मिलती हैं उन में से एक यह भी है कि ख़ुदा तआला ख़ुद मोमिनों में ख़िलाफ़त जारी करता है और स्वयं उसकी सुरक्षा के प्रबन्ध करता है।

साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ि. को स्वयं अल्लाह तआला ने अपनी ओर से ख़िलाफ़त की पदवी प्रदान की और आपके द्वारा धर्म को दृढ़ता प्रदान की। जिस तरह इस्लाम अपने पहले युग में छोटे से अरब देश में उठा और फ़ारूक़ी युग में देखते ही देखते समस्त संसार पर छा गया और सदियों की बंजर ज़मीन को हरा-भरा कर दिया उसी तरह दूसरे युग अर्थात अहमदियत के नए युग में शानदार और दिलफ़रेब अंदाज़ में पंजाब की छोटी सी गुमनाम बस्ती क़ादियान से बुलन्द होना शुरू हुआ और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी के शुभकाल में अत्यन्त विरोध के बावजूद चमत्कार के रूप में सारी ज़मीन पर छा गया।

आप के बारे में महान ख़ुशख़बरियाँ

सम्माननीय पाठको ! जिस तरह दुनिया में हम देखते हैं कि महान काम अपनी महानता के अनुसार तैयारी चाहते हैं जैसे एक महान और बड़े हाल के निर्माण के लिए रुपए, ईंट, पत्थर, लोहे और सीमेंट का विशेष प्रबन्ध करना पड़ता है उसकी नींवें चौड़ी तथा गहरी रखनी पड़ती हैं और उसका नक़्शा भवन विज्ञान के नियमों के

अनुसार बनाना पड़ता है और एक कच्ची कोठरी के निर्माण के लिए इतने ध्यान की आवश्यकता नहीं पड़ती।

यही हालत हमें रूहानी मामलों में भी नज़र आती है किसी नबी या मामूर की प्रतिष्ठा और वैभव के दृष्टि से उसके आने की तैयारी की जाती है। एक महान नबी के आने की सदियों पहले ख़ुशख़बरियां दे दी जाती हैं जैसा कि हमारे पूर्ण मार्गदर्शक सरवरे कायनात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पैदा होने से हज़ारों साल पहले रूहानी ख़बरों में भी हुज़ूर के आने का वर्णन मौजूद है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्पूर्ण अनुकरण में समस्त संसार के प्रतिश्रुत मौऊद हैं। आपके बारे में भी अन्य धर्मों की पवित्र पुस्तकों में पहले से भविष्यवाणी मौजूद है यहां तक कि स्वयं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने रूहानी पुत्र को याद करते हुए सलाम भेजा है। इन बातों से यह उद्देश्य स्पष्ट होता है कि आने वाले मौऊद के प्रादुर्भाव और महत्व का दुनिया को अनुभव हो जाए और समय आने पर उसकी प्रतिष्ठा और वैभव के अनुसार स्वागत किया जाए और उसे स्वीकार करने के लिए नेक रूहें तैयार हो जाएं।

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. का महान कल्याणकारी अस्तित्व भी ख़ुदा तआला के निशानों में से एक महान निशान है। आपका वर्णन हदीस में मौजूद है। आने वाले मसीह मौऊद के बारे में हदीसों में यह संकेत वर्णित है- يَتَزَوَّجُ وَيُولَدُلَهٗ

(उद्धृत मिशकात मुजतबाई बाब नुज़ूल ईसा अलैहिस्सलाम)

अर्थात: वह शादी करेगा और उसके यहां बेटा पैदा होगा।

इस हदीस में स्वयं हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक महान बेटे की भविष्यवाणी की है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस हदीस की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं कि

قد اخبر رسول الله صلى الله عليه وسلم ان المسيح الموعود يتزوج ويولد
له ففى هذا اشارة الى ان الله يعطيه ولدا صالحاً يشابه اباه ولا يا باه ويكون من

عباد اللہ المکرمین۔ (आईना कमालाते इस्लाम पृष्ठ 578)

अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला से ख़बर पाकर फ़रमाया कि मसीह मौऊद शादी करेंगे और उनके यहाँ औलाद होगी। इस में इस बात की ओर इशारा किया गया है कि अल्लाह तआला उन्हें एक ऐसा नेक बेटा प्रदान करेगा जो नेकी के लिहाज़ से अपने बाप के समान होगा न कि उसका विरोधी और वह अल्लाह तआला के सम्माननीय बंदों में से होगा।

एक और स्थान पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम इस भविष्यवाणी की व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि:

"यह भविष्यवाणी कि मसीह मौऊद के यहां औलाद होगी इसमें इस बात की ओर इशारा है कि ख़ुदा उसकी नस्ल में से एक ऐसे व्यक्ति को पैदा करेगा जो उसका उत्तराधिकारी होगा और इस्लाम धर्म का समर्थन करेगा जैसा कि मेरी कुछ भविष्यवाणियों में ख़बर आ चुकी है।" (हकीक़तुल वह्यी पृष्ठ 312)

इस कथित बेटे के बारे में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अतिरिक्त पुरानी धार्मिक पुस्तकों में भी ख़बर दी गई है अतः हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के पुनः आगमन की भविष्यवाणी के वर्णन में यहूद की शरीयत की बुनियादी किताब तालमूद में लिखा है कि:

"यह भी कहा जाता है कि वह (अर्थात मसीह) मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा और उसकी सल्तनत उसके बेटे और पोते को मिलेगी।" (तालमूद जोज़फ़ बर्कले बाब 5 प्रकाशन लंदन पृष्ठ 1878 ई) इस राय के प्रमाण में यसयाह बाब 42 आयत 4 को प्रस्तुत किया जाता है जिसमें कहा गया है कि वह न थकेगा और न हिम्मत हारेगा जब तक कि अदालत को ज़मीन पर स्थापित न करे।

इस कथित बेटे के बारे में उम्मत मुस्लिमा के बहुत से बुज़ुर्गों ने कश्फ़ और इल्हाम के द्वारा ख़बर पाई और लोगों को बताया। उन बुज़ुर्गों में से हज़रत शाह नेअमतुल्लाह वली भी हैं। आपने मसीह के पुनः आगमन को अपने कलाम में प्रस्तुत करते हुए फ़रमाया।

दूरे ओ चूँ शवद तमाम बकाम पसरश अज़ यादगार मीं बीनम

(अलअरबईन फ़ी अहवालुल महदीन) हज़रत शाह इस्माईल शहीद
प्रकाशन नवम्बर 1851 ई मिसरी गंज कलकत्ता)

अर्थात जब उस (मसीह सानी) का युग सफलता के साथ गुज़र जाएगा तो उसके नमूना पर उसका बेटा यादगार रह जाएगा।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उम्मत के बुज़ुर्गान की भविष्यवाणियों के अनुसार अल्लाह तआला ने आरम्भ से मुक़द्दर किया हुआ था कि मसीह मौऊद को एक बेटा दिया जाएगा जो धर्म का सहायक होगा और इस्लाम के वैभव और गौरव को ज़ाहिर करने वाला होगा।

सम्माननीय पाठको! इन भविष्यवाणियों के अतिरिक्त स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने मौऊद बेटे की ख़बर दी। अतः जमाअत अहमदिया में यह भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद के नाम से प्रसिद्ध है। संक्षिप्त पसमन्ज़र (पृष्ठभूमि) इसका यह है कि इस्लाम की परेशानी, बेचैनी और बेचारगी को देखकर युग के सुधारक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिल में घोर टीस पैदा हुई और दर्द उठा जिससे आप बेचैन हो गए।

आप 1886 ई में अल्लाह तआला की आज्ञा से होशियारपुर पधारे। जहां आपने चालीस दिन और चालीस रातें एकान्त में इबादत और ज़िक्रे इलाही में गुज़ारीं और दर्द भरी दुआएं कीं कि हे अल्लाह! इस्लाम की असहाय हालत और लाचारी को देखते हुए तू रहम कर और इस्लाम की महानता और विजय के दिन फिर ले आ और इसके लिए एक महान निशान दिखा। अल्लाह तआला ने दिल की गहराई से निकली हुई इन दर्द भरी दुआओं को सुना और उन्हें क़बूल करते हुए अपने प्यारे बंदे को इल्हाम के द्वारा बताया कि :

मैं तुझे एक रहमत (कृपा) का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझ से मांगा। अतः मैंने तेरी दर्दभरी वेदनाओं को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत से क़बूलियत (मंज़ूरी) का स्थान दिया और तेरे सफ़र को (जो होशियारपुर और लुधियाना का सफ़र है) तेरे लिये मुबारक कर दिया। अतः क़ुदरत (शक्ति) और रहमत (कृपा) और क़ुर्बत (प्यार) का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़्ल और उपकार (कृपा व

उपकार) का निशान तुझे प्रदान किया जाता है और फ़तह और ज़फ़र (सफलता और विजय) की कुंजी तुझे दी जाती है। हे मुज़फ़्फ़र (विजेता) ! तुझ पर सलाम। ख़ुदा ने यह कहा ताकि वे जो क़बरों में दबे पड़े हैं, बाहर आएं और इस्लाम धर्म की प्रतिष्ठा और कलामुल्लाह (क़ुर्आन) की श्रेष्ठता लोगों पर प्रकट हो और ताकि सत्य अपनी पूरी बरकतों के साथ आ जाए और बातिल (झूठ) अपनी पूरी बेरकती (अमांगलिकताओं) के साथ भाग जाए और लोग समझें कि मैं क़ादिर (सामर्थ्यवान) हूँ, जो चाहता हूँ करता हूँ। और वे विश्वास करें कि मैं तेरे साथ हूँ और उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर ईमान नहीं लाते और ख़ुदा और ख़ुदा के धर्म और उसकी किताब और उसके पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन्कार और तक्ज़ीब (विरोध और झूठ) की दृष्टि से देखते हैं, एक खुली निशानी मिले और मुजरिमों की राह प्रकट हो जाए। अतः तुझे ख़ुशख़बरी हो कि एक वजीह (प्रतापी) और पवित्र लड़का तुझे दिया जाएगा। एक ज़की ग़ुलाम (पवित्र लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरे ही बीज से तेरी ही सन्तान व नस्ल का होगा। सुन्दर, निष्कलंक लड़का, तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम अन्मवाईल और बशीर भी है। उसको मुकद्दस रूह (पवित्र आत्मा) दी गई है और वह कंलक से रहित है। वह अल्लाह का नूर (प्रकाश) है। मुबारक वह जो आकाश से आता है। उसके साथ फ़ज़्ल है, जो उसके आने के साथ आयेगा। वह साहिबे शुकोह (प्रतापी) और अज़मत (प्रतिष्ठित) और दौलत (धनी) होगा। वह दुनिया में आयेगा और अपने मसीही नफ़्स अर्थात् (ध्यान शक्ति, दुआ) और रूहुल हक़ की बर्कत से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। वह कलिमतुल्लाह (अर्थात एकेश्वरवाद का प्रतीक) है। क्योंकि ख़ुदा की रहमत (कृपा) व ग़य्यूरी (स्वाभिमान) ने उसे अपने कलिमा तम्जीद (बुज़ुर्गी व शान) से भेजा है। वह सख़्त ज़हीन व फ़हीम (बुद्धिमान एवं सूझवान) होगा और दिल का हलीम (गम्भीर) और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी (अर्थात् सांसारिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान) से पुर किया जायेगा। वह तीन को चार करने वाला होगा।...... दोशम्ब: (सोमवार) है मुबारक दोशन्ब: (अर्थात् सोमवार) फ़र्ज़न्द दिल बंद गिरामी अर्जुमन्द (सम्मान जनक, मनमोहक, श्रेष्ठ सुपुत्र)। مَظۡهَرُ الۡاَوَّلِ وَالۡاٰخِرِ مَظۡهَرُ الۡحَقِّ وَا

الْعُلَاءِ كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ अर्थात् वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो हमेशा से है और सदैव रहने वाला है वह उस ख़ुदा का नूर है जो सत्य है और महान है (उसका आना ऐसा ही है) जैसा कि अल्लाह स्वयं आकाश से उतर आया हो। जिसका आना बहुत मुबारक और ख़ुदा के प्रताप के प्रकट होने का कारण होगा। नूर आता है नूर, जिसको ख़ुदा ने अपनी इच्छा की सुगंध से सुगंधित किया है। हम उसमें अपनी रूह डालेंगे। ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा। वह जल्द-जल्द बढ़ेगा और असीरों (गुलामों) की रुस्तगारी (मुक्ति) का कारण होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत (प्रसिद्धि) पाएगा और क़ौमें उससे बरकत पाऐंगी। तब अपने नफ़्सी नुक़ता आकाश (अर्थात् ख़ुदा) की ओर उठाया जायेगा। व काना अमरन मक़्ज़िय्या (और यह काम पूरा होकर रहने वाला है)।"

(इश्तिहार 20 फरवरी 1886 ई तब्लीग़ रिसालत भाग 1 पृष्ठ 58 से 60 मजमूआ इश्तिहारात भाग 1 पृष्ठ 100)

सम्माननीय पाठको ! ख़ुदा तआला के इस इल्हाम के आलोक में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उपरोक्त गुणों वाले वजूद को मुस्लेह मौऊद क़रार दिया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा भविष्य में भी हमेशा आते रहेंगे और अपने-अपने स्थान पर सब सम्माननीय हैं और रहेंगे परन्तु हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की शान इन सबसे जुदा और अलग है इसलिए कि आप उपरोक्त भविष्यवाणी की विशेषताओं के पात्र और मुस्लेह मौऊद क़रार दिए जाने वाले महान और प्रतापी ख़लीफ़तुल मसीह हैं। इस दोहरे सम्मान और आपके कारनामों के कारण जिन्हें देखकर दुनिया दंग रह गई है आपकी ख़िलाफ़त एक विशेष शान वाली थी जो आप ही से विशिष्ट है।

होनहार बिरवा के चिकने चिकने पात

सम्माननीय पाठको ! भविष्यवाणियों के अनुसार 12 जनवरी 1889 ई. (9 जमादिउल अव्वल 1306 हिजरी) को जुमा की रात के आख़िरी पहर में मौऊद बेटे का जन्म क़ादियान में हुआ और आपके जन्म को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ने इस उपरोक्त भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद की सच्चाई का निशान ठहराया और उसी के अनुसार आपका नाम बशीरुद्दीन महमूद अहमद रखा गया।

सम्माननीय पाठको ! अल्लाह तआला स्वयं ख़लीफ़ा चुनता है और जिस व्यक्ति को वह ख़लीफ़ा बनाना चाहता है उसमें बचपन से ऐसे गुण रख देता है जो देखने वाली आँखों को नज़र आने लगता है। हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि में ख़ुदा तआला ने वे गुण रखे थे कि देखने वाली आँखों ने आपके बचपन की मासूमाना अदाओं से ही सब कुछ भाँप लिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बुज़ुर्ग सहाबा को प्रारम्भ ही से इस बात का विश्वास था कि आप ही मुस्लेह मौऊद हैं और आपकी ही ख़िलाफ़त के युग में इस्लाम की फ़तह मुक़द्दर है जैसा कि निम्नलिखित बातों से स्पष्ट है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रमुख सहाबी हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं:

"मुहावरा प्रसिद्ध है होनहार बिरवा के होत चिकने पात। मुझे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहो तआला को उनके बहुत बचपन के युग से ही देखने का संयोग हुआ है। मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत 1890 ई के आख़िर में उस समय की थी जब उनकी उम्र एक-दो साल के लगभग थी। उसके बाद जब मैं क़ादियान में हाई स्कूल में मिडल और फिर इंटरन्स का हेड मास्टर था तो हज़रत अमीरुल मोमिनीन इसी स्कूल में शिक्षा प्राप्त करते थे और मुझे यह गौरव भी प्राप्त हुआ कि मैं स्कूल के अलावा मकान पर जाकर भी उन्हें पढ़ाया करता था। उसी युग से मेरे दिल में उनकी नेकी पवित्रता, तक़्वा और बुद्धिमानी का गहरा प्रभाव है। मैं हमेशा यह सोचा करता था कि बड़े होकर यह ज़रूर किसी बहुत बड़े पद पर सुशोभित होंगे। मुझे याद है ख़िलाफ़त अव्वल के युग में एक दिन दफ़्तर बदर में बैठे हुए शेख़ याक़ूब अली साहिब इर्फ़ानी एडीटर अख़बार अलहकम ने फ़रमाया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के युग में जो आन्नद प्राप्त होता था वह अब नहीं रहा। तो सहसा मेरे मुंह से निकल गया कि जब मियां साहिब ख़लीफ़ा बनेंगे तो फिर वही लुत्फ़ प्राप्त होगा। अत: ऐसा ही हुआ क्योंकि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह

सानी रज़ि. हुस्न तथा उपकार में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सदृश हैं इसीलिए उनके युग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के युग की सी बातें हो रही हैं। (अल्फ़ज़्ल 2 फरवरी 1944 ई)

इस सम्बन्ध में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहो तआला के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की क्या राय थी। इस बात का हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो के इन शब्दों से बख़ूबी अंदाज़ा हो सकता है कि :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहो तआला ने इस्लाम के समर्थन में जब एक निबन्ध लिखा तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वह निबन्ध पढ़ कर फ़रमाया महमूद पास हो गया।" (अल्फ़ज़्ल 2 फरवरी 1944 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल मौलवी नूरुद्दीन रज़ियल्लाहो अन्हो को भी यह यक़ीन था कि आपके बाद हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ही ख़लीफ़ा होंगे। आप इसका इज़्हार विभिन्न अवसरों पर फ़रमाते थे। हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं कि:

"हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो इस किस्म के इशारे फ़रमाते रहते थे कि उनके बाद होने वाला ख़लीफ़ा कौन है। एक दिन इसी मस्जिद अक़्सा में दर्सुल क़ुरआन देते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो ने हज़रत ख़लीफ़ा सानी अय्यदहुल्लाहो को सम्बोधित करके फ़रमाया मियां हम ने इस मस्जिद को दक्षिण की ओर बढ़ाया है तुम उत्तर की ओर बढ़ाने का ख़्याल रखना। एक बार इसी मस्जिद अक़्सा में दर्स देने से पहले हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया इस समय एक बात मेरे दिल में आई है जिसको वर्णन करने से मैं रुक नहीं सकता। यद्यपि ज़ाहिर में दर्स के साथ उसका सम्बन्ध नहीं और वह यह है कि तोंसा ज़िला डेरा ग़ाज़ी ख़ां के बुज़ुर्ग गद्दीनशीन छोटी उम्र में ख़लीफ़ा हुए और बहुत बड़ी उम्र तक पहुंचे।" (अल्फ़ज़्ल 2 फरवरी 1944 ई)

हज़रत मुफ़्ती साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो भैरा के एक और सूफ़ी बुज़ुर्ग हज़रत मियां ग़ुलाम हुसैन साहिब जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे, का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं:

"ख़िलाफ़त सानिया के आरम्भिक दिनों में कुछ पैग़ामी उनके पास गए और कहा आप ने मियां साहिब की क्यों बैअत कर ली वह तो मिर्ज़ा साहिब को नबी कहते हैं। मियां ग़ुलाम हुसैन साहिब ने उनको जवाब दिया कि तुम को हज़रत मिर्ज़ा साहिब की नबुव्वत में शक हो रहा है और मैं तो उनके बेटे में भी नबुव्वत के लक्षण देखता हूँ।"

(अल्फ़ज़ल 2 फरवरी 1944 ई)

और इस बात के प्रमाण में कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा को यह विश्वास था कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ख़ुदा के फ़ज़ल से साधारण क़ुव्वत क़ुदसिया (आध्यात्म शक्ति) नहीं बल्कि विशेष क़ुव्वत क़ुदसिया के मालिक हैं। विनीत एक और घटना लिखता है :

जमाअत के लोग आरम्भ से ही यह विश्वास रखते थे कि हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद मुस्लेह मौऊद हैं परन्तु आप की ओर से इस बारे में कोई घोषणा नहीं हुई थी और आप ख़ामोश रहे यहां तक कि 1944 ई के शुरू में अल्लाह तआला ने आपको इल्हाम द्वारा बताया कि आप ही भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद के पात्र हैं।

इस पर आप ने ख़ुत्बा जुम्अ: दिनांक 28 जनवरी 1944 ई. को मुस्लेह मौऊद होने का ऐलान फ़रमाया। इस ख़ुदाई स्पष्टीकरण पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने के लिए 29 जनवरी 1944 ई. को मस्जिद अक़्सा में एक जलसा हुआ जिसमें क़ादियान के लोगों के अतिरिक्ति हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबा किराम भी सम्मिलित थे। इस जलसा के सदर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के महान सहाबी हज़रत चौधरी फ़तह मुहम्मद साहिब सियाल एम ए नाज़िर आला क़ादियान थे जिनकी सारी उम्र इस्लाम की तब्लीग़ तथा इशाअत में गुज़री। इस जलसा में हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहो तआला बेनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में प्रस्तुत करने के लिए सर्वसम्मति से एक विज्ञप्ति पास हुई जो निम्नलिखित है:

"हम समस्त लोग जमाअत अहमदिया क़ादियान जो इस जलसा में सम्मिलित हैं हुज़ूर की सेवा में भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद के बारे में ख़ुदा तआला की ओर से व्यापक स्पष्टीकरण पर ख़ादिमाना तौर पर सामूहिक रूप से मुबारकबाद प्रस्तुत करते हैं। हम सब विनीत ख़ुद्दाम इस शुभ अवसर पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हुए हुज़ूर की सेवा में श्रद्धा व्यक्त करते हैं कि हम अपनी जान माल इज़्ज़त हुज़ूर के आदेश पर प्रत्येक पल कुरबान करने को तैयार हैं। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ बख़्शे। हम समस्त ख़ादिम हुज़ूर से निवेदन करते हैं कि हुज़ूर अपनी विशेष क़ुव्वत क़ुदसिया से जो ख़ुदा तआला ने हुज़ूर को प्रदान की है हमारे लिए भी दुआ कर दें कि अल्लाह तआला हमारी कमज़ोरियों को दूर करे और हुज़ूर की शिक्षा और मार्गदर्शन के अनुसार धर्म की सेवा की तौफ़ीक़ दे। आमीन।"

(अल्फ़ज़्ल 2 फरवरी 1944 ई)

यह निवेदन हुज़ूर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में हज़रत मौलवी अब्दुल मुग़नी ख़ान साहिब नाज़िर इस्लाहो इरशाद ने पेश किया। जिसमें विशेष क़ुव्वत क़ुदसिया के शब्द इस बात का प्रमाण हैं कि उस समय उपस्थित लोग,जिन में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कई सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम भी थे, हुज़ूर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ की विशेष शान-ए-ख़िलाफ़त पर दिल की गहराइयों से विश्वास रखते थे।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि के बारे में समय से पूर्व की ख़ुशख़बरियां

सम्माननीय पाठको ! अल्लाह तआला जब अपने किसी बंदे को स्वीकार कर लेता है और अपने दरबार में स्थान देता है तो उसकी मक़्बूलियत को दुनिया में प्रत्येक ओर फैला देता है। यह मामला तो प्रायः एक मोमिन तथा मुत्तक़ी के साथ हर समय होता है परन्तु जब ख़लीफ़ा के साथ कोई मामला हो तो वह और ही तरह का और विशेष होता है।

अल्लाह तआला ने निरन्तर रो'या तथा कश्फ़ों के द्वारा हज़रत मसीह मौऊद

अलैहिस्सलाम के सहाबा रिज़्वानुल्लाह अलैहिम पर यह बात प्रकट कर दी थी कि आप ही मुस्लेह मौऊद और ख़लीफ़ा सानी के उच्च स्थान पर सुशोभित होने वाले हैं। नीचे कुछ एक सहाबा किराम की ऐसी रिवायतें लिखी जाती हैं जो ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. की उच्च पदवी और विशेष ख़िलाफ़त की शान को प्रकट करने वाली हैं जिस से यह प्रमाणित होता है कि अल्लाह तआला ने आपको महान ख़िलाफ़त के पद से सुशोभित किया था और आपकी ख़िलाफ़त की एक निराली शान थी।

महमूद का रूहानी चेहरा अन्धकार को दूर करने वाला है

क़ुरैशी मुहम्मद अहसन साहिब रज़ि. के बेटे लिखते हैं :

"मैं अल्लाह तआला की क़सम खाकर कहता हूँ कि निम्नलिखित रो'या और कश्फ़ मेरे पिता जी ने अपने जीवन में मुझे सुनाए थे और अब मैं उनकी अपनी क़लम से लिखे हुए रो'या और कुशूफ़ उनकी एक कापी से यहां लिखता हूँ:

मेरे पिता जी हाफ़िज़ मुहम्मद हुसैन साहिब क़ुरैशी पुत्र मुहम्मद अशरफ साहिब टरपी ज़िला अमृतसर के निवासी थे। उन्होंने 1900 ई. के लगभग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत की। आप अगस्त 1917 ई. में हिजरत करके अपने परिवार के साथ क़ादियान आ गए। आप को रो'या, कशूफ़ और इल्हाम बहुत अधिकता से हुआ करते थे। आप का 19 सितम्बर 1933 ई. को दिल की हरकत बन्द हो जाने से देहान्त हो गया। जनाज़ा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी ने पढ़ाया आपके कत्ब: पर बहश्ती मक़बरा में यह शब्द लिखे गए। आप पुराने सहाबी और इल्म वाले व्यक्ति थे इस बात का ज्ञान हज़रत मुहम्मद सरवर शाह साहिब को अच्छी तरह से था।

रो'या (स्वप्न की अवस्था)

जिस दिन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि. का देहान्त हुआ है उसी रात हालाँकि विनीत को हरगिज़ देहान्त का कोई ज्ञान न था और न ही लाहौरी फ़ित्ना की किसी प्रकार की सूचना थी। मैंने ख़्वाब में देखा कि आकाश के बीच में अर्थात ठीक

सिर पर चांद है और उसके इर्द-गिर्द बादल हैं। तभी मुझे मालूम हुआ कि वह चांद हज़रत साहिबज़ादा साहिब अर्थात ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. हैं और वह नूरानी चांद हुज़ूर का पवित्र चेहरा है आपके चेहरा से एक नूर का शोला निकला है और उसने उन बादलों को टुकड़े-टुकड़े कर दिया है और वह दूर दूर फटकर जा पड़े हैं और धीरे-धीरे एकत्र होकर फिर हुज़ूर के नूरानी चेहरे के इर्दगिर्द चांद की तरह दिखाई देता है जमा हो गए हैं। पुनः उसी तरह नूर का शोला निकला है और उस ने उन काले बादलों को फाड़ कर दूर फेंक दिया है और वह बादल फिर इकट्ठे होकर चांद के गिर्द जमा होने लग गए हैं यहां तक कि लगभग चार बार ऐसा नज़ारा देखा और फिर जाग गया। उसके बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि. के देहान्त की ख़बर मिली तो ख़्वाब का मामला समझने में बिल्कुल आसानी हो गई।

महमूद की सुरक्षा के लिए पाँच फ़रिश्ते हर समय उनके साथ रहते हैं

जिस दिन चौधरी रुस्तम अली साहिब का जनाज़ा आया था और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. जनाज़ा दफ़नाने के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मज़ार मुबारक(क़ब्र) पर दुआ के लिए तशरीफ़ ले गए। प्राय दोस्त हुज़ूर के साथ थे। हुज़ूर दुआ कर रहे थे कि विनीत को हुज़ूर का चेहरा मुबारक दिखाई दिया और फ़रमाने लगे महमूद के आजकल बहुत दुश्मन हैं। परन्तु ख़ुदा के फ़रिश्ते हर समय उसके साथ होते हैं। ज़रूरत के समय तो बेशुमार होते हैं परन्तु पाँच फ़रिश्ते हर समय साथ होते हैं। इतने में हुज़ूर दुआ से फ़ारिग़ हो गए और मुझ से भी वह रो'या की हालत जाती रही। (उद्धृत बिशारात रहमानिया भाग 1 पृष्ठ 230)

(उद्धृत हाफ़िज़ मुहम्मद हुसैन रज़ि. लेखक सईद अहसन एम-ए रब्वा, प्रकाशक मुहम्मद अरशद क़ुरैशी प्रकाशन लाइन आर्ट प्रैस)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आशिक़ सादिक़ हज़रत मौलवी अब्दुल्लाह साहिब सनौरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो जो हुज़ूर अलैहिस्सलाम के साथ छाया की तरह रहते और जिन्हें चिल्ला कशी (होशियारपुर 1886 ई) के समय हुज़ूर की संगत

का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। आप को भी यह पूर्ण विश्वास था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ि. ही वह मुस्लेह मौऊद बेटे हैं। एक बार उन्होंने एक ख़्वाब देखा और हमें बताया और मेरा ख़्याल है हुज़ूर को भी इस ख़्वाब का इल्म होगा। उन्होंने बताया कि मैंने ख़्वाब में देखा कि एक सूरज चढ़ा हुआ है और अस्त होने के निकट है और फिर दूसरा सूरज चढ़ा जो चढ़ते चढ़ते सिर पर पहुंच गया जैसा कि दोपहर के समय होता है। यह ख़्वाब उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बताया तो हुज़ूर रज़ि. ने फ़रमाया कि सूरज से अभिप्राय धर्म के बड़े लोग होते हैं फिर फ़रमाया जो पहला सूरज देखा जो अस्त होने के निकट था वह मैं हूँ और दूसरे सूरज के बारे में फ़रमाया कि तुम वह भी अच्छी तरह देखोगे। वह कहा करते थे कि ख़ुदा तआला का हज़ार-हज़ार शुक्र है कि मैंने वह युग अर्थात आप का युग अच्छी तरह देखा लिया। आज यदि वह ज़िन्दा होते तो उनकी ख़ुशी की कोई सीमा न होती। ख़ुदा का हज़ार हज़ार शुक्र है कि उसने मुझे अपने जीवन में यह दिखाया। अल्हमदो लिल्लाह। (अल्फ़ज़ल 18 मार्च 1944 ई)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक सहाबी हाफ़िज़ मुहम्मद हुसैन साहिब रज़िल्लाहो तआला अन्हो अपनी एक घटना वर्णन करते हुए लिखते हैं कि एक दिन अख़बार अल्फ़ज़ल आया और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. की तफ़्सीर सूरः जुमा की उसमें लिखी थी और अभी हुज़ूर की ख़िलाफ़त का प्रारम्भिक युग था दोपहर का समय था और मैं लेटा हुआ अख़बार पढ़ रहा था जैसे-जैसे तफ़्सीर पढ़ता जाता था इतना आन्नद महसूस होता था कि वह ऐसा समय कभी कभी मौला करीम प्रदान करता है। अचानक सो गया और उसी हालत में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह को देखता हूँ। ख़्वाब में निवेदन किया कि हुज़ूर यह रहस्य और मर्म और यह ज्ञान हुज़ूर ने कहाँ से प्राप्त हुआ है। हुज़ूर ने अपने दाएं हाथ की शहादत की उंगली उठाई और फ़रमाया-

لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

फ़रमाया देखो ख़ुदा ही सब कुछ फ़रमाता है। अचानक हालत बदल गई और वही अख़बार अल्फ़ज़्ल मेरे हाथ में है और पढ़ रहा हूँ।

(हाफ़िज़ मुहम्मद हुसैन रज़ि. पृष्ठ 26-27 सईदा अहसन एम-ए रब्वा, प्रकाशक मुहम्मद अरशद क़ुरैशी प्रकाशन लाईन आर्ट प्रैस)

हज़रत मियां मुहम्मद रहीम उद्दीन साहिब रज़ि. जो 313 सहाबा में से 302 नम्बर पर हैं, लिखते हैं:

"25 अप्रैल 1923 ई. तीन बजे रात "डाक पत्थर" ज़िला देहरादून तहज्जुद पढ़ कर मैंने ला-इलाह इल्लल्लाह का विर्द करना शुरू किया कि अचानक आँखें बंद हो गईं और अन्धेरे में रोशनी की लाइन में सारे आकाश पर पूर्व की ओर से लिखा हुआ देखा जैसे बिजली की रोशनी होती है। "महमूद बादशाह इस्लाम" तबीयत ने विचित्र आनन्द अनुभव किया। यह रोशनी की ख़ुशख़बरी बहुत देर तक आँखों के सामने रही। यह मेरा हल्फ़िया बयान है।" (अल्फ़ज़ल 25 मार्च 1944 ई)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक और सहाबी हज़रत मौलवी महबूब आलम साहिब नीला गुंबद लाहौर लिखते हैं :

"शायद 27 जनवरी जुमेरात की रात थी। तीन बजे रात मैंने रो'या (स्वप्न) में देखा कि मैं एक बाग़ में जा रहा हूँ। जब बाग़ ख़त्म हुआ तो देखा कि उसकी दीवार बहुत ऊंची है। मैं बाहर जाना चाहता हूँ परन्तु रास्ता नहीं मिलता। मैं उस दीवार के साथ-साथ चला जाता हूँ तो मैंने देखा कि कोई जंगली जानवर है शेर की तरह मालूम होता है जो बैठा हुआ है। मैं उससे बहुत डरा परन्तु वह मुहब्बत से मुझे कहता है तुम्हारा रास्ता दाईं ओर है। मैं गया तो मुझे एक रास्ता मिल गया। थोड़ी दूर गया था कि मालूम हुआ रास्ता कठिन है और चलना कठिन है। फिर मैं हवा में उड़ा और दूर निकल गया। देखा बहुत सारी बस्तियां हैं जैसे अंग्रेज़ों की आबादी होती है। मैं हवा में उड़ता हूँ जैसे हवाई जहाज़ उड़ता है और बड़ी ऊंची आवाज़ से कहता हूँ हे लोगो सुन लो अब दुनिया में कोई झूठा उपास्य नहीं रहेगा और सब झूठे उपास्य नष्ट कर दिए जाएँगे एक ही ख़ुदा जो एक और अद्वितीय है पूजा जाएगा, किसी अल्लाह के अतिरिक्त की उपासना नहीं की जाएगी। फिर मैं अरबी भाषा में नसीहत करता हूँ

और ला-इलाह इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह पढ़ता हूँ अल्लाहु-अकबर, अल्लाहु-अकबर, अल्लाहु-अकबर ज़ोर से कहता हूँ इसी तरह لا الہ الا انت سبحانك انی کنت من الظالمین (ला-इलाह इल्ला अन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तु मिनज़् ज़ालेमीन) भी पढ़ता हूँ। अल्लाहो अकबर इस ज़ोर से कहता हूँ कि मेरी एक लड़की और मेरी पत्नी जाग उठीं और मुझे कहने लगीं क्या ज़ोर से पढ़ रहे हैं। मैंने उनसे रो'या वर्णन की। उन्होंने भी समर्थन किया कि हमने अल्लाहु-अकबर की आवाज़ सुनी है इसी तरह कलिमा तय्यबा और आयत करीमा भी बुलन्द आवाज़ से पढ़ते सुना है और भी अरबी में सुना हालाँकि मैं अरबी अधिक नहीं जानता। इस रो'या से यह साफ़ मालूम होता है कि हज़रत अक़दस को जो ख़ुदा की ओर से मुस्लेह मौऊद के पद से सुशोभित किया गया है उसकी व्याख्या में यह ख़्वाब है कि हुज़ूर की उत्पत्ति से शिर्क नाबूद होगा जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्हामों से भी ज़ाहिर होता है कि उसके आने से ख़ुदा का प्रकटन होगा। (अल्फ़ज़ल 15 मार्च 1944 ई)

सम्माननीय पाठको ! निसन्देह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. की ख़िलाफ़त और उच्च स्थान के बारे में बहुत सी घटनाएं तथा रिवायतें वर्णन की जा सकती हैं। इन घटनाओं से ख़ुदा तआला की यह बात प्रमाणित हो जाती है कि कअन्नल्लाहो नज़ला मिनस्समाअ।

दुआ की क़ुबूलियत के रूप में ख़िलाफ़त सानिया की बरकतों का नुज़ूल

अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार दिनांक 14 मार्च 1914 ई दिन शनिवार को अस्र की नमाज़ के बाद हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ि.मुख़्लिस जमाअत अहमदिया की दुआओं के साथ मस्नद-ए-ख़िलाफ़त पर आसीन हुए। आपकी सारी ज़िन्दगी का दुआओं के साथ बड़ा गहरा रिश्ता था। आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की क़बूलियत-ए-दुआ का महान निशान थे। सारी ज़िन्दगी दुआओं के नतीजा में ख़ुदा तआला ने विशेष दुनियावी शिक्षा प्राप्त न करने के बावजूद

आपको विशेष ज्ञान प्रदान किया। ज़िन्दगी के प्रत्येक युग में आपके सिर पर दुआओं का साया रहा। आपका मन्सब-ए-ख़िलाफ़त पर सरफ़राज़ होना भी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल की दुआ की क़बूलियत का एक ज़िन्दा निशान था।

घटना इस तरह से है कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि. के आख़िरी दिनों में जब बीमारी बहुत बढ़ गई थी और चलना- फिरना मुश्किल हो गया था और अन्तिम समय आ गया था तो आपने अपने बाद आने वाले के लिए में एक दर्द भरी दुआ की। जिस का वर्णन स्वयं आपके शब्दों में यह है कि:

"आज मुझे बहुत कष्ट हुआ। मैंने समझा अब इस दुनिया में नहीं रहूँगा। अत: मैंने दो रकअत नमाज़ पढ़ी और अलहम्दो शरीफ़ के बाद पहली रकअत में सूर: अज़्ज़ुहा और दूसरी रकअत में अलम-नशरह लका सदरक की तिलावत की। फिर मैंने दुआ की हे अल्लाह ! हम पर चारों ओर से हमला हो गया....हे ख़ुदा इस्लाम पर बड़ी तलवार चल रही है मुसलमान पहले ही सुस्त हैं फिर इस्लाम धर्म, पवित्र क़ुरआन और नबी करीम से बेख़बर। तू उन में ऐसा व्यक्ति पैदा कर जिसमें आकर्षण शक्ति हो वह काहिल तथा सुस्त न हो बुलन्द हिम्मत रखता हो। इन बातों के बावजूद वह महान धैर्यशाली हो। दुआओं का मांगने वाला हो तेरी समस्त या अधिकतर इच्छाओं को पूरा करने वाला हो। इस जमाअत के लोगों में ख़ूब हिम्मत और दृढ़ता वाला हो। क़ुरआन और हदीस से परिचित हो और उन पर चलने वाला और दुआओं का मांगने वाले हो। परीक्षाएं तो ज़रूर आएंगी। उन परीक्षाओं में उनको दृढ़ता प्रदान कर। उसके सामने इस तरह की परीक्षाएं न आएं जो उसके सामर्थ्य से बाहर हों।

(अल्हकम 7 अप्रैल 1914 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि. की दुआ के अनुसार दुआओं का मांगने वाला, आकर्षण शक्ति का मालिक, महान धैर्यशाली, क़ुरआन, हदीस का आलिम और उन पर चलने वाला व्यक्ति हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ि. के रूप में जमाअत को प्रदान किया गया।

आपके वजूद के साथ दुआओं का बड़ा गहरा रिश्ता था ख़िलाफ़त के मन्सब

पर आसीन होने के बाद इस सम्बन्ध में प्रत्येक-दिन एक नया अध्याय खुलता गया। यह बात प्रमाणित है कि अल्लाह तआला जिस व्यक्ति को ख़लीफ़ा चुनता है उसकी दुआओं में क़ुबूलियत के पक्ष को स्पष्ट कर देता है ताकि दुनिया को पता चले कि यह सच्चा ख़लीफ़ा है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. ख़लीफ़ाओं की दुआ की क़बूलियत बारे में फ़रमाते हैं:

"अल्लाह तआला जब किसी को मन्सब ख़िलाफ़त पर सरफ़राज़ करता है तो उसकी दुआओं की क़बूलियत को बढ़ा देता है क्योंकि यदि उसकी दुआएं स्वीकार न हों तो फिर उसके अपने चुनाव का अपमान होता है .... मैं जो दुआ करूँगा वह इंशा अल्लाह अकेले-अकेले प्रत्येक व्यक्ति की दुआ से अधिक ताक़त रखेगी।

(मन्सब ख़िलाफ़त पृष्ठ 32)

एक और स्थान पर आप फ़रमाते हैं:

"ख़ुदा तआला जिस व्यक्ति को ख़िलाफ़त के पद पर खड़ा करता है वह उसको युग के अनुसार ज्ञान भी प्रदान करता है। यदि वह अज्ञान, जाहिल और बेवक़ूफ़ होता है.... तो इसके क्या अर्थ हैं कि ख़लीफ़ा स्वयं ख़ुदा बनाता है? इसके तो अर्थ ही यही हैं कि जब किसी को ख़ुदा ख़लीफ़ा बनाता है तो उसे अपने गुण प्रदान करता है। यदि वह उसे अपने गुण नहीं देता तो ख़ुदा तआला के स्वयं ख़लीफ़ा बनाने का अर्थ ही क्या है? (अल्फ़ज़ल 22 नवम्बर1950 ई)

इसी तरह 1914 ई. के जलसा सालाना की तक़रीर में जमाअत को सम्बोधित करके फ़रमाया :

"तुम्हारे लिए एक व्यक्ति तुम्हारा दर्द रखने वाला, तुम्हारी मुहब्बत रखने वाला, तुम्हारे दु:ख को अपना दु:ख समझने वाला तुम्हारे कष्ट को अपना कष्ट जानने वाला और तुम्हारे लिए ख़ुदा के हुज़ूर दुआ करने वाला है।"

(बरकाते ख़िलाफ़त पृष्ठ 5)

सम्माननीय पाठको! हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. को अल्लाह तआला ने अपनी इच्छा के अनुसार ख़िलाफ़त का मन्सब प्रदान किया था और इसी तरह आपको अपनी विशेषताओं से सम्मानित किया था। इसी तरह आपको क़बूलियत-ए-दुआ का

निशान प्रदान हुआ था। आप को देखने वाले और आपसे सम्बन्ध रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति की यह गवाही है कि आप की दुआओं में एक विशेष क़बूलियत का रंग स्पष्ट नज़र आता था। क़बूलियत-ए-दुआ के बारे में आपकी कुछ घटनाएं ईमान की वृद्धि के लिए नीचे लिखी जाती हैं:

हुज़ूर की दुआ का चमत्कारपूर्ण प्रभाव

आदरणीय मलिक हबीबुउल्लाह साहिब रिटायर्ड इन्सपैक्टर आफ़ स्कूल्ज़ अपनी एक घटना लिखते हैं कि:

"शुजाआबाद के निवास के समय मुझे एक ऐसी बीमारी लग गई कि जिसने मुझे बिल्कुल निढाल और मुर्दा की तरह कर दिया। थोड़े थोड़े दिनों के बाद पेट में इतना तेज़ दर्द उठता कि मैं बेहोश हो जाता। लगभग दो साल मैंने प्रत्येक प्रकार के इलाज करवाए परन्तु हालत ख़राब हो गई। आख़िर तंग आकर मैं अमृतसर के सरकारी अस्पताल में दाख़िल हो गया। वहां टैस्ट हुए और यह फ़ैसला हुआ कि मेरे पित्ते और अपेन्डिक्स दोनों का आप्रेशन होगा। इसलिए मुझे घबराहट पैदा हुई और मैं एक दिन बिना इजाज़त अस्पताल से चला गया और क़ादियान पहुंचा और हुज़ूर की सेवा में हाज़िर होकर सारी घटना वर्णन की। हुज़ूर ने यह सुनकर फ़रमाया कि आप को अपेन्डिक्स तो हरगिज़ नहीं हाँ पित्ते में दोष है। आप इलाज कराएं मैं दुआ करूँगा इंशा अल्लाह आराम आ जाएगा। इसके बाद मुझे यक़ीन हो गया कि मैं ठीक हो जाऊंगा। अत: मैं अपनी नौकरी पर वापस चला आया और मुल्तान के एक हकीम साहिब से मामूली दवाइयां लेकर प्रयोग करना शुरू किया। तीन-चार माह के बाद बीमारी का नाम-निशान भी न रहा हालाँकि इससे पहले लगभग दो साल यूनानी और अंग्रेज़ी दवाइयां प्रयोग कर चुका था। अत: यह केवल हुज़ूर की दुआ का चमत्कारपूर्ण प्रभाव था जिसने मेरे जैसे मुर्दा की तरह मरीज़ को चंगा कर दिया। इसके बाद ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से आज तक मुझे पेट का कष्ट नहीं हुआ।

(उद्धृत अल-फ़ज़ल पृष्ठ 5, 20 मार्च 1966 ई)

اَیۡنَ مَا تَکُوۡنُوۡا یَاۡتِ بِکُمُ اللّٰہُ جَمِیۡعًا

सम्माननीय पाठको ! इन्सान की पत्नी उसकी सबसे बड़ी राज़दार होती है। वह उसके कामों की सबसे बड़ी गवाह होती है। हुज़ूर की क़बूलियत-ए-दुआ के बारे में हज़रत सय्यदा मेहर आपा साहिबा पत्नी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. की एक गवाही लिखी जाती है। आप फ़रमाती हैं:

"मुस्लेह मौऊद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो के सही अर्थ मुझे मालूम न थे। इसके सही अर्थ मुझे उस समय मुझे पता चले जब मैंने यह दृश्य अपनी आँखों से देखा और सुना। उनके कुछ उदाहरण लिखती हूँ:

विभाजन से पहले के समस्त हालात से हमें दो-चार होना पड़ा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि, हां वह इस्लाम पर जान क़ुर्बान करने वाला जो दुनिया के कोने-कोने में न केवल मुस्तफ़ा के धर्म की कमज़ोरी देख सकता था बल्कि प्रत्येक स्थान पर उसका झंडा फहराने की चिन्ता में प्रयत्नशील रहता था। उन्हीं परेशानी के दिनों की घटना है कि एक दिन अस्र के समय आप मेरे पास आए। आपकी आँखें लाल और सूजी हुई थीं। आवाज़ में आर्द्रता थी परन्तु उस पर पूरा ज़ब्त किए हुए थे। मुझे फ़रमाने लगे:- "सुबह ईद है मैं शायद तुम लोगों को ईदी देनी भूल जाऊं। काम की व्यस्तता ग़ैरमामूली है और मुझे मौजूदा हालात के बारे में बहुत घबराहट है यद्यपि ख़ुदा तआला ने अपने फ़ज़्ल से मेरी दुआ को सुना है और उसका यह वादा है कि اَیۡنَ مَا تَکُوۡنُوۡا یَاۡتِ بِکُمُ اللّٰہُ جَمِیۡعًا۔ मैं सज्दा की हालत में था जिस समय ख़ुदा की ओर से यह ख़ुशख़बरी मिली है। और मुझे इस पर पूरा ईमान है परन्तु फिर भी दुआ की सख़्त ज़रूरत है तुम भी दर्द से दुआएं करो। अल्लाह तआला तब्लीग़ के रास्ते हमेशा खुले रखे।

मैंने आपका यह इल्हाम और ख़ुशख़बरी नोट कर ली और उसके पूरा होने की प्रतीक्षा करने लगी। आज आप सब देख रहे हैं कि वह दुआ और उसका जवाब जिसमें ख़ुशख़बरी थी, किस ख़ूबी और किस सुन्दरता से पूरी हुई! किस तरह क़ादियान से निकलने के बाद, फिर यह सारे लोग एक झंडे तले जमा हो गए और

फिर किस वैभव से इस्लाम की तब्लीग़ सारे संसार में चारों ओर पहुंची और सच्चाई की तड़प तथा तलाश रखने वाले किस तरह अधिक से अधिक अहमदियत के इस दूसरे मर्कज़ में उत्साह और शौक से पहुंचे। फ़ल्हम्दु लिल्लाह अला ज़ालिक।"

(उद्धृत अल्फ़ज़ल फ़ज़ले उम्र नम्बर मार्च 1966 ई)

हज़रत मौलाना मुहम्मद इब्राहीम साहिब बक़ापुरी रज़ियल्लाहो अन्हो अपनी एक घटना वर्णन करते हुए लिखते हैं कि:

"1930 ई. में जब मेरी पत्नी घातक बुख़ार से सख़्त बीमार थी। टाइफायड का एक दौरा ख़त्म होकर 27-28 दिनों के बाद दूसरा दौरा शुरू हो जाता था। इसी तरह यह बुख़ार का सिलसिला लगभग पाँच माह तक चलता रहा। डाक्टरों ने भी जवाब दे दिया था कि इसके बचने की कोई उम्मीद नहीं। उन दिनों क़ादियान में क़ाज़ी महबूब आलम साहिब अमृतसरी मरहूम डाक्टर हश्मतुल्लाह साहिब के स्थान पर काम करते थे। उन्होंने सिन्ध में मुझे मेरी पत्नी की बीमारी के बारे में तार भेजा जिस पर छठे दिन मैं क़ादियान पहुंच गया। (हुज़ूर उन दिनों क़ादियान से बाहर थे।)और आते ही हुज़ूर की सेवा में दुआ के लिए तार दी कि अत्यन्त ख़तरनाक हालत है पत्नी गर्भ से है और बीमारी टायफायड की है। दफ़्तर प्राइवेट सैक्रेटरी से यह जवाब आया कि मैंने आपको कहा भी था कि आपके मकान में घातक बुख़ार के कीटाणु हैं। आपने तौबा और इस्तिग़फार न किया। मैंने घबराकर डाक्टर हश्मतुल्लाह साहिब को ख़त लिखा कि हज़रत अक़दस इस समय मेरी कोताहियों को दूर करने की न सोचें बल्कि पत्नी की सेहत के लिए दुआ करें। डाक्टर साहिब ने मेरा ख़त हुज़ूर की सेवा में प्रस्तुत कर दिया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि मौलवी साहिब बहुत घबराए हुए हैं आप सब दोस्त (जो सफ़र में मेरे साथ हैं) वुज़ू करें और उनकी पत्नी के लिए दुआ करें। अत: आपने समस्त दोस्तों के साथ दुआ की और फ़रमाया कि लिख दिया जाए कि मैंने उनकी पत्नी के लिए दुआ की है और वह बच जाएगी। इंशाअल्लाह। दूसरा ख़त हज़रत मौलवी शेर अली साहिब रज़ि. को लिखवा दिया कि वह प्रतिदिन मौलवी साहिब के घर जाकर उनकी पत्नी के बुख़ार का तापमान इत्यादि देखकर लिखा करें। अत: स्वस्थ होने तक इस पर पाबन्दी होती रही। यह था हुज़ूर अनवर

की दुआ का चमत्कारपूर्ण प्रभाव।"

(उद्धृत अल्फ़ज़्ल 15 अप्रैल 1966 ई)

आदरणीय मुहम्मद उमर बशीर अहमद साहिब भूतपूर्व जनरल सैक्रेटरी प्रान्तीय अंजुमन अहमदिया पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बंग्लादेश) हुज़ूर की क़बूलियत-ए-दुआ की घटना का वर्णन करते हुए लिखते हैं:

"1956 ई. की घटना है कि हुज़ूर रज़ियल्लाहो अन्हो कराची में तशरीफ़ रखते थे। उन दिनों मेरे माता-पिता भी ढाका से कराची आए हुए थे। हुज़ूर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरे पिता जी को गले में कई दिनों से बहुत कष्ट था। वहां के अहमदी और ग़ैर अहमदी प्रसिद्ध डाक्टरों को दिखाया गया। प्रत्येक ने इस कष्ट पर चिन्ता प्रकट की और कहा कि आप्रेशन के बिना कोई इलाज नहीं और आप्रेशन भी कम ही सफल होता है। इससे हमें बहुत चिन्ता हुई। हम हुज़ूर की सेवा में हाज़िर हुए और दुआ का निवेदन किया, हुज़ूर ने फ़रमाया अच्छा मैं दुआ करूँगा। माता जी ने उस समय हुज़ूर से कहा कि हुज़ूर इनको यहां कष्ट होता है। हुज़ूर ने जब नज़र उठाई और गले की ओर देखा तो माताजी कहने लगीं। हुज़ूर अभी दुआ फरमाएं हुज़ूर मुस्कुरा दिए और दुआ फ़रमाई। ख़ुदा गवाह है कि उस समय हुज़ूर ने जो दुआ की और अभी माता जी और पिता जी हुज़ूर की कोठी से बाहर ही निकले थे कि पिता जी कहने लगे कि मुझे आराम महसूस होता रहा है और जब गले पर हाथ लगाकर देखा तो न वहां गिलटी थी और न ही दर्द था। यह था ज़िन्दा चमत्कार हुज़ूर का अल्लाह तआला से सम्बन्ध का और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस भविष्यवाणी की सच्चाई कि मुस्लेह मौऊद अपने मसीही नफ़्स (ध्यान शक्ति अर्थात दुआ) से बीमारों को शिफ़ा देगा। " (उद्धृत अल्फ़ज़्ल पृष्ठ 5 19 अप्रैल 1966 ई)

सम्माननीय पाठको ! हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह रज़ि. ने अपनी तक़रीरों तथा ख़ुत्बों में बार बार फ़रमाया था कि दुआ के लिए लिखने वालों को याद रखना चाहिए कि ज़रूरी नहीं कि उनके ख़त ही मुझ तक पहुँचेंगे तो दुआ होगी बल्कि ख़त लिखते ही मेरी पूर्व की हुई दुआओं से ख़ुदा तआला उनको हिस्सा देगा और उन पर रहम करेगा और उन की ज़रूरतें पूरी करेगा।

हुज़ूर की इस ध्यान शक्ति और दुआ से सम्बन्धित कई घटनाएं वर्णन की जा सकती हैं। ईमान की वृद्धि के कुछ एक घटनाएं लिए वर्णन की जाती हैं:

आदरणीय मिर्ज़ा आज़म बेग साहिब हैदराबाद सिंध से लिखते हैं कि:

"विनीत का लड़का अज़ीज़ नासिर अहमद तीन साल का था नासिराबाद स्टेट में बहुत बुख़ार हो गया और उसकी हालत बहुत बिगड़ गई और वह माँ की गोद में बेहोश पड़ा था। हम दोनों दुखी और लाचार उसकी ज़िन्दगी की आशा छोड़ चुके थे। किसी प्रकार की चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध न थी, रात के दो बजे मैंने हुज़ूर की सेवा में विनम्रतापूर्वक दुआ की दरख़्वास्त लिखते हुए जब यह शब्द लिखे कि हुज़ूर दुआ करें कि नासिराबाद में मेरा नासिर, आबाद रहे उस समय मेरी आँखों से आँसू जारी थे तो अचानक बच्चा ने चीख़ मारी मानो उसकी बेहोशी टूट गई और ज़िन्दगी के लक्षण पैदा हो गए। दूसरा वाक्य विनीत ने ख़त में हुज़ूर की सेवा में यह लिखा कि अलहमदो लिल्लाह बच्चे के बच जाने की उम्मीद पैदा हो गई है। ख़त अभी डाक में भी न डाला गया था कि अल्लाह तआला ने बच्चे को शिफ़ा दे दी और कष्ट दूर हो गया।" (अल्फ़ज़ल 27 मई 1966 ई पृष्ठ 5)

आदरणीय मलिक फ़ज़ल करीम ख़ान साहिब महमूद नगर लाहौर लिखते हैं कि:

"1933 ई में मैं इस्लामिया हाई स्कूल गुजर ख़ां ज़िला रावलपिंडी में नौकर था मेरा बड़ा बेटा ज़फ़र अहमद ख़ां निमोनिया के कारण बीमार हो गया। अमृतसर से मेरी पत्नी ने तार के द्वारा उसकी नाज़ुक हालत की सूचना दी और लिखा कि यदि मुँह देखना हो तो शीघ्र अमृतसर पहुँचो। मैं रात के साढ़े बारह बजे अमृतसर पहुंचा। बच्चे की माता उसे गोद में लिए बैठी थी। बच्चे का सांस उखड़ा हुआ था मैंने हालात पूछी तो बताया कि डाक्टर उमरुद्दीन साहिब ग़ैर मुबाइअ ने निराशा का इज़हार किया है। इसलिए आपको तार दिया गया था। मैंने पोस्टकार्ड लिया और उस समय हज़रत अक़दस की सेवा में दुआ का निवेदन किया। और उसी समय जाकर पोस्टकार्ड लैटर बॉक्स में डाल आया। बहुत चिन्ता थी। रात नींद तो न आई परन्तु दुआ करता रहा। सुबह को बच्चे ने आँखें खोलीं और सेहतमन्द नज़र आया। अल्हमदो लिल्लाह

अला ज़ालिक। उसकी मां ने बताया कि जब से आपने हज़रत अक़्दस की सेवा में लिखा है। उसी समय से सांस ठीक होना शुरू हो गया था परन्तु आँख अब खोली है अत्यधिक कमज़ोरी थी। दो तीन दिन में बच्चा तन्दुरुस्त हो गया। मैं इस तहरीर के द्वारा गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला हुज़ूर की दुआ को ख़त पहुंचने से पहले ही आपकी ओर से क़बूल कर लिया करता था।

सम्भवत: 1922 ई. की बात है कि मैं शहर मांडे बर्मा में व्यापार के सिलसिले में रहता था। मेरे चाचा हाजी शम्सुद्दीन साहिब आफ़ चकवाल का कारोबार भी मांडे में ही था। हमारी रिहायश एक ही मकान में थी मेरी उम्र उस समय शायद 16 साल होगी। मैं उस समय अहमदी न था परन्तु अहमदियत की ओर रुझान था। संयोग से चाचा जी पेचिश की बीमारी से बीमार पड़ गए। बीमारी बहुत लम्बी हो गई। किसी इलाज से बीमारी में लाभ न हुआ और हालत दिन प्रति दिन बिगड़ती चली गई। चाचा जी बहुत कमज़ोर और निढाल होकर बिस्तर से लग गए। एक दिन मैं दोपहर के खाने के लिए मकान पर गया तो देखा कि चाचा जी लगातार रो रहे हैं। मुझे आश्चर्य हुआ कि इतना हिम्मत वाला और हौसलामंद इन्सान क्यों रो रहा है। मैंने कारण पूछा तो उन्होंने सिरहाना से डाक्टर ग़ुलाम जीलानी की किताब मडिया मेडिका उर्दू निकाली, मुझे दिखाई और पेचिश का अध्याय पढ़ कर मुझे सुनाया उसमें लिखा था कि जब पेचिश इस स्तर पर पहुंच जाए और अमुक शक्ल धारण कर जाए तो फिर इस बीमारी से बचना मुश्किल है। आपने कहा कि यह सब लक्षण मुझ में मौजूद हैं और यह मेरा आख़िरी समय है। मैं मौत से डरता नहीं परन्तु इस ख़्याल से अपने आप रोना आ गया कि परदेस में इन छोटे बच्चों का क्या बनेगा। चाचा जी की यह हालत देखकर मेरे दिल पर बहुत गहरा असर पड़ा और मैं घबराया हुआ टैलीग्राफ़ ऑफ़िस पहुंचा और हज़रत अक़्दस ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. की सेवा में इस विषय का तार भेज दिया कि हुज़ूर के मुख़्लिस ख़ादिम ख़्वाजा शम्सुद्दीन साहिब मौत और ज़िन्दगी की हालत में हैं। उनकी सेहतयाबी और लम्बी उम्र के लिए दुआ करें। उस दिन चाचा जी की हालत बहुत ख़तरनाक थी और देर रात तक हम लोग उनके सिरहाने बैठे रहे।

काफी रात गुज़रने के बाद उन्हें नींद आ गई और हम लोग भी आराम करने के लिए बिस्तरों पर सो गए। ठीक सुबह नमाज़ फ़ज्र के समय उन्होंने मुझे आवाज़ दी और कहा कि आओ तुम्हें एक अजीब बात बताऊं। वह यह कि कल दिन-भर मेरी हालत बहुत भयावह रही और रात को सोते समय तक मेरा वही हाल था कोई नया इलाज नहीं किया और कोई दवाई भी नहीं ली। अब जब मैं जागा तो मुझे फ़िक्र हुई कि फिर पेचिश की बीमारी शुरू हो जाएगी। और मैंने डरते डरते अपना जायज़ा लिया। क्योंकि मैं तयम्मुम करके अपना जायज़ा लेना चाहता था। मेरे आश्चर्य और ख़ुशी की सीमा न रही जब मैंने यह महसूस किया कि मैं अल्लाह तआला के फज़्ल से बिल्कुल ठीक हो चुका हूँ। मैंने चाचा जी को उस समय बताया कि मैंने आपका इलाज कल दोपहर को कर दिया था यह उसका परिणाम है। मैंने कल हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि.की सेवा में दुआ के लिए तार दे दिया था। अल्लाह तआला ने हुज़ूर की दुआ के नतीजा में आपको स्वस्थ कर दिया है।

(उद्धृत अल्फ़ज़ल पृष्ठ 3, 18 अप्रैल 1968 ई)

सय्यद एजाज़ अहमद शाह साहिब लिखते हैं:

1951 ई की घटना है। मैं रब्वा में था। मुझे बिरादर अज़ीज़ सय्यद सज्जाद अहमद साहिब की ओर से जड़ांवाला से तार मिला। पिता जी की हालत नाज़ुक है शीघ्र पहुँचो। नमाज़ मग़रिब के समय मुझे तार मिला। मग़रिब की नमाज़ हुज़ूर के पीछे घबराहट की हालत में अदा की। जब हुज़ूर नमाज़ पढ़ कर वापस तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैंने निवेदन किया कि जड़ांवाला से छोटे भाई का तार मिला है कि अब्बा जी की हालत बहुत नाज़ुक है। कल सुबह जाऊंगा हुज़ूर दुआ करें। हुज़ूर ने फ़रमाया अच्छा दुआ करूँगा। हुज़ूर के इन चार शब्दों में वह सुकून था कि वर्णन नहीं कर सकता। अगली सुबह को जड़ांवाला पहुंचा। आदरणीय पिता जी चारपाई पर पहले की तरह पान चबा रहे थे। भाई से शिकवा किया कि तुमने अकारण तार देकर परेशान किया। तो उसने कहा कि कल मग़रिब के बाद से अब्बा जी की तबीयत चमत्कारपूर्ण तौर पर अच्छी होनी शुरू हुई और ख़तरा से बाहर हुई वर्ना मग़रिब से पहले सारे इलाज बेकार प्रमाणित होकर हालत बहुत ख़तरे वाली और बहुत चिन्ताजनक थी।

(उद्धृत अल्फ़ज़ल 17 अप्रैल 1966 ई पृष्ठ 4)

सम्माननीय पाठको ! ख़िलाफ़त की सच्चाई की एक निशानी क़बूलियत-ए-दुआ है क्योंकि इसके द्वारा जहां ख़ुदा तआला की हस्ती का ज़िन्दा प्रमाण मिलता है वहां ख़लीफ़ा के ख़ुदा द्वारा चुने होने की भी गवाहियाँ मिलती हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. अपनी मशहूर पुस्तक मन्सब-ए-ख़िलाफ़त में एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि

"अल्लाह तआला जब किसी को ख़िलाफ़त के पद पर नियुक्त करता है तो उसकी दुआओं की क़बूलियत बढ़ा देता है क्योंकि यदि उसकी दुआ ही क़बूल न हो तो फिर उसके अपने चयन का अपमान होता है।"

(मन्सब ख़िलाफ़त पृष्ठ 65)

ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की क़बूलियत-ए-दुआ की घटनाएं तो बेशुमार हैं जिन का पूर्णतः वर्णन करना सामर्थ्य से बाहर है। नमूने के तौर पर कुछ वर्णन की जा चुकी हैं। क़बूलियत-ए-दुआ के इसी पहलू से अर्थात बीमारी से स्वस्थ होने के कुछ अन्य उदाहरण प्रस्तुत हैं:

1. एक दोस्त फ़ैज़ आलम साहिब ने ढाका से लिखा:।

"मेरी पत्नी पाँच-छः साल से स्त्री सम्बन्धित रोग से पाड़ित थी डाक्टरों और बड़े बड़े हकीमों से इलाज करवाते रहे। कलकत्ता और बंगाल के दूसरे शहरों के डाक्टरों से परामर्श लिए परन्तु पत्नी की बीमारी बढ़ती गई। अवस्था यह होती थी कि जब उसे दौरा पड़ता तो वह दर्द से व्याकुल होकर उठ-उठ कर छतों पर हाथ डालती..... एक बार हमने सोचा कि अब कोई दवा नहीं करेंगे बल्कि सिर्फ़ हुज़ूर (ख़लीफ़ा सानी) की सेवा में दुआ का ख़त लिखेंगे। उसके कुछ दिन बाद मैं डयूटी से आया तो फूफी ने बताया कि रो'या में देखा कि हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ि. अस्सलामो अलैकुम कहते हुए मकान के अंदर दाख़िल हुए हैं और मेरा मुँह खोलकर कुछ फूँका और फिर छोड़ दिया। बस यह ख़्वाब था कि उसके तीन चार दिन बाद बीमारी का दौरा जो था फिर न हुआ, और आज तक नहीं हुआ। बल्कि 1936 ई में हमारे हाँ बेटे ने जन्म लिया।"

(अल्फ़ज़ल 10 दिसम्बर 1937 उद्धृत दुआए मुस्तजाब पृष्ठ -33
लेखक मौलाना अब्दुल बासित शाहिद)

2. एक अब्दुल हफ़ीज़ नामक नौजवान क़ादियान पढ़ने के लिए आया। वह अपने ख़ानदान में अकेला अहमदी था। उनके ग़ैर अहमदी बड़े भाई ने लिखा कि मैं एक बहुत मुसीबत में पड़ा हूँ, तुम अपने हज़रत साहिब से दुआ कराओ। यदि मुझे मुक्ति हो गई तो मैं अहमदी हो जाऊंगा। उन्होंने हुज़ूर से अपने भाई के लिए दुआ का निवेदन किया। हुज़ूर ने तसल्ली दिलाई कुछ दिनों बाद उनके भाई ने लिखा:

"मैं ख़ुदा के फ़ज़्ल और हज़रत साहिब की दुआ से बच गया हूँ और फिर मैंने उसी समय से अहमदियत क़ुबूल कर ली है।

(अल्फ़ज़ल 10 दिसम्बर 1931 ई क़बूलियत दुआ का ताज़ा निशान)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. और धार्मिक ग़ैरत

सम्माननीय पाठको! आयत इस्तिख़लाफ़ में अल्लाह तआला ने सच्चे ख़लीफ़ाओं की एक निशानी यह वर्णन की يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا अर्थात वह मेरी इबादत करेंगे और मेरे साथ किसी को साझी न बनाऐंगे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. की धर्म की ग़ैरत की एक घटना प्रस्तुत है:

"1921-22 ई की घटना है कि हुज़ूर रज़ियल्लाहो अन्हो शिमला गए थे। हुज़ूर जब भी शिमला तशरीफ़ ले जाते तो टहलने के लिए अपने ख़ुद्दाम के साथ जाते। एक बार हुज़ूर सैर के लिए जा रहे थे हुज़ूर के साथ कई ख़ुद्दाम भी थे। मेरे पिता जी हुज़ूर के साथ थे। पिता जी कहते हैं कि रास्ता में ईसाइयों का बड़ा गिर्जा भी आया हुज़ूर के एक साथी ने उस गिर्जा की ओर देखा और कहा कि इतना साफ़ शहर है और यह गिर्जा अंग्रेज़ों का कितना ख़राब है। यदि अंग्रेज़ इसकी उचित मुरम्मत कर लें तो कितना सुन्दर लगेगा पिता जी कहते हैं कि इन शब्दों का सुनना था कि हुज़ूर का रंग लाल हो गया और मुड़ कर कहने लगे कि मैं तो चाहता हूँ कि प्रत्येक स्थान पर एक ख़ुदा का नाम फैले और मस्जिदें बनें और तुम यह कहते हो कि यह गिर्जा नए सिरे से बनाया जाए। " (अल्फ़ज़ल 19 अप्रैल 1966 ई पृष्ठ 5)

(उद्धृत सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. की सीरत मुक़द्दसा लेखक आदरणीय मुहम्मद उमर अहमद साहिब)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि के बारे में एक सुख़बर

सम्माननीय पाठको ! ख़ुदा तआला अपने बंदों में से जिस किसी को ख़िलाफ़त के पद पर सुशोभित करता है उसके द्वारा धर्म का प्रभुत्व और शरीयत की दृढ़ता होती है अत: अल्लाह तआला अपने नेक बंदों को समय से पहले धर्म के प्रभुत्व के बारे में ख़बरें देता है ताकि लोगों के दिल में समसायिक ख़लीफ़ा के लिए प्रेम और प्रतिष्ठा स्थापित हो जाए। इस बारे में एक रिवायत मुहम्मद इस्माईल साहिब पानीपती की है वह लिखते हैं कि :

"यह उस समय का वर्णन है जब कि मैं अभी स्थायी तौर पर क़ादियान नहीं आया था और पानीपत में ही रहता था। मेरे मकान के दो हिस्से थे ऊपर के मंज़िल में मेरी लाइब्रेरी थी और नीचे की मंज़िल में मैं और मेरे घर वाले रहते थे।

एक बार मैंने ख़्वाब में देखा कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी दस बारह लोगों के साथ अचानक मेरी लाइब्रेरी में बहुत सुबह-सुबह पधारे हैं और मुझ से कहने लगे कि मुहम्मद इस्माईल सुबह की नमाज़ का प्रबन्ध करो। मैंने हुज़ूर के आदेश के अनुपालन में शीघ्र ही जितनी चादरें मिल सकीं सब बिछा दीं और हुज़ूर ने समस्त ख़ुद्दाम के साथ हमें सुबह की नमाज़ पढ़ाई। सलाम फेरते ही मैं बड़ी तेज़ी से नीचे की मंज़िल में आया और अपनी पत्नी शहरबानो से कहा कि हज़रत साहिब पहली बार पधारे हैं उन की सेवा में कोई तोहफ़ा पेश करना चाहिए। शीघ्र बताओ क्या प्रस्तुत करूँ? इस समय तो बाज़ार भी खुले हुए नहीं हैं कि वहीं से कोई तोहफ़ा ले आता और हज़रत साहिब की सेवा में प्रस्तुत कर देता।

मेरी पत्नी ने कहा फ़िलहाल तुम यह काम करो कि तारीख़-ए-अंदलुस (अर्थात स्पेन) हुज़ूर की में सेवा में प्रस्तुत कर दो। इस समय और तो कोई चीज़ है नहीं।

मुझे ख़्वाब में ही ख़्याल आया कि तारीख़-ए-अंदलुस के दो भाग हैं प्रथम और द्वितीय और दोनों भाग संदूक़ में रखे हुए हैं। इस पर मैंने अपनी पत्नी से कहा कि अच्छा तो फिर शीघ्र दोनों भाग निकाल दो। शीघ्र करो कहीं ऐसा न हो कि हज़रत साहिब चले जाएं और मैं हुज़ूर की सेवा में तोहफ़ा प्रस्तुत न कर सकूं। आज पहली

बार तो हज़रत साहिब हमारे यहाँ पधारे हैं।

मेरी पत्नी ने संदूक़ में तारीख़ अन्दलुस तलाश की परन्तु केवल प्रथम भाग ही मिला दूसरा भाग न मिल सका। मेरी पत्नी ने वापस आकर प्रथम भाग मेरे हाथ पर रख दिया और कहा दूसरा भाग नहीं मिला।

मैंने कहा चलो पहला भाग ही सही कुछ तो तोहफ़ा हुज़ूर की सेवा में प्रस्तुत करना चाहिए। यह कह कर मैं शीघ्र से ऊपर की मंज़िल में गया ताकि तारीख़-ए-अन्दलुस का पहला भाग हुज़ूर की सेवा में तोहफा के रूप में प्रस्तुत करूँ। इसके तुरन्त बाद मेरी आँख खुल गई।

मैंने यह ख़्वाब लिखकर सम्माननीय उस्ताद हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो को भेजा और उनसे पूछा कि इस ख़्वाब की तअबीर क्या है?

हज़रत मीर साहिब रज़ि.ने मुझे जवाब दिया कि तुम्हारे इस ख़्वाब की तअबीर यह है कि तारीख़ अन्दलुस के पहले भाग में मुसलमानों के विजय और प्रभुत्व, वैभव और शक्ति का वर्णन है और दूसरे भाग में सल्तनत की बर्बादी मुसलमानों की हलाकत और तबाही की दास्तान है। अर्थात प्रथम विजयों का युग है और दूसरा बद-क़िस्मती और बुरी अवस्था का युग है। इसलिए इस दृष्टि से इस ख़्वाब की तअबीर यह हुई कि हमारा ख़लीफ़ा सिलसिला अहमदिया की उन्नति का युग तो ज़रूर देखेगा (जो उसे ख़्वाब में वर्णन कर दिया गया है) परन्तु उसके युग में सिलसिला का पतन और अवनति हरगिज़ नहीं होगी बल्कि सिलसिला उसके ख़िलाफ़त के युग में बराबर उन्नति करता चला जाएगा।" (उद्धृत अल्फ़ज़्ल 8 मार्च 1966 पृष्ठ 4)

सम्माननीय पाठको यह तअबीर कितनी ठीक थी और ठीक इस तअबीर के अनुसार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. का युग मुबारक एवं उन्नति का युग है। आपके मुबारक युग में अहमदिया सिलसिला ने प्रत्येक दृष्टि से उन्नति प्राप्त की। यहां तक कि हुज़ूर की बीमारी के दिनों में भी सिलसिला की उन्नति दिन दुगनी रात चौगुनी होती रही।

मर्कज़-ए-अहमदियत रब्वा का निर्माण सय्यदना मुस्लेह मौऊद रज़ि. अल्लाह का एक महान कारनामा

मर्कज़-ए-अहमदियत रब्वा दारुल हिज़रत का निर्माण सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. की अपार प्रबंधकीय योग्यताओं का रोशन गवाह और क़यामत तक आने वाली नस्लों के लिए आपकी बुलन्द हस्ती का सबूत है। दुनिया में असंख्य शहर तथा देश आबाद हैं और प्रतिदिन उनका निर्माण होता रहता है परन्तु विशेष रूप से धार्मिक और रूहानी उद्देश्यों के लिए एक सुनसान जंगल में घोर कष्टदायक हालत का मुक़ाबला करते हुए एक शहर का निर्माण करना दुनिया के इतिहास में अदभुत घटना है।

रब्वा का निर्माण कोई संयोग की घटना नहीं बल्कि यह अपने अंदर एक प्रमुख पृष्ठभूमि लिए हुए है और ख़ुदा तआला की छुपी हुई तक़दीर यह चाहती थी कि क़ादियान से हिजरत के बाद जमाअत एक नए केन्द्र में अपने काम को पुन: शुरू करे और इस काम का आरम्भ और अन्त सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. के वजूद से ही जुड़ा था। क्योंकि इस प्रकार के रूहानी केन्द्र का निर्माण सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हुस्न और उपकार के द्योतक के द्वारा ही मुक़द्दर थी। अत: हुज़ूर ने 1944 ई में दावा मुस्लेह मौऊद फ़रमाया और इसकी हिक्मत अपने एक पत्र में इस प्रकार वर्णन फ़रमाई:

"क़ाइद का निर्धारण बताता है कि दुश्मन का कोई नया हमला इस्लाम के क़िला पर होने वाला है या इस्लामी लश्कर को कुफ्र के क़िले पर हमला करने का इशारा होने वाला है। अल्लाह तआला हमारी बाज़ुओं को शक्ति और हमारे पैरों को मज़बूती और हमारे दिलों को हौसला प्रदान करे।"

(उद्धृत अल्फ़ज़ल 20 फरवरी 1952 ई)

अत: हुज़ूर के इस ऐलान के थोड़े ही समय के बाद हालात का रुख बड़ी तेज़ी से बदलने लगा। इन्क़िलाबों की हवाएं चलने लगीं। और नई आबादी प्रणाली की ज़ंजीरें ढीली होने लगीं और साम्राज्यवाद की पकड़ नर्म पड़ने लगी और देखते ही देखते

एशिया और अफ़्रीक़ा में सदियों से ग़ुलाम क़ौमें आज़ाद होने लगीं और उपमहाद्वीप में भारत तथा पाकिस्तान बना और संसार के मुसलमानों की उन्नति के युग का आरम्भ हुआ परन्तु दुश्मन ने इस्लाम के क़िला पर हमला करके उसे ध्वस्त करने की कोशिश की और क़ादियान और उसके इर्दगिर्द के मुसलमानों को समाप्त करने की मुहिम शुरू की परन्तु ख़ुदा तआला ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. के मार्गदर्शन में इस्लाम के क़िला को बचा लिया और उसके निवासियों को एक नए क़िला में सुरक्षित कर दिया। अत: हिजरत से पहले ख़ुदा तआला की ओर से आपके नेतृत्व की घोषणा करना बड़ा ही रहस्ययुक्त था और जमाअत के केन्द्र पर भविष्य में जो हमला होने वाला था और इस कारण नए केन्द्र के निर्माण के जो चरण सम्मुख थे उन समस्त महान कामों की पूर्णता के लिए ख़ुदा तआला की ओर से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि को ही क़ाइद के रूप में चुना गया था। अत: आपने इस महान ज़िम्मेदारी को बड़ी ख़ूबी से निभाया और आपने हिजरत के बाद अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में इस कार्य को शुरू किया और जिस समय आप इस दुनिया से विदा हुए तो वह केन्द्र आरम्भिक आवश्यक मार्ग तय करके एक नियमित शहर का रूप धारण कर चुका था। जो न केवल आज एक धार्मिक केन्द्र और जमाअत की तरबियत स्थली है बल्कि सांसारिक ज्ञान और कलाओं का भी घर है। अत: स्वयं हुज़ूर ने हिजरत के बाद हालात और नए केन्द्र के निर्णाम के उद्देश्यों पर रब्वा में आयोजित होने वाले 27 दिसम्बर 1949 ई के जलसा सालाना के अवसर पर प्रकाश डालते हुए कहा:

"एक दिन आया कि दुनिया का सम्मान चाहने वालों ने उस अमन वाली बस्ती (क़ादियान-अभिप्राय) पर हमला किया और ख़ुदा तआला की याद में जीवन व्यतीत करने वाले और सच्चाई को फैलाने वाले निर्बल बंदे क़ादियान छोड़ने पर विवश हो गए और वहां से निकल कर उन्होंने चारों ओर आशा से देखा। वर्तमान शहरों, आबाद कस्बों और उपजाऊ ज़मीन ने उन्हें पनाह देने से इन्कार कर दिया। उनके साथ भागने वाले दूसरे चारों ओर फैल गए। परन्तु यह हैरान थे कि हम कहाँ जाएं। क्योंकि एक उद्देश्य था और उसके लिए इकट्ठा रहना उनके लिए आवश्यक था। वे हैरान थे कि

चिनाब पार की पहाड़ियों ने उन्हें दावत दी। बहते हुए पानी के पास एक ऊंचे टीले की धरती ने कहा हे ख़ुदा की राह में भागने वालो! इधर आओ मेरी छातियों में दूध नहीं है। मुझे कभी भी दुनिया के नौजवानों ने अपने लिए स्वीकार नहीं किया। परन्तु मैं अपनी ख़ुश्क छातियां और अपना झुलसा हुआ सीना तुम्हारे लिए प्रस्तुत करती हूँ अत: उन भागने वालों ने ख़ुदा का शुक्र किया और उस स्थान पर डेरा डाल दिया.... और ख़ुदा तआला ने भी अर्श से इस निश्छल प्रेम को देखकर कहा हे बंजर तथा चटियल ज़मीन तू बरकतों वाली हो जा तूने मेरे लिए भागने वालों को पनाह दी। फिर वह बरकतों वाली हो गई।" (उद्धृत अल्फ़ज़ल 26 दिसम्बर 1961 ई)

सम्माननीय पाठको ! रब्वा की इस धरती का चुनाव ख़ुदाई तक़दीर के अनुसार हुआ और सदैव से यह बात मुक़द्दर थी कि इस धरती पर ख़ुदा की राह में भागने वाले पनाह लें और उनके वजूद से यह धरती नूर वाली बन जाए। अत: हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. की एक रो'या के आधार पर रब्वा की ज़मीन का चयन हुआ। आप फ़रमाते हैं कि :

"यह धरती हम ने पहाड़ी टीलों के मध्य इसलिए ख़रीदी है कि मेरी रो'या इस धरती के बारे में थी। यह रो'या दिसम्बर 1941 ई में देखी थी जो 21 दिसम्बर 1941 ई के अल्फ़ज़ल में प्रकाशित हो चुकी है। अब तक दस हज़ार व्यक्ति यह रो'या पढ़ चुके हैं और गर्वनमेन्ट के रिकार्ड में भी यह रो'या मौजूद है। मैंने इस रो'या में देखा कि क़ादियान पर हमला हुआ है और प्रत्येक तरह के हथियार प्रयोग किए जा रहे हैं परन्तु मुक़ाबला के बाद दुश्मन विजित हो गया है और हमें वह स्थान छोड़ना पड़ा। बाहर निकल कर हम हैरान हैं कि किस स्थान पर जाएं और कहाँ जाकर अपनी सुरक्षा का सामान करें। इतने में एक व्यक्ति आया और उसने कहा कि मैं एक स्थान बताता हूँ। आप पहाड़ों पर चलें। वहां इटली के एक पादरी ने गिर्जा बनाया हुआ है और साथ उसने कुछ इमारतें भी बनाई हुई हैं जिन्हें वे किराए पर मुसाफ़िरों को देता है। वह स्थान सबसे बेहतर रहेगा। मैं अभी दुविधा में ही था कि इस स्थान पर निवास की जाए या न की जाए कि एक व्यक्ति ने कहा आपको यहां कोई कष्ट नहीं होगा

क्योंकि यहां मस्जिद भी है। उसने समझा कि कहीं मैं रिहायश से इसलिए इन्कार न कर दूं कि यहां मस्जिद नहीं है। अत: मैंने कहा अच्छा मुझे मस्जिद दिखाओ उसने मुझे मस्जिद दिखाई जो बहुत सुन्दर बनी हुई थी। चटाइयां और दरियां इत्यादि भी बिछी हुई थीं और इमाम के स्थान पर एक साफ़ क़ालीन मुसल्ला बिछा हुआ था। इस पर मैं ख़ुश हुआ और मैंने कहा अल्लाह तआला ने हमें मस्जिद भी दे दी है। (मैं उस समय समझता हूँ कि हम तंज़ीम के लिए आए हैं और तंज़ीम के बाद दुश्मन को फिर पराजित कर देंगे।) अब हम इस स्थान पर रहेंगे। इसके बाद मैंने देखा कि कुछ लोग बाहर से आए हैं। वे कहते हैं कि बड़ी तबाही है और जालंधर का विशेष रूप से नाम लिया कि वहां भी बड़ी तबाही हुई है। फिर उनके कहने पर कहा कि हम नीले गुम्बद में दाख़िल होने लगे। परन्तु हमें वहां भी दाख़िल होने नहीं दिया गया। उस समय तक तो हम केवल लाहौर को ही नीला गुंबद समझते थे। परन्तु बाद में ध्यान देने पर पाता चला कि नीले गुम्बद से अभिप्राय आकाश था और अभिप्राय यह था कि खुले आकाश के नीचे भी मुसलमानों को अमन नहीं मिलेगा। अत: लोग जब अपने मकानों और शहरों से निकल कर रिफ्यूजी कैम्पों में जमा होते थे वहां भी उपद्रवी उन पर हमला कर देते थे और उन में से बहुत से लोगों को मार डालते थे। इस रो'या के अनुसार यह स्थान केन्द्र के लिए चुना गया है। जब मैं क़ादियान से आया तो उस समय संयोग से यहां चौधरी अज़ीज़ अहमद साहिब अहमदी सब जज लगे हुए थे। मैं शेख़ूपूरा के बारे में परामर्श कर रहा था कि चौधरी अज़ीज़ अहमद साहिब मेरे पास आए और उन्होंने कहा कि मैंने अख़बार में आपकी एक इस तरह की ख़्वाब पढ़ी है। मैं समझता हूँ कि चिन्योट ज़िला झंग के निकट दरिया चिनाब के पार एक ऐसी ज़मीन का टुकड़ा है जो इस ख़्वाब से सम्बन्धित मालूम होता है। अत: मैं यहां आया और मैंने कहा ठीक है। ख़्वाब में मैंने जो स्थान देखा था उसके इर्द-गिर्द भी इसी प्रकार के पहाड़ी टीले थे। केवल एक अन्तर है और वह यह कि मैंने उस मैदान में घास देखी था। परन्तु यह चटियल मैदान में है अब बारिशों के बाद कुछ-कुछ हरियाली निकली है। सम्भव है हमारे आने के बाद अल्लाह तआला यहां घास भी पैदा कर दे और इस

क्षेत्र को हरा- भरा बना दे।"

(हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. का रब्वा के उद्घाटन का ख़िताब। अल्फ़ज़ल जलसा सालाना नम्बर दिसम्बर 1964 ई)

सम्माननीय पाठको ! मुस्लेह मौऊद की भविष्यवाणी में इस मौऊद के आने को और इसके अवतरण को बहुत मुबारक क़रार दिया गया है इसलिए ऐसे बरकतों वाले वजूद के हाथों इस केन्द्र का निर्माण और फिर इस में लगभग 17 साल तक निवास और फिर इसी धरती में हमेशा के लिए दफ्न होना। नि:सन्देह इस धरती और इस शहर के बरकतों वाला होने का स्पष्ट प्रमाण है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. ने रब्वा के नींव का उद्देश्य वर्णन करते हुए फ़रमाया कि :

"रब्वा की नींव का उद्देश्य यह था कि यहां अधिक से अधिक नेकी धारण करने वालों को इस उद्देश्य से बसना चाहिए कि वे यहां रह कर धर्म के प्रचार में दूसरों से अधिक हिस्सा लेंगे। हमने इस स्थान को इसलिए बनाया है ताकि धर्म के प्रचार में हिस्सा लेने वाले लोग यहां जमा हों और धर्म का प्रसार करें और उसके लिए क़ुर्बानी दें। अत: तुम यहां रहकर नेक नमूना दिखाओ और अपने सुधार की कोशिश करो। तुम ख़ुदा तआला से सम्बन्ध जोड़ो। यदि तुम उसकी प्रसन्नता को प्राप्त कर लो तो सारी मुसीबतें और परेशानियां दूर हो जाएंगी और सुविधा के सामान पैदा हो जाएँगे।

हमारे लिए कठिनाइयां भी हैं हमारे रास्ते में रोकें भी हैं हमारे सामने दुश्मनियां और शत्रुताएं भी हैं परन्तु होता वही है जो ख़ुदा चाहता है और मानवीय बुद्धि और मानवीय योजना अन्त में बेकार होकर रह जाती है। हम समझते हैं और हम विश्वास रखते हैं बल्कि हम अपनी रूहानी आँखों से वह चीज़ देख रहे हैं जो दुनिया को नज़र नहीं आती। हम विरोध के इस उतार चढ़ाव को भी जानते हैं जो हमारे सामने आने वाला है। हम उन क़त्लों और लूटों को भी देख रहे हैं जो हमारे सम्मुख आने वाले हैं। हम उन हिजरतों को भी देख रहे हैं जो हमारी जमाअत को एक दिन आने वाली हैं। हम उन भौतिक,आर्थिक और राजनीतिक मुश्किलों को भी देख रहे हैं जो हमारे सामने प्रकट होने वाली हैं।

परन्तु इन सब धुँधलकों में से पार होती हुई और उन सब अन्धेरों को चीरती हुए

हमारी दृष्टि उस ऊंचे और बुलन्द झंडे को भी अत्यन्त शान तथा वैभव के साथ लहराता हुआ देख रही है जिसके नीचे एक दिन सारी दुनिया शरण लेने पर विवश होगी। यह झंडा ख़ुदा का होगा। यह झंडा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का होगा। यह झण्डा अहमदियत का होगा अत: यह इस्लाम के प्रचार के लिए और अहमदियत की उन्नति के लिए रूहानियत के विजय के लिए ख़ुदा तआला के नाम को ऊंचा करने के लिए मुहम्मद रसूलुल्लाह का नाम ऊंचा करने के लिए और इस्लाम को अन्य समस्त धर्मों पर विजय करने के लिए बहुत ऊंचा और मुख्य स्थान प्रमाणित हो। ख़ुदा तआला हमें सामर्थ्य प्रदान करे कि हम इब्राहीम अलैहिस्सालम की इच्छा के अनुसार, मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इच्छा के अनुसार और ख़ुदा की इच्छा पूरा करने वाले हों। सांसारिक परेशानियों के समय कई अपने भी यह कह उठेंगे कि हम ने क्या समझा था और क्या हो गया। परन्तु यह सब चीज़ें मिटती चली जाएँगी, आकाश का नूर प्रकट होता चला जाएगा और ज़मीन का अन्धेरा दूर होता चला जाएगा और अन्तत: वही होगा जो ख़ुदा ने चाहा वह नहीं होगा जो दुनिया ने चाहा।

इस बंजर वादी को हमने इस इरादा और नीयत के साथ चुना है कि जब तक यह अस्थायी स्थान हमारे पास रहेगा हम इस्लाम का झंडा इस स्थान पर बुलन्द रखेंगे और मुहम्मद रसूलुल्लाह की हुकूमत दुनिया में स्थापित करने की कोशिश करेंगे और जब ख़ुदा तआला हमारा क़ादियान हमें वापस दे देगा यह केन्द्र केवल इस इलाक़ा के लोगों के लिए रह जाएगा। यह स्थान उजड़ेगा नहीं क्योंकि जहां ख़ुदा तआला का नाम एक बार ले लिया जाए वह स्थान बर्बाद नहीं हुआ करता। फिर यह इस इलाक़ा के लोगों के लिए केन्द्र बन जाएगा और सारी दुनिया का केन्द्र पुन: क़ादियान बन जाएगा जो वास्तविक और स्थायी केन्द्र है। अत: हम यहां इसलिए आए हैं कि ख़ुदा तआला का पद ऊंचा करें, हम इसलिए नहीं आए कि अपने पद को ऊंचा करें। हमारा नाम शहरों में अधिक ऊंचा हो सकता था और यदि हम अपने आपको बुलन्द रखने की इच्छा रखते तो इसके लिए बड़े बड़े शहर अधिक उचित थे। बल्कि स्वयं उन

शहरों के रहने वालों ने भी चाहा था कि वहीं जमाअत के लिए ज़मीनें ख़रीद ली जाएं। अत: इसमें कोई सन्देह नहीं हमें इज़्ज़त प्राप्त नहीं करना बल्कि हमारा काम यह है कि हम उस स्थान की तलाश करें जहां इस्लाम की इज़्ज़त का बीज बो सकें और हमने इसी नीयत और इसी इरादा से बंजर वादी को चुना है। अत: देख लो यहां कोई फ़सलें नहीं, कहीं सब्ज़ी का निशान नहीं। मानो चुन कर हम ने वह स्थान लिया है जो निश्चित रूप से आबादी और खेती के अयोग्य समझा जाता था ताकि कोई व्यक्ति यह न कह दे कि पाकिस्तान ने अहमदियों पर उपकार किया है परन्तु कहने वालों ने फिर भी कह दिया कि करोड़ों करोड़ की जायदाद पाकिस्तान ने अहमदियों को दे दी है।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 21 मई 1954 ई तारीख़-ए-अहमदियत भाग 13, पृष्ठ 172)

रब्वा एक पवित्र स्थान है

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. ने ख़ुत्बा जुम्अ: दिनांक 26 दिसम्बर 1952 ई. को रब्वा में जमाअत से ख़िताब करते हुए फ़रमाया:

"यह एक प्रमाणिक बात है और समस्त औलिया इस बात पर सहमत हैं कि मानवीय बरकतें परिवर्तित होती हैं परन्तु स्थानों की बरकतें नहीं बदलतीं। वे हमेशा स्थापित रहती हैं। इसके कारण यह हैं कि इन्सान की अवस्थाएं बदलती रहती हैं परन्तु स्थान के हालात नहीं बदलते। स्थान गुनाह नहीं करता। हाँ यह ज़रूर होता है कि एक लम्बा समय गुज़र जाने के बाद लोग उसके अंदर ख़राबियां करने लग जाते हैं। परन्तु वे ख़राबियां लोगों की ओर सम्बन्धित होंगी उस स्थान की ओर सम्बन्धित नहीं होंगी क्योंकि स्थान जुर्म नहीं करते। अत: ख़ुदा तआला ने रसूले करीम और दूसरे नबियों के कारण कुछ स्थानों को पवित्र बना दिया है। जैसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बैयतुल्लाह बनाया और इस कारण मक्का पवित्र क़रार पाया। इसके बाद रसूले करीम वहां पैदा हुए जिस कारण मक्का की बरकतों में और भी वृद्धि हो गई, इसी तरह अन्य स्थान हैं जो पवित्र हैं। यह स्थान भी अपने दर्जा की दृष्टि से पवित्र है यहां वे लोग बैठे हैं जो यह इरादा ले कर आए हैं कि वे धर्म की सेवा करेंगे। यहां धार्मिक शिक्षा की प्राप्ति के लिए बहुत दूर-दूर के देशों से लोग आते हैं। यदि कोई यहां आएगा

और चाहेगा कि उसका सुधार हो जाए तो उसका सुधार हो जाएगा। वास्तविकता यह है कि जो लोग यहां रहते हैं उनमें से प्राय: धर्म की सेवा में लगे हुए हैं और जब तक यहां के रहने वाले धर्म की सेवा में लगे हुए हैं उस समय तक वे लोग भी पवित्र हैं और यह स्थान भी पवित्र है और जब यहां के रहने वाले अधिकतर धर्म की सेवा को छोड़ देंगे तो उनकी प्रतिष्ठा और पवित्रता समाप्त हो जाएगी परन्तु यह स्थान फिर भी पवित्र रहेगा क्योंकि जब कोई स्थान पवित्र होता है तो उसकी बरकतें उससे वापस नहीं ली जातीं इसलिए उसके हालात नहीं बदलते।"

(अल्फ़ज़्ल 18 जनवरी1953 ई)

एक और स्थान पर रब्वा की पवित्रता और बरकतों वाला होने का वर्णन करते हुए कहते हैं:

"अब यह स्थान हमेशा के लिए बरकतों वाला है चाहे हमें उसे किसी समय छोड़ना ही पड़े। इसकी बरकत इससे कभी छीनी नहीं जाएगी बल्कि भविष्यवाणियों से जो कुछ पता चला है उसको समक्ष रखते हुए कह सकता हूँ कि क़यामत से पहले यह स्थान एक बार ज़रूर मुहम्मदी झण्डे को ऊंचा करने का कारण होगा और इस्राफ़ील यहां एक बार ज़रूर अपना बिगुल फूँकेगा।" (उद्धृत अल्फ़ज़्ल 26 नवम्बर1961 ई)

कैसी आकर यह फ़रिश्तों ने बसाई बस्ती
नज़र आते हैं नए अर्ज़ो समा रब्वा में
इल्मो ईमां यहां, दौलते ईमां यहां
तुम्हीं तसनीम बताओ नहीं क्या रब्वा में

(मीर अल्लाह बख़्श साहिब तसनीम)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. और अलमुबश्शरात

सम्माननीय पाठको! सच्चे ख़लीफ़ाओं की एक निशानी यह है कि अल्लाह तआला उनसे दूसरों की तुलना में अधिक वार्तालाप करता है और उनकी दुआओं को क़बूलियत प्रदान करता है। इस तरह ख़लीफ़ाओं की निशानियों में से एक निशानी यह भी है कि अल्लाह तआला उन्हें घटनाओं के घटित होने से पहले ही मुबश्शरात (अर्थात रो'या

कुशूफ एवं इल्हाम) के द्वारा उन घटनाओं की सूचना दे देता है। इस दृष्टि से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. भी ख़ुदा तआला के सच्चे ख़लीफ़ाओं में से थे।

सम्माननीय पाठको ! अल्लाह तआला ने हज़रत मुस्लेह मौऊद को अपनी ख़ुशख़बरियों से परिपूर्ण किया था। आपको बहुत अधिक रो'या, कश्फ़ और इल्हामों से गौरान्वित किया था। जिन में से कुछ का यहां वर्णन किया जाता है जो अल्लाह तआला ने घटित होने से पूर्व आपको बताई थीं।

अमरीका में अहमदिया मिशन की स्थापना की ज़बरदस्त भविष्यवाणी

अमरीका में अहमदिया मिशन की स्थापना हज़रत मुस्लेह मौऊद की एक भविष्यवाणी का बहुत शानदार प्रादुर्भाव और इस्लाम के ज़िन्दा धर्म होने का एक चमकता हुआ चिन्ह है जो रहती दुनिया तक यादगार रहेगा।

आज से 102 वर्ष पहले हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी की हिदायत पर हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब मिशन का उद्घाटन करने के उद्देश्य से अमरीका के समुद्र के तट पर उतरे तो अमरीकी गर्वनमेंट ने आप पर पाबंदी लगा दी।

जब यह ख़बर हिन्दुस्तान पहुंची तो कुछ द्वेष रखने वाले फ़िर्क़ा परस्तों ने इस पर ख़ुशी के ढोल बजाय परन्तु हुज़ूर ने स्यालकोट में एक पब्लिक जलसा में तक़रीर करते हुए स्पष्ट शब्दों में यह भविष्यवाणी की कि :

"हम ने अपने एक मुबल्लिग़ को अमरीका भी भेज दिया है जिसे अभी तक तब्लीग़ करने की आज्ञा नहीं दी गई और उसे रोक दिया गया है परन्तु हम अमरीका की रुकावट से रुक नहीं जाएँगे। अमरीका जिसे ताक़तवर होने का दावा है अब तक उसने सांसारिक सल्तनतों का मुक़ाबला किया है और उन्हें हराया है। आध्यात्मिक सल्तनत से उसने मुक़ाबला करके नहीं देखा। अब यदि उसने हम से मुक़ाबला किया तो उसे पता चल जाएगा कि हमें वह हरगिज़ हरा नहीं सकता क्योंकि ख़ुदा हमारे साथ है। हम अमरीका के इर्द-गिर्द के इलाक़ों में तब्लीग़ करेंगे और वहां के लोगों को मुसलमान बनाकर अमरीका भेजेंगे और उनको अमरीका नहीं रोक सकेगा और हम आशा रखते हैं कि अमरीका में एक दिन ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मद रसूलुल्लाह

की आवाज़ गूँजेगी और ज़रूर गूँजेगी।" (अल्फ़ज़ल 5 अप्रैल1920 ई)

इस महान और वैभव वाली भविष्यवाणी पर अभी केवल कुछ महीने ही गुज़रे थे कि अमरीकी हुकूमत को ख़ुदा की रूहानी हुकूमत के सामने झुकना पड़ा और शिकागो अहमदिया मिशन की स्थापना हुई।

इस समय अमरीका के समस्त प्रमुख शहरों में जमाअत की शाख़ें स्थापित हो चुकी हैं और कई बुयूतुल हम्द तथा मस्जिदें और मिशन हाऊस भी मौजूद हैं। जमाअत की ओर से "मुस्लिम सन राइज़" के नाम से एक पत्रिका भी प्रकाशित होती है जो सारे देश में इस्लाम का प्रचार करती है। धार्मिक शिक्षाओं से परिचित करवाने के लिए कई अंग्रेज़ी पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुके हैं। अमरीका मिशन की सफलताओं की यह संक्षिप्त रूप रेखा प्रस्तुत करने के बाद पाकिस्तान में अमरीकी मन्त्रालय के अनुवादक Panorama नीचे लिखी पंक्ति देखें: अनुवाद: अमरीका में 12 हज़ार मुसलमान आबाद हैं जिनमें 12 सौ पाकिस्तानी हैं। दस हज़ार दूसरे पूर्वी देशों से आए हैं और 1900 मुस्लिम हैं जो जमाअत अहमदिया की तब्लीग़ से इस्लाम में सम्मिलित हुए हैं। (पैनूरामा संख्या 30 जनवरी 1952 ई.) पैनूरामा लाहौर या कराची से हर सप्ताह प्रकाशित होने वाली अमरीकी संस्था की सूचना पत्रिका है।

कम्यूनिज़्म की तबाही के बारे में भविष्यवाणी

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं :

"लोग समझते हैं कि कम्यूनिज़्म सफल हो गया। हालाँकि इस समय कम्यूनिज़्म की सफलता केवल ज़ार के अत्याचारों के कारण है जब पचास-साठ साल का समय गुज़र जाएगा जब ज़ार के ज़ुल्मों की याद दिलों से मिट जाएगी और उसके नुक़ूश धुँधले पड़ जाऐंगे यदि उस समय भी यह निज़ाम सफल रहा तो हम समझेंगे कि कम्यूनिज़्म वास्तव में माँ की मुहब्बत और बाप का प्यार और बहन की हमदर्दी को कुचलने में सफल हो गया है। परन्तु दुनिया याद रखे यह मुहब्बतें कभी कुचली नहीं जा सकतीं। एक दिन आएगा कि फिर यह मुहब्बतें अपना रंग लाएँगीं फिर दुनिया में माँ को माँ होने का हक़ दिया जाएगा और फिर यह खोई हुई मुहब्बतें फिर वापस

आएंगी। परन्तु इस समय यह अवस्था है कि कम्यूनिज़्म इन्सान को इन्सान नहीं बल्कि एक मशीन समझता है न वह बच्चा के बारे में माँ की भावनाओं की परवाह करती है न वह बाप की भावनाओं की परवाह करती है, वह इन्सान को इन्सान नहीं बल्कि एक मशीनरी की हैसियत दे रही है परन्तु यह मशीनरी अधिक देर तक नहीं चल सकती। समय आएगा कि इन्सान इस मशीनरी को तोड़-फोड़ कर रख देगा और उस प्रणाली को अपने लिए स्थापित करेगा जिसमें पारिवारिक भावनाओं को अपनी पूरी शान के साथ बरक़रार रखा जाएगा (इस्लाम का इक़्तिसादी निज़ाम पृष्ठ 85)

इस (इश्तिराकी तहरीक) का पतन अत्यन्त भयावह होगा। दूसरी तहरीकों में तो यह होता है कि एक बादशाह मरता है तो उसके स्थान पर दूसरा बादशाह हुकूमत के तख़्त पर बैठ जाता है। एक पार्लियामेंट टूटती है तो दूसरी पार्लियामेंट बन जाती है परन्तु बालशवीक (Bolshevik) तहरीक में यदि कभी कमज़ोरी आई तो अचानक तबाह होगी और उसके स्थान पर ज़ार ही आएगा कोई दूसरी हुकूमत नहीं आएगी क्योंकि इस पर उत्तराधिकारी का कोई स्थान नहीं ..... अत: जब यह तहरीक गिरेगी तो सम्पूर्ण रूप से गिरेगी जैसा कि फ्रांस में हुआ। जब फ्रांस के बाग़ियों में पतन पैदा हुआ और उनके स्थान पर नेपोलियन जैसे मज़बूत इरादे वाले व्यक्ति ने ली तो स्वयं लोगों में से कोई प्रजातन्त्र का चाहने वाला स्थान न ले सका।"

(निज़ाम नव पृष्ठ 48 तक़रीर जलसा सालाना 1942 ई)

नई रूसी नस्ल में बग़ावत की हैरतअंगेज़ भविष्यवाणी

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. फ़रमाते हैं:

"बालशिविज़्म (Bolshevism) की वर्तमान प्रणाली पर नहीं जाना चाहिए वह इस समय ज़ार के अत्याचारों को याद रखे हुए है। जिस दिन यह विचार उनके दिल से भूला फिर यह क़ुदरती अनुभव कि हमारी सेवाओं का हम को बदला मिलना चाहिए उनके दिलों में पैदा हो जाएगा, नई नस्ल बग़ावत करेगी और इस शिक्षा को ऐसे ठुकराएगी कि सारी दुनिया हैरान रह जाएगी।"

(निज़ाम नौ पृष्ठ 98 तक़रीर जलसा सालाना 1944 ई)

"इश्तिराकीयत का नक्शा कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक अंजुलज़ ने तैयार किया और लेनिन ने इस नक्शा को दुनिया के पटल पर स्थान दिया और स्टालिन ने अपने बीस वर्षीय हुक़ूमत के युग में इसे एक आलीशान इमारत बना डाला। इस आधार पर स्टालिन की ज़िन्दगी में स्टालिन इज़्म और बालशिविज़्म समानार्थक शब्द बन गए। परन्तु अभी स्टालिन का कफ़न भी मैला न हुआ था कि उसके पहले उत्तराधिकारी मिस्टर मालनकोट ने स्टालिन के ख़िलाफ़ एक ज़बरदस्त बाग़ियाना तहरीक बुलन्द कर दी जो सारे रूस में आग की तरह फैल गई। अत: वह रूस जो कभी स्टालिन की फ़ौलादी शख़्सियत को बालशिविज़्म की साक्षात तस्वीर क़रार देता था आज स्टालिन के विचारों के बख़िया उधेड़ रहा है।"

इस्लाम की विश्वव्यापी हुकूमत की स्थापना की भविष्यवाणी

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. फ़रमाते हैं:

"हम समझते हैं और हम विश्वास रखते हैं बल्कि हम समझते और विश्वसा ही नहीं रखते, हम अपनी रूहानी आँखों से वे चीज़ देख रहे हैं जो दुनिया को नज़र नहीं आती हम अपनी कमज़ोरियों को भी जानते हैं हम उन मुश्किलों को भी जानते हैं जो हमारे मार्ग में रोक हैं। हम विरोध के उस उतार चढ़ाव को भी जानते हैं जो हमारे सामने आने वाला हैं। हम उन क़त्लों और लूटों को भी देख रहे हैं जो हमें सामने आने वाले हैं। हम उन भौतिक आर्थिक और राजनीतिक मुश्किलों को भी देख रहे हैं जो हमारे सामने आने वाली हैं परन्तु इन सब धुँधलकों में से पार होती हुई और उन सब अन्धेरों को चीरती हुई हमारी निगाह उस ऊंचे और बुलन्द झंडे को भी बहुत अधिक शान तथा शौकत के साथ लहराता हुआ देख रही है जिसके नीचे एक दिन सारी दुनिया पनाह लेने पर विवश होगी। यह झंडा ख़ुदा का होगा यह झंडा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का होगा... यह सब कुछ एक दिन ज़रूर होकर रहेगा। सांसारिक परेशानियों के समय कई अपने भी कह उठेंगे कि हम ने क्या समझा था और क्या हो गया परन्तु यह सब चीज़ें मिटती चली जाएँगी,आकाश का नूर प्रकट होता चला जाएगा और ज़मीन का अन्धेरा दूर होता चला जाएगा और अन्तत: वही होगा जो ख़ुदा ने

चाहा। वह नहीं होगा जो दुनिया ने चाहा।"(अल्फ़ज़्ल 12 मई 1949 ई)

स्पेन में इस्लाम का झण्डा लहराने की भविष्यवाणी

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. फ़रमाते हैं:

"वे दिन दूर नहीं जब उस जरनैल (अब्दुल अज़ीज़-अभिप्राय) के ख़ून के क़तरों की पुकार उसके जंगलों में चिल्लाने वाली रूह अपनी कशिश दिखाएगी और सच्चे मुसलमान फिर स्पेन पहुँचेंगे और वहां इस्लाम का झंडा गाड़ देंगे। उसकी रूह आज भी हमें बुला रही है और हमारी रूहें भी यह कह रही है कि हे शहीदे वफ़ा! तुम अकेले नहीं हो, मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म के सच्चे सेवक प्रतीक्षा में हैं। जब ख़ुदा तआला की ओर से आवाज़ आएगी वे परवानों की तरह उस देश में दाख़िल होंगे और अल्लाह तआला के नूर को वहां फैलाएंगे। यह प्रश्न नहीं कि हम अमन पसन्द जमाअत हैं। विभिन्न अमन पसन्दों को भी ख़ुदा तलवार खींच कर ज़ुल्म का सामना करने की आज्ञा दे दिया करता है। क्या मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अमन पसन्द न थे,परन्तु विभिन्न प्रकार के अत्याचारों के कारण अल्लाह तआला ने अन्ततः आप को सामना करने की आज्ञा दे दी जैसा कि फ़रमाया أُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقَاتَلُوْنَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوْا وَإِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرٌ जिन लोगों को जानबूझ कर अत्याचार का निशाना बनाया गया। अब उनको भी आज्ञा है कि आत्याचारियों का मुक़ाबला करें। अतः यदि अल्लाह तआला के निकट यूं मुक़द्दर है कि स्पेन के लोग हमारी तब्लीग़ तथा शिक्षा से ही कुफ्र तथा शिर्क को छोड़ देंगे और या फिर हम पर इतना अत्याचार करेंगे कि अल्लाह तआला की ओर से मुक़ाबला करने की आज्ञा मिल जाएगी और वे जिन्होंने कान पकड़ कर मुसलमानों को अपने देश से निकाला था। कान पकड़ कर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मज़ार पर हाज़िर होंगे और निवेदन करेंगे कि हुज़ूर के ग़ुलाम हाज़िर हैं।" (अल्फ़ज़्ल 6 मई 1944 ई.)

इंग्लिस्तान की सुरक्षा के प्रबन्ध के बारे में एक महान रो'या

"द्वितीय विश्व युद्ध में हुज़ूर को दिखाया गया कि इंग्लिस्तान की सुरक्षा का प्रबन्ध

मेरे सपुर्द किया गया है और इसके लिए अमरीका से 2800 जहाज़ आ रहे हैं और मैं उनको इस कारण देखता हूँ कि अब बर्तानिया के लिए ख़तरा नहीं। अत: रो'या में जितने जहाज़ों का आप को ज्ञान दिया गया बिल्कुल उतने ही अर्थात 2800 जहाज़ों के भेजे जाने का अमरीका से तार आ गया था।" (अल्फ़ज़्ल 5 फरवरी 1921 ई)

यह ख़बर जून 1940 ई में पूरी हुई।

मलकाना की शुद्धि की तहरीक और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि.

सम्माननीय पाठको ! ख़लीफ़ा नबियों के अनुकरण में सच्चे धर्म के प्रचार प्रसार में अपना तन-मन धन सब कुछ क़ुर्बान कर देते हैं और जब कभी कुफ्र अपने मुँह की फूँकों से सच्चे धर्म को मिटाना या दबाना चाहता है तो सच्चे ख़लीफ़ा के द्वारा अल्लाह तआला उसकी रोकथाम के प्रबन्ध कर देता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. की ज़िन्दगी में ऐसी अनगिनत घटनाएं हैं जिससे यह प्रमाणित होता है कि किस तरह अल्लाह तआला ने आपके द्वारा इस्लाम को बुलन्दी प्रदान की। इसी क्रम में शुद्धि तहरीक की रोकथाम भी है।

सम्माननीय पाठको! बीसवीं सदी के आरम्भ में यू.पी. के मलकाना क्षेत्र में मुसलमानों को हिंदू पंडितों ने शुद्ध करके इस्लाम से विमुख करना आरम्भ किया। हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध आलिम मौलाना शिब्ली नुअमानी को इस ख़बर से इतना धक्का लगा कि उनका ग़म तथा ग़ुस्सा इन शब्दों में ढल गया। आप लिखते हैं

"जिस समय मैं यहां से चला हूँ मेरी जो हालत थी ये नदवा के छात्र के जो यहां बैठे हैं वे उसके गवाह होंगे कि मैंने उस समय कोई गाली नहीं उठा रखी थी जो मैंने नदवा वालों को न सुनाई होगी। कि हे निर्लज्जो! और हे कमबख़्तो! डूब मरो। ये घटनाएं हुई हैं। नदवा को आग लगा दो और अलीगढ़ को फूंक दो। यही शब्द मैंने उसी समय भी कहे थे और आज भी कहता हूँ।" (हयाते शिबली पृष्ठ 558-557)

इस हालत से निपटने के लिए उन्होंने 1912 ई में लखनऊ में हिन्दुस्तान के प्रमुख मुसलमानों की एक कान्फ्रेंस रखी। अल्लामा शिबली की जीवनी लिखने वाले मौलाना सय्यद सुलैमान नदवी इसी घटना का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं:

"मौलाना चाहते थे कि तब्लीग़ के काम समस्त फ़िर्क़े मिल कर करें। इसलिए मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद (साहिब) जो अब ख़लीफ़ा क़ादियान हैं और ख़्वाजा कमालुद्दीन साहिब तक की शिरकत से इन्कार नहीं किया गया। इस पर उस जलसा के बीच मौलाना पर यह आरोप रखा गया कि उन्होंने क़ादियानियों को जलसा में क्यों सम्मिलित किया? और उनको तक़रीर की आज्ञा क्यों दी?"

इसका प्रभाव मौलाना शिब्ली नुअमानी पर यह हुआ कि :

"मौलाना बीमार और परेशान होकर मौलवी अब्दुस्सलाम साहिब और सीरत का मसौदा लेकर बम्बई रवाना हो गए और दो चार माह के ग़ौर व फ़िक्र के बाद जुलाई 1913 ई को नदवा से इस्तीफा दे दिया और काम के सारे परामर्श बिखर कर रह गए। (हयाते शिबली पृष्ठ 573)

इस घटना के बाद हिंदू संस्थाएं शुद्धि की तहरीक में लगी रहीं और मुसलमान रहनुमा ख़रगोश के ख्वाब देखने में पड़े रहे। यहां तक कि आर्य समाजी विजय के ढोल बजाने लगे और मशहूर आर्य समाजी लीडर श्रद्धानन्द ने बड़े गर्व से ऐलान किया कि:

"आगरा के आस पास राजपूतों को तेज़ी से शुद्ध किया जा रहा है और अब तक चालीस हज़ार तीन सौ राजपूत मलकाने गूजर और जाट हिन्दू हो चुके हैं ... ऐसे लोग हिन्दुस्तान के प्रत्येक हिस्सा में मिलते हैं। ये पच्चास-साठ लाख से कम नहीं और यदि हिन्दू समाज इनको अपने अंदर समाहित करने का काम जारी रखे तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा कि इनकी संख्या एक करोड़ तक हो जाएगी।"

(अख़बार प्रताप लाहौर 16 मार्च1923 ई पृष्ठ 4)

यह घोषणा क्या थी एक बम का गोला था जिस ने हिन्दुस्तान के मुसलमान को पूर्व से पश्चिम तक हिला कर रख दिया था। साधारण मुसलमानों के दिल दुखी थे और अन्य अपनी-अपनी मज्लिसों और प्रोग्रामों में व्यस्त थे। कार्य क्षेत्र में कोई न उतरता था और नतीजा ढाक के तीन पात। उनकी हालत देखकर हिन्दुओं के हौसले और बुलन्द होने लगे।

इसका अंदाज़ा हिन्दू लीडर राजकुमार अमेठी की इस तक़रीर से हो सकता है जिसे

अख़बार तेज 20 मार्च 1926 ई ने इन शब्दों में प्रकाशित किया कि :

"बिना शुद्धि के हिन्दू-मुस्लिम एकता (इत्तिहाद) नहीं हो सकती। जिस समय सब मुसलमान शुद्ध होकर हिंदू हो जाएँगे तो सब हिन्दू ही हिन्दू नज़र आएँगे। फिर दुनिया में कोई शक्ति उसको आज़ादी से नहीं रोक सकती है। यदि शुद्धि के लिए हम को बड़ी से बड़ी मुसीबत उठानी पड़े तो भी इस आन्दोलन (तहरीक) को आगे बढ़ाना चाहिए।"

अख़बार तेज 13 जनवरी 1927 ई में दिल्ली के एक हिन्दू शायर ने लिखा:

काम शुद्धि का कभी बन्द होने न पाए
भाग से वक़्त यह क़ौमों के मिला करते हैं
हिन्दू तुम में है यदि जज़्बा ईमानां बाक़ी
रह न जाए कोई दुनिया में मुसलमां बाक़ी

इस अवसर पर हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ने अपनी जमाअत के लिए यह ऐलान फ़रमाया :

"हमें इस समय डेढ़ सौ आदमियों की ज़रूरत है जो इस क्षेत्र (अर्थात मलकाना) में काम करें ... इस डेढ़ सौ में से प्रत्येक को अभी तीन माह के लिए ज़िन्दगी वक़्फ़ करनी होगी। हम उनको एक पैसा भी ख़र्च के लिए न देंगे। अपना और अपने घर वालों का ख़र्च उनको स्वयं बर्दाश्त करना होगा। जो लोग नौकरियों पर हैं वे अपनी छुट्टियों का स्वयं प्रबन्ध करें और जो नौकर नहीं अपने कारोबार करते हैं। वहां से छुट्टी प्राप्त करें..... इस स्कीम के अधीन काम करने वालों को प्रत्येक अपना काम स्वयं करना होगा। यदि खाना पकाना पड़े तो पकाएंगे। यदि जंगल में सोना पड़ेगा तो सोएँगे। जो इस मेहनत और कष्ट को सहन करने के लिए तैयार हों वे आएं उनको अपनी इज़्ज़त अपने विचार क़ुर्बान करने पड़ेंगे। ऐसे लोगों की मेहनत व्यर्थ नहीं जाएगी। नंगे पैरों चलेंगे, जंगलों में सोएँगे। ख़ुदा उनकी इस मेहनत को जो श्रद्धा से की जाएगी नष्ट नहीं करेगा। इस तरह जंगलों में नंगे पैरों फिरने से उनके पांव में जो सख़्ती पैदा हो जाएगी। वह क़यामत के दिन जब सिरात के पुल से गुज़रना होगा उनके

काम आएगी। मरने के बाद उनको जो स्थान मिलेगा वह राहत तथा आराम का स्थान होगा।" (अल्फ़ज़ल 15 मार्च 1923 ई)

जमाअत अहमदिया के लोगों ने अपने इमाम की इस पुकार पर जिस श्रद्धा और ईमान की भावना के साथ इस्लाम की सेवा की है इसकी स्वीकारोक्ति न केवल अपनों ने बल्कि दूसरों ने भी की है जिसमें से कुछ विचार प्रस्तुत हैं:

अख़बार ज़मीन्दार अपनी 24 जून 1923 ई के प्रकाशन में लिखता है:

"जो हालात फ़ित्ना इर्तिदाद के बारे में अख़बारों के माध्यम से ज्ञान में आ चुके हैं उनसे साफ़ स्पष्ट है कि मुसलमान जमाअत अहमदिया इस्लाम की अनमोल सेवा कर रही है। जो कुर्बानी और दृढ़ता, नेक नीय्यती और अल्लाह तआला पर भरोसा उनकी ओर से प्रकट हो रहा है वह यदि हिन्दुस्तान के वर्तमान युग में अनुपमेय नहीं तो असंख्या इज़्ज़त और सम्मान के योग्य ज़रूर है। जहां हमारे मशहूर पीर और सज्जादा नशीन हज़रात बिना हरकत के पड़े हैं। इस दृढ़ निश्चय वाली जमाअत ने महान सेवा करके दिखा दी।"

"ज़मीन्दार लाहौर 24 जून 1923 ई ब्यान शेख़ नयाज़ अली ऐडवोकेट हाईकोर्ट लाहौर)

फिर 29 जून 1923 ई. के प्रकाशन में लिखा:

"क़ादियानी अहमदी उच्च क़ुरबानी को प्रकट कर रहे हैं उनके लगभग एक सौ मुबल्लिग़ अमीरुल वफ़द के नेतृत्व में विभिन्न देहातों में पड़े हैं। उन लोगों ने स्पष्ट काम किया है। समस्त मुबल्लग़ीन बिना वेतन या सफ़र ख़र्च के काम कर रहे हैं। हम यद्यपि अहमदी नहीं परन्तु अहमदियों के उच्च काम की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते। जिस क़ुरबानी का उच्च प्रमाण जमाअत अहमदिया ने दिया है इसका नमूना पूर्वकालीन मुसलमानों के इलावा मुश्किल से मिलता है। उनका प्रत्येक मुबल्लिग़ ग़रीब हो या अमीर,बिना ख़र्च तथा खाने के सफ़र के, कर्म क्षेत्र में काम कर रहा है। बहुत गर्मी और लूओं में वे अपने अमीर की आज्ञापालन में काम कर रहे हैं।"

(ज़मींदार लाहौर 29 जून 1923 ई वर्णन शेख़ ग़ुलाम हुसैन साहिब हेडमास्टर हाई स्कूल जेहलुम)

अख़बार मशरिक गोरखपुर ने लिखा:

"जमाअत अहमदिया ने विशेष रूप से आर्या विचारों पर बहुत बड़ी चोट लगाई

है और जमाअत अहमदिया जिस कुर्बानी और दर्द से तब्लीग़ और इस्लाम का प्रचार करती है वह इस युग में दूसरी जमाअतों में नज़र नहीं आता।"

(अख़बार मशरिक़ 15 मार्च 1922 ई)

इसी अख़बार ने कुछ दिन बाद फिर लिखा:

"जमाअत अहमदिया के इमाम और पेशवा की लगातार तक़रीरों और तहरीरों का प्रभाव उनके अनुयायियों पर बहुत गहरा पड़ा और इस जिहाद में इस समय सबसे आगे यही फ़िर्क़ा नज़र आता है और इस बात के बावजूद कि अहमदी फ़िर्क़ा के निकट इस नए मुस्लिम गिरोह का समर्थन ज़रूरी न था क्योंकि उस फ़िर्क़ा से इसका कोई लगाव न था परन्तु इस्लाम का नाम लगा हुआ था इसलिए उसकी शर्म से इमाम जमाअत अहमदिया को जोश आ गया है और आपकी कुछ तक़रीरें देखकर दिल पर बहुत भय छा जाता है कि अभी ख़ुदा के नाम पर जान देने वाले मौजूद हैं और यदि हमारे उलमा को इस बात का अंदेशा हो कि जमाअत अहमदिया अपने अक़ीदों की शिक्षा देगी तो वे अपनी मुत्तफ़िक़ा जमाअत में ... ऐसी श्रद्धा पैदा करके आगे बढ़ें कि सत्तू खाएं और चने चबाएं और इस्लाम को बचाएं। जमाअत अहमदिया के लोगों में यह श्रद्धा हम बहुत अधिक देखते हैं। ईमानदारी, वादा पूरा करना और अपने इमाम की आज्ञापालन में यह जमाअत विशिष्ट है। जनाब मिर्ज़ा साहिब और उनकी जमाअत के उच्च हौसला और कुर्बानी की प्रशंसा के साथ हम मुसलमानों को ऐसे कुर्बानी की ग़ैरत दिलाते हैं। दयानत और अमानत जो मुसलमानों के विशेष गुण थे आज वे उनमें स्पष्ट हैं। जमाअत अहमदिया की फ़य्याज़ी और कुर्बानी के साथ उनकी दयानत और आय तथा ख़र्च की दुरुस्तगी और बाक़ायदगी सबसे अधिक प्रशंसनीय है और यही कारण है कि आय की कमी के बावजूद यह लोग बड़े-बड़े काम कर रहे हैं।"

(मशरिक़ गोरखपुर 29 मार्च 1923 ई)

अख़बार ज़मीन्दार लाहौर ने अपने 8 अप्रैल 1923 ई के प्रकाशन में जमाअत अहमदिया की इस तरह प्रशंसा की:

अहमदी भाइयों ने जिस श्रद्धा, जिस क़ुरबानी, जिस जोश और जिस सहानुभूति से इस काम में हिस्सा लिया है वह इस योग्य है कि प्रत्येक मुसलमान इस पर गर्व करे।

अख़बार हमदम लखनऊ ने अपने 16 अप्रैल 1923 ई के प्रकाशन में लिखा:

"क़ादियानी जमाअत की नेक कोशिशें इस मामले में अत्याधिक प्रशंसनीय हैं और दूसरी इस्लामी जमाअतों को भी उन्हीं के नक़्श-ए-क़दम पर चलना चाहिए।"

इसी तरह अख़बार वकील अमृतसर ने लिखा:

"अहमदी जमाअत का व्यवहार इस बात में बहुत ही प्रशंसा योग्य है जो छेड़छाड़ के बावजूद केवल इस विचार से कि इस्लाम को ज़ख़्मों से सुरक्षित रखा जाए, उन ख़ाना जंगियों की रोकथाम के ओर स्वयं मुसलमानों के लीडरों को ध्यान दिलाते हैं और प्रत्येक तरह काम करने को तैयार हैं ... हम बहुत ध्यान पूर्वक ऐलान करते हैं कि क़ादियान की अहमदी जमाअत बेहतरीन काम कर रही है।"

(अख़बार वकील अमृतसर 30 मई 1923 ई)

यह तो मुसलमान अख़बारों की गवाहियां थीं, अब हिंदू अख़बारों की गवाहियों में से केवल दो गवाहियां लिखता हूं।

देव समाजी अख़बार "जीवन तत" लाहौर लिखता है:

"मलकाना राजपूतों की शुद्धि की तहरीक को रोकने और मलकानों में इस्लामी मत का प्रचार करने के लिए अहमदी साहिब विशेष जोश का इज़हार कर रहे हैं। कुछ सप्ताह हुए क़ादियानी फ़िर्क़ा के लीडर मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब ने डेढ़ सौ ऐसे काम करने वालों के लिए अपील की थी जो तीन माह के लिए मलकानों में जा कर मुफ़्त काम करने के लिए तैयार हों, जो अपना और अपने घर वालों का और वहां के किराया इत्यादि का सारा ख़र्चा बर्दाशत कर सकें और प्रबन्ध में जिस लीडर के अधीन जिस काम पर उन्हें लगाया जाए उसे वे ख़ुशी-ख़ुशी करने के लिए तैयार हों। वर्णन किया जाता है कि इस अपील पर कुछ सप्ताह के भीतर चार-सौ से अधिक दरख़वास्तें इन शर्तों पर काम करने के लिए प्राप्त हो चुकी हैं और तीन पार्टीयों में 90 अहमदी साहिब आगरा के इलाक़ा में पहुंच चुके हैं और बहुत सरगर्मी से मलकानों में अपना प्रचार कर रहे हैं। इस नए इलाक़ा के हालात मालूम करने के लिए उनमें से कुछ ने जिन में ग्रेजूएट नौजवान भी सम्मिलित थे अपने बिस्तर कंधों पर रखकर और तेज़-धूप में पैदल सफ़र करके सारे क्षेत्र का दौरा किया। अपने मत के लिए उनका

जोश और क़ुर्बानी प्रशंसनीय है।" (अख़बार जीवन नत लाहौर 24 अप्रैल 1923)

हिन्दू धर्म और इस्लाही तहरीकें के लेखक ने स्वीकार किया:

"आर्या समाज ने शुद्धि अर्थात नापाक को पाक करने का तरीक़ा जारी किया। ऐसा करने से आर्या समाज का मुसलमानों के तब्लीग़ी गिरोह अर्थात क़ादियानी फ़िर्क़ा से टकराव हो गया। आर्या समाज कहता था कि वेद इल्हामी है और सबसे पहला आकाशीय सहीफ़ा और सम्पूर्ण ज्ञान है।......क़ादियानी कहते थे कि पवित्र क़ुरआन ख़ुदा का कलाम है और हज़रत मुहम्मद ख़ातमुल अंबिया हैं। इसकोशिश तथा टकराव का नतीजा यह हुआ कि कोई मुसलमान अब मज़हब के लिए आर्या समाज में दाख़िल नहीं होता।" (हिन्दू धर्म और इस्लाही तहरीकें पृष्ठ 43,44)

अफ़सोस कि इस नाज़ुक समय में भी उलेमा ने कुफ़्र बाज़ी के काम को नहीं छोड़ा। मौलवी मुमताज़ अली साहिब सम्पादक अख़बार तहज़ीबुन्निस्वां लाहौर ने बड़े दर्द के साथ लिखा कि:

"मैंने सुना है कि मैदान इर्तिदाद में प्रत्येक फ़िर्क़ा-ए-इस्लाम ने तब्लीग़ के लिए अपने प्रतिनिधि भेजे हैं मैंने उचित समझा कि मैं जिस गिरोह के मुबल्लग़ीन को अधिक कामयाब देखूं, उनमें से एक अपने लिए चुन लूं। तहक़ीक़ात से मालूम हुआ कि तब्लीग़ के काम में सबसे अधिक सफलता अहमदी मुबल्लिग़ों को हुई है इसलिए मैंने चाहा कि यदि तहज़ीबी बहनों को एतराज़ न हो तो वे उनमें से किसी एक मुबल्लिग़ का ख़र्च अपने ज़िम्मा ले लें, परन्तु इसी समय में हमारे उलमा ने ऐलान प्रकाशित किया कि अहमदी फ़िर्क़ा के लोग सब काफ़िर हैं। उनका कुफ़्र मलकाना के राजपूतों के कुफ़्र से भी बहुत बढ़कर है। इस युग में उलमा का काम मुसलमान बनाना नहीं है बल्कि मुसलमानों को काफ़िर बनाना है। मुझे विश्वास है कि दुनिया में एक भी मुसलमान ऐसा न होगा जिसके बारे में सब धर्म के उलमा सर्वसम्मति से यह कह सकें कि यह वास्तव में ठीक मुसलमान है। हमारे उलमा से जिसे चाहो काफ़िर बनवा लो। वहाबी काफ़िर, बिदअती काफ़िर,राफ़ज़ी काफ़िर, ख़ारिजी काफ़िर परन्तु यदि उनसे चाहो कि कुछ काफ़िरों को मुसलमान कर दो तो यह काम उनसे नहीं हो सकता।"

(रिसाला तहज़ीबुन्निस्वां लाहौर 2 मई 1925 ई)

जलसा सीरतुन्नबी का आरम्भ और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. की कोशिशें

सम्माननीय पाठको! सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि. ने अपने देहान्त से कुछ दिन पहले एक दुआ की थी। इस दुआ में आपने अपने उत्तराधिकारी की सहायता और समर्थन के लिए और क़ुरआन तथा हदीस का विद्वान और उस के अनुसार अनुकरण करने वाले वारिस बनने के लिए दुआ की थी। आप के शब्द इस प्रकार हैं:

"आज मुझे बहुत कष्ट हुआ। मैंने समझा अब दुनिया में नहीं रहूँगा। अत: मैंने दो रकअत नमाज़ पढ़ी और अलहम्दो शरीफ़ के बाद पहली रकअत में सूर: अज़्ज़ुहा और दूसरी रकअत में "अलम नश्रह लका सदरक" की तिलावत की। फिर मैंने दुआ की कि हे अल्लाह! हम पर चारों ओर से हमला हो गया .... हे मेरे ख़ुदा इस्लाम पर बड़ी .... तलवार चल रही है। मुसलमान पहले तो सुस्त हैं फिर इस्लाम धर्म,पवित्र क़ुरआन और नबी करीम से बेख़बर। तू उनमें ऐसा व्यक्ति पैदा कर जिस में क़ुव्वत-ए-जाज़्बा हो। वह काहिल तथा सुस्त न हो। हिम्मत बुलन्द रखता हो। बावजूद वह महान धैर्यशाली, दुआओं का मांगने वाला हो तेरी समस्त या प्राय इच्छाओं को पूरा करने वाला हो। क़ुरआन और हदीस का जानने वाला हो। (अल्हकम 7 अप्रैल 1914 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. के द्वारा ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि. की इस दुआ का प्रकटन हुआ। आप ने इस्लाम धर्म के जागरण और स्थायित्व के लिए पूरी हिम्मत से जान की बाज़ी लगा दी और इस्लाम को सारी दुनिया में प्रभावकारी तरीक़ों से फैला दिया। इस्लाम धर्म के स्थायित्व के लिए आपके सुनहरे कारनामों में से एक जलसा सीरतुन्नबी का प्रारम्भ है। इन जलसों के द्वारा आपने संसार को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उत्तम आचरण से परिचित करवाया। इस तहरीक का संक्षिप्त विवरण इस तरह है कि 1927 ई के आख़िर में इस प्रमुख तहरीक की सोच अल्लाह तआला ने बताई जब हिन्दुओं की ओर से किताब "रंगीला रसूल" और "रिसाला वर्तमान" में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र शान

में उपहास चरम को पहुंच गए और देश में फ़िर्कों में द्वेष चरम को पहुंच गया उस समय यह अनुभव किया गया कि जब तक नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र ज़िन्दगी के हालात और आपके विश्वव्यापी उपकारों के वर्णन से देश का कोना-कोना गूंज नहीं उठेगा, उस समय तक इस्लाम के विरोधियों का मुहम्मदी क़िला पर हमला क्रमवत जारी रहेगा और वस्तुतः यही वह विचार था जिसको व्यावहारिक रूप पहनाने के लिए सय्यदना मुस्लेह मौऊद रज़ि.ने सीरतुन्नबी के जलसों की विचार किया।

इस प्रमुख सामाजिक तथा इस्लामी उद्देश्य की पूर्णता के लिए आपने बड़े-बड़े प्रोग्राम सोचे जिसके निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण पक्ष थे:

प्रथम: प्रत्येक साल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी में से कुछ प्रमुख पक्षों को चुन कर उन पर विशेष रूप से प्रकाश डाला जाए।

द्वितीय: उन विषयों पर लैक्चर देने के लिए आपने जलसा सालाना 1927 ई के अवसर पर एक हज़ार ऐसे फ़िदाइयों की मांग की जो लैक्चर देंगे।

तृतीय: सीरतुन्नबी पर तक़रीर करने के लिए आपने मुसलमान होने की शर्त हटा दी बल्कि फ़रमाया कि ग़ैर मुस्लिम भी तक़रीरें करें क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपकार सारी दुनिया पर हैं।

चतुर्थ: ग़ैर मुस्लिमों के लिए कहा गया कि उनमें से जो प्रथम,द्वितीय,तृतीय आएँगे उन्हें क्रमशः सौ, पच्चास और पच्चीस रुपए के नक़द इनाम दिए जाएँगे।

पन्चम : हुज़ूर के सामने चूँकि मीलादुन्नबी के प्रसिद्ध रस्मी प्रभावी और सीमित जलसों के विशेष उद्देश्य के स्थान पर सीरतुन्नबी के विशेष ज्ञानवर्धक और सार्वजनिक जलसों की धारणा थी। इसलिए आपने उनको आयोजित करने के लिए 12 रबीउल अव्वल के दिन के स्थान पर दूसरे दिनों को अधिक उचित क़रार दिया। अतः 1928 ई. में आपने 1 मुहर्रम 1347 हिजरी जून को पहले सीरततुन्नबी दिवस" आयोजित करने का ऐलान किया जिसे शिया फ़िर्क़ा के मुसलमानों की सुविधा से सम्मिलित होने के कारण 17 जून में परिवर्तित कर दिया। (अल्फ़ज़्ल 4 मई 1928 ई)

हुज़ूर ने इस महान प्रोग्राम की गरिमानुसार जमाअत अहमदिया और दूसरे मुसलमानों को तैयारी करने की ओर बार-बार ध्यान दिलाया और इस बारे में कई प्रमुख परामर्श दिए जैसे जलसों के महत्व बताने के लिए विभिन्न अवसरों पर विभिन्न स्थानों में जलसे करें। जलसे की अध्यक्षता के लिए प्रभावकारी और महत्त्वपूर्ण लोगों को चुना जाए। जलसा गाह का उचित प्रबन्ध हो।

अत: अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यह पहला जलसा सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सारे देश में बहुत शानदार ढंग से मनाया गया और बहुत शान से विभिन्न स्थानों पर यह जलसे आयोजित किए गए और एक ही स्टेज पर प्रत्येक फ़िर्क़ा के मुसलमानों ने सीरतुन्नबी पर अपनी हार्दिक भावनाओं का प्रकटन करते हुए तक़रीरें कीं।

मुसलमानों के अतिरिक्त हिन्दू, सिख, ईसाई, जैनी इत्यादि लोगों ने भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन, महान क़ुर्बानियों और अतुलनीय उपकारों का वर्णन किया और न केवल इन जलसों में ख़ुशी से सम्मिलित हुए बल्कि कई स्थानों पर उन्होंने उनके आयोजन में बड़ी सहायता भी की, जलसा गाह के लिए अपने मकान दिए और ज़रूरी सामान भी उपलब्ध कराए।

श्रोताओं का शर्बत इत्यादि से स्वागत किया और सबसे बढ़कर यह कि इन जलसों में सम्मिलित होकर तक़रीरें कीं।

मज्लिस सीरतुन्नबी का समापन ऐसे सुन्दर और शानदार ढंग से हुआ कि बड़े-बड़े लीडर दंग रह गए और अख़बारों ने इस पर बड़े-बड़े सुन्दर लेख प्रकाशित किए और इसकी महान सफलता पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. को मुबारकबाद दी जैसे अख़बार मशरिक़ गोरखपुर 21 जून1928 ई ने लिखा कि:

"हिन्दुस्तान में यह इतिहास हमेशा ज़िन्दा रहेगा इसलिए कि इस इतिहास में आला हज़रत दोनो जहान के आक़ा हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़िक्रे ख़ैर किसी न किसी तरीका में मुसलमानों के प्रत्येक फ़िर्क़ा ने किया और प्रत्येक शहर में यह कोशिश की गई कि प्रथम दर्जे पर हमारा शहर है....

जिन लोगों ने इस अवसर पर मतभेद तथा फित्ना फैलने के लिए पोस्टर लिखे और तक़रीरें लिख कर हमारे पास भेजीं वे बहुत मूर्ख हैं जो हमारे अक़ीदा से परिचित नहीं। हमारा अक़ीदा यह है कि जो व्यक्ति ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह पर ईमान रखे वह नजात पाने वाला है। बहरहाल 17 जून को जलसा की सफलता पर हम इमाम जमाअत अहमदिया जनाब मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब को मुबारकबाद देते हैं यदि शिया तथा सुन्नी और अहमदी इसी तरह साल भर में दो-चार बार एक स्थान पर जमा हो जाया करें तो फिर कोई क़ुव्वत इस्लाम का मुक़ाबला इस देश में नहीं कर सकती।

कलकत्ता के एक बंग्ला अख़बार सुलतान ने 21 जून में लिखा:

"जमाअत अहमदिया ने 17 जून को रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत वर्णन करने के लिए हिन्दुस्तान भर में जलसे आयोजित किए हैं सूचनाऐं प्राप्त हुई हैं कि लगभग सब स्थान पर सफल जलसे हुए और यह तो एक हक़ीक़त है कि इस स्थान के आस पास में अहमदियों को ऐसी महान कामयाबी हुई है कि इससे पहले नहीं हुई और इससे मालूम होता है कि जमाअत अहमदिया दिन प्रतिदिन ताक़तवर हो रही है और लोगों के दिलों में स्थान प्राप्त करती जा रही है हम स्वयं भी उनकी ताक़त को स्वीकार करते हैं और उनकी सफलता के इच्छुक हैं।

अख़बार कश्मीरी लाहौर 28 जून 1928 ई. ने 17 जून की शाम के विषय से यह लेख प्रकाशित किया:

"मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद (जमाअत अहमदिया क़ादियान के ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि) का यह परामर्श कि 17 जून को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन पर हिन्दुस्तान के कोने-कोने में लैक्चर और नसीहतें की जाएं, अक़ीदों के मतभेद के न केवल मुसलमानों में मक़बूल हुई बल्कि ग़ैर मुस्लिम लोगों ने 17 जून के जलसों में व्यावहारिक रूप से हिस्सा लेकर अपनी पसन्दीदगी का इज़हार फ़रमाया। 17 जून की शाम कैसी मुबारक थी कि हिन्दुस्तान के एक हज़ार से अधिक स्थानों पर एक ही समय में हमारे पवित्र रसूल की पवित्र जीवनी,

उनकी महानता उनके उपकार और आचरण और उनकी शिक्षा दीक्षा पर हिन्दू तथा मुसलमान और सिख अपने-अपने विचारों का इज़हार कर रहे थे। यदि इस क़िस्म के लैक्चरों का सिलसिला बराबर जारी रखा जाए तो मज़हबी झगड़ों तथा फ़सादों पर शीघ्र रोक लग जाएगी।

अख़बार पेशवा दिल्ली 8 जुलाई 1928 ई. ने 17 जून के जलसों की सफलता पर ख़ुशी और उसके विरोधियों पर अफ़सोस का इज़हार करते हुए लिखा:

17 जून को क़ादियानी जमाअत के अन्तर्गत सारे हिन्दुस्तान में फ़ख़रे कायनात की सीरत पर हिन्दुस्तान के प्रत्येक विचार और प्रत्येक वर्ग के बाशिंदों ने लैक्चर दिए और ख़ुशी का स्थान है कि मुसलमान अख़बारों ने सिवाए ज़मींदार और अलजमईत और अल-अन्सार के मुत्तफ़िक़ा तौर से इन जलसों की सफलता में हिस्सा लिया। परन्तु अफ़सोस कि उलमा देवबन्द ने ज़िक्रे रसूल का विरोध इसलिए किया की उनको क़ादियानी अक़ीदों से मतभेद है।

अख़बार हिम्मत लखनऊ 3 मई 1929 ई ने लिखा:

जनाब इमाम जमाअत अहमदिया का यह मुबारक परामर्श बेहद मक़बूल हो रहा है कि विभिन्न और विशेष स्थानों पर इस तरह के जलसे आयोजित किए जाएं जिनमें मुसलमानों के समस्त फ़िर्क़ों के उलमा और लैक्चरार एक साथ सीरतुन्नबी पर विचार व्यक्त करें और उन जलसों में दूसरे फ़िर्क़ों के लोगों को भी सम्मिलित होने की दावत और उनके नाशस्ते इत्यादि का प्रबन्ध किया जाए। जमाअत अहमदिया की संजीदा और ठोस तब्लीग़ी सरगर्मियां प्रत्येक तरह से मुबारकबाद के योग्य हैं और हमारे निकट मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि वे इस अत्यन्त लाभदायक और प्रमुख परामर्श को व्यावहारिक रूप देने के लिए पूरी कोशिश से काम लें।

अख़बार मशरिक़ गोरखपुर 9 मई 1929 ई ने लिखा:

"अहमदी जमाअत जिस निष्ठा के साथ क़ौमी ख़िदमतें अन्जाम दे रही है दूसरी जमाअतें उस निष्ठा के साथ यह ख़िदमतें अंजाम नहीं देतीं। हम यह स्वीकार करते हैं कि यह अहमदी वही लोग हैं जिन को कमज़ोर समझ कर दूसरे मुसलमान अपनी ताकत

के ज़ोर पर पत्थर मार कर शहीद करते हैं। अफ़सोस मालूम नहीं لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ पर अनुकरण करने वाले इस किस्म के जब्र तथा अत्याचार और अक़ीदा परस्ती कहाँ से सीख कर आए हैं। इसी अहमदी जमाअत के मुख़लिस मैंबरों ने पिछले साल अपनी मेहनत और ख़ुलूस से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़द्दस हालात जो ग़ैर मुस्लिमों में अन्धकार के अंदर पड़े हैं स्वयं ग़ैर मुस्लिमों से प्लेटफ़ार्मो पर बुला कर ज़ाहिर कराए हैं। इस ही जमाअत के लोगों की कोशिशों से इस साल फिर 2 जून 1929 ई. को आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हालात देश के कोने-कोने में वर्णन किए जाएँगे।

अख़बार पैग़ाम-ए-अमल फ़िरोज़पुर 24 मई 1929 ई ने लिखा:

"हम मुसलमानों को विशेष रूप से तथा अन्य इंसाफ़ पसन्द लोगों की सेवा में बहुत शिष्टाचार से कहना चाहते हैं कि यदि आप वास्तव में दो क़ौमों (मुस्लिम तथा हिन्दू) के मध्य सुलह तथा मैत्री चाहते हैं इसी तरह दुनिया के प्रत्येक धर्मों के संस्थापकों की इज़्ज़त तथा सम्मान को अपना प्रथम फ़र्ज़ यक़ीन करते हैं तो आओ हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया की इस मुबारक तहरीक पर लब्बैक कहते हुए इसको संभावित ढंग से सफल बनाने की कोशिश करें।

अन्य प्रैसों ने भी इन जलसों पर विस्तारपूर्वक टिप्पणियां कीं और इनके लाभदायक होने का इक़रार किया। अत: इन्क़िलाब लाहौर कश्मीरी गज़ट (लाहौर) मदीना (बिजनौर) तामीर (फ़ैज़ाबाद) मुहसिन (मुल्तान) सियासत (लाहौर) सहीफ़ा (हैदराबाद दक्कन) हक़ीक़त, हमदम, हिम्मत (लखनऊ) और बंगाल के कई अंग्रेज़ी, उर्दू, बंगाली, अख़बारों के इलावा विदेशों में डेली न्यूज़ शिकागो और अफ़्रीक़ा के कई अख़बारों ने अपने-अपने रंग में इस तहरीक का ज़ोरदार समर्थन किया और कुछ ने जलसों की तफसील भी प्रकाशित कीं।

सीरतुन्नबी के जलसों ने सारे देश में इत्तिहाद तथा इत्तिफ़ाक़ और अमन तथा मैत्री की एक नई रूह फूंक दी और इससे देश को कई लाभ प्राप्त हुए। अत: **पहला** लाभ यह हुआ कि हिन्दुस्तान के विभिन्न स्थानों के हज़ारों लोगों ने वह लिट्रेचर पढ़ा जो

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी पर प्रकाशित किया गया था।

दूसरा लाभ: यह हुआ कि ग़ैर मुस्लिमों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़ूबियों का खुला- खुला एतराफ किया और आप को मुहसिन-ए-आज़म स्वीकार किया। **तीसरा** लाभ: यह हुआ कि कुछ हिन्दू लीडरों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की केवल प्रशंसा तथा गुणगान ही न किया बल्कि उन पर इतना प्रभाव हुआ कि उन्होंने कहा कि हम आपको न केवल ख़ुदा का प्यारा समझते हैं बल्कि सबसे बढ़कर उच्च इन्सान विश्वास करते हैं क्योंकि आपकी ज़िन्दगी की एक-एक घटना सुरक्षित है जबकि दूसरों की नहीं। **चौथा** लाभ: यह हुआ कि मुसलमानों के विभिन्न फ़िर्क़ों को एक साझे प्लेटफार्म पर जमा होने का अवसर मिल गया।

पांचवां लाभ: यह हुआ कि बात खुल कर सामने आ गई कि हिन्दुओं का एक बड़ा वर्ग इस्लाम के संस्थापक के ख़िलाफ़ नापाक लिट्रेचर को सख़्त नफ़रत की निगाह से देखता है। **छठा लाभ:** यह हुआ कि इन जलसों का इतना प्रभाव हुआ कि कुछ स्थानों के लोगों ने फ़ैसला किया कि इस किस्म के जलसे प्रत्येक पंद्रह दिन या महीना या तीन-तीन या छ: महीनों में हुआ करें। **सातवाँ** लाभ: यह हुआ कि इन जलसों से देश की एकता पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा।

अत: उस समय से लेकर आज तक यह जलसे बड़े आयोजनों के रूप में आयोजित हो रहे हैं और इनके आरम्भ का सेहरा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि.के ऊपर है।

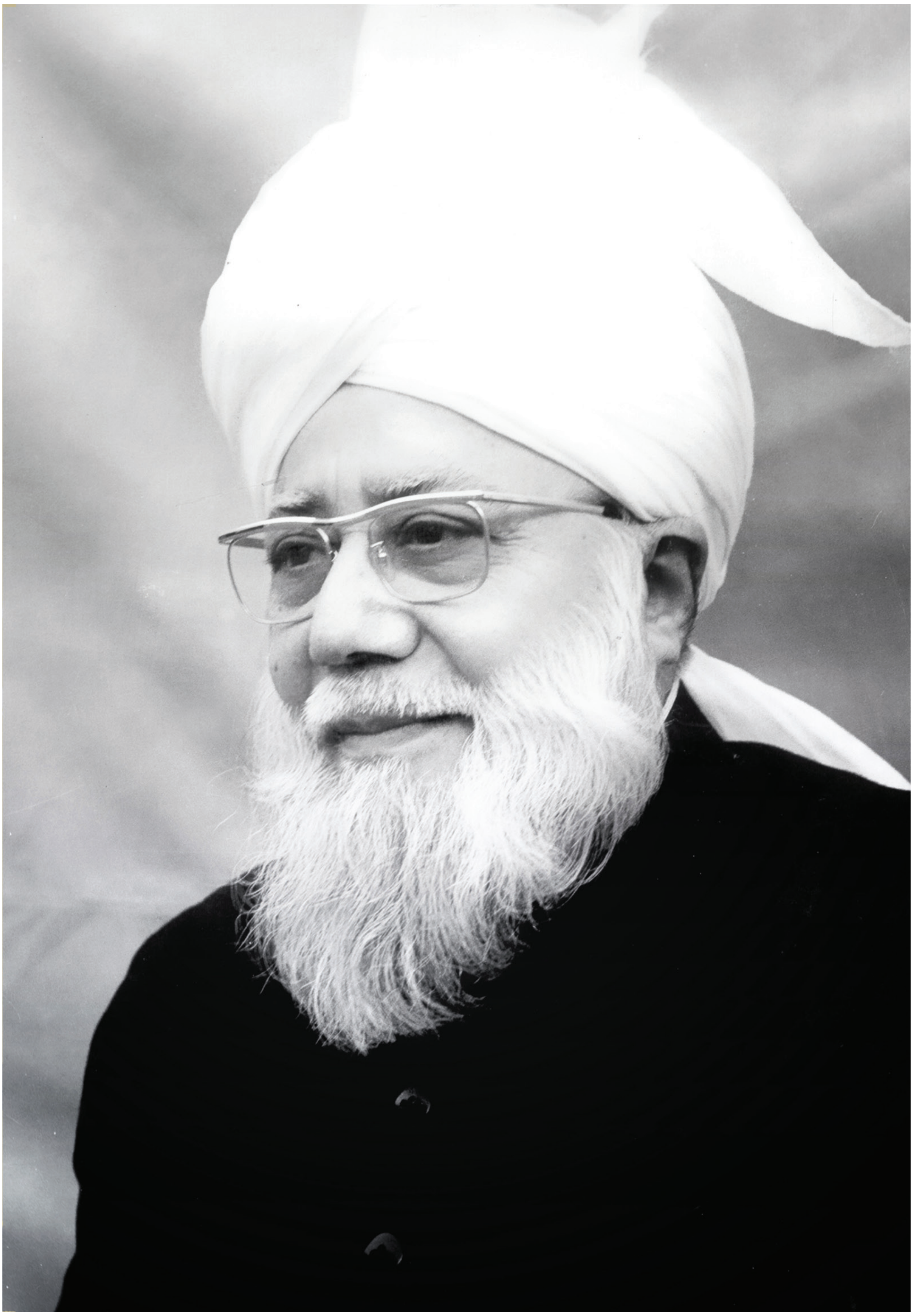

हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब
ख़लीफतुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला अन्हो

छठा अध्याय
क़ुदरत-ए-सानिया के तीसरे द्योतक का ज़हूर

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. अल्लाहु की बीमारी

सम्माननीय पाठको ! 1954-55 ई. में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. बीमार हो गए। हुज़ूर की बीमारी के कारण हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब पुत्र हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. की ज़िम्मेदारियां बढ़ गईं। इसी समय कुछ मुनाफ़िक़ों ने सिर उठाया और 1956 ई. में एक बड़ा फ़ित्ना खड़ा कर दिया। उनका एक आरोप हज़रत मियां साहिब की हस्ती भी थी। क्योंकि वे इस बात को समझ रहे थे कि कहीं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. के देहान्त के बाद जमाअत के नेक लोग आप को ख़लीफ़ा न चुन लें। वे अपने विचार में समय से पहले ही इस संभावित ख़तरे को हटा देना चाहते थे। इसलिए उन्होंने झूठा मन्सूबा बना कर आपके ख़िलाफ़ प्रोपगंडा करना शुरू कर दिया। परन्तु आप ने अपना मामला अल्लाह तआला के सपुर्द कर दिया और स्वयं ख़ुदा तआला ने आपकी सरफ़राज़ी के सामान ग़ैब से प्रकट फरमाए। इसी प्रोपगंडा के परिणामस्वरूप जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति तक आपकी निष्कलंकता अच्छी तरह स्पष्ट हो गई। आपने इस प्रोपेगंडा का जवाब किसी इश्तिहार, पेम्फ़ेलट या किसी और तरीके से न दिया बल्कि अल्लाह तआला को अपना वकील ठहराया। आपका धैर्य और सहनशीलता एक घटना से प्रकट होती है।

प्रोफ़ेसर चौधरी मुहम्मद अली साहिब लिखते हैं कि :

"कॉलेज, यूनिवर्सिटी की पृष्ठभूमि में हुज़ूर की मक़बूलियत और महबूबियत का अंदाज़ा तो हम सभी को था परन्तु ख़ुद्दामुल अहमदिया के इज्तिमाओं की शूरा के अवसर पर और कभी कभी अन्य अवसरों पर यह अनुभव भी होता था कि एक वर्ग ऐसा है जिस को हुज़ूर से ख़ुदा के लिए वैर है। हुज़ूर की मज़्लूमियत का कुछ इल्म विनीत को तब हुआ जब एक अत्यन्त गन्दी, गालियों से भरा हुआ ख़त किसी ने मुझे

लिखा जिसे मैं बर्दाश्त न कर सका और वह ख़त हुज़ूर की सेवा में प्रस्तुत करके इजाज़त चाही कि मुझे होस्टल, बास्केट बाल और अन्य ज़िम्मेदारियों से मुक्त कर दिया जाए। हुज़ूर मुझे रिहायश गाह पर ले गए, ड्राइंग रूम के साथ वाले स्टडी रूम में बिठाया, अन्दर तशरीफ़ ले गए और एक बस्ता लाकर मेरे सामने रख दिया और फ़रमाया कि इसे पढ़ो। मैंने पहला ख़त ही थोड़ा सा पढ़ा था कि सब्र न कर सका, ख़ुदा जानता है कि मेरा दिमाग़ चकरा गया और सोचा कि यह हसीन तथा जमील मुस्कुराता हुआ शगुफ़्ता ख़ुशबूदार फूल अंदर से कितना मज़्लूम है। हुज़ूर के वक़ार और सब्र की अज़्मत की हैबत दिल पर छा गई माफ़ी मांगी, तो फ़रमाया कि अपनी डयूटी पर दिलेरी से जमे रहना ही असल बहादुरी है। हालात कुछ ही क्यों न हों, कितना ही कीचड़ उछले, अपने फ़र्ज़ मंसबी पर दिलेरी से स्थापित रहें। फिर तो यह मामूल हो गया कि डाक खोलते तो कोई न कोई ऐसा ही ख़त थमा देते यहां तक कि विनीत फ़रियाद कर उठा। (उद्धृत मासिक ख़ालिद सय्यदना नासिर नम्बर अप्रैल मई 1983 ई पृष्ठ 82)

ख़िलाफ़त सानिया का आख़िरी जुम्अः और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि का आपको जुमा पढ़ाने का इर्शाद

5 नवम्बर 1965 ई. का जुमा हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु की ख़िलाफ़त का आख़िरी जुमा साबित हुआ। उस दिन हज़रत मियां नासिर अहमद साहिब को जुमा पढ़ाने का इरशाद मिला। हज़रत सय्यदा मरियम सिद्दीक़ा साहिबा बेगम हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. वर्णन करती हैं:

ख़लीफ़ा ख़ुदा बनाता है और अल्लाह तआला चुनाव के समय मोमिनीन के दिलों को इस ओर फेर देता है। प्रत्येक ख़िलाफ़त के समय ऐसा ही हुआ। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. की बीमारी के आख़िरी दिन थे ....जुम्अः के दिन मुअज़्ज़िन पूछने आया कि जुमा कौन पढ़ाएगा ? प्राय आप फ़रमाते, शम्स साहिब अर्थात मौलाना जलालुद्दीन साहिब शम्स, कभी शम्स साहिब रब्वा से बाहर गए होते तो फ़रमाते मौलाना अबुल अता साहिब या क़ाज़ी मुहम्मद नज़ीर साहिब जुम्अः पढ़ा दें। देहान्त

से दो-तीन-पहले जुम्अ था मुअज़्ज़िन पूछने आया तो आपने फ़रमाया नासिर अहमद। मुझे उस समय आश्चर्य हुआ कि इससे पहले मुझे याद नहीं कि कभी कहा हो पुनः पूछा तो फिर यही कहा कि नासिर अहमद। दफ़्तर का व्यक्ति पैग़ाम देने गया तो हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब जुमा पर जाने के लिए तैयार हो रहे थे। ख़्याल भी न था कि जुमा पढ़ाना पड़ेगा। आदेश की तामील की। यह भी बात ख़ुदा तआला की ओर से एक संकेत थी कि आइन्दा ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारियाँ उन पर पड़ने वाली हैं।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि का देहान्त और आपकी अवस्था

अतः वह घड़ी आ पहुंची जिससे दिल घबरा रहे थे। 7 और 8 नवम्बर 1965 ई. की मध्य रात्रि को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. का देहान्त हो गया।

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ۔ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ۔

(अल रहमान 27-28)

अनुवाद: इस (धरती) पर जो कुछ भी है नश्वर है और केवल तेरे प्रतिष्ठित और प्रतापी ख़ुदा का तेज ही शेष रहेगा।

इस अवसर पर आपकी जो अवस्था थी उसका वर्णन करते हुए आपकी एक बहन अमतुल बासित साहिबा वर्णन करती हैं:

मुझे वह समय कभी नहीं भूलता जब मेरे अब्बा जान (हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि) के देहान्त के बाद मैं उनके कमरे से बाहर निकली तो सामने भाई जान खड़े थे। आपके चेहरे पर भी बहुत दुःख के लक्षण थे। आपने आगे बढ़कर मुझे सीने से लगाया। और मेरे सिर पर प्यार का हाथ रखकरके फ़रमाया कि इस में कोई शक नहीं कि यह सदमा बहुत बड़ा है। परन्तु इस समय सारी जमाअत के लिए बहुत दुआओं की ज़रूरत है। अल्लाह तआला जमाअत को प्रत्येक प्रकार के बिखराव से बचाए। और एक हाथ पर इकट्ठा करे। मेरे आँसू रुक गए और मैं जमाअत के लिए दुआ में लग गई। और यूं मुझे पहली शिक्षा अपने ज़ाती ग़म से अधिक जमाअत के एक हाथ पर इकट्ठा होने और ख़िलाफ़त के महत्व की दी।

अब्बा जान के देहान्त के बाद जब तक ख़िलाफ़त का चुनाव नहीं हो गया मैं

बेचैनी के साथ फिरती, कभी एक कमरा में जाती थी कभी दूसरे में, चैन नहीं आ रहा था। मेरे अब्बा जान को ऊपर के कमरा से नीचे ले जाया जा चुका था। अब्बाजान का एक कमरा जो दफ़्तर था बंद पड़ा था घबरा कर ऊपर गई कि शायद तन्हाई मिले, इतने में भाई जान को देखा उस कमरा में बैठे हुए हैं, आँखें सदमा से लाल परन्तु पवित्र क़ुरआन की तिलावत कर रहे हैं।

(उद्धृत मासिक मिसबाह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सलिस नम्बर दिसम्बर 1982 ई, जनवरी 1983, पृष्ठ 36)

तृतीय ख़लीफ़ा के मुबारक युग का आरम्भ

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. ने 24 अगस्त 1945 ई. के ख़ुत्बा जुम्अ: में जो हुज़ूर ने डलहौज़ी के स्थान पर इरशाद फ़रमाया था। 1965 ई. में एक इन्क़िलाब वाले युग के शुरू होने की भविष्यवाणी की थी। हुज़ूर ने फ़रमाया :

मैंने अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से पिछले दस साल में जो बातें जमाअत की उन्नति और दुनिया के परिवर्तन के बारे में बताई थीं उनका नतीजा दुनिया के सामने आ गया है और दुनिया ने देख लिया है कि वे किस तरह शब्दश: पूरी हुई हैं। और वे उसी तरह घटित हुई हैं जिस तरह मैंने वर्णन की थीं।

अब मेरे दिल में यह बात कील की तरह गड़ गई है कि भविष्य में लगभग 20 सालों में हमारी जमाअत का एक नया जन्म होगा। बच्चों की पूर्णता तो कुछ माह में हो जाती है और नौ माह के अन्तराल में वे पैदा हो जाते हैं परन्तु बच्चे के जन्म और क़ौम के जन्म में बहुत बड़ा अन्तर होता है। एक बच्चे का जन्म बेशक नौ महीने में हो जाता है। परन्तु क़ौमों के जन्म के लिए एक लंबे समय की ज़रूरत होती है और मैं समझता हूँ कि अगले 20 साल का समय हमारी जमाअत के लिए नाज़ुक युग है। जैसे कि बच्चे के जन्म का समय नाज़ुक होता है। क्योंकि कई बार समय के पूरा होने के बावजूद जन्म के समय किसी कारण बच्चे का सांस रुक जाता है और वह मुर्दा के तौर पर दुनिया में आता है। अत: जहां तक हमारी क़ौम के जन्म का सम्बन्ध है, मैं इस बात को कील की तरह गड़ा हुआ अपने दिल में पाता हूँ कि यह बीस साल

का समय हमारी जमाअत के लिए नाज़ुक हालत है। अब यह हमारी क़ुर्बानी और त्याग ही होंगे जिनके नतीजा में हम क़ौमी तौर पर ज़िन्दा पैदा होंगे या मुर्दा। यदि हमने क़ुर्बानी करने से मुंह न मोड़ा और त्याग और तपस्या से काम लिया और तक़्वा की राहों पर क़दम मारा, मुहब्बत और कोशिश को अपना आचार और व्यवहार बनाया तो ख़ुदा तआला हमें ज़िन्दा क़ौम की अवस्था में पैदा होने की तौफ़ीक़ देगा। और अगले काम हमारे लिए आसान कर देगा।"

(तारीख़-ए-अहमदियत जिल्द 10 पृष्ठ 520)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने इस महान भविष्यवाणी के पूरा होने की ख़बर इन शब्दों में दी। फ़रमाया

"मेरे दिल में बड़ी शिद्दत से यह बात डाली गई है कि अगले 23-24 साल अहमदियत के लिए बड़े ही अहम हैं। कल का अख़बार आपने देखा ही होगा हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. ने सन् 1945 ई. में कहा था कि अगले बीस साल अहमदियत की पैदाइश के हैं इसलिए चौकस और बेदार रहो। कई बार ग़फ़लतों के नतीजा में जन्म के समय बचा वफ़ात पा जाता है। मैं ख़ुश हूँ और आपको भी यह ख़ुशख़बरी सुनाता हूँ कि वह बच्चा 1965 ई. में बख़ैर व आफ़ियत ज़िन्दा पैदा हो गया। जैसा कि आपने कहा था। मेरे दिल में यह डाला गया है कि बच्चा ख़ैरियत के साथ, पूरी सेहत के साथ और पूरी तन्दुरुस्ती के साथ 1965 ई में पैदा हो चुका है। अब 1965 ई से एक दूसरा युग शुरू हो गया है यह युग ख़ुशियों के साथ, प्रसन्नता के साथ, क़ुर्बानियां देते हुए, आगे ही आगे बढ़ते चले जाने का है। अगले 23 साल के अंदर अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार इस दुनिया में एक महान इन्क़िलाब पैदा होने वाला है या दुनिया हलाक हो जाएगी या अपने ख़ुदा को पहचान लेगी। यह तो अल्लाह तआला को मालूम है। मेरा काम दुनिया को सचेत करना है और मैं करता चला आ रहा हूँ। आपका काम सचेत रहना है और मेरे साथ मिल कर दुआएं करना है। ताकि यह दुनिया अपने रब्ब को पहचान ले और तबाही से बच जाए।"

(ख़ुत्बा जुम्अ:12 जून 1970 ई प्रकाशन अल्फ़ज़ल 15 जुलाई1970 ई पृष्ठ 11)

मुबारक युग का आरम्भ

सम्माननीय पाठको ! हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह का चुनाव ख़ुदाई इच्छा और इरादे के अनुसार बज़ाहिर कुछ अकाबरीन (चयन कमेटी के सदस्यों) के द्वारा हुआ परन्तु इसके पीछे अल्लाह तआला की पुरानी सुन्नत के अनुसार अल्लाह तआला का हाथ काम कर रहा था। जिसका स्पष्टीकरण हुज़ूर ने स्वयं एक ग़ैर मुल्की दौरे के समय इन शब्दों में फ़रमाया:

"..मुझ से किसी ने पूछा कि ख़िलाफ़त से पहले कभी आपने सोचा कि ख़लीफ़ा बन जाएं ? मैंने कहा No sane person can aspire to this कोई अक़्लमन्द व्यक्ति सोच भी नहीं सकता क्योंकि यह इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी है। कि कोई सोचेगा कैसे? कोई बेवकूफ ही होगा, पागल ही होगा जो यह कहेगा कि मुझे यह ज़िम्मेदारी मिल जाए।

ख़ुदा तआला के दरबार में तो हर समय ऐसे लोग मौजूद रहते हैं जो अपनी अपनी समझ के अनुसार और सामर्थ्य के अनुसार उसको पहचानने वाले, उसके आगे झुकने वाले, उसकी प्रशंसा करने वाले, उसकी पवित्रता वर्णन करने वाले और उसकी निकटता को प्राप्त करने की तड़प रखने वाले होते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क्या ही ख़ूब प्यारा शैर फ़रमाया है:

यह सरासर फ़ज़लो एहसाँ है कि मैं आया पसन्द
वर्ना दरगाह में तरी कुछ कम न थे ख़िदमत गुज़ार

हज़ारों लाखों व्यक्ति, ख़ुदा के बंदे, ख़ुदा के दरबार में हाज़िर रहते हैं। कोई व्यक्ति यह समझे कि ख़ुदा विवश हो गया है और मैं अकेला उसके दरबार में था और उसने, जैसे मैं अपना उदाहरण दूं कि यदि मैं यह समझूं कि मैं अकेला था और ख़ुदा विवश हुआ मुझे ख़लीफ़ा निर्धारित करने के लिए अर्थात मुझे पकड़े और ख़लीफ़ा निर्धारित कर दे तो मेरे जैसा पागल दुनिया में और कोई नहीं हो सकता। उस भरे दरबार में ख़ुदा ने अपनी मर्ज़ी चलाई। हम तो उस समय अर्थात ख़िलाफ़त के चुनाव के समय आँखें नीची किए हुए अपने ग़म और अपनी फ़िक्रों में बैठे हुए थे।"

फ़रमायाः -

"यह समझना कि जिस व्यक्ति को ख़ुदा तआला किसी काम के लिए चुने दुनिया का कोई इन्सान या मन्सूबा ख़ुदा तआला के उस चुनाव को ग़लत कर सकता है तो यह ग़लत है। क्योंकि देने वाला तो ख़ुदा ही है....ख़ुदा के दरवाज़ा के अलावा आप कौन सी चीज़ कहाँ से लेकर आते हैं?....पवित्र क़ुरआन में ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है ...(यह याद रखें विशेषकर नई नस्ल) का चुनाव होता है परन्तु ख़लीफ़ा अल्लाह तआला ही बनाता है।

हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ि. के युग में कुछ लोगों ने जो बाद में अलग हो गए थे उन में से किसी ने कहा कि हमने ख़लीफ़ा का चुनावा किया है आपने फ़रमाया कि मैं तुम्हारे चयन पर थूकता भी नहीं, मुझे जिसने ख़लीफ़ा बनाना था उसने बना दिया है।"

फिर फ़रमाया -

"मेरी ख़िलाफ़त के थोड़े ही समय बाद मुझे अल्लाह तआला ने इल्हाम के द्वारा फ़रमाया يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ۔ यह बताने के लिए कि मैं तेरे साथ हूँ। यह बिल्कुल शुरू ख़िलाफ़त के युग की बात है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का जब देहान्त हुआ तो मैं तालीमुल इस्लाम कॉलेज में प्रिंसिपल था। कॉलेज लाज में, मैं अपने बीवी बच्चों के साथ रहा करता था। मैं वहां आया मेरी तबीयत पर बड़ा बोझ था कि मैं अपनी रिहायश के लिए आपा सिद्दीक़ा अमतुल मतीन साहिबा को या महर आपा को जो हमारी तीसरी माता थीं उन को कष्ट दूं । परन्तु मेरे प्राइवेट सैक्रेटरी का दफ़्तर वहां था, वहीं सारे काम करने पड़ते थे। अतः दफ़्तर के ऊपर दो तीन कमरे थे। उन्हीं में हम उस समय तक जब तक कि सहूलत के साथ सबका दूसरे स्थान पर प्रबन्ध न हो गया टिके रहे। ख़िलाफ़त के थोड़े ही समय के बाद शायद नवम्बर 1966 ई की बात है। ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाने के बाद मैं वापस आया और दफ़्तर के ऊपर कमरे में जब सुन्नतों की नीयत बाँधी तो मेरे सामने ख़ानः काबा आ गया। जिसे मैंने कश्फ़ी हालत में नहीं जिसमें आँखें बंद हो जाती हैं बल्कि खुली आँखों के साथ देखा, अर्थात नज़ारा यह दिखाया गया कि मेरा रुख

एक angle बाएं ओर है और मैंने ख़ान: काबा की ओर मुँह सीधा कर लिया फिर नज़ारा बन्द हो गया। मैंने सोचा कि ख़ुदा की इच्छा से अभिप्राय यह नहीं कि प्रत्येक बार आकर क़िब्ला ठीक करवाया करूँ बल्कि अभिप्राय यह है कि मैं तुम्हारा मुँह, जिस मक़सद के लिए तुम्हें खड़ा किया है उससे इधर उधर नहीं होने दूँगा।

अत: ख़ुदा तआला ने ख़ुद आपको ख़िलाफ़त के स्थान पर फ़ायज़ फ़रमाया था और आपके द्वारा एक मुबारक युग का आरम्भ हुआ जैसा कि इलाही पुस्तकों में कहा गया था।

आपकी ख़िलाफ़त की ख़बर अल्लाह तआला ने अपने प्रतिष्ठित बंदों को आधी सदी पहले ही दे दी थी। अत: नीचे मोहतरम दोस्त मुहम्मद साहिब शाहिद के शब्दों में आपका एक लेख बतौर नमूना वर्णित है:

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह की आकाशीय उपाधि 'सादिक़'

1908 ई में एक ग़ैर मुबाए बुज़ुर्ग का ख़्वाब:

सय्यद असदुल्लाह शाह साहिब एक बैअत न करने वाले बुज़ुर्ग थे। जिनके कश्फ़ तथा इल्हामों का ग़ैर मुबायईन में चर्चा रहता था। मलिक ख़ुदाबख़्श साहिब पैन्शनर सुपरिन्टेन्डन्ट नहर विभाग ने रिसाला रूहुल इस्लाम जुलाई 1957 ई. में उनका एक ख़्वाब प्रकाशित किया था जिसमें उनको सन 1908 ई. में ख़िलाफ़त सानिया और ख़िलाफ़त सालिसा के क़ियाम की ख़बर दी गई थी।

जनाब मलिक ख़ुदाबख़्श साहिब के क़लम से इस मश्हूर ख़्वाब को विस्तारपूर्वक पढ़ें। लिखते हैं:

हज़रत शाह साहिब ने फ़रमाया कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का देहान्त हुआ तो उस समय क़ादियान के निकट एक गांव में रो-धो रहा था कि एक दोस्त जो कि ग़ैर अहमदी था आकर कहने लगा कि शाह साहिब आख़िर अंग्रेज़ों ने मिर्ज़ा साहिब को मरवा ही दिया। मैंने उसका जवाब दिया न अंग्रेज़ न तुम लोग उस शेर को मरवा सकते हो और न वह मर सकता है। वह बराबर ख़ुदा के फ़ज़्ल और

करम से ग़ुर्रा रहा है। इस पर उसने कहा हज़रत मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा। मैं अभी सीधा क़ादियान ही से आ रहा हूं और मैं स्वयं उनकी मुबारक लाश जो लाहौर से आई थी लोगों को दफ़्नाते देखकर आया हूँ। यह बात सुनकर मैं तुरन्त क़ादियान को रवाना हुआ उस समय वहां पहुंचा जब शाम हो चुकी थी और जमाअत हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहिब की बैअत कर चुकी थी। यह 27 मई 1908 ई. का दिन था। मैं उस समय हज़रत साहिब की क़ब्र पर जाना चाहता था। परन्तु अंधेरे और ढाब के कारण रास्ते की ख़राबी की वजह से न जा सका। ख़ैर रात को तहज्जुद में दुआ कर रहा था तो ख़्याल आया कि हज़रत मौलवी नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद कौन ख़लीफ़ा होगा और आवाज़ आई बशीरुद्दीन महमूद अहमद। फिर मैंने कहा उसके बाद कौन होगा? तो एक अत्यधिक सुरीली और लंबी आवाज़ आई....सादिक़।

(रूहुल इस्लाम जुलाई 1957 ई पृष्ठ 55)

इस रो'या से निम्नलिखित परिणाम निकलते हैं :

1.हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त पर जमाअत अहमदिया का सबसे पहला इज्मा (जमा होना) व्यक्तिगत ख़िलाफ़त पर हुआ।

2.सय्यद असदुल्लाह शाह साहिब जैसे ग़ैर मुबाए प्रतिष्ठित ख़िलाफ़ते ऊला में पूरे तौर पर इस बात पर दृढ़ थे कि भविष्य में भी शख़्सी ख़िलाफ़त ही की स्थापना होगी न यह कि अंजुमन ख़लीफ़तुल मसीह क़रार पाएगी। वर्ना उनको अगले ख़लीफ़ा के लिए दुआ करने की क्या ज़रूरत थी?

3.ख़ुदा तआला ने अगले ख़लीफ़ाओं के नामों का इन्किशाफ़ कर के यह फ़ैसला कर दिया कि उसके दरबार में भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की असल उत्तराधिकारी अन्जुमन नहीं बल्कि क़ुदरत-ए-सानिया के द्योतक कुछ वजूद हैं जो एक के बाद एक प्रकट होंगे।

4.अल्लाह तआला के दरबार में ख़िलाफ़त सानिया के लिए हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु को चुना जाना पहले से मुक़द्दर था। यहां तक कि आपके नाम तक से सय्यद असदुल्लाह शाह साहिब को भी ख़बर दी गई थी।

5. ख़िलाफ़ते सानिया के बाद ख़िलाफ़त सालिसा की स्थापना भी ख़ुदाई ख़बरों के अनुसार होना ज़रूरी था।

6. हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस को आकाश पर सादिक़ की उपाधि से नवाज़ा गया है जो ख़िलाफ़त सालिसा की सच्चाई पर ज़बरदस्त दलील है।

जीवन चरित्र सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाहो तआला

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने जहां औलाद की ख़ुशख़बरी दी थी वहां एक पोते की भी विशेष रूप से ख़ुशख़बरी दी थी जैसा कि फ़रमाया-

اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ نَّافِلَةً لَّكَ

(हकीक़तुल वह्यी पृष्ठ 95, तज़्किरा पृष्ठ 640)

अर्थात हम एक लड़के की तुझे ख़ुशख़बरी देते हैं जो तेरा पोता होगा।

मवाहेबुर्रहमान पृष्ठ 116 में भी पांचवें बेटे अर्थात पोते की ख़बर मौजूद है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. को भी अल्लाह तआला ने एक मौऊद बेटे की ख़बर दी थी अत: आप अपने एक पत्र में फ़रमाते हैं:

"मुझे भी ख़ुदा तआला ने ख़बर दी है कि तुझे एक ऐसा लड़का दूँगा जो धर्म का नासिर होगा और इस्लाम की सेवा पर तत्पर होगा।" (तारीख़-ए-अहमदियत भाग 4 पृष्ठ 320)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस भी एक रंग से मौऊद ख़लीफ़ा थे। उन भविष्यवाणियों के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह सालिस 16 नवम्बर 1909 ई. को रात को पैदा हुए।

17 अप्रैल 1922 ई. को जब आपकी उम्र 13 साल थी पवित्र क़ुरआन हिफ्ज़ करने की तौफ़ीक़ पायी। इसके बाद हज़रत मौलाना सय्यद सरवर शाह साहिब से अरबी और उर्दू पढ़ी। फिर मदर्सा अहमदिया में धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए

बाक़ायदा दाख़िल हुए और जुलाई 1929 ई में आप ने पंजाब यूनिवर्सिटी से मौलवी फ़ाज़िल की परीक्षा पास की। इसके बाद मैट्रिक का इम्तिहान पास किया। और फिर गर्वनमेंट कॉलेज लाहौर में दाख़िल होकर 1934 ई. में बी.ए. की डिग्री प्राप्त की। अगस्त 1934 ई. में आपकी शादी हुई। 6 सितम्बर 1934 ई को शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लिस्तान के लिए रवाना हुए। ऑक्सफ़ोर्ड यूनीवर्सिटी से एम.ए की डिग्री प्राप्त करके नवम्बर 1938 ई. में वापस तशरीफ़ लाए। यूरोप से वापसी पर जून 1939 ई. से अप्रैल 1944 ई. तक जामिया अहमदिया के प्रिंसिपल रहे। फरवरी 1939 ई. में मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया के सदर बने। अक्तूबर 1949 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. ने ख़ुद्दामुल अहमदिया की सदारत का ऐलान फ़रमाया तो नवम्बर 1954 ई. तक बहैसियत उत्तराधिकारी सदर मज्लिस के कामों को बहुत उम्दगी से चलाते रहे। मई 1944 ई. से लेकर नवम्बर 1965 ई. तक (अर्थात ख़िलाफ़त के चुनाव तक) तालीमुल इस्लाम कॉलेज में प्रिंसिपल की हैसियत से फ़राइज़ सरअंजाम दिए। भारत विभाजन के अवसर पर बाउन्डरी कमीशन के लिए सम्बन्धित मवाद को जमा करने में प्रमुख भूमिका अदा की। 14 अगस्त 1947 ई. से 15 नवम्बर 1947 ई. हिफ़ाज़त-ए-मर्कज़ अहमदियत के लिए क़ादियान में निवास किया।

1953 ई में पंजाब पाकिस्तान में फ़साद हुए और मार्शल ला लागू हुआ तो उस समय आपको गिरफ़्तार कर लिया गया। इस तरह सुन्नते यूसुफ़ी के अनुसार आपको कुछ समय क़ैद की मुसीबतें झेलनी पढ़ीं। 1954 ई. में मज्लिस अंसारुल्लाह की क़ियादत आपके सुपुर्द की गई। मई 1955 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. ने आपको सदर अंजुमन अहमदिया का सदर निर्धारित फ़रमाया। इस पद पर आप ख़िलाफ़त के चुनाव तक आसीन रहे।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह और रब्बानी भविष्यवाणियां

सम्माननीय पाठको ! हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि के देहान्त के बाद अल्लाह तआला के इरादा के अनुसार आप तीसरे ख़लीफ़ा बने। आपके द्वारा हज़रत मसीह

मौऊद अलैहिस्सलाम और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि की बहुत सी भविष्यवाणियां पूरी हुईं। उनका वर्णन हज़रत मौलाना जलालुद्दीन साहिब शम्स के एक निबन्ध के द्वारा किया जा रहा है। यह निबन्ध किताब "आलमगीर बरकात मामूर-ए-ज़माना" लेखक मौलाना अब्दुर्रहमान मुबश्शिर पृष्ठ 534 से 544 में प्रकाशित किया गया है।

आप लिखते हैं:

"7-8 नवम्बर की मध्य रात्रि ख़ुदा का वह महबूब बन्दा महमूद वह सम्माननीय इन्सान और वह मुस्लेह मौऊद जिसका नुज़ूल ख़ुदाई प्रताप के प्रकटन का कारण था अपने नफ़सी नुक़्ता-ए-आसमान की ओर अपने चिरस्थायी महबूब ख़ुदा के पास उठाया गया। وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا आपका देहान्त भी ठीक उस रो'या के अनुसार हुआ था जो हुज़ूर ने 23 अप्रैल 1944 ई को देखी थी। जिसमें स्पष्ट रूप से यह वर्णन था कि आप इस नश्वर घर में दावा मुस्लेह मौऊद के बाद इक्कीस साल तक रहेंगे।

आपका देहान्त مَوْتٌ حَسَنٌ فِيْ وقتٍ حَسَنٍ के अनुसार शुभ समय में शुभ अन्त था। हुज़ूर ने फ़रमाया था:

"इस इल्हाम में मुझे हसन रज़ियल्लाहो अन्हो का प्रतिरूप कहा गया है और बताया गया है कि अल्लाह तआला मेरी ज़ात के साथ सम्बन्ध रखने वाली भविष्यवाणियों को पूरा करेगा और मेरा अन्त भला होगा। और जमाअत में किसी प्रकार की ख़राबी पैदा नहीं होगी। فَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى ذَالِكَ

अतः आपका देहान्त ऐसे समय में हुआ कि जब पाकिस्तान में जंग के कारण फ़िर्क़ों वाले मतभेद और झगड़े दब गए थे और क़ौम राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्र में इकट्ठी हो गई थी। फिर देहान्त के बाद जंग अस्थायी तौर पर रुक भी गई थी। ऐसे समय में जो वस्तुतः अच्छा समय था हुज़ूर का देहान्त हुआ और खुल्फा इन्तिख़ाब कमेटी के प्रतिनिधियों को मर्कज़ में पहुंचने में कोई परेशानी न आई और बहुत अच्छी तरह से ख़लीफ़ा के चयन का काम सरअंजाम पाया। अलहम्दु लिल्लाह।

यह केवल अल्लाह तआला का फ़ज़्ल था। कि एक बार फिर उस ने अपने तसर्रुफ़ से जमाअत अहमदिया को एक हाथ पर जमा होने की सामर्थ्य प्रदान की और

ग़मों के एक ज़लज़ला के बाद जमाअत अहमदिया ने क़ुदरत-ए-सानिया के तीसरे द्योतक के प्रादुर्भाव की छत्रछाया में आराम पाया।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाह ने ख़लीफ़ा राशिद हज़रत उमर रज़यिल्लाहु के नक़्शे क़दम पर इन्तिख़ाब ख़िलाफ़त के लिए जमाअत के प्रतिनिधियों की एक मज्लिस बनाई थी जो सदर अन्जुमन अहमदिया के नाज़िर साहिबान, तहरीक जदीद के वुकला, बाहरी देशों और इलाक़ों में तब्लीग़ का सम्मान प्राप्त करने वाले मुबल्लग़ीन, सहाबा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम और 1901 ई से पहले सहाबा किराम के बड़े बेटे और जमाअत के प्रमुखों इत्यादि पर आधारित थी। प्रतिनिधियों की एक भारी संख्या अर्थात 205 लोग 24 घंटे के अंदर चुनाव के लिए पहुंच गए थे। जिनकी बड़ी संख्या ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि के बड़े बेटे हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का तीसरा ख़लीफ़ा चुना। इस चुनाव में न कोई व्यक्ति मन्सब ख़िलाफ़त का उम्मीदवार होता है और न ही किसी व्यक्ति के बारे में राए मश्वरा किया जाता है। समस्त मेम्बरों से वादा लिया जाता है कि वह अल्लाह तआला को हाज़िर जान कर पूरी ईमानदारी से राय देंगे। उन मेम्बरों को यह अनुभव होता है कि उन पर भरोसा करके सारी जमाअत की ओर से ख़लीफ़ा के चुनाव की नाज़ुक ज़िम्मेदारी दी गई है जिसे उन्हें बहुत अधिक तक़्वा और दयानतदारी से निभाना होगा। उन्हें यह बात दृष्टिगत होती है कि इलाही आदेश اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا के अनुसार वे अपने वोट के प्रयोग के लिए ख़ुदा के आगे जवाब देह होंगे। अत: इन समस्त बातों की मौजूदगी में एक इलाही तसर्रुफ़ कम कर रहा होता है। जो मोमिनों को एक व्यक्ति की ओर लाता है। अत: ख़िलाफ़त सालिसा के इन्तिख़ाब के अवसर पर ऐसा ही नज़ारा देखने में आया। यूं महसूस होता था कि कोई ग़ैबी ताक़त समस्त दिलों को एत ओर ले जा रही है मुतसर्रिफ़ है और ख़ुदा तआला के फ़रिश्ते दिलों पर धैर्य और शान्ति नाज़िल कर रहे हैं। अलहम्दु लिल्लाह कि ख़लीफ़ा सालिस का इन्तिख़ाब ठीक अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार हुआ। जिसका प्रमाण यह भी है कि अंबिया अलैहिस्सलाम और

कुछ दूसरी महान रूहानी शख़्सियतों के लिए ख़ुदा तआला के कलाम में पहले से पेशगोइयां मौजूद होती हैं जो उनके निर्धारण में इन्सानों के लिए मार्गदर्शन का काम देती हैं। इसके अतिरिक्त सैंकड़ों रो'या और कश्फ़ होते हैं जो उन मुक़द्दस वजूद के रूहानी रूप से फ़ायज़ होने से पहले ही मोमिनों को दिखाए जाते हैं। हम पहले सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अस्सालिस के बारे में की कुछ आकाशीय गवाहियां वर्णन करते हैं जो हुज़ूर की तस्दीक़ करती हैं और जिनकी सच्चाई पर ख़ुदा के ख़लीफ़ा होने से मुहर लगा दी है।

यहूद की हदीसों की मशहूर किताब तालमूद में लिखा है :

It is said that he (the messiah) shall die and his kingdom descend to his son and grandson.

(तालमूद बार जोज़फ़ बार्क्ले आध्याय 5 पृष्ठ 37 प्रकाशन लन्दन 1878 ई)

अनुवाद: यह भी एक रिवायत है कि मसीह के देहन्त पाने के बाद उसकी बादशाहत (अर्थात आकाशीय बादशाहत) उसके बेटे और फिर उसके पोते को मिलेगी। इस रिवायत के समर्थन में यसयाह का उद्धरण दिया जाता है।

यह भविष्यवाणी मसीह नासरी के वजूद में तो पूरी नहीं हुई। क्योंकि न उसका कोई बेटे था न पोता। यसयाह के अध्ययन से मालूम होता है कि यह भविष्यवाणी मसीह मौऊद और उसके मुबश्शिर बेटे और पोते के बारे में है। जिनकी अधिक स्पष्टता स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के इल्हामों में है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जहां मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के बारे में يَتَزَوَّجُ وَيُوْلَدُ لَهٗ के शब्दों में यह बिशारत दी है कि मसीह मौऊद अल्लाह तआला के इरशाद के अनुसार एक शादी करेंगे और उनके यहाँ विशेष महत्वाकांक्षी औलाद होगी और उसे एक ऐसा बेटा भी अल्लाह तआला प्रदान करेगा जो हुस्न तथा उपकार में अपने बाप मसीह मौऊद का समरूप होगा। वहां हुज़ूर ने यह भी ख़बर दी है कि फ़ारस की नस्ल में से एक व्यक्ति नहीं बल्कि कई लोग धर्म की सेवा के लिए कमर बांधेंगे। और उनके कारनामे इस्लाम के पुनः जागरण और ईमान को सुरय्या

की बुलन्दियों से वापस लाने के समान होने के विशेष महत्व वाले होंगे और उनका वजूद सूर: जुमा की आयत وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ के अनुसार मुक़द्दस गिरोह की पेशवाई करेगा।

इस हदीस में रजुलुन और रिजालुन के शब्द पाए जाते हैं जिस से तात्पर्य यह कि सुरय्या से ईमान को वापस लाने वाला एक व्यक्ति होगा या कई व्यक्ति चूंकि इस ख़ानदान के लोग एक ही रूहानी सिलसिला के ख़ादिम होंगे और एक ही व्यक्ति की नस्ल होंगे। इसलिए मानो वे कई होने के बावजूद समूहवाचक संज्ञा के अनुसार एक ही व्यक्ति की श्रेणी में हैं।

जिस तरह तालमूद में मसीह मौऊद के साथ एक बेटे और पोते की भविष्यवाणी मौजूद है कि वे आकाशीय बादशाहत में उसके ख़लीफ़ा होंगे। इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के इल्हामों में आपके बेटे मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु और पोते के बारे में भी बिशारतें मौजूद हैं। अत: तज़किर: पृष्ठ 646 उद्धृत हक़ीक़तुल वह्यी में ये इल्हाम वर्णित हैं:

اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ مَظْهَرِ الْحَقِّ وَ الْعُلَا كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَآءِ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ نَّافِلَةً لَّكَ अर्थात हम तुझे एक लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं जिसके साथ सत्य का प्रकटन होगा। मानो आकाश से ख़ुदा का अवतरण होगा और हम इसके साथ एक और लड़के की तुझे ख़ुशख़बरी देते हैं जो तेरा पोता होगा।

इसी तरह हुज़ूर फ़रमाते हैं:

बयालीसवां निशान यह है कि ख़ुदा तआला ने पोते के तौर पर पांचवें लड़के का वादा किया था जैसा कि किताब मवाहिबुर्रहमान के पृष्ठ 139 में यह भविष्यवाणी लिखी है وَبَشَّرَنِيْ بِخَامِسٍ فِيْ حِيْنٍ مِّنَ الْاَحْيَانِ अर्थात पांचवां लड़का है जो चार के अतिरिक्त पोते के रूप में पैदा होने वाला था उसकी ख़ुदा ने मुझे ख़ुशख़बरी दी कि वह किसी समय ज़रूर पैदा होगा और उसके बारे में एक और इल्हाम भी हुआ कि जो अख़बार अल-बदर और अल्हकम में बहुत पहले प्रकाशित हो चुका है और वह यह है اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ نَّافِلَةً لَّكَ۔ نَافِلَةً مِّنْ عِنْدِيْ अर्थात हम एक लड़के

की तुझे ख़ुशख़बरी देते हैं कि जो पोता होगा अर्थात लड़के का लड़का। यह नाफ़ला हमारी ओर से है। (हकीक़तुल वह्यी पृष्ठ 218 - 219)

और यह प्रतिरूप मौऊद वास्तुत: मौऊद बेटे का ही बेटा था और उसी को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पांचवां बेटा क़रार दिया गया है और इस पांचवें बेटे के बारे में हज़रत अक़्दस फ़रमाते हैं:

"ख़ुदा की क़ुदरतों पर क़ुर्बान जाऊं कि जब मुबारक अहमद का निधन हुआ। साथ ही ख़ुदा तआला ने यह इल्हाम किया कि اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ حَلِيْمٍ يَنْزِلُ مَنْزِلَ الْمُبَارَكِ अर्थात एक दयालु लड़के की तुझे ख़ुशख़बरी देते हैं जो मुबारक अहमद के स्थान पर होगा और उसका क़ायम मक़ाम और समानता वाला होगा। अत: ख़ुदा तआला ने न चाहा कि दुश्मन ख़ुश हो। इसलिए मुबारक अहमद की वफात के बाद एक दूसरे लड़के की बिशारत दे दी जाए। ताकि यह समझा जाए कि मुबारक अहमद फ़ौत नहीं हुआ।" (इश्तिहार तब्सरा 5 नवम्बर 1907 ई.)

और اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ حَلِيْمٍ का इल्हाम 16 सितम्बर 1907 ई को हुआ था। जिस दिन साहिबज़ादा मिर्ज़ा मुबारक अहमद का देहान्त हुआ था। इल्हाम हुआ: आपके लड़का पैदा हुआ है। (तज़्किर: पृष्ठ- 733)

और 6, 7 नवम्बर 1907 ई को इल्हाम हुआ:

اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ اِسْمُهٗ يَحْيٰى۔ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحَابِ الْفِيْلِ۔

अर्थात हम तुझे एक लड़के की बिशारत देते हैं जिसका नाम यह्या है।

हालाँकि इससे पहले साहिबज़ादा मिर्ज़ा मुबारक अहमद के देहान्त पर اِنِّيْ اَسْقُطُ مِنَ اللّٰهِ وَاُصِيْبُهٗ का इल्हाम हुआ था जिसमें यह ख़बर दी गई थी कि वह जल्द मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा।

आपके बारे में यह इल्हाम भी हुआ था कि كَفٰى هٰذَا (तज़्किरा- 242) जिसका अनुवाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि ने यह फ़रमाया है: कि यह नस्ल या औलाद काफ़ी है और अब इसके बाद कोई पुत्र संतान नहीं होगी।

(सादिक़ों की रोशनी को कौन दूर कर सकता है, पृष्ठ 48)

परन्तु साहिबज़ादा मिर्ज़ा मुबारक अहमद के देहान्त के बाद एक और लड़के के जन्म के बारे में ऊपर वर्णित इल्हामों में जो ख़ुशख़बरियाँ दी गई थीं उनसे अभिप्राय मौऊद पोता ही था। जैसा कि ऊपर उद्धृत हकीक़तुल वह्यी में वर्णन आ चुका है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने भी इस पांचवें बेटे से अभिप्राय पोता ही लिया था और वास्तव में भी हुज़ूर के यहाँ इल्हाम "कफ़ा हाज़ा" के अनुसार मिर्ज़ा मुबारक अहमद मरहूम के बाद कोई पुत्र सन्तान नहीं हुई।

यद्यपि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ऊपर वर्णित इल्हामों का मिस्दाक़ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि के पहले बेटे मिर्ज़ा नसीर अहमद मरहूम को क़रार दिया परन्तु वह अल्पायु में ही फ़ौत हो गए। इसलिए अल्लाह तआला के निकट ऊपर वर्णित इल्हामों में इस मौऊद का एक नाम यह्या है जिसका अनुवाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम स्वयं यह फ़रमाते हैं:

इसका अभिप्राय यह है कि ज़िन्दा रहने वाला। (तज़्किरा पृष्ठ- 739)

यह अजीब बात है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह मौऊद पोता आपके मौऊद बेटा से बहुत समानता रखता है कि जैसे लंबी उम्र पाने वाले मौऊद पोते की भविष्यवाणी के बाद 1908 ई में बशीर सानी मुस्लेह मौऊद के यहां नसीर अहमद मरहूम पैदा हुआ। जिसे मुबश्शर मौऊद पोता का मिस्दाक़ समझा गया परन्तु वह भी बशीर प्रथम की तरह ही छोटी उम्र में वफ़ात पा गए और इसके बाद लम्बी उम्र पाने वाले मौऊद पोते और दूसरे शब्दों में पांचवें बेटे का सच्चा मिस्दाक़ पैदा हुआ। अर्थात साहिबज़ादा मिर्ज़ा नासिर अहमद।

अत: घटनाएं और सन्दर्भ और ख़िलाफ़त साल्सा का इन्तिख़ाब और जमाअत के लोगों की बहुत सी सच्ची ख्वाबों ने यह प्रमाणित कर दिया कि पांचवां बेटा और मौऊद नाफ़ला से अभिप्राय मिर्ज़ा नसीर अहमद की बजाय साहिबज़ादा मिर्ज़ा नासिर अहमद थे जिनका जन्म 16 नवम्बर 1909 ई को हुआ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वर्णित इल्हामों के पात्र का जो हम ने निर्धारण किया है उसकी तसदीक़ उस आकाशीय बिशारत से भी होती है, जो अल्लाह

तआला ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि को साहिबज़ादा मिर्ज़ा नासिर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह सालिस के जन्म से पहले दी थी। अत: आप अपने एक पत्र में जो हुज़ूर ने अपने मौऊद बेटे के जन्म से दो महीने पहले अर्थात 26 सितम्बर 1909 ई को तहरीर कर दिया था।

मुझे भी ख़ुदा तआला ने ख़बर दी है कि मैं तुझे एक ऐसा लड़का दूँगा जो धर्म का नासिर होगा और इस्लाम की सेवा पर कमर बांधे तैय्यार होगा।

(अल्फ़ज़ल 18 अप्रैल 1915 ई.)

'हक़्क़ औलाद दर औलाद' की व्याख्या

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि. ने ख़ुत्बा जुम्अः में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक इल्हाम का वर्णन करते हुए फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम देहान्त पा गए। आप के देहान्त के बाद माता जी मुझे बैतुद्दुआ में ले गईं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के इल्हामों वाली कापी मेरे सामने रख दी और कहा मैं समझती हूँ यही तुम्हारा सबसे बड़ा विरसा है। मैंने उन इल्हामों को देखा तो उनमें एक इल्हाम आपकी औलाद के बारे में यह लिखा था हक़्क़ औलाद दर औलाद... हक़्क़ औलाद दर औलाद के वस्तुत: में अर्थ यही थे कि वह हक़्क़ जो बाहर से सम्बन्ध रखता है अर्थात ज़मीनों और जायदादों में हिस्सा। यह कोई अधिक क़ीमती नहीं। अधिक क़ीमती यह चीज़ है कि मैंने तुम्हारी औलाद के दिमाग़ों में वह क़ाबिलियत रख दी है कि जब भी वे उस योग्यता से काम लेंगे दुनिया के लीडर ही बन जाएँगे..... और यह वह विरसा है जो हमने तुम्हारी औलाद के दिमाग़ों में स्थायी तौर पर रख दिया है।

(अल्फ़ज़ल भाग 44 नम्बर 247 दिनांक 22 अक्तूबर 1955 ई पृष्ठ 5)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस की क़ुबूलियत-ए-दुआ के निशान

सम्माननीय पाठको ! अल्लाह तआला ने अपने ख़लीफ़ाओं की निशानियों में से एक क़ुबूलियत-ए-दुआ की निशानी रखी है। इसके द्वारा अल्लाह तआला जहां अपनी

हस्ती के प्रमाण देता है वहीं दुनिया को भी बताता है कि यह मेरा बन्दा मेरा चुना हुआ और प्यारा है वह इन्सान जिसने बाद में मस्नद-ए-ख़िलाफ़त पर आसीन होना होता है, बचपन से ही उसके स्वभाव में नेकी तक़्वा और पवित्रता के अलावा दुआओं का विशेष शौक़ तथा रुचि रख दी जाती है। और जवान होते होते यह शौक़ और अधिक परवान चढ़ने लगता है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस के इबादत और ज़ौक़-ए-दुआ के बारे में एक गवाह के वर्णन को मौलाना अबुल मुनीर नूरुल हक़ साहिब इस तरह लिखते हैं:

तालीमुल इस्लाम कॉलेज रब्वा की इमारत के पूर्वी ओर आपकी रिहायश गाह थी। वहां आपके पास गुल ख़ान नामी एक पठान चौकीदार थे जो बहुत मुख़लिस और नेक व्यक्ति थे। 1955 ई से ख़िलाफ़त के चुनाव तक के समय में प्राय मैं आपके पास कुछ कामों के लिए आता जाता रहता था। मैंने एक दिन गुल ख़ान साहिब से यह पूछा कि सुनाओ ! मियां साहिब की ज़िन्दगी कैसे गुज़रती है। कहने लगे रात गए तक अपनी ज़िम्मेदारियों के अदा करने के बाद घर आते हैं और थोड़ी देर आराम फ़रमाने के बाद नमाज़ तहज्जुद के लिए अपने ड्राइंगरूम में आ जाते हैं और बड़ी व्याकुलता के साथ अल्लाह तआला के आस्ताना पर गिर जाते हैं और एक लम्बा समय रो-रो कर ख़ुदा तआला से दुआएं करते हैं। वह वर्णन करते हैं कि उन्होंने हज़रत मियां साहिब के इसकाम में कभी नाग़ा नहीं देखा।

(मासिक ख़ालिद सय्यदना नासिर नम्बर अप्रैल मई 1983 ई पृष्ठ 126, 127)

हुज़ूर की यह दिनचर्या का काम था और यही कारण है कि हुज़ूर अनवर ने ख़िलाफ़त और इमामत के महान मन्सब पर फ़ाइज़ होने के बाद अल्लाह तआला से क़बूलियत-ए-दुआ का निशान मांगा और अपनी ख़िलाफ़त के पहले जलसा सालाना पर जमाअत के लोगों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया

"हे जान से अधिक ज़्यादा प्यारे! मेरा कण कण आप पर क़ुर्बान कि आप को ख़ुदा तआला ने जमाअत के एकता और जमाअत की दृढ़ता का वह उच्च नमूना दिखाने का सामर्थ्य प्रदान किया कि आकाश के फ़रिश्ते आप पर गर्व करते हैं। आकाशीय रूहों के सलाम का तोहफ़ा स्वीकार करो। इतिहास आपके नाम को इज़्ज़त के साथ

याद रखेगी और आने वाली नस्लें आप पर गर्व करेंगी कि आपने केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए इस कमज़ोर और नाकारा के हाथ पर मुत्तहिद होकर यह वादा किया है कि तौहीद और अल्लाह तआला की महानता और उसके प्रताप के क़ियाम और इस्लाम के ग़लबा के लिए जो तहरीक और कोशिश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने शुरू की थी और जिसे हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने अपना आराम खो कर अपने जीवन के प्रत्येक सुख को क़ुर्बान करके सारे संसार तक फैलाया है आप उस कोशिशों को तेज़ से तेज़ करते चले जाएँगे।

मेरी दुआएं आपके साथ हैं और मैं हमेशा आपकी दुआओं का भूखा हूँ। मैंने आपके दिल की शान्ति के लिए आपके बोझ को हल्का करने के लिए आपकी परेशानियों को दूर करने के लिए अपने दयालु रब्बे से दुआ की क़बूलियत का निशान मांगा है और मुझे उस पवित्र हस्ती पर पूरा विश्वास और भरोसा है पर कि वह मेरी इस दुआ को अस्वीकार नहीं करेगा।

(ख़िताब जलसा सालाना 19 दिसम्बर 1965 ई उद्धृत जलसा सालाना की दुआएं पृष्ठ 3, 4)

फ़रमाया "अब मैं कुछ अपने बारे में कहना चाहता हूँ। मैं बिना किसी झिझक के और बिना किसी बनावट के अपने ख़ुदा के समक्ष यह स्वीकार करता हूँ कि मैं कुछ भी नहीं हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बराहीन अहमदिया में पवित्र क़ुरआन के मानने वालों के बारे में यह वर्णन फ़रमाया है कि वे हमेशा नम्रता और विनम्रता को पसन्द करते हैं और अपनी कमज़ोरी और हीनता की असल हक़ीकत को समझते हैं।

मैं जब अपने आप पर ध्यान करता हूँ तो अपने आपको उस स्थान से भी बहुत नीचे पाता हूँ क्योंकि हुज़ूर ने जिन लोगों का वर्णन किया है उनकी कुछ ख़ूबियां भी वर्णन की हैं परन्तु मैं अपने अंदर कोई ख़ूबी नहीं पाता और हैरान हूँ कि मैं किन शब्दों में अपने आप को वर्णन करूँ। मैं तो प्राय सोचता हूँ और हैरान होता हूँ कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जैसा वजूद अपने ख़ुदा को सम्बोधित करके यह कहता है कि :

किरम ख़ाकी हूँ मरे प्यारे न आदम ज़ाद हूँ

तो मेरे जैसा इन्सान किन शब्दों में अपने आपको अपने ख़ुदा के सामने पेश करे। परन्तु मैं इस सारी नम्रता और विनम्रता के बावजूद जो मैं अपने अन्दर पाता हूँ और यह समझने के बावजूद कि मैं तो कुछ नहीं हूँ फिर भी यह कहने पर विवश हूँ कि अल्लाह तआला ने जिस स्थान पर मुझे खड़ा किया है उसकी सुरक्षा का उसने स्वयं ज़िम्मा ले रखा है। मुझे यक़ीन है कि जब तक वह मुझे ज़िन्दा रखना चाहेगा उस क़ादिर का मज़बूत हाथ हमेशा मेरे साथ रहेगा और मेरे हाथ से वह जमाअत को जिस ओर भी ले जाएगा इंशाअल्लाह उसमें ज़रूर सफलता होगी, इसलिए नहीं कि मेरे अन्दर कोई ख़ूबी है बल्कि इसलिए कि उसी क़ादिर के हाथ में सब ताक़तें हैं और उसका वादा है कि वह मुझे सफलता प्रदान करेगा ... इस्लाम, अहमदियत के माध्यम से सारी दुनिया पर ग़ालिब आएगा और प्रत्येक वह ताक़त जो उसकी राह में रोक होगी अपमानित तथा असफल कर दी जाएगी। दुनिया की समस्त धन भी यदि झूठे धर्मों के सहायक हों और वे इस्लाम के विरोध पर तत्पर हों तो उसका परिणाम इंशा अल्लाह मिट्टी की उस चुटकी से भी अधिक तुच्छ होगा जो आपके पांव के नीचे है...

हमारी हरकत जिस दिशा की ओर भी होगी वहां पर इस्लाम का झंडा गाड़ा जाएगा और वह हमारी तुच्छ कोशिशों में ग़ैरमामूली बरकत पैदा करेगा।

मैं समस्त जमाअत को जोकि यहां मौजूद है और पूरी दुनिया को पूर्ण यक़ीन के साथ यह कहता हूँ कि अगले पच्चीस तीस साल के अन्दर दुनिया में एक महान परिवर्तन पैदा होने वाला है। वे दिन निकट हैं जब दुनिया के बहुत से देशों की अधिकतर बुद्धिमान जनता इस्लाम को क़बूल कर चुकी होगी और दुनिया की सब ताक़तें और मुल्क भी इस आने वाले रूहानी इन्क़िलाब को रोक नहीं सकते। जो ज़बानें आज रसूलुल्लाह को गालियां दे रही हैं वही कल आप पर दुरूद भेज रही होंगी। ये दिन यक़ीनन आने वाले हैं।

परन्तु यह समय से पहले की ख़बरें हम पर भी कुछ ज़िम्मेदारियाँ डालती हैं जिन्हें बहरहाल हमने पूरा करना है। हमें बड़ी-बड़ी क़ुर्बानियां देनी होंगी। जब हम अपना सब कुछ ख़ुदा की राह में क़ुर्बान कर देंगे तब ख़ुदा कहेगा कि मैं अपना कुछ क्यों

बचा कर रखूं, मैं भी अपनी सब बरकतें तुम्हें देता हूँ और जब ऐसी हालत हो जाए तो फिर स्वयं सोच लो कि फिर हमारे लिए क्या कमी रह जाएगी।

(तारीख़ी ख़िताब जलसा सालाना 21 दिसम्बर 1965 ई.)

अत: अल्लाह तआला ने आपकी दुआओं को सुना और आपके द्वारा मुर्दे ज़िन्दा हो गए। कुछ एक उदाहरण ईमान में वृद्धि के लिए वर्णित हैं:

आदरणीय मौलाना लईक अहमद ताहिर साहिब मुरब्बी सिलसिला बर्तानिया हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस की क़बूलियत-ए-दुआ की एक व्यक्तिगत बात वर्णन करते हुए लिखते हैं:।

(1) आदरणीया नईमा जमाल साहिबा आफ़ इंग्लिस्तान की माता सादिक: हैदर साहिबा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस से मिलीं और उस मुलाक़ात में लगातार रोने लगीं। उन्होंने बताया कि डाक्टरों ने प्रत्येक प्रकार के परीक्षण के बाद बताया है कि उनके यहाँ भविष्य में किसी औलाद की आशा नहीं और उनसे बढ़कर उनके मियां की इच्छा ही नहीं बल्कि हर-दिन मांग थी कि बेटा हो। इस पर हुज़ूर ने बड़े दर्द के साथ दुआ की और उन्हें बड़े विश्वास के साथ ख़ुशख़बरी दी कि अल्लाह तआला आपको औलाद से नवाज़ेगा। उन्होंने बताया कि डाक्टर का कहना है कि तुम्हारे गर्भाशय की अवस्था ऐसी है कि औलाद होना असंभव में से है उनके हाथ में उस समय एक काले रंग का बैग था उन्होंने कहा कि डाक्टर कहते हैं कि तुम्हारी Tubes गलसड़ कर इस सड़े बैग की तरह हो चुकी हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया फिर भी ख़ुदा तआला की रहमत से मायूस नहीं होना चाहिए। अत: ख़ुदा तआला ने चमत्कारी रूप से उन्हें बेटे से नवाज़ा अत: जन्म से बहुत पहले हुज़ूर ने उन्हें इरशाद फ़रमाया कि होने वाले बच्चे का नाम सादिक़ अहमद रखना है और फिर अमतुस्सलाम मन्सूरा पैदा हुईं जो अब मन्सूरा मुनीब अहमद कहलाती हैं।

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 25 से 31अगस्त 2000 पृष्ठ 14)

(2) आदरणीय मौलाना अब्दुल क़दीर शाहिद साहिब लिखते हैं:।

यह विनीत जब जामिया अहमदिया क़ादियान में दाख़िल हुआ तो उस समय हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद रहमहुल्लाह जामिया अहमदिया के प्रिंसिपल थे। आप

मुझे और हकीम मौलवी ख़ुर्शीद अहमद साहिब (ख़ुर्शीद यूनानी दवाख़ाना) को गर्मियों की छुट्टियों में अपने साथ डलहोज़ी ले गए। मुझे क़ादियान से अपनी माता साहिबा की बहुत बीमारी और डाक्टरों की शिफ़ा से मायूसी की सूचना आई तो मैंने हज़रत साहिब से दुआ का निवेदन किया। मैंने भी बेक़रारी से दुआ की तो इस आजिज़ को बेदारी में बहुत प्यारी आवाज़ इन शब्दों में आई انا رادوه اليك इससे मैंने समझा कि अल्लाह तआला माँ को स्वस्थ कर देगा। फिर नींद की हालत में ही मैं सोचता हूँ कि इन शब्दों में तो पुल्लिंग का सर्वनाम है और शायद उसका अभिप्राय यह है कि मेरे भाई अब्दुल क़ादिर जो आर्मी को छोड़ कर नेवी में चले गए थे और उन पर भगोड़ा होने का मुक़द्दमा चल रहा था और कोर्ट मार्शल का ख़तरा था उनकी सकुशल वापसी की ख़बर है तो मेरे दिल में यह डाला गया कि दोनों काम हो जाएँगे। अगली सुबह मुझे हज़रत साहिबज़ादा साहिब ने डलहौज़ी से क़ादियान जाने की आज्ञा प्रदान कर दी। परन्तु जब सुबह हज़रत साहिबज़ादा साहिब को अपनी ख़्वाब सुनाई तो आपने फ़रमाया कि अब घबराने की ज़रूरत नहीं। मौलवी ख़ुर्शीद अहमद साहिब (ख़ुर्शीद यूनानी दवाख़ाना) मौलवी फ़ाज़िल की परीक्षा में प्रथम आए थे और हज़रत साहिबज़ादा साहिब ने इस ख़ुशी में एक बड़ी दावत का प्रबन्ध फ़रमाया था। आपने फ़रमाया इस में सम्मिलित होने के बाद अगले दिन चले जाना। अगले दिन जब पठानकोट के रास्ते रेलगाड़ी से दस बजे रात को क़ादियान पहुंचा तो दरवाज़ा खटखटाने के बाद देर से दरवाज़ा खुला और मुझे हैरत और ख़ुशी हुई कि स्वयं मेरी माता जी दरवाज़ा खोलने आयीं। मैंने अपने भाई अब्दुर्रहमान साहिब से पूछा कि आपने क्यों दरवाज़ा नहीं खोला और आपके कहने के अनुसार माता साहिबा के बचने की उम्मीद न थी तो उन्होंने कहा कि हमें दरवाज़ा खटकने की आवाज़ नहीं आई और पिछले दिन अचानक माता साहिबा सेहतमन्द हो गईं। इसी तरह एक हफ़्ते के बाद मेरे भाई अब्दुल क़ादिर साहिब बरी होकर ख़ैरीयत के साथ घर आ गए। यह बरकत थी साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब रहेमहुल्लाह की जिन को अल्लाह तआला ने ख़लीफ़तुल मसीह सालिस का स्थान प्रदान फ़रमाना था।

(उद्धृत अहमदिया गज़ट कैन्डा अक्तूबर 2005 पृष्ठ 24-23)

हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब

ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला अन्हो

सातवां अध्याय

क़ुदरत सानिया के चौथे मज़हर (द्योतक)

क़ुदरत-ए-सानिया के तीसरे द्योतक सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब रहमहुल्लाह के देहान्त के बाद 10 जून 1982 ई. को नमाज़ ज़ुहर के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि अल्लाहो द्वारा निर्धारित मज्लिस इंतिख़ाब ख़िलाफ़त के समस्त मेम्बरों का ख़िलाफ़त के चुनाव के लिए इज्लास आयोजित हुआ, जिसमें सब की सहमति से हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब को ख़लीफ़तुल मसीह राबे (चतुर्थ) चुना गया। यह क़ुदरत-ए-सानिया का चौथे द्योतक थे। आप से पहले क़ुदरत सानिया के तीन द्योतक प्रकट हो चुके थे जिनके बारे में पहले वर्णन हो चुका है। आपका यह चयन ऐसे समय में हुआ जबकि जमाअत पाकिस्तान में एक बहुत ही कठिन समय में से गुज़र रही थी। विरोध इतनी तीव्रता धारण कर चुका था कि विरोध अब शत्रुता और दुश्मनी में बदल चुका था और हुकूमत मज़हबी विरोधियों के भड़काने पर जमाअत पर कई पहलूओं से पूरी ताक़त के साथ उनके ईमान और अक़ीदों पर रोक लगा चुकी थी मानो मज़हबी शक्ति और सियासत ने मिलकर जमाअत को कुचलने के लिए आपस में गठजोड़ कर लिया था।

जैसा कि इतिहास बताता है समय के उलमा तथा मौलवियों की ओर से हमेशा से नेक पवित्र लोगों, मुजद्दिदों, औलिया अल्लाह और इसी तरह वास्तविक सच्चे रहनुमाओं पर कुफ़्र के फ़तवे लगते चले आ रहे थे मतभेद दूर करने के लिए मुबाहसे मुनाज़रे और तक़रीरें और ख़ुत्बे पहले से हो रहे थे अब वे सब ठप होकर रह गए थे और इसकी बजाय अब धर्म के मामला में अत्याचार तथा उत्पीड़न और ज़ोर तथा ज़बरदस्ती का नया दौर शुरू हो चुका था। अब इस में अहमदियत के विरोधियों को समय के राजनेताओं की मदद और सहायता भी प्राप्त थी और इसे

इस्लाम की सेवा और अल्लाह तआला की प्रसन्नता ख़्याल कर लिया गया था। अत: यह युग पाकिस्तान में जमाअत की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और अक़ीदा की आज़ादी को छीनने का एक अजीब युग था। ऐसे युग में कलिमा तय्यबा पढ़ना और तिलावत पवित्र क़ुरआन करना न केवल मना था बल्कि देश के हाकिमों की ओर से बाक़ायदा एक कानून जारी कर दिया गया था जिसमें जमाअत के लोगों के लिए क़ैद तथा जेल की सज़ाएं लगाई गईं उन्हें मुश्किलों और विपदाओं में डालने का प्रबन्ध कर दिया गया।

ऐसे समय में सामर्थवान अल्लाह तआला की ओर से जमाअत के लिए क़ुदरत-ए-सानिया का चौथा प्रादुर्भाव हुआ और ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल तथा कर्म से आपके मार्गदर्शन के कारण जमाअत इन आने वाली मुसीबतों और मुश्किलों में से सफल होकर उभरी। अर्थात अत्याचार तथा उत्पीड़न के सामने सिर झुकाने और धार्मिक कट्टरता के आक्रमणों से भय भीत होने के स्थान पर क़ुदरत-ए-सानिया की नई शान और अधिक ताक़तवर होकर पहले से अधिक सारे संसार में संख्या के लिहाज़ से आगे ही आगे बढ़ती चली गई और यह सारा करिश्मा ख़ुदा तआला की ओर से उसकी सम्पूर्ण क़ुदरत के प्रादुर्भाव का ही एक जलवा है।

सम्माननीय पाठको ! हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह का लगभग इक्कीस वर्षीय शानदार युग तारीख़-ए-अहमदियत का एक सुनहरी अध्याय है। यह युग अल्लाह तआला की सहायता तथा समर्थन और अल्लाह तआला के फज़्लों की बारिशों से भरा पड़ा है और इस युग में अल्लाह तआला ने जमाअत को जो विश्वव्यापी तरक्कियां प्रदान कीं उनका वर्णन हमेशा जारी रहेगा। हुज़ूर ने इस्लाम की सेवा के मार्ग में जिस तरह अपने वजूद का एक-एक कण और समय का एक-एक क्षण क़ुर्बान कर दिया वह हमेशा हम सब के लिए मार्गदर्शन का काम करता रहेगा।

हुज़ूर रहमहुल्लाह के बरकतों वाले वजूद से जमाअत के प्रत्येक व्यक्ति ने फ़ैज़ पाया। क्या लजना क्या नसारत और क्या ख़ुद्दाम तथा अन्सार सब के लिए आप का तर्बियत वाला दामन हमेशा खुला रहा। जिस तरह क़दम-क़दम पर आपने जमाअत

का मार्ग दर्शन किया इसकी याद दिलों में हमेशा ज़िन्दा रहेगी।

आपने अपने ख़िलाफ़त के युग में बार बार तहरीकें कीं। विशेष रूप से कामिल ग़लबा इस्लाम और भविष्य में होने वाली ज़रूरतों को पूरा करने के लिए 1987 ई. में तहरीक वक़्फ़ नौ जारी फ़रमाई। आपके युग ख़िलाफ़त में अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से 84 देशों में जमाअत अहमदिया स्थापित हुई और 1993 ई. में जब विश्वव्यापी बैअत की तहरीक शुरू हुई तब करोड़ों लोगों ने रूहानी ज़िन्दगी पाई। फिर M.T.A का आरम्भ आपका एक महान इन्क़िलाब वाला कारनामा है। इसकी बदौलत मानवजाति की हिदायत के लिए दिन रात रूहानी खाना बांटा जाता है। आपकी मज्लिस इर्फ़ान ऐसे सागर समान हैं जो क़यामत तक लाभ पहुंचाने वाले प्रमाणित होंगे। फिर होम्योपैथिक इलाज की पद्धति से मानव जाति की लिए रूहानी शिफ़ा के साथ-साथ शारीरिक शिफ़ा का भी कारण हुए। उर्दू क्लास के द्वारा बड़े बड़े उर्दू जानने वालों को भी उर्दू सिखा दी। आप दर्द वाला दिल रखते थे धर्म के पीड़ितों के लिए पूरी ताक़त के साथ न केवल आवाज़ बुलन्द करते रहे बल्कि व्यावहारिक रूप से सहायता भी फ़रमाते रहे जिस के लिए आपने अपने युग ख़िलाफ़त में सय्यदना बिलाल फ़ंड और बुयूतुल हम्द तहरीक और बोस्निया की सहायता के लिए तहरीकें जारी कीं। ग़रीब बच्चों और विवश माता पिता के दुखों को दूर करने के लिए अपने युग ख़िलाफ़त की आख़िरी तहरीक मरियम शादी फ़ंड जारी फ़रमाई। आपने अपने ख़िलाफ़त के युग में जमाअत अहमदिया की तर्बीयत और इस्लाम के प्रकाशन के उद्देश्य से दुनिया के समस्त महाद्वीपों के सफल दौरे करे। आपके ख़िलाफ़त के युग में दुनिया की बहुत सारी भाषाओं में पवित्र क़ुरआन के अनुवाद और लिट्रेचर प्रकाशित किया गया।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे के समर्थन में आकाशीय गवाही

सम्माननीय पाठको ! ख़ुदा तआला भविष्य का जानने वाला है और ग़ैब से होने वाले कामों के बारे में समय से पहले ख़ुशख़बरियां प्रदान फ़रमाता है। सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह रहमहुल्लाह की माता के निकाह के समय अल्लाह तआला

ने निकाह पढ़ाने वाले बुज़ुर्ग हज़रत मौलाना सरवर शाह साहिब रज़ि के मुँह से भविष्यवाणी के रूप में ऐसी बातें कहलवाईं जो अपने समय में बड़ी शान से पूरी हुईं।

आप ने ख़ुत्बा निकाह में फ़रमाया कि

"जिस तरह पहले सय्यदा से धर्म के ख़ादिम पैदा हुए इस तरह इससे भी धर्म के ख़ादिम ही पैदा होंगे।"

हज़रत मौलाना सरवर शाह साहिब रज़ि सिलसिला अहमदिया के मुफ़्ती, जामिया अहमदिया के प्रिंसिपल सिलसिला के प्रसिद्ध आलिम और सबसे बढ़कर सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रसिद्ध सहाबा में से थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आपके क़ुरआन के ज्ञान की प्रशंसा फ़रमाई। क़ुदरत-ए-सानिया के दूसरे द्योतक हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के आप उस्ताद थे। हुज़ूर जब कभी मर्कज़ से बाहर तशरीफ़ ले जाते हज़रत मौलाना शेर अली साहिब रज़ि या हज़रत मौलाना सरवर शाह साहिब को स्थानीय अमीर निर्धारित फ़रमाते। आप हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि की ग़ैर हाज़िरी में मस्जिद मुबारक में इमामत का दायित्व अदा करते। आप नमाज़ बा-जमाअत के बहुत अधिक पाबंद थे, बहुत लम्बी नमाज़ पढ़ते। इबादत और क़ुरआन के उलूम आप की रूह की ख़ुराक़ थे। अत: आपका मुक़ाम बहुत बुलन्द था। 7 फरवरी 1921 ई की घटना है कि आप ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के इरशाद पर हज़रत सय्यदा उम्मे ताहिर से हुज़ूर के निकाह का ऐलान फ़रमाया। इस अवसर पर आप ने एक ईमान वर्धक ख़ुत्बा दिया। जो 14 फरवरी 1921 के अल्फ़ज़ल में प्रकाशित हुआ। इस ख़ुत्बा में जहां आप ने अनुभूति से परिपूर्ण बातें वर्णन कीं वहां आपने ख़ुत्बा के अन्त में एक महान रहस्य को प्रकट फ़रमाया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दुर्रे समीन का एक शेर है जिसमें आप अपनी औलाद के बारे में फ़रमाते हैं :

तेरी क़ुदरत के आगे रोक किया है
वो सब दे इनको जो मुझको दिया है

इस शेर से कम से कम इतनी बात मालूम होती है कि जिस बात को हज़रत मसीह

मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने लिए फ़ज़ल समझा है मेरा ईमान है कि वह आपके साहिबज़ादों में से किसी एक को या सब को अलग-अलग ज़रूर मिलेगी और मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूँ कि मुझे इस बात का यक़ीन था और उस समय यक़ीन था जब इस निकाह का पता ही न था कि हज़रत (मुस्लेह मौऊद अर्थात) का निकाह सय्यदों में होगा अतः कई साल हुए मैंने अपने घर में वर्णन किया था कि इस स्थान पर जहां आज हो रहा है निकाह होगा।"

अपनी बात को जारी रखते हुए आपने फ़रमाया कि :

"यह मुक़द्दर था कि हज़रत (अक़दस) ने जिस सम्बन्ध को पसन्द किया और ख़ुदा का फ़ज़ल समझा वह आपकी दुआ के अधीन आपकी औलाद को भी प्राप्त हो। ख़ुदा की बात होकर रहती है चाहे कोई ख़ुश हो या नाराज़ और कोई उसको रोक नहीं सकता चाहे कोई कितना ही ज़ोर लगाए अतः अलहमदो लिल्लाह ख़ुदा की बात आज पूरी हो गई।" (अल्फ़ज़ल 14 फरवरी 1921 ई.)

अन्त में मौलाना ने स्पष्ट शब्दों में फ़रमाया :

"मैं बूढ़ा हूँ मैं चला जाऊंगा परन्तु मेरा ईमान है कि जिस तरह से पहले सय्यदा से धर्म के ख़ादिम पैदा हुए इसी तरह इससे भी धर्म के ख़ादिम ही पैदा होंगे। यह मुझे यक़ीन है जो लोग ज़िन्दा होंगे वे देखेंगे।"

(अल्फ़ज़ल 14 फरवरी 1921 ई.)

सम्माननीय पाठको ! दिनांक 10 जून1982 ई को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह के मस्नद ख़िलाफ़त पर आसीन होने के बाद हज़रत मौलाना सरवर शाह साहिब की यह बात जो भविष्यवाणी के रूप में आप ने फ़रमाई थी बड़ी शान के साथ पूरी हो गई कि:

"मेरा ईमान है कि जिस तरह से पहले सय्यदा से धर्म के ख़ादिम पैदा हुए इसी तरह इससे भी धर्म के ख़ादिम ही पैदा होंगे। यह मुझे यक़ीन है जो लोग ज़िन्दा होंगे वे देखेंगे।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह का जीवन चरित्र

आरम्भिक ज़िन्दगी

जमाअत अहमदिया के चौथे इमाम हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब रहिमहुल्लाह तआला हज़रत मुस्लेह मौऊद की तीसरी पत्नी हज़रत सय्यदा मरियम बेगम (उम्मे ताहिर) साहिबा के गर्भ से 14 दिसम्बर 1928 ई. 5 रजब 1347 हिजरी को पैदा हुए। आपके नाना हज़रत डाक्टर सय्यद अब्दुल सत्तार शाह साहिब सय्यदां तहसील कहोड़ ज़िला रावलपिण्डी के एक मशहूर सय्यद ख़ानदान के सुपुत्र थे। बहुत इबादत करने वाले और दुआएं कुबूल होने वाले बुज़ुर्ग थे। अल्लाह तआला ने आपको हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुबारक हाथ पर बैअत करने का सौभाग्य प्रदान फ़रमाया। आप की माता हज़रत सय्यदा मरियम बेगम साहिबा भी बहुत नेक और बुज़ुर्ग औरत थीं। जो अपने इकलौते बेटे की शिक्षा तथा तर्बीयत का बहुत ख़्याल रखती थीं। और उसे नेक सालिह और आशिक़ क़ुरआन देखना चाहती थीं।

हज़रत साहिबज़ादा साहिब ने 1944 ई. में तालीमुल इस्लाम हाई स्कूल क़ादियान से मैट्रिक पास करके गर्वनमेंट कॉलेज लाहौर में दाख़िला लिया और एफ़ एस सी तक शिक्षा प्राप्त की। 7 दिसम्बर 1949 ई. को जामिया अहमदिया में दाख़िल हुए 1953 ई. में सफलता पूर्वक शाहिद की डिग्री प्राप्त की। अप्रैल 1955 ई. में हज़रत मुस्लेह मौऊद के साथ यूरोप तशरीफ़ ले गए और लन्दन यूनिवर्सिटी के स्कूल आफ़ ओरीएंटल स्टडीज़ में शिक्षा प्राप्त की। 4 अक्तूबर 1957 ई. को रब्वा वापस तशरीफ़ लाए।

12 नवम्बर 1958 ई. को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने आपको वक़्फ़ जदीद की

तन्ज़ीम का नाज़िम इरशाद निर्धारित फ़रमाया। आपकी निगरानी में इस तन्ज़ीम ने बड़ी तेज़ी से उन्नति की। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि की ज़िन्दगी के आख़िरी साल में इस तन्ज़ीम का बजट एक लाख सत्तर हज़ार रुपए था जो ख़िलाफ़त साल्सा के आख़िरी साल में बढ़कर दस लाख पंद्रह हज़ार तक पहुंच गया। नवम्बर 1960 ई. से 1966 ई. तक आप उत्तराधिकारी सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया रहे। 1960 ई. के जलसा सालाना पर आपने पहली बार इस महान इज्तिमा में ख़िताब फ़रमाया। इसके बाद लगभग प्रत्येक साल ही जलसा सालाना के अवसर पर ख़िताब फ़रमाते रहे। 1961 ई. में आप इफ्ता कमेटी के मैंबर निर्धारित हुए। 1966 ई. से नवम्बर 1969 ई. तक मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया के सदर रहे। 1 जनवरी 1970 ई. को फ़ज़्ले उम्र फाऊंडेशन के डायरेक्टर निर्धारित हुए। 1974 ई. में जमाअत अहमदिया के एक पाँच सदस्यीय वफ़द ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस के नेतृत्व में पाकिस्तान असैंबली के सामने जमाअत अहमदिया के सिद्धान्तों को दलीलों तथा तर्कों से स्पष्ट किया। आप इस वफ़द के सदस्य थे। 1 जनवरी 1979 ई. को आप सदर मज्लिस अंसारुल्लाह निर्धारित हुए और ख़लीफ़ा चुने जाने तक इस ओहदा पर फ़ाइज़ रहे। 1980 ई. में आप अहमदिया आर्कीटेक्टस ऐंड इंजीनीयर्ज़ एसोसिएशन के निगरान निर्धारित हुए।

ख़िलाफ़त का युग

9 जून 1982 ई को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस (तृतीय) के देहान्त के बाद 10 जून 1982 ई को हज़रत मुस्लेह मौऊद की निर्धारित की गई मज्लिस चयन ख़िलाफ़त का इजलास ज़ुहर की नमाज़ के बाद मस्जिद मुबारक में हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मुबारक अहमद साहिब वकीलुल आला तहरीक जदीद की अध्यक्षता में आयोजित हुआ और आपको ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे चुना जाएगा किया गया और समस्त मज्लिस के हाज़िर लोगों ने चुनाव के शीघ्र बाद हुज़ूर की बैअत की।

हुज़ूर 28 जुलाई 1982 ई. को यूरोप के दौरा पर रवाना हुए आपके प्रोग्राम का बड़ा मक़सद बैरूनी मिश्नों की कारकर्दगी की समीक्षा करना और मस्जिद बिशारत

स्पेन का निर्धारित प्रोग्राम के अनुसार उद्घाटन करना था। इस सफ़र में हुज़ूर ने नार्वे, स्वीडन,डेनमार्क, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, स्विटज़रलैंड, हॉलैंड, स्पेन और यू.के का दौरा किया और वहां के मिशनों की समीक्षा की। सफ़र के समय इस्लाह तथा इरशाद और मज्लिस इर्फ़ान के इलावा स्वागतीय आयोजनों 18 प्रैस कान्फ्रैंसों और ज़्यूरिक में एक पब्लिक लैक्चर के द्वारा यूरोप के रहने वालों को इस्लाम का सन्देश पहुंचाया। यू के में दो नए मिशन हाऊसों का उद्घाटन किया। यूरोप के इन देशों में प्रत्येक स्थान पर हुज़ूर ने मज्लिस शूरा का निज़ाम स्थापित फ़रमाया, इसी तरह हुज़ूर ने इन समस्त देशों के अहमदियों को ध्यान दिलाया कि वे शरह के अनुसार लाज़िमी चन्दों की अदायगी करें।

10 सितम्बर 1982 ई को हुज़ूर ने मस्जिद बिशारत स्पेन का ऐतिहासिक उद्घाटन फ़रमाया और अपने ख़िताब में आपने स्पष्ट किया कि अहमदियत का पैग़ाम अमन तथा प्रेम का पैग़ाम है। और मुहब्बत प्यार से यूरोप वालों के दिल धर्म के लिए फ़तह किए जाएँगे। मस्जिद बिशारत पेड्रो-आबाद के उद्घाटन के समय विभिन्न देशों से आने वाले लगभग दो हज़ार प्रतिनिधियों और दो हज़ार के लगभग स्पेन के लोगों ने शिरकत की। रेडियो टेलीविज़न और अख़बारों के द्वारा मस्जिद बिशारत के उद्घाटन का सारे यूरोप बल्कि दूसरे देशों में भी ख़ूब चर्चा हुआ और करोड़ों लोगों तक सरकारी माध्यमों से इस्लाम का पैग़ाम पहुंच गया। अल्हम्दुलिल्ला अला ज़ालिक।

हुज़ूर ने अपने विचार वर्णन करते हुए फ़रमाया कि ख़ुदा के फ़ज़ल से यूरोप में अब ऐसी हुवा चली है कि यूरोप वाले दलील सुनने की ओर माइल हो रहे हैं।

हुज़ूर ने 22 अगस्त 1983 ई. को पूर्वी देशों और आस्ट्रेलिया के दौरा के लिए तशरीफ़ ले गए और इसी दौरा में 30 सितम्बर 1983 ई. को आपने आस्ट्रेलिया के शहर ब्लैक टाऊन में मस्जिद बैयतुल हुदा की नींव रखी और उसे इस क्षेत्र में धर्म के प्रचार और क़ुरआन की इशाअत का बहुत बड़ा केन्द्र क़रार दिया। इस दौरा से 14 अक्तूबर 1983 ई. को आप वापस पाकिस्तान तशरीफ़ ले आए।

26अप्रैल 1984 ई. को हुकूमते पाकिस्तान ने जमाअत के ख़िलाफ़ आर्डीनैंस जारी

किया जिसके अधीन जमाअत को अज़ान देने इस्लामी परिभाषाओं के प्रयोग करने और आज़ादी से अपने अक़ीदा को फैलाने से रोक दिया गया। अत: धर्म के प्रसार के काम को जारी रखने के लिए 29 अप्रैल 1984 ई को हुज़ूर रब्वा से हिजरत करके बर्तानिया, लंदन तशरीफ़ ले गए। यह हिजरत अहमदियत के इतिहास में एक नए युग का आरम्भ है। इस हिजरत के नतीजा में अल्लाह तआला ने असंख्य फ़ज़्लों तथा बरकतों का दरवाज़ा जमाअत के लिए खोल दिया और जमाअत दिन दोगनी और रात चौगुनी उन्नतियों की मन्ज़िलें तय करने लगी।

हिजरत के समय ही दिनांक 10 अप्रैल 2003 ई को आप अपने सच्चे मौला के समक्ष हाज़िर हो गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहिमहुल्लाह और क़ुरआन के ज्ञान

अल्लाह तआला अपने बंदों में से जिसे ख़लीफ़ा चुनता है उसे ग़ैब के इलम से नवाज़ता है। इसकी ज़बान में प्रभाव तथा बरकत रख दी जाती है। जिसके द्वारा पवित्र क़ुरआन के मआरिफ़ लोगों तक पहुंचाए जाते हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने भी अन्य ख़लीफ़ाओं की तरह पवित्र क़ुरआन के उलूम से दुनिया को परिचित करवाया और विशेष रूप से एम.टी.ए. के द्वारा प्रसारित होने वाले इन प्रोग्रामों से एक ही समय में सारी दुनिया के लोग लाभान्वित हुए।

पवित्र क़ुरआन से मुहब्बत

पवित्र क़ुरआन के अनुवाद के बारे में हुज़ूर ने एक बार फ़रमाया :

"यह तो मैंने स्वयं ही पढ़ा है। क्लास में तो हम पढ़ा करते थे, उस्ताद भी पढ़ाया करते थे परन्तु असल अनुवाद मैंने स्वयं ही पढ़ा है।"

क़ुरआन की सेवा के बारे में हुज़ूर का युग निसन्देह एक सुनहरी युग था जिसमें आपने क़ुरआन की मुहब्बत का व्यावहारिक आदर्श प्रस्तुत करते हुए क़ुरआन की सेवा का कोई क्षेत्र बाक़ी नहीं छोड़ा और अपने ज्ञान और व्यवहारिक आदर्श

से जमाअत को रहनुमा उसूल प्रदान किए। धर्म का कोई भी विषय हो उसे पवित्र क़ुरआन की रोशनी में समाधान निकालते। नवीन आविष्कारों के ज्ञान से समन्वित वर्तमान समय के मस्लों के हल के हवाला से युग की मांग के अनुसार ऐसी अछूती तफ़सीर फ़रमाते कि जो सुनता अपने मस्लों का सन्तोष वाला हल पाता बल्कि इससे बढ़कर यह कि क़ुरआन के ज्ञान को पाने की लालसा बढ़ जाती। पवित्र क़ुरआन के मूल उद्देश्य को वर्णन करती हुई तर्क युक्त तफ़सीर हो या मूल अरबी के शब्दों के क़रीब रह कर मुहावरा के साथ अनुवाद क़ुरआन, तिलावत क़ुरआन में बाक़ायदगी धारण करने का विषय हो या इसे उचित उच्चारण के साथ पढ़ने का, क़ुरआन के प्रशासन का मैदान हो या दुनिया की विभिन्न भाषाओं में उच्च स्तर का क़ुरआन के अनुवाद की तैयारी का, सार यह कि इस आशिक़ ने क़ुरआन की सेवा का कोई क्षेत्र बाक़ी न छोड़ा।

तिलावत पवित्र क़ुरआन निसन्देह एक बुनियादी बात है। जो व्यक्ति क़ुरआन से मुहब्बत का दावा करता हो परन्तु पवित्र क़ुरआन की तिलावत न करता हो तो वह अपने क़ुरआन के मुहब्बत के दावा के बुनियादी प्रमाण से ही वंचित है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने इस बुनियादी बात की ओर जमाअत को बार-बार ध्यान दिलाया। अतः एक ख़ुत्बा जुम्अः में इरशाद फ़रमाया कि ... प्रत्येक घर वाले का फ़र्ज़ है कि वह क़ुरआन की ओर ध्यान दे। क़ुरआन के अर्थों की ओर ध्यान दे। एक भी घर का व्यक्ति ऐसा न हो जो प्रतिदिन क़ुरआन के पढ़ने की आदत न रखता हो।

और फिर अपनी दिली तड़प का इज़हार यूं किया कि :

"मैं चाहता हूँ कि इस सदी से पहले-पहले (अर्थात बीसवीं सदी के समापन से पहले) प्रत्येक घर नमाज़ियों से भर जाए और प्रत्येक घर में प्रतिदिन पवित्र क़ुरआन की तिलावत हो। कोई बच्चा न हो जिसे तिलावत की आदत न हो। उसको कहें कि तुम नाश्ता छोड़ दिया करो परन्तु स्कूल से पहले तिलावत ज़रूर करनी है और तिलावत के समय कुछ अनुवाद ज़रूर पढ़ो। ख़ाली तिलावत नहीं करनी।

स्वयं हुज़ूर की ज़िन्दगी का सार अपने मौला से प्यार, उसकी इबादत और उसके पवित्र कलाम से मुहब्बत तथा वफ़ा है, बचपन से वफ़ात तक यही वैशिष्ट रहा। अत: आपकी साहबज़ादी आदरणीया फ़ायज़ा लुक़्मान साहिबा फ़रमाती हैं:

प्रत्येक सुबह अब्बा की बहुत प्यारी तिलावत पवित्र क़ुरआन हमारे घर को रोशन कर देती थी। हुज़ूर का यह काम ज़िन्दगी भर रहा कि आप सुबह के समय बुलन्द आवाज़ में तिलावत पवित्र क़ुरआन से फ़ारिग़ होने के बाद दूसरे कामों की ओर ध्यान फ़रमाते। हुज़ूर की बड़ी साहबज़ादी आदरणीया शौकत सफ़ीर साहिबा भी वर्णन फ़रमाती हैं कि बचपन में नमाज़ फ़ज्र के बाद हम बज़ाहिर सो रहे होते परन्तु हुज़ूर की प्यारी आवाज़ में तिलावत पवित्र क़ुरआन से लुत्फ़ उठाते रहे।

संयोग है कि मुबारक ज़िन्दगी का आख़िरी काम भी यही था और इस तरह आपने अपने आख़िरी काम से अहमदियों को जो आख़िरी पैग़ाम और शिक्षा दी वह अपने मौला की इबादत और इसके कलाम से इश्क़ ही था। अत: हुज़ूर अनवर ने नमाज़ फ़ज्र अपने समय पर अपने घर में अदा की जिसके बाद काफ़ी बुलन्द आवाज़ से क़िरअत के साथ आदत के अनुसार लम्बी तिलावत पवित्र क़ुरआन करते रहे।

जुलाई 1991 ई. में जलसा सालाना बर्तानिया के बाद इंटरनेशनल शूरा में एक परामर्श पेश किया गया जिसमें जमाअत को लोगों में दरुस्त तिलावत पवित्र क़ुरआन की योग्यता पैदा करने के लिए मन्सूबा बंदी का निवेदन किया गया। हुज़ूर ने इस तजवीज़ पर तफ़सीली हिदायात इरशाद फ़रमाईं। परन्तु हुज़ूर ने केवल अरबी मतन पर ही ज़ोर नहीं दिया बल्कि अर्थों और मआरिफ़ में भी योग्यता पैदा करने नसीहत फ़रमाई। अत: फ़रमाया-

नमाज़ियों का आरम्भ नमाज़ों के बर्तन स्थापित करने से होता है। तिलावत का आरम्भ तिलावत के बर्तन स्थापित करने से होता है और बर्तन से मेरा अभिप्राय यह है कि शुरू कर दें तिलावत। फिर धीरे-धीरे इल्म बढ़ाएं और तिलावत को मआरिफ़ से भरने की कोशिश ज़रूर करें।

हुज़ूर ने अपने कई ख़ुत्बों के द्वारा जमाअत में यह विश्वास दृढ़ फ़रमाया कि:

हमारी नस्लों को यदि सँभालना है तो पवित्र क़ुरआन ने सँभालना है। जब तक यह किताब निकट न आए इस दुनिया के मस्ले हल नहीं हो सकते और न हमारी तर्बीयत हो सकती है।

अत: तर्बीयत की बुनियादी ज़रूरतें पूरी करने और पवित्र क़ुरआन से मार्ग दर्शन प्राप्त करने का तरीक़ा सिखाने के लिए आपने एक तर्जमतुल क़ुरआन क्लास का आरम्भ फ़रमाया। इन क्लासों का आरम्भ 15 जुलाई 1994 ई. से हुआ और सम्पूर्ण अनुवाद क़ुरआन पर आधारित 305 क्लासों के द्वारा दुनिया भर में फैले हुए अपने शागिर्दों को क़ुरआन की समझ और इशक़ क़ुरआन के तरीके समझाए। इन क्लासों के इतने लंबे समय पर फैले हुए इतने बड़े सिलसिला को जिस बाक़ायदगी, लगन और हिम्मत से जारी रखा और पूर्णता को पहुंचाया वह एक सच्चे आशिक़ के अतिरिक्त किसी और का भाग्य हो सकता ही नहीं।

इस क्लास के अतिरक्ति इल्मी तहक़ीक़ात वाले दरसुल क़ुरआन का आरम्भ रमज़ान 1984 ई. में सूरत फ़ातिहा की तफ़सीर से हुआ। आरम्भिक सालों में कुछ निर्धारित दिनों में अंग्रेज़ी भाषा में ये दर्स होता था। फिर M.T.A के आरम्भ के बाद रमज़ान अर्थात फरवरी 1993 ई से रमज़ान 2001 ई. तक निरन्तर यह दर्स उर्दू भाषा में सीधा प्रसारित होता रहा।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे की क़ुरआन की सेवा के हवाले से एक महान सेवा और इस्लामी इतिहास में सुनहरी शब्दों से लिखी जाने वाली बात आप का वह क़ुरआन का अनुवाद है जो मूल के निकट रहते हुए, मुहावरा के साथ अनुवाद है, जो उर्दू भाषा के गुणों से भी सुसज्जित है। इसको बेहतरीन बनाने में आप ने ऐसी अनथक मेहनत की जिसकी तुलना नहीं मिलती। इस अनुवाद में सूरतों के आरम्भ में उनके विषयों पर आधारित परिचयात्मक नोट्स इन अनुवाद का महत्व और बढ़ा देते हैं।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने पवित्र क़ुरआन के अन्य भाषाओं में उत्तम, प्रमाणिक अनुवाद का बेहद शौक़ से आयोजन करवाया।

आपके युग-ए-ख़िलाफ़त में इन अनुवादों की कुल संख्या 57 हो चुकी है। इसी तरह 117 भाषाओं में विभिन्न विषयों पर आधारित चुनी हुई आयतों के अनुवाद भी प्रकाशित किए गए।

पवित्र क़ुरआन के अनुवाद

ख़िलाफ़त राबिया के युग में पवित्र क़ुरआन के अनुवादों का ऐतिहासिक काम हुआ। हुज़ूर ने पवित्र क़ुरआन के अन्य भाषाओं में प्रमाणिक अनुवाद का बेहद शौक़ से अनुवाद करवाया। अत: आपके 21 वर्षीय ख़िलाफ़त के युग में जिन भाषाओं में प्रमाणिक अनुवाद करवा कर उच्च स्तरीय प्रकाशन हुआ, उन अनुवादों की कुल संख्या 57 थी। इन भाषाओं के नाम निम्नलिखित हैं। इसी तरह इनके अतिरिक्त दुनिया की कुल 117 भाषाओं में विभिन्न विषयों पर आधारित चुनी हुई आयतों के अनुवाद भी प्रकाशित किए जा चुके हैं।

Albanian, Assamese, Bengali, Bulgarian, Chinese, Czech, Danish, Dutch, English, Esperanto, Fijian, French, German, Greek, Gujrati, Gurumukhi, Hausa, Hindi, Lgbo, Indonesian, Italian, Japanese, Kashmiri, Kikuyu, Korean, Luganda, Malay, Malayalam, Manipuri, Marathi, Mende, Nepalese, Norwegian, Oria, Pashtu, Persian, Polish, Portuguese, Punjabi, Russian, Saraeki, Sindhi, Spanish.

आपके द्वारा किए गए क़ुरआन के अनुवाद की प्रमुख विशेषताएं

इस क़ुरआन के अनुवाद के परिचय में आदरणीय सय्यद अब्दुल हई साहिब नाज़िर इशाअत सदर अन्जुमन अहमदिया रब्वा लिखते हैं:

यह अनुवाद आसान, बोधगम्य होने के बावजूद अपने अन्दर एक विशेषता रखता है। इस अनुवाद में इस बात का विशेष प्रबन्ध किया गया है कि यह अनुवाद पवित्र क़ुरआन के मूल के बिल्कुल अनुसार हो और किसी अवस्था में भी यह मूल से आगे

न बढ़े। इस सिलसिला में इतनी सावधानी बरती गई है कि यदि मूल शब्दों का उर्दू अनुवाद करने से अर्थ स्पष्ट न होता हो तो अनुवाद के उच्चता और सलामती के लिए जो वज़ाहती शब्द अनुवाद में सम्मिलित किए गए हैं उन्हें पवित्र क़ुरआन की पवित्रता के सम्मुख ब्रेकिट में रखा गया है ताकि पढ़ने वाले पर यह बात स्पष्ट रहे कि यह मूल अरबी का अनुवाद नहीं बल्कि अनुवादक के शब्द हैं। इस दृष्टि से यह एक प्रकार का शाब्दिक अनुवाद है परन्तु इसके बावजूद सरलता, बोधगम्य और उर्दू भाषा के प्रचलित मुहावरा के भी ठीक अनुसार है।

ऊपर वर्णित विशेषताओं के साथ यह अनुवाद एक अलग तरीका रखता है। नवीन आविष्कारों के आलोक में इस स्थायी किताब के एक-एक शब्द को पुन: समझने की कोशिश की गई है। और जिन स्थानों पर भी कोष और अरबी भाषा की ग्रेमर के नियमों ने इजाज़त दी है वहां पहले अनुवादों के स्थान पर बिल्कुल नए और अछूते अर्थ किए गए हैं। (उद्धृत परिचय तर्जमतुल-क़ुरआन, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे पृष्ठ 11)

MTA (मुस्लिम टेलीविज़न अहमदिया) इंटरनेशनल ख़िलाफ़त राबेया के दौर की एक महान नेअमत

अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फ़रमाता कि:

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَہٗ بِالۡہُدٰی وَ دِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡہِرَہٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّہٖ وَ لَوۡ کَرِہَ الۡمُشۡرِکُوۡنَ

(सूरह सफ्फ आयत- 10)

अर्थात वही है जिसने रसूल को हिदायत और सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि वह इसको धर्म के प्रत्येक विभाग पर प्रभुत्व प्रदान कर दे। चाहे मुशरिक बुरा मनाएं।

पवित्र क़ुरआन की इस आयत की तफ़सीर (व्याख्या) में मुफ़स्सिरीन ने यह बात स्पष्ट तौर पर लिखी है कि इसका सम्बन्ध आख़िरी युग में ज़ाहिर होने वाले इमाम महदी से है और इस्लाम को प्रत्येक विभाग में इसके युग में उन्नति प्राप्त होगी। इसी तरह पवित्र क़ुरआन में अन्तिम युग में होने वाली उन्नतियों का वर्णन भी मिलता है। इस सिलसिला में पहले की पुस्तकों में भी बहुत कुछ लिखा हुआ मिलता है। जैसा कि मती की इन्जील में लिखा है:

"क्योंकि जैसा बिजली पूर्व से चमक कर पच्छिम में दिखाई देती है वैसे ही इब्ने आदम का आना होगा। (मती अध्याय 24)

इसी तरह हज़रत अली रज़ि अल्लाह का एक क़ौल यनाबीउल मवद्दा में यूं लिखा हुआ मिलता है:

"जब इमाम मौऊद आएगा तो अल्लाह तआला उसके लिए पूर्व पश्चिम को जमा कर देगा।" (यनाबीउल मवद्दा भाग 3 पृष्ठ 90)

इसी तरह हज़रत शाह रफ़ीउद्दीन साहिब ने लिखा है कि:

"बैअत के समय आकाश से इन शब्दों में आवाज़ आएगी कि यह अल्लाह तआला का ख़लीफ़ा महदी है। उसकी बात ध्यान से सुनो और उसका आज्ञापालन करो। और यह आवाज़ उस स्थान के समस्त विशेष तथा आम सुनेंगे।"

(अनुवाद क़यामत नामा पृष्ठ 4)

इसी तरह से अनवारे नोमानिया के लेखक ने लिखा है कि:

"इमाम महदी के युग में उसके मानने वालों की क़ुव्वत सामिआ (सुनने की शक्ति) और बासिरा (देखने की शक्ति) इतनी तेज़ कर दी जाएगी कि यदि अनुयायी एक देश में होंगे और इमाम दूसरे देश में तो वे इमाम को देख लेंगे। उसका कलाम सुन सकेंगे और उससे आज़ादी से बातचीत कर सकेंगे। (तहरीरुल मुस्लेमीन पृष्ठ 70)

इसी तरह से हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ साहिब रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं:

"हमारे इमाम स्थापित जब मबऊस होंगे तो अल्लाह तआला हमारे गिरोह के कानों की सुनने की शक्ति और आँखों की देखने की शक्ति को बढ़ा देगा। यहां तक कि यूं महसूस होगा कि इमाम स्थापित और उनके मध्य की दूरी एक बुरीद अर्थात एक स्टेशन के बराबर की रह गई है। अत: जब वह उनसे बात करेंगे वह उन्हें सुनेंगे और साथ देखेंगे जबकि वह इमाम अपने स्थान पर ही ठहरा रहेगा।"

(महदी मौऊद अनुवाद बिहारुल अनवार भाग 13 पृष्ठ 1118)

इसी तरह एक और स्थान पर लिखते हैं:

"मोमिन इमाम महदी के युग में पूर्व में होगा और अपने इस भाई को देख लेगा जो पश्चिम में है। और जो पश्चिम में होगा वह अपने भाई को देख लेगा जो पूर्व में

होगा। (नजमुस्साक़िब भाग 1 पृष्ठ 10)

इसी तरह से हज़रत इमाम बाक़िर रहमहुल्लाह लिखते हैं कि:

"इमाम महदी के नाम पर एक मुनादी करने वाला आकाश से मुनादी करेगा। इसकी आवाज़ पूर्व में बसने वालों को भी पहुँचेगी और पश्चिम में रहने वालों को भी। यहां तक कि प्रत्येक सोने वाला जाग उठेगा।"

(अलमहदी अल्मऔऊद अल-मुनतज़िर इंद उलमा अहले सुन्नत पृष्ठ 684)

ये वे समस्त भविष्यवाणियां हैं जो आने वाले इमाम महदी के युग में पूरी होने वाली थीं उन का आरम्भ तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के युग ही से हो गया था। परन्तु इसका नज़ारा जमाअत अहमदिया के चौथे ख़लीफ़ा के ज़माने में दुनिया वालों ने किया। क्योंकि इन भविष्यवाणियों में यह भी भविष्यवाणी थी कि :

"इमाम महदी के नाम पर एक मुनादी करने वाला आकाश से मुनादी करेगा।"

अत: हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे ने इमाम महदी के नाम पर M.T.A के द्वारा आकाश से मुनादी की जिसे सारी दुनिया ने देखा भी और सुना भी। फिर उसका ख़िलाफ़त राबिया के युग में होना इसलिए भी इलाही तक़दीर से मुक़द्दर था कि हदीस शरीफ़ में इब्ने मरियम के आकाश से उतरने का वर्णन मौजूद है। ख़ुदा तआला ने यह चाहा कि वह इब्ने मरियम ही के युग में ऐसे सामान पैदा करता हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह रहमहुल्लाह की माता का नाम मरियम ही था और अहमदी ख़लीफ़ाओं में से इब्ने मरियम ही M.T.A के द्वारा सबसे पहले आकाश से घर-घर में उतरा और यह भविष्यवाणी बड़ी शान के साथ पूरी हुई। फ़लहमदो लिल्लाह अला ज़ालिक।

हुज़ूर के रिकार्ड किए गए प्रोग्राम

एम. टी. ए का नियमित प्रसारण शुरू होने के बाद हुज़ूर के जो प्रोग्राम रिकार्ड हुए उन में ख़ुत्बा जुम्अ:, मज्लिस इर्फ़ान और जलसा सालाना तथा इज्तिमाओं के अवसर पर इरशाद फ़रमाए हुए सैंकड़ों ख़ुत्बों के अतिरिक्त बाक़ायदा स्टूडियो में रिकार्ड किए जाने वाले सैंकड़ों प्रोग्राम भी सम्मिलित थे जिन में से प्रत्येक का समय एक घंटा का है। स्टूडियो में रिकार्ड किए गए प्रोग्रामों का विवरण नीचे लिखा है:

*	अँग्रेज़ी जानने वाले दोस्तों से मुलाक़ात	150 प्रोग्राम
*	उर्दू मुलाक़ात	160
*	होम्योपैथी क्लास	198
*	तर्जुमतुल-क़ुरआन क्लास	305
*	लिका मअल अरब	472
*	उर्दू क्लास	460
*	बच्चों की क्लास	300
*	फ्रैंच मुलाक़ात	209
*	बंग्ला मुलाक़ात	128
*	जर्मन मुलाक़ात	130
*	लज्ना से मुलाक़ात	130
*	अत्फ़ाल से मुलाक़ात	45
*	आरोपों के उत्तर	37
*	**कुल**	**2724 प्रोग्राम**

नए देशों में अहमदियत का आरम्भ

1982 ई. में ख़िलाफ़त राबिया के आरम्भ के समय जमाअत 80 देशों में स्थापित थी। 1984 ई में हुज़ूर की हिजरत के समय जमाअत 91 देशों में स्थापित हो चुकी थी और 2003 ई. में हुज़ूर के देहान्त के समय जमाअत 175 देशों में मज़बूती से क़दम जमा चुकी थी।

विभिन्न देशों में नई जमाअतों का आरम्भ

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे हिजरत के ज़माने में नई जमाअतों की स्थापना में अत्याधिक वृद्धि हुई। लंदन में आने के बाद पहले साल अर्थात 1984-85 ई में 28 नई जमाअतें स्थापित हुईं और फिर अगले साल 1985-86 ई. में यह संख्या 254 हो गई। साल 1986-87 ई. ई में यह संख्या बढ़कर 258 हो गई। इसके बाद इस में प्रतिवर्ष

निरन्तर वृद्धि होती रही। इस रफ़्तार का अंदाज़ा आख़िरी तीन सालों से लगाया जा सकता है। साल 1999-2000 ई. में सारी दुनिया में 6175 स्थानों पर जबकि 2000 ई से 2001 ई में 12343 स्थानों पर नई जमाअतों की स्थापना हुई और साल 2001-02 ई में सारी दुनिया में 4485 नई जमाअतें स्थापित हुईं। इस तरह हिजरत के 19 सालों में सारी दुनिया में 35358 स्थानों पर नई जमाअतें स्थापित हुईं।

विश्वव्यापी बैअत के आयोजन

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे ने आलमी बैअत का सिलसिला 1993 ई में शुरू किया और दस सालों में 16 करोड़ 48 लाख 75 हज़ार छः सौ पाँच लोग जमाअत अहमदिया में सम्मिलित हुए। इसका साल के अनुसार विवरण यह है:

2002 ई.	2,06,54000
2001 ई.	8,10,06721
2000 ई.	4,13,08975
1999 ई.	1,08,20226
1998 ई.	50,04,591
1997 ई.	30,04585
1996 ई.	16,02721
1995 ई.	8,47725
1994 ई.	2,21753
1993 ई.	2,04308
कुल जोड़	16,48,75,605

वे देश जिन में आप ने ख़लीफ़ा के रूप में दौरा किया

सिंगापुर, फिजी, आस्ट्रेलिया, श्रीलंका, कीनिया, यूगैन्डा, तनज़ानिया, मारीशस, गोइटेमाला, जापान, न्यूज़ीलैंड, सूरीनाम, पुर्तगाल, और इंडोनेशिया वे देश थे जिनकी धरती ने पहली बार किसी ख़लीफ़तुल मसीह के क़दम चूमे। भारत वह देश था जहां

1947 ई. की हिजरत के बाद पहली बार किसी ख़लीफ़ा को जाने का अवसर प्राप्त हुआ। जिन अन्य देशों के हुज़ूर ने दौरे किए उन में नार्वे,स्वीडन,डेनमार्क, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, स्विटज़रलैंड, फ्रांस, लक्समबर्ग, हॉलैंड, स्पेन, इंग्लिस्तान, कैनेडा, बेल्जियम, अमरीका, आयरलैंड, गेम्बिया, सेरालियून, लाइबेरिया, एवरीकोस्ट, घाना और नाइजीरिया सम्मिलित हैं।

मस्जिदों का निर्माण

हिजरत के पहले साल 1984-85 ई. में नई मस्जिदें जो सारी दुनिया में बनीं। उनकी संख्या 32 थी। 1985-86 ई में यह संख्या 32 से बढ़कर 206 हो गई। 1986-87 ई. में 136 नई मस्जिदें बनाई गईं। मस्जिदों के निर्माण और बनी बनाई मस्जिदों के प्राप्त होने की रफ़्तार में आश्चर्यजनक रूप से जो वृद्धि हुई उसका अंदाज़ा निम्न लिखित तीन सालों की समीक्षा से लगाया जा सकता है:

* 1999 ई. में 1524
* 2000 ई. में 1915
* 2001 ई. में 2570

हिजरत के 19 सालों में सामूहिक रूप से कुल 13065 नई मस्जिदें जमाअत अहमदिया को सारी दुनिया में स्थापित करने का सौभाग्य मिला।

तब्लीग़ के लिए अहमदिया केन्द्रों की स्थापना

यूरोप: 1984 ई. में 8 देशों में कुल संख्या 16 थी जो बढ़कर 18 देशों में 148 हो चुकी है।

अमरीका: अमरीका में संख्या 6 से बढ़कर 36 हो चुकी है।

कैनेडा: 1984 ई. में पाँच मिशन हाऊस थे जिनमें पाँच की वृद्धि हुई। कुछ पुराने मिशन हाऊस बेच कर उनकी अपेक्षा कई गुना बड़े मिशन हाऊस ख़रीदे गए।

अफ़्रीक़ा: 1984 ई. में 14 देशों में कुल संख्या 68 थी अब 25 देशों में संख्या 656 हो चुकी है।

ख़िलाफ़त राबेया में प्राप्त होने वाली कुछ नई इमारतें

नीचे ऐसी इमारतों का विस्तृत विवरण है जिनका उद्घाटन या नींव हुज़ूर ने स्वयं रखी। इसके अतिरिक्त भी सैंकड़ों ऐसी इमारतें हैं जो हुज़ूर के ख़िलाफ़त काल में विभिन्न देशों में ख़रीदी गईं और जमाअत की ज़रूरतों के लिए प्रयोग की जा रही हैं। इसी तरह प्रत्येक देश में असंख्य मस्जिदों और मर्कज़ का निर्माण भी इस सूची में सम्मिलित नहीं जिनकी नींव हुज़ूर ने नहीं रखी या उद्घाटन तक़रीब में शिरकत नहीं फ़रमाई।

10 सितम्बर 1984 ई. : इस्लामाबाद (यू के)की ख़रीद। (इसके बाद यहां रोटी प्लांट और रक़ीम प्रैस इत्यादि की स्थापना हुई)

10 मई 1985 ई: ग्लासको के नए मिशन हाऊस का उद्घाटन।

13 सितम्बर 1985 ई. बैयतुन्नूर नन सपट हॉलैंड का उद्घाटन।

15 सितम्बर 1985 ई. :बेल्जियम के मिशन हाऊस और मस्जिद बैयतुस्सलाम का उद्घाटन।

17 सितम्बर 1985 ई. : कोलोन केन्द्र जर्मनी का उद्घाटन।

22 सितम्बर 1985 ई. : ग्रोस गीराओ केन्द्र जर्मनी का उद्घाटन।

13 अक्तूबर 1985 ई : फ्रांस के नए केन्द्र का उद्घाटन।

23 अक्तूबर 1987 ई. : मस्जिद लास ऐंजलिस, अमरीका की नींव।

30 अक्तूबर 1987 ई : मस्जिद रिज़वान पोर्ट लैंड अमरीका का उद्घाटन।

9 अक्तूबर 1987 ई. : मस्जिद बैयतुर्रहमान अमरीका की नींव।

जनवरी 1988 ई. : गेमबिया में दो मस्जिदों का उद्घाटन किया। इसी तरह एक मस्जिद, एक क्लीनिक और एक मिशन हाऊस की नींव रखी।

5 फरवरी 1988 ई. : घाना मिशन हाऊस की नई इमारत का उद्घाटन।

8 अप्रैल 1988 ई. : गलासको (स्कॉटलैंड) में मस्जिद की नई इमारत का उद्घाटन।

31 अगस्त 1988 ई. : शयाना (कीनिया) में मस्जिद का उद्घाटन इसी तरह मिशन

हाऊस तथा क्लीनिक की नींव रखी।

12 सितम्बर 1988 ई. : मोरो गुरू (तनज़ानिया) में डिस्पेंसरी का उद्घाटन इसी तरह कंसवा तनज़ानिया में एक हस्पताल की नींव।

13 सितम्बर 1988 ई. : डोड विम्मा (तनज़ानिया) में मस्जिद बैयतुल हमीद का उद्घाटन।

18 सितम्बर 1988 ई. : New Grove मारीशस में मस्जिद की नींव इसी तरह मिल्ट्री क्वार्टर्ज़ (मारीशस) में मस्जिद का उद्घाटन।

31 मार्च 1989 ई.: आयरलैंड मिशन हाऊस का उद्घाटन।

21 मई 1989 ई. : फ्रांस में प्रदर्शनी हाल का उद्घाटन।

30 जून 1989 ई. : सान फ्रांसिस्को (अमरीका) मिशन हाऊस का उद्घाटन।

3 जुलाई 1989 ई. : गोइटेमाला में मस्जिद का उद्घाटन।

7 जुलाई 1989 ई. : लास एंजलस (अमरीका) में मस्जिद का उद्घाटन।

17 अक्तूबर 1992 ई. : मस्जिद बैयतुल इस्लाम टोरंटो कैनेडा का उद्घाटन।

14 अक्तूबर 1994 ई.: मस्जिद बैयतुल रहमान वाशिंगटन अमरीका और वाशिंगटन में अर्थ स्टेशन का उद्घाटन।

18 अक्तूबर 1994 ई: वेलनबर अमरीका में मस्जिद की नींव।

23 अक्तूबर 1994 ई. : शिकागो अमरीका में मस्जिद बैयतुल सादिक़ का उद्घाटन।

7 अप्रैल 1995 ई. : पापूआ न्यूअग्नी एम टी ए के द्वारा मस्जिद का उद्घाटन।

3 जुलाई 1998 ई: अमरीका में मस्जिद बैयतुल बसीर का उद्घाटन।

19 अक्तूबर 1999 ई.: बर्तानिया में मस्जिद बैयतुल फ़ुतूह मार्डन की नींव।

31 अगस्त 2000 ई.: जर्मनी में एक मस्जिद की नींव और एक मस्जिद का उद्घाटन।

1 मार्च 2003 ई. : बोस्निया में पहले केन्द्र बैयतुस्सलाम की स्थापना।

मज्लिस नुसरत जहां के अधीन स्कूल्ज़

1985-86 ई. में घाना, नाइजीरिया, सेरालियून, गेम्बिया, लाइबेरिया और यूगेन्डा में 31 हायर सकैंडरी स्कूल्ज़ थे। सैकण्डरी के अतिरिक्त प्राइमरी और नर्सरी स्कूलों की कुल संख्या 174 थी। हुज़ूर के मुबारक युग में कांगो और एवरीकोस्ट में भी स्कूलों की स्थापना हुई। 2003 ई में अफ़्रीक़ा के आठ देशों में 40 हायर सकैंडरी स्कूल्ज़, 37 जूनियर सकैंडरी स्कूल्ज़, 238 प्राइमरी स्कूल्ज़ और 58 नर्सरी स्कूल्ज़ काम कर रहे हैं। कुल संख्या 373 है। मानो कि हुज़ूर के हिजरत के समय में 199 स्कूल्ज़ की वृद्धि हुई।

मज्लिस नुसरत जहां के अधीन हस्पताल

साल 1985-86 ई. में 7 देशों घाना, नाइजीरिया, सेरालियून, गेम्बिया, लाईबेरिया, एवरीकोस्ट और यूगेन्डा में 24 हस्पताल काम कर रहे थे। इन देशों में और अधिक वृद्धि के अतिरिक्त अल्लाह के फ़ज़ल से निम्नलिखित देशों में भी हस्पतालों की संख्या में वृद्धि हुई है:

बोरकीना फासो, बेनिन, कांगो, कीनीया और तनज़ानिया। और इसी तरह इस समय अफ़्रीक़ा के 12 देशों में अहमदिया क्लीनिक्स और हस्पताल की संख्या 32 हो चुकी है। इसके अतिरिक्त जमाअत अहमदिया के प्रबन्ध के अधीन सारी दुनिया में सैंकड़ों क्लीनिक्स और होमियोपैथिक डिस्पेंसरियां भी काम कर रही हैं।

हुज़ूर के कुछ प्रमुख लैक्चरज़

सारी दुनिया में विभिन्न देशों की यूनीवर्सिटियों में तथा विद्वानों की सभाओं से हुज़ूर अनवर ने बार-बार भाषण दिए जिनका विवरण यूं है:

* 31 अगस्त 1983 ई: स्विटज़रलैंड में इन्सानियत के भविष्य के विषय पर।

* 5 अक्तूबर 1983 ई: आस्ट्रेलिया में इस्लाम के विशेष गुण के विषय पर।

* 4 जून 1987 ई: स्वीज़रलैण्ड में सच्चाई, इल्म, अक़्ल और इल्हाम के विषय पर।

इसके बाद यही विषय हुज़ूर की प्रमुख किताब Revelation, Rationality, Knowledge & Truth का आधार बना।

* 9 सितम्बर 1988 ई: तनज़ानिया की दारुस्सलाम यूनिवर्सिटी से भाषण।

* 19 सितम्बर 1988 ई: मारीशस में यूनिवर्सिटी में लैक्चर।

*17 मई 1989 ई: स्वीटज़रलैंड की एक यूनिवर्सिटी में लैक्चर।

* 24 फरवरी 1990 ई: बर्तानिया में भाषण धर्म वर्तमान समय की समस्याओं का क्या हल प्रस्तुत करता है? विषय पर।

* 12 मार्च 1990 ई: स्पेन की अशबीलीह यूनीवर्सिटी में भाषण धर्म की बुनियादी शिक्षाओं का दर्शन विषय पर।

* 24 जून 2000 ई को इंडोनेशिया में Gadja Made University में भाषण अंग्रेज़ी भाषा में।

* 29 जून 2000 ई : जकार्ता (इंडोनेशिया) के एक होटल में Indonesian Muslim Intellectuals Dialogue के अधीन Islam and Prospect of Muslim Revival Considering Existential Problem with 21Ist Century. के विषय पर भाषण।

* 6 जुलाई 2000 ई को जकार्ता (इंडोनेशिया) में होम्योपैथी के विषय पर अंग्रेज़ी में भाषण।

आपके द्वारा लिखित प्रसिद्ध पुस्तकें

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे का इन्क़िलाब पैदा करने वाला लिट्रेचर क़बूलियत की सनद प्राप्त कर चुका है और पूर्व तथा पश्चिम के विद्वानों ने उस की बहुत प्रशंसा की है। आपकी कई पुस्तकों के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी प्रकाशित हो चुके हैं। हुज़ूर की पुस्तकों की सूची निम्नलिखित है:

1. मज़हब के नाम पर ख़ून 1962 ई.
2. वरज़िश के ज़ीने 1965 ई.
3. अहमदियत ने दुनिया को क्या दिया? 1968 ई.

4. आयत ख़ातमुन्नबिय्यीन का मफ़हूम और जमाअत अहमदिया का मसलक 1968 ई.

5. सवानेह फ़ज़्ल उमर प्रथम तथा द्वितीय भाग 1975 ई.

6. रिसाला रब्वा से तेल अबीब तक पर तब्सरा 1976 ई.

7. विसाल इब्ने मरियम प्रकाशन लाहौर 1979 ई.

8 अहले आस्ट्रेलिया से ख़िताब उर्दू, अंग्रेज़ी 1983 ई.

9. मजालिस इर्फ़ान 1983-84 ई कराची 1989 ई.

10. सलमान रुशदी की किताब पर मुहक़्क़िक़ाना तबसरा 1989 ई.

11. ख़लीज का बुहरान और निज़ाम जहान नौ 1992 ई.

12. Islams Response to Contemporary Issues 1992 ई.

13. ज़ौक़ इबादात और आदाब दुआ 1993 ई

14. Christanity A Journey From Facts to Fiction 1994 ई.

15 ज़हक़ुल बातिल 1994 ई.

16. Absolute Justice 1996 ई.

17. कलामे ताहिर प्रकाशन लज्ना इमा इल्लाह कराची 1996 ई.

18. Revelation, Rationality, Knowledge & Truth 1998 ई.

19 पवित्र क़ुरआन का उर्दू अनुवाद (मा हवाशी पृष्ठ संख्या 1315, प्रथम प्रकाशन लंदन जुलाई 2000 ई, पाकिस्तानी ऐडीशन 2003 ई.)

इन्क़िलाब पैदा करने वाली तहरीकें

हुज़ूर ने अपने ख़िलाफ़त के समय में कई तहरीक का आरम्भ किया। कुछ तहरीकें विशेष दुआएं करने की ओर ध्यान दिलाने के लिए थीं और कुछ आचरण और रूहानी उन्नति के लिए व्यावहारिक रूप से आगे बढ़ने के लिए की गईं जबकि कुछ का सम्बन्ध मानव सेवा के उज्जवल पक्षों से था। इन समस्त तहरीकों का वर्णन करना इस किताब में संभव नहीं केवल कुछ एक का नीचे वर्णन किया जाता है:

* पहले प्रकाशित पैग़ाम में इस्लामी जगत और फ़लस्तीन की बेहतरी के लिए

दुआओं की तहरीक। (अल्फ़ज़्ल 13 जून 1982 ई)

* झूठ के ख़िलाफ़ जिहाद की तहरीक

(दर्सुल क़ुरआन 19 जुलाई 1982 ई)

*लजना (महिलाओं)को विश्वव्यापी दावत इलल्लाह का मन्सूबा बनाने की तहरीक

(इज्तिमा लजना16अक्तूबर 1982 ई)

* मुहर्रम में बहुत अधिक दुरूद पढ़ने की तहरीक।

(मज्लिस इर्फ़ान24अक्तूबर 1982 ई)

* बुयूतुल हम्द स्कीम का ऐलान (ख़ुत्बा जुम्अः 29 अक्तूबर 1982 ई) यह हुज़ूर के युग की पहली माली तहरीक है।

* रिटायरमैंट के बाद वक़्फ़ की तहरीक(इज्तिमा अन्सारुल्लाह 5 नवम्बर85 ई)

* तहरीक जदीद दफ़्तर प्रथम तथा दोयम की क़यामत तक जारी रखने की तहरीक। (ख़ुत्बा जुम्अः 5 नवम्बर 1982 ई)

* आपसी झगड़े ख़त्म करने की तहरीक।(ख़ुत्बा जुम्अः 5 नवम्बर 1982 ई)

* नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने की तहरीक।(ख़ुत्बा जुम्अः 19 नवम्बर 1982 ई)

* मुस्तश्रिक़ीन के आरोपों के जवाबों को तैयार करने की तहरीक

(ख़िताब स्वागत तहरीक जदीद 2 दिसम्बर 1982 ई)

* अमरीका में 5 नए मर्कज़ तब्लीग़ और मस्जिदों की स्थापना की तहरीक।

(15 दिसम्बर 1982 ई)

* अहमदी औरतों को पर्दा की पाबंदी की तहरीक।

(ख़िताब जलसा सालाना 27 दिसम्बर 1982 ई)

* अल्फ़ज़्ल और रिव्यू आफ़ रीलीजन्ज़ का प्रकाशन दस हज़ार करने की तहरीक। (ख़िताब जलसा सालाना 27 दिसम्बर 1982 ई)

* कैनेडा में नए मर्कज़ तब्लीग़ और मस्जिदों की तहरीक (20 अप्रैल 1983 ई)

* ईद पर गरीबों के साथ ख़ुशियां बांटने की तहरीक (12जुलाई 1983 ई)

* बुरी रस्मों के ख़िलाफ़ जिहाद की तहरीक। (ख़ुत्बा जुम्अः 16 दिसम्बर 1983 ई)

* जलसा के लिए 500 देग़ों की तहरीक। (अल्फ़ज़्ल 8 फरवरी 1984 ई)

- * बर्तानिया और जर्मनी में दो नए केन्द्रों के स्थापित करने की तहरीक।

(ख़ुत्बा जुम्अ:18 दिसम्बर 1984 ई)

- * हब्शा के पीड़ितों की माली सहायता (ख़ुत्बा जुम्अ:9 दिसम्बर 1984 ई)
- * क़ुरआन हिफ़्ज़ करने की तहरीक (11 नवम्बर 1984 ई)
- * नस्तालीक़ किताबत के लिए कम्प्यूटर की ख़रीद

(ख़ुत्बा जुम्अ:12 दिसम्बर 1985 ई)

- * तहरीक जदीद के दफ़्तर चतुर्थ का आरम्भ (ख़ुत्बा जुम्अ: 25 अक्तूबर 1985 ई)
- * क़ियाम नमाज़ के लिए ज़ैली तंज़ीमें हर महीने इज्लास करें।

(ख़ुत्बा जुम्अ:27 दिसम्बर 1985 ई)

- * वक़्फ़ जदीद को विश्वव्यापी करने का ऐलान। (ख़ुत्बा जुम्अ:27 दिसम्बर 1985 ई)
- * सय्यदना बिलाल फ़ंड का क़ियाम। (ख़ुत्बा 14 मार्च 1986 ई)
- * तौसीअ मकान भारत फ़ंड। (ख़ुत्बा 28 मार्च 1986 ई)
- * जलसा सीरतुन्नबी (स) मनाने की तहरीक। (ख़ुत्बा 8 अगस्त 1986 ई)
- * फ़ित्ना शुद्धि के ख़िलाफ़ जिहाद। (ख़ुत्बा 22 अगस्त 1986 ई)
- * भूकम्प से प्रभावित ईलसल्वाडोर की सहायता। (ख़ुत्बा 17अक्तूबर 1986 ई)
- * लजना इमा-इल्लाह मर्कज़िया रब्वा के नए हाल तथा दफ़्तर के लिए चन्दा।

(ख़ुत्बा 16 जनवरी 1987 ई)

- * शत वर्षीय जुबली से पहले हर ख़ानदान एक नया अहमदी ख़ानदान बनाए।

(ख़ुत्बा 30 जनवरी 1987 ई)

- * शत वर्षीय जुबली पर हर देश में एक यादगार इमारत बनाई जाए।

(ख़ुत्बा 6 फरवरी 1987 ई)

- * तहरीक वक़्फ़ नौ का ऐलान। (ख़ुत्बा 3 अप्रैल 1987 ई)
- * तौसीअ मस्जिद नूर हॉलैंड। (ख़ुत्बा 21 अगस्त 1987 ई)
- * टूट चुकी मस्जिदों का निर्माण करें। (ख़ुत्बा 18 सितम्बर 1987 ई)
- * अल्लाह की राह में क़ैद कैदियों की भलाई की कोशिश।

(ख़ुत्बा 4 दिसम्बर 1987 ई)

* नुसरत जहां तंज़ीम नौ। (ख़ुत्बा 22 जनवरी 1988 ई)
* स्पेनिश यात्रियों की आवभगत की तहरीक। (ख़ुत्बा 4 अगस्त 1988 ई)
* नौजवानों को पत्रकारिता से जुड़ने की तहरीक। (ख़ुत्बा 24 फरवरी 1989 ई)
* अहमदी ख़ानदान अपना इतिहास संकलित करें। (ख़ुत्बा 17 मार्च 1989 ई)
* मस्जिद बैयतुल रहमान वाशिंगटन के लिए चन्दा। (ख़ुत्बा 7 जुलाई 1989 ई)
* अफ़्रीक़ा तथा हिन्दुस्तान के लिए पाँच करोड़ की तहरीक।
(ख़िताब जलसा सालाना यू के 1989 ई)
* पाँच मूल शिष्टाचार अपनाने की तहरीक। (ख़ुत्बा 24 नवम्बर 1989 ई)
* वाक़फ़ीन नौ को तीन भाषाएं सीखने की तहरीक।(ख़ुत्बा1 दिसम्बर 1989 ई)
* ईरान के भूकम्प से प्रभावितों के लिए सहायता। (ख़ुत्बा जून 1989 ई)
* रूस में दावत इलल्लाह और वक़्फ़ आरज़ी। (ख़ुत्बा 15 जून 1986 ई)
* अफ़्रीक़ा के अकाल पीड़ितों की सहायता। (ख़ुत्बा 18जनवरी 1991 ई)
* मुहाजरीन लाइबरिया के लिए सहायता की तहरीक। (ख़ुत्बा 26अप्रैल 1991ई)
* अनाथों के पालन पोषण की तहरीक। (ख़ुत्बा जनवरी 1991 ई)
* मानव सेवा की वैश्विक तंज़ीम का ऐलान। (ख़ुत्बा 28 अगस्त 1992 ई)
* विभिन्न विभागों के अहमदी विशेषज्ञों को भूतपूर्व रूसी रियास्तों में जाने की तहरीक। (ख़ुत्बा 2 अक्तूबर 1992 ई)
* बोस्निया के अनाथ बच्चों,सोमालिया के अकाल पीड़ितों के लिए सहायता।
(ख़ुत्बा 30 अक्तूबर 1992 ई)
* मिसीसागा (टोरंटो कैनेडा) की अहमदिया मस्जिद के लिए दान।
(ख़ुत्बा 30 अक्तूबर 1992 ई)
* 1993 ई को इन्सानियत का साल मनाने और मानवता की भलाई की तहरीक।
(ख़ुत्बा 1 जनवरी 1993 ई)
* ज़ुल्म के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने, समस्त देशों के सरबराहों से सम्पर्क करके उन्हें तक़्वा और सच्चाई की राह पर बुलाने की तहरीक। (ख़ुत्बा 22 जनवरी 1993 ई)
* बोस्निया के पीड़ितों की माली तथा अख़लाक़ी सहायता।

(ख़ुत्बा 29 जनवरी 1993 ई)

* विभिन्न धर्मों के लिए नौजवानों की रिसर्च टीमें बनाने की तहरीक। (ख़ुत्बा 14 मार्च 1993 ई)
* घर और समाज को जन्नत तुल्य बनाने की तहरीक।(ख़ुत्बा 16 अप्रैल 1993 ई)
* जमाअत की सभाओं में बुज़ुर्गों के वर्णन करें। (ख़ुत्बा 13 अगस्त 1993 ई)
* बुज़ुर्ग परस्ती से बचें ताकि अगली नस्लें बच जाएं।(ख़ुत्बा 13 अगस्त 1993ई)
* उत्तरीय धुव्र की पहली मस्जिद के लिए माली तहरीक। (ख़ुत्बा 8 अक्तूबर 1993 ई)
* शहद पर नियमित रूप से तहक़ीक़ करने की तहरीक। (ख़ुत्बा 6 जून 1994 ई)
* रवांडा के पीड़ितों लिए माली सहायता की तहरीक। (ख़ुत्बा 22 जुलाई 1994 ई)
* नौ मुबाईन के लिए मर्कज़ी तर्बीयत गाहों का क़ियाम। (19 अगस्त 1994 ई)
* कैंसर पर रिसर्च की तहरीक। (ख़ुत्बा 6 दिसम्बर 1994 ई)
* MTA के लिए विभिन्न और दिलचस्प प्रोग्राम बनाएँ। (ख़ुत्बा 16 दिसम्बर 1994 ई)
* इंग्लिस्तान की मर्कज़ी मस्जिद के लिए पाँच मिलियन पाउंड की तहरीक। (ख़ुत्बा 24 फरवरी 1994 ई)
* निज़ाम शूरा के चार्टर को अन्य भाषाओं में अनुवाद करने की तहरीक। (ख़ुत्बा 31 मार्च 1995 ई)
* ज़िलों के अमीरों की अमारत के गहरे तक़ाज़े पूरे करें।(ख़ुत्बा 14 जून 1996ई)
* पूर्वी यूरोप में जमाअत की ज़रूरतों के लिए 15 लाख डॉलरज़ की तहरीक। (ख़ुत्बा 27 दिसम्बर 1996 ई)
* हर अहमदी घराना डिश एंटीना लगाए। (ख़ुत्बा 01 जनवरी 1997 ई)
* वक़्फ़ जदीद में सम्मिलित होने वालों की संख्या बढ़ाएं। (2 जनवरी 1998 ई)
* लाल किताब रखने की तहरीक। (ख़ुत्बा 7अगस्त 1998 ई)
* बेल्जियम की मस्जिद के लिए माली सहायता। (ख़ुत्बा 1 मई 1998 ई)

* ख़लीफ़तुल मसीह का ख़ुत्बा लाईव सुनें। (ख़ुत्बा 3 मई 1998 ई)
* दर्सुल क़ुरआन एम.टी.ए से लाभ उठाएं। (ख़ुत्बा 19 जून 1998 ई)
* अमलु-तरब पर रिसर्च करें। (ख़ुत्बा 14 सितम्बर 1998 ई)
* अमानतों का हक़ अदा करें। (ख़ुत्बा 28 अगस्त 1998 ई)
* अमीर मुस्लिम देश ग़रीब देशों के बच्चों के लिए दौलत विशेष रूप से रखें। (ख़ुत्बा 25 दिसम्बर1998 ई)
* अनाथों बेवाओं की सेवा की वैश्विक तहरीक इसी तरह इराक के अनाथ बच्चों और विधवाओं के लिए दुआ की तहरीक। (ख़ुत्बा 29 जनवरी 1999 ई)
* मस्जिदों के निर्माण ता मन्सूबा। (ख़ुत्बा 19 मार्च 1999 ई)
* शहीद परिवारों को शहीदों का विवरण जमाअत के रिकार्ड के लिए भिजवाने की तहरीक। (ख़ुत्बा 21 मई 1999 ई)
* नफ़लों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की दुआ सुब्हानल्लाह व बिहम्दिही सब्हानल्लाहिल अज़ीम पढ़ने की तहरीक।(ख़ुत्बा 19 नवम्बर 1999 ई)
* पवित्र भाषा प्रयोग करने की तहरीक। (ख़ुत्बा 4 फरवरी 2000 ई)
* जमाअत इंडोनेशिया अल्लाह की राह में ख़र्च करने का उदाहरण बने और अगले 25 साल में एक करोड़ हो जाएं। (ख़ुत्बा 2 जुलाई 2000 ई)
* बैयतुल फ़ुतूह के लिए और 5 मिलियन पाउंड की तहरीक। (ख़ुत्बा 16 फरवरी 2001 ई)
* मरियम शादी फ़ंड का आरम्भ। (ख़ुत्बा 21 फरवरी 2003 ई)
* ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट के द्वारा इराक़ की माली सहायता की तहरीक। (ख़ुत्बा 4 अप्रैल 2003 ई)

मुबाहला

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने पाकिस्तान के बुराई पसन्द करने वाले मुल्लाओं और अत्याचारी रष्ट्रपति जनरल ज़िया-उल-हक़ को बार-बार सचेत करने के बाद ख़ुदा तआला के आदेश से 10 जून 1988 ई को उन्हें मुबाहला का

चैलेंज दिया और सदर ज़िया-उल-हक़ के बारे में यह भी फ़रमाया कि यदि वह मुबाहला बाक़ायदा तौर पर क़बूल नहीं करते परन्तु अत्याचार से रुकते नहीं तो अल्लाह तआला की गिरफ़्त में आ जाएँगे।

इस चैलेंज के बाद अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से बहुत शीघ्र मुल्लाओं के झूठ को नंगा कर दिया। अत: जुलाई में ही मुल्ला असलम क़ुरैशी अपने आप मिल गया जिस के क़त्ल का मुक़द्दमा हुज़ूर के ख़िलाफ़ बनाया गया था। फिर 17 अगस्त को ज़िया-उल-हक़ की मौत के साथ मुबाहला का निशान एक बार फिर पूरा हुआ। दुश्मन की असफलताओं, तबाहियों और मौतों के अतिरिक्त अहमदियत की शानदार उन्नतियां भी इस मुबाहला में सफलता का प्रमाण हैं।

एक महान युग का समापन

* आख़िरी पैग़ाम बीमारी के समय 9 नवम्बर 2002 ई को जारी फ़रमाया।
* अपने युग की अन्तिम स्थायी माली तहरीक मरियम शादी फ़ंड को जारी करने के सिलसिला में फरवरी 2003 ई में फ़रमाई।
* आख़िरी तहरीक इराक़ की पीड़ित लोगों के लिए 4 अप्रैल 2003 ई को ख़ुत्बा जुम्अ: में फ़रमाई।
* आख़िरी नमाज़ मस्जिद फ़ज़्ल लन्दन में 18 अप्रैल 2003 ई को नमाज़ इशा पढ़ाई।
* 18 अप्रैल 2003 ई को आख़िरी ख़ुत्बा जुम्अ: इरशाद फ़रमाया।
* 18 अप्रैल 2003 ई की शाम को आख़िरी मज्लिस इर्फ़ान में पधारे।
* 19 अप्रैल 2003 ई हफ़्ता के दिन की सुबह आप की मुतमइन रूह अपने रब के हुज़ूर हाज़िर हो गई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन।
* 23 अप्रैल 2003 ई की शाम आप की नमाज़ जनाज़ा सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला ने इस्लामाबाद (यू.के) में पढ़ाई जिसके बाद इस्लामाबाद में ही आप दफ़न हुए।

ख़लीफ़तुल मसीह राबे (रह) की क़बूलियत दुआ की घटनाएं

अल्लाह तआला अपने जिस बंदे को ख़िलाफ़त की नेअमत प्रदान फ़रमाता है उसकी दुआओं में क़बूलियत का प्रभाव भी पैदा करता है। क्योंकि यदि इस चुने हुए की दुआएं क़बूल न हों तो इस में स्वयं ख़ुदा तआला के अपने चुनाव का अपमान है। फिर समय के ख़लीफ़ा के साथ ख़ुदा तआला का एक अलग ही मामला है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमुहल्लाह की क़बूलियत दुआ की एक घटना बतौर नमूना प्रस्तुत है। यह घटना आदरणीय हनीफ़ अहमद महमूद साहिब मुरब्बी सिलसिला ने वर्णन की है और इस घटना का सम्बन्ध उनकी अपनी ज़ात से है। यह घटना मासिक मिस्बाह दिसम्बर 2003 ई. से ली गई है। आप लिखते हैं कि:

वक़्फ़ नौ की बरकतों वाली तहरीक ने जहां सारी दुनिया के अहमदियों के घरों को अल्लाह तआला के फ़ज़लों और बरकतों से भर दिया है। वहां अल्लाह तआला ने विनीत और विनीत के घर वालों को भी इस मुबारक तहरीक में सम्मिलित होने के कारण अपने उपकारों के परिवूर्ण किया है। अल्हमदो लिल्लाह अला ज़ालिक और यह लड़का है जो विनीत को अल्लाह तआला ने इस मुबारक तहरीक के अधीन प्रदान किया। प्रिय सईदुद्दीन अहमद का जन्म एक चमत्कार से कम नहीं।

हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने वक़्फ़ नौ की तहरीक का ऐलान फ़रमाया तो मेरी पत्नी गर्भ से थीं। विनीत ने अपनी पत्नी के परामर्श से शीघ्र हुज़ूर को वक़्फ़ करने का ख़त लिख दिया और इस तरह सईदुद्दीन की गिनती आरम्भिक वाक़फ़ीन नौ में हुई और उसको 70/ B नम्बर मिला।

चूँकि पहले मेरी तीन बेटियां थीं इसलिए स्वभाविक रूप से लड़के की इच्छा थी। स्वयं भी दुआ की,जमाअत के लोगों से भी दुआ का निवेदन करता रहा और सबसे बढ़कर इमाम जमाअत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे को दुआ के ख़त लिखे और यह फ़ैसला किया कि प्रत्येक जुम्अः एक दुआ का ख़त हुज़ूर की सेवा में भिजवाया करूँगा। इस अवधि में हज़रत साहिब की ओर से बहुत ही अधिक तसल्ली तथा सांतावना वाले पत्र प्राप्त होते रहे। जिसमें हुज़ूर ने लड़का और सेहत मंद लड़के

की दुआ से नवाज़ा। बल्कि एक ख़त में मेरी घबराहट पर लिखा कि:

आपका ख़त मिला घबराएँ नहीं। धार्मिक कामों में हमेशा व्यस्त रहें। इस बार अल्लाह तआला इंशा अल्लाह चान्द जैसे लड़के से नवाज़ेगा।

दुआ के ख़तों का सिलसिला तो मेरी ओर से हुज़ूर की सेवा में जारी था और जन्म का समय जैसे-जैसे निकट आ रहा था, विनीत नए पैदा होने वाले का नाम रखने का भी निवेदन कर रहा था। हुज़ूर की मुहब्बत मेरे साथ थी कि मेरे एक ख़त के जवाब में तहरीर फ़रमाया कि नाम पहले भिजवा चुका हूँ नाम वाला यह ख़त मुझे बहुत बाद में मिला। जिसमें हुज़ूर ने अपने मुबारक हाथ से सईदुद्दीन अहमद /सादिया महमूद लिखा।

अफ़्रीक़ा में समस्त आधूनिक की सुविधाओं से वंचित इलाक़ा बू, जिसमें चिकित्सीय निरीक्षण करने का भी उचित प्रबन्ध न हो, वहां यदि डिलीवरी केस गंभीर हो जाए तो फिर अल्लाह तआला ही अपने फ़ज़ल से समस्त रोकें दूर करता है और फ़ज़ल भी वह जो ख़लीफ़तुल मसीह की दुआओं के कारण नाज़िल हो रहे हैं। सईदुद्दीन की मां का मामला भी गंभीर रूप धारण कर गया था और गर्भ के समय internal bleeding होती रही जिसका डाक्टर को अंदाज़ा न हो सका। बच्चे के जन्म पर डाक्टर जो ईसाई थे और नाम उनका Mr. Frazor था मेरे पास आए। परेशानी की अवस्था में मुझे बेटे की सूचना देते हुए कहा कि तुम्हारी पत्नि और बच्चा किस तरह ज़िन्दा हैं। इतनी internal bleeding है कि ऐसी हालत में बच्चा का ज़िन्दा रहना मुश्किल है। मेरी ज़िन्दगी में मां और बच्चा का ऐसी हालत में सुरक्षित रहने का यह पहला केस है। विनीत ने जवाब में कहा कि डाक्टर फ्रीज़र ! इस बच्चे के लिए एक महान रूहानी हस्ती ने दुआएं कर रखी हैं। जो ख़ुदा के हुज़ूर स्वीकार होती हैं। डाक्टर शीघ्र खड़े हो गए और बोले क्या मैं ऐसी हस्ती को देख सकता हूँ जिसकी दुआएं आज की दुनिया में भी स्वीकार होती हैं और मैंने अगले दिन डाक्टर साहिब को पवित्र क़ुरआन अंग्रेज़ी और इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया जो उन्होंने ख़ुशी से स्वीकार कर लिया।

क़बूलियत दुआ के चमत्कार

आदरणीया शमीम क़ादिर साहिबा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह की दुआ की क़बूलियत के बारे में वर्णन करती हैं कि मेरी शादी के बाद कई साल तक मैं औलाद से वंचित रही। हर प्रकार के इलाज करवाए परन्तु कोई लाभ न हुआ। माहिर डाक्टरों ने जब पूर्णतः निराशा और मायूसी का इज़हार करते हुए मेरी औलाद होने के लिए असंभव जैसे बोले तो मैंने बहुत विनम्रता से हुज़ूर की सेवा में सारा मामला लिख कर दुआ का निवेदन किया। हुज़ूर ने मुझे लिखा कि डाक्टर नुसरत जहां साहिबा से सम्पर्क करें और दूसरी ओर डाक्टर साहिबा को भी लिखा कि मुझ से सम्पर्क करें। अतः फ़ज़्ले उमर हस्पताल की ओर से भी मुझे ख़त मिला और मैंने रब्वा जा कर सारी रिपोर्टस दिखाईं। आदरणीया डाक्टर साहिबा ने दुआ के साथ इलाज शुरू किया। कई माह बाद उन्होंने मेरा इलाज पूर्णता बंद कर दिया और कहा कि वह लंदन जा रही हैं, वहां अपने सीनीयरों से परामर्श के बाद वापस आकर इलाज दुबारा शुरू करेंगी। अभी इलाज बंद हुए तीन माह गुज़रे थे कि गर्भ ठहर गया। इस आशा के विपरीत ख़बर की सूचना उन्हें लंदन में ही दी गई। उन्होंने वापस आकर टेस्ट करवाए और संभावित मदद की। हुज़ूर की सेवा में दुआ के लिए भी निवेदन किया जाता रहा। फिर अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से बेटे से नवाज़ा। कुछ समय बाद पुनः गर्भ ठहरा और अल्लाह तआला ने दूसरे बेटे से नवाज़ा। अतः एक असंभव चीज़ को ख़ुदा तआला ने अपने फ़ज़्ल से हुज़ूर की दुआएं क़बूल फ़रमाते हुए संभव कर दिखाया।

आदरणीय शेख़ मुहम्मद आमिर साहिब वर्णन करते हैं कि मेरे लिए हुज़ूर ने जो भी दुआ की वह मैंने पूरी होते हुए देखी। एक बार मैंने निवेदन किया कि हम पर बैंक का बहुत बड़ा क़र्ज़ है जो हम अदा करने की ताक़त नहीं रखते, न ही कोई उपाय नज़र आता है। आप ने फ़रमाया उतर जाएगा हिम्मत से काम लो। छः माह के अंदर बैंक के क़ानून के अन्दर ऐसी तब्दीली आई कि शर्तें बहुत नर्म कर दी गईं और हमारा सारा क़र्ज़ उतर गया।

ढाका में एक अहमदी दोस्त अपने किसी दोस्त को तब्लीग़ करते थे और लिट्रेचर

तथा कैसेटस दिया करते थे। धीरे-धीरे उनको जमाअत से दिलचस्पी पैदा हो गई। इसी समय उनको आँखों की ऐसी बीमारी हो गई कि डाक्टरों ने कह दिया कि दृष्टि(नज़र) नष्ट हो जाएगी और उसे बचाने का कोई रास्त नहीं है। इस पर उनके दोस्तों ने उन्हें बुरा भला कहना शुरू कर दिया कि यह अहमदियों की किताबें पढ़ने की सज़ा है। उन्होंने इस परेशानी का वर्णन अपने अहमदी दोस्त से किया जिन्होंने हुज़ूर को दुआ के लिए लिखा। कुछ ही दिन में अल्लाह के फ़ज़ल से सारा नूर वापस आ गया और डाक्टरों ने बताया कि बीमारी का निशान भी बाक़ी नहीं रहा।

आदरणीय सफ़दर अली वड़ेच वर्णन करते हैं कि शादी के छ: साल बाद तक मैं औलाद से वंचित रहा। जब हुज़ूर ने वक़्फ़ नौ की तहरीक फ़रमाई तो मैं बार-बार दुआ के लिए लिखता रहा। हुज़ूर की ओर से वक़्फ़ नौ नम्बर भी अलाट कर दिया गया। आख़िर में हालात ऐसे हुए कि मुझे दूसरा विवाह करना पड़ा और अल्लाह तआला ने मुझे दो बेटे और एक बेटी प्रदान की।

आदरणीय मन्सूर अहमद साहिब आफ़ हैदराबाद (पाकिस्तान) के गले में कष्ट हुआ जो कई महीनों तक होता रहा। किसी इलाज से लाभ न हुआ तो उन्होंने हुज़ूर की सेवा में लिखा। हुज़ूर ने दुआ के साथ एक होमियोपैथिक दवा लिखी जो वह पहले भी प्रयोग कर चुके थे और इसकी एक शीशी घर में भी पड़ी थी। हुज़ूर का ख़त आने पर पुन: वही प्रयोग करना शुरू कर दी तो अल्लाह तआला ने स्वस्थ कर दिया।

ईरान की डाक्टर फ़ातमतुल ज़ुहरा ने अपने इकलौते बेटे के बारे में लिखा कि उसकी टांग में इतनी कमज़ोरी आ गई है कि लंगड़ा कर चलता है और डाक्टर कोई निदान नहीं कर पा रहे। जिस दिन उन्होंने दुआ का ख़त लिखा,उसी दिन से वह लाइलाज मरीज़ सेहतमन्द होने लगा और बिल्कुल स्वस्थ हो गया।

आदरणीय नईमुल्लाह ख़ान साहिब वर्णन करते हैं कि सोवियत यूनियन टूटने के बाद मैंने भी हुज़ूर की तहरीक पर लब्बैक कहा और कारोबार के लिए उज़बेकिस्तान आ गया। परन्तु कारोबारी हालात ख़राब होने पर मुझे किरगिज़स्तान स्थान्तरित होना पड़ा। इस अवसर पर हुज़ूर ने बहुत हौसला दिया और एक ख़त में कहा इंशा अल्लाह

आपके समस्त नुक़्सान की भरपाई हो जाएगी। बाद में हुज़ूर के शब्द अक्षशः पूरे हुए और अल्लाह तआला ने कारोबार में बहुत बरकत डाली।

आदरणीय डाक्टर सय्यद बरकत अहमद साहिब इंडियन फारन सर्विस में रहे, कई किताबें लिखीं। मसाने में कैंसर हुआ तो अमरीका में आप्रेशन करवाया जो असफल रहा और डाक्टरों ने चार से छः हफ़्ता की ज़िन्दगी बताई। आपने हुज़ूर की सेवा में दुआ के लिए लिखा तो जवाब आया। बहुत दर्द के साथ फ़क़ीरों वाली दुआ की तौफ़ीक़ मिली और एक समय इस दुआ के बीच ऐसा आया कि मेरे शरीर पर कपकपी छा गई। मैं अल्लाह तआला की रहमत से उम्मीद लगाए बैठा हूं कि यह क़बूलियत का निशान था। अत: इस दुआ की बरकत से अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उन्होंने चार साल तक सक्रिय इल्मी और तहक़ीक़ी ज़िन्दगी गुज़ारी जिसे डाक्टर भी चमत्कार क़रार देते थे।

लाइबेरिया के मिस्टर मासा कूए साहिब का दिल बढ़ गया और फेफड़ों में पानी पड़ गया। डाक्टरों ने जो इलाज बताया उस पर प्रति ख़ुराक छः सौ डालर का ख़र्च आता था। वह परेशानी में वहां अमीर जमाअत को मिले जिन्होंने हुज़ूर की सेवा में दुआ के लिए लिखा और होम्योपैथी का नुस्ख़ा बना कर दिया तो अल्लाह तआला ने पूर्ण रूप से स्वस्थ कर दिया ।

आदरणीया अमतुल हफ़ीज़ बेगम साहिबा (रब्वा) 1986 ई. में बहुत बीमार हो गईं। बहुत इलाज करवाया परन्तु तबीयत बिगड़ती ही रही। आख़िर हुज़ूर की सेवा में बीमारी का विवरण लिख कर भेजा। वह ख़ुदा को गवाह बना कर वर्णन करती हैं कि ख़त लिखते ही बीमारी में कमी का अनुभव होना शुरू हुआ। दो सप्ताह बाद हुज़ूर का जवाब मिला मैंने दुआ भी की है इंशा अल्लाह आपको आराम आ जाएगा। यह ख़त पढ़ते ही सम्पूर्ण स्वास्थय का अनुभव होने लगा और इसके बाद आज तक वैसा कष्ट नहीं हुआ।

अप्रैल 1980 ई में हुज़ूर बहैसियत सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह एक मज्लिस सवाल जवाब में तशरीफ़ ले गए जहां एक प्रभावशाली ग़ैर जमाअत मलिक नज़ीर

हुसैन साहिब लंगड़ियाल ने दुआ की क़बूलियत के बारे में पूछा। हुज़ूर ने दुआ के फ़लसफ़ा पर रोशनी डाली। हुज़ूर को बताया गया कि मलिक साहिब का बेटा जवान हो चुका है, हाई स्कूल में पढ़ता है परन्तु सख़्त लुक्नत के कारण किसी से बात भी नहीं कर सकता। किसी इलाज से लाभ नहीं हुआ। हुज़ूर ने दुआ की हामी भरी और एक दवा भी लिख कर दी। यद्यपि मलिक साहिब ने वह दवा बाज़ार से मंगवा ली परन्तु खिलाने से पहले ही उनका बेटा फ़र-फ़र बोल रहा था सारी लुक्नत ग़ायब हो चुकी थी।

आदरणीय क़ुरैशी दाऊद अहमद साजिद साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला की शादी को 16 साल हो चुके थे। कई किस्म के इलाज करवाए परन्तु कोई लाभ न हुआ। 1999 ई में इंग्लिस्तान नियुक्ति हुई तो हुज़ूर से मुलाक़ात के समय दुआ का निवेदन किया और अपने तौर पर एक होम्योपैथी दवा का प्रयोग जारी रखा। अल्लाह तआला ने शादी के 18 साल बाद बेटी प्रदान की।

आदरणीय सैफुल्लाह चीमा साहिब (नाईजीरिया) अपनी पत्नि के साथ हुज़ूर की सेवा में हाज़िर हुए और बताया कि एक लम्बा समय शादी को गुज़र चुका है परन्तु कोई औलाद नहीं है। हुज़ूर ने बे-इख़्तियार फ़रमाया बुश्रा बेटी आइन्दा जब आओ तो बेटा लेकर आना। फिर शीघ्र ही अल्लाह तआला ने उन्हें बेटे से नवाज़ा।

घाना के एक चीफ़ नाना ओजीलो साहिब ने ईसाइयत से तौबा करके हुज़ूर के मुबारक हाथ पर बैअत का सौभाग्य प्राप्त किया। जिसका कारण यह बात थी कि उनकी पत्नी का गर्भ हर बार नष्ट हो जाता था। ईसाई पादरियों और दूसरों से दम करवाए परन्तु कोई लाभ न हुआ। आख़िर उन्होंने अमीर साहिब गाना के द्वारा हुज़ूर की सेवा में दुआ का निवेदन किया। हुज़ूर ने जवाब में फ़रमाया आपको बच्चा प्राप्त होगा और बहुत ही सुन्दर और उम्र पाने वाला बच्चा होगा। जब उनकी पत्नि को गर्भ ठहरा तो डाक्टरों ने कहा कि यह बच्चा मर जाएगा और यदि गर्भ नष्ट न करवाया गया तो पत्नि की जान को भी बहुत ख़तरा है। परन्तु चीफ़ ने हुज़ूर के ख़त का हवाला देकर डाक्टरों से कहा कि बच्चा और पत्नी को कोई नुक़्सान नहीं होगा। फिर वह

प्रत्येक सप्ताह दुआ की याद करवाते रहे। अत: अल्लाह तआला ने उन्हें अत्यधिक सुन्दर और सेहतमंद बच्चा प्रदान किया और उनकी पत्नी भी बिल्कुल ठीक ठाक हैं। अल्हम्दो लिल्लाह।

आदरणीय नादिर हुसैन खोखर साहिब को ग़ुंडों ने पचास लाख रुपए के बदला में अग़वा कर लिया। हुज़ूर की सेवा में बार-बार दुआ की याददहानी करवाई गई। आख़िर हुज़ूर की दुआएं स्वीकार हुईं और आशा के विपरीत न केवल सातवें दिन उनको रिहाई मिल गई बल्कि वे लोग एक सौ सम्माननीय लोगों का वफ़द लेकर क्षमा के लिए भी आए और पचास लाख रुपए जो वसूल किए गए थे वह भी वापस कर गए।

आदरणीय नसीर अहमद शाह साहिब चेयरमैन MTA लिखते हैं कि अमरीका तथा कैनेडा के लिए डीजीटल सर्विस शुरू करते समय एक कंपनी से रिसीवर तैयार करने का समझौता हुआ। क़ीमत यद्यपि अधिक थी परन्तु इसके सिवा कोई रास्ता न था। फिर अचानक उनका क्षमा का फ़ोन आ गया। इसकी सूचना डरते डरते हुज़ूर को दी गई तो फ़रमाया अल्लाह हमारे साथ है। हे अल्लाह रूहुल-क़ुदुस (फरिश्ते) से हमारी मदद कर। इस घटना के तीसरे दिन ही एक कंपनी ने जिसका हमें ज्ञान भी नहीं था अपने आप रिसीवर बनाने की पेशकश की और उनकी क़ीमत पहली कंपनी से एक तिहाई कम थी।

आदरणीय चौधरी शब्बीर अहमद साहिब वकीलुल माल अव्वल तहरीक जदीद रब्वा वर्णन करते हैं कि 1998 ई. में जलसा सालाना यू.के. में सम्मिलित होने के लिए जब मुझे दावत मिली तो उन दिनों मुझे नक्सीर फूटने की बहुत कष्ट था। मुझे 24 जुलाई की शाम 5 बजे लाहौर के लिए रवाना होना था परन्तु ख़ून अधिक बहने से कमज़ोरी बहुत हो गई थी। लगभग ग्यारह बजे दोपहर मैंने हुज़ूर की सेवा में दुआ की फैक्स भिजवाई। कुछ ही देर बाद मुझे यक़ीन हो गया कि हुज़ूर की दुआ ने अल्लाह तआला के फ़ज़्ल को खींच लिया है। बहते हुए ख़ून का एकदम बंद हो जाना भी चमत्कार था परन्तु कमज़ोरी का एक दम दूर हो जाना इससे भी बड़ा चमत्कार था।

प्रोग्राम के अनुसार लाहौर रवाना हुआ। वहां पहुंच कर इलम हुआ कि जहाज़ छः घंटा लेट है। अतः लगभग सारी रात एअरपोर्ट पर गुज़ारी परन्तु किसी समय भी कमज़ोरी का आभास तक न हुआ। सारा सफ़र अच्छी तरह गुज़रा। लन्दन पहुंचे तो जलसा के प्रबन्धों का निरीक्षण फ़रमाने के लिए हुज़ूर तशरीफ़ लाए और विनीत को देखते ही फ़रमाया अब ठीक हैं? इसके बाद जलसा में अपनी मौजूदगी में हुज़ूर ने नज़्म पढ़ने की सआदत भी प्रदान की।

हुज़ूर को ख़लीफ़ा बनने से पहले भी कुछ लोग दुआ के लिए लिखते थे। यदि कभी कोई सय्यदी का लफ़्ज़ लिख देता तो नापसन्द फ़रमाते और समझाते कि यह लफ़्ज़ केवल समय के ख़लीफ़ा के लिए उचित है। बहावलपुर के एक दोस्त हकीम अफ़ज़ल साहिब ने एक बार लिखा कि उनको एक पागल कुत्ते ने काट लिया है जिससे बहुत परेशानी है। हुज़ूर ने जवाब में लिखा कि अल्लाह तआला फ़ज़्ल करेगा और आपको कुत्ते के काटने से हरगिज़ कोई नुक़्सान नहीं पहुँचेगा। अतः यह दोस्त अब भी ज़िन्दा हैं।

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे की रोया तथा कश्फ़

अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फ़रमाता है

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ

(सूरह अश्शूरा : आयत 52)

अनुवाद: और किसी इन्सान के लिए संभव नहीं कि अल्लाह उससे बात करे परन्तु वह्यी के माध्यम से या पर्दा के पीछे से या कोई पैग़ाम लाने वाला भेजे जो उसके आदेश से जो वह चाहे वह्यी करे। निसन्देह वह बहुत शान (और) हिक्मत वाला है।

इस आयत से ज्ञान होता है कि अल्लाह तआला इन्सान से तीन तरीक़ों पर बात करता है। अर्थात वह्यी के द्वारा सीधा। दूसरा तरीक़ा पर्दे के पीछे से, इससे अभिप्राय रो'या कश्फ़, ख़्वाब, इल्का हैं। तीसरा तरीक़ा कोई पैग़ाम लाने वाला भेज कर। और यह हक़ीक़त तो कभी भुलाई नहीं जा सकती कि अल्लाह तआला बड़ी शान वाला

और हिक्मत वाला है। जो तरीक़ा पसन्द करता है अपने नेक बंदों को उससे सुशोभित करता है।

वैसे वह्यी के शाब्दिक और कोष के अर्थ हैं: الاشارة السريعة (मुफ़रदाते राग़िब) अर्थात वह इशारा जो तेज़ी से किया जाए।

अरबी भाषा की प्रसिद्ध शब्दकोश लिसानुल अरब में लिखा है- الرؤيا ما رأيته (मुफ़रदाते राग़िब) अर्थात रो'या उसे कहते हैं जो इन्सान नींद या बेदारी में देखता है।

कश्फ़ उस दृश्य को कहते हैं जो ऊंघते या कुछ जागते हुए में दिखाया जाता है। कश्फ़ कभी ताबीर वाला होता है और कभी ज़ाहरी शक्ल में पूरा होता है। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कश्फ़ के बारे में लिखते हैं:

ख़ुदा की अजीब बातों में से जो मुझे मिली हैं एक यह भी है जो मैंने ठीक बेदारी(जागृत अवस्था) में जो कश्फ़ी बेदारी कहलाती है। यसू मसीह से कई बार मुलाक़ात की है। यह मुकाशफ़ा की गवाही बिना दलील के नहीं बल्कि मैं यक़ीन रखता हूँ कि यदि कोई सच्चाई का इच्छुक नेक नीयत से एक समय तक मेरे पास रहे और वह हज़रत मसीह को कश्फ़ी हालत में देखना चाहे तो मेरे ध्यान और दुआ की बरकत से वह उनको देख सकता है। उन से बातें भी कर सकता है और उनके बारे में उनसे गवाही भी ले सकता है। क्योंकि मैं वह व्यक्ति हूँ जिसकी रूह में शरीर के तौर पर यसू मसीह की रूह सुकूनत रखती है। (तोहफ़ा केसरिया पृष्ठ 21)

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहिमहुल्लाह को अल्लाह तआला ने रो'या तथा कश्फों के द्वारा ग़ैब की ख़बरों से नवाज़ा। नीचे कुछ एक कश्फ़ों का वर्णन है।

ख़लीफ़ा बनने के बाद पहला कश्फ़ (आध्यात्मिक स्वप्न)

6 सितम्बर 1985 ई को ख़ुत्बा जुम्अ: में हज़रत चौधरी मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहिब का वर्णन करते हुए फ़रमाया

"मुझे उनके साथ अल्लाह तआला की ओर से एक विशेष सम्बन्ध प्रदान हुआ था और जब ख़लीफ़ा बनने के बाद अल्लाह तआला ने मुझे पहला कश्फ़ दिखाया है तो आश्चर्य की बात नहीं कि पहले कश्फ़ में चौधरी ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहिब ही

दिखाए गए और वह भी एक अजीब कश्फ़ था। मैं हैरान रह गया क्योंकि इस किस्म की बातों की ओर इन्सान का दिमाग़ प्राय: जा ही नहीं सकता। एक दिन या दो दिन ख़लीफ़ा बनने को गुज़रे थे तो किसी ने पूछा आपको ख़लीफ़ा बनने के बाद इल्हाम या कोई कश्फ़ इत्यादि हुआ है, मैंने कहा मुझे अभी तक तो कुछ नहीं हुआ बस मैं गुज़र रहा हूँ जिस तरह भी ख़ुदा तआला सुलूक कर रहा है। ठीक है। तो उसके कुछ दिन बाद ही मैंने सुबह की नमाज़ के बाद कश्फ के द्वारा बड़े स्पष्ट तौर पर यह नज़ारा देखा कि चौधरी ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहिब लेटे हुए हैं और अल्लाह तआला से बातें कर रहे हैं और मैं वह बातें सुन रहा हूँ और दूरी भी है। मुझे यह इल्म है कि लेटे हुए लन्दन में हैं परन्तु जिस तरह फिल्मों में दिखाया जाता है क़रीब क़रीब के टेलीफ़ोन कहीं दूर से हो रहे हैं और कोई और सुन रहा है मानो कि इस किस्म के अंदाज़े कैमरे के ट्रिक Trick से हो जाते हैं तो कश्फ यह देख रहा था कि चौधरी साहिब अपने बिस्तर पर लेटे हुए अल्लाह तआला से बातें कर रहे हैं और मैं सुन भी रहा हूँ और इस पर दिमाग़ में समीक्षा भी हो रही है साथ, परन्तु मेरी आवाज़ वहां नहीं पहुंच रही। अल्लाह तआला ने चौधरी साहिब से यह पूछा कि आपका कितना काम बाक़ी रह गया है तो चौधरी साहिब ने निवेदन किया कि काम तो चार साल का है परन्तु यदि आप एक साल भी प्रदान कर दें तो काफ़ी है यह सुनकर मुझे बहुत सख़्त धक्का लगा और मैं यह कहना चाहता था कि चौधरी साहिब ! आप चार साल मांगें ख़ुदा तआला से,आप यह क्या कह रहे हैं कि एक साल भी प्रदान हो जाए तो काफ़ी है। मांग रहे हैं ख़ुदा से और काम चार साल का वर्णन कर रहे हैं और फिर कहते हैं कि साल ही काफ़ी है। तो मुझे इससे बेचैनी पैदा हुई परन्तु जैसा कि मैंने वर्णन किया है कि इस दृश्य में मैं अपनी बात पहुंचा नहीं सकता था, केवल सुन रहा था कि यह बातचीत हो रही है मैंने चौधरी हमीद नस्रुल्लाह साहिब और उनकी बेगम को लिख कर भेज दिया और मुझे इससे चिन्ता पैदा हुई कि हो सकता है कि ख़ुदा तआला शायद लम्बी ज़िन्दगी दे दे परन्तु काम का केवल एक ही साल मिले। अत: ऐसा ही हुआ। 1983 ई में आप पर बहुत बीमारी का हमला हुआ और इस समय

तक जो वह काम कर सके हैं वास्तव में उसके बाद फिर धीरे-धीरे व्यावहारिक काम से उनको अलग होना पड़ा अर्थात भरपूर काम की केवल एक साल तौफ़ीक़ मिली है। फिर आपको पाकिस्तान जाना पड़ा बीमारी के कारण। इसके बाद फिर तबीयत गिरती चली गई है कमज़ोर होती चली गई है फिर केवल अध्ययन पर आ गए थे।"

(मासिक ख़ालिद दिसम्बर 1985 ई पृष्ठ 16)

फ्रायडे - दि टेंथ (Friday The Tenth)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे फ़रमाते हैं:

पिछले साल के आख़िर पर सफ़र यूरोप के समय अल्लाह तआला ने जो कश्फ़ी नज़ारा दिखाया था जिसमें जुम्अ: के दिन एक डायल की शक्ल में दस की गिनती चमकती हुई और नब्ज़ की तरह धड़कती हुई दिखाई गई थी और इस पर मैं यह कह रहा था Friday The Tenth बावजूद इस इल्म के कि यह 10 समय की गिनती है परन्तु अल्लाह तआला के तसर्रुफ़ के अधीन ज़बान से यही वाक्य जारी हुआ। Friday The Tenth (ख़ुत्बा जुम्अ: ईदुल फ़ितर जुम्अ: 21 जून 1985 ई)

सहायता का वादा

एक बहुत ही प्यारा कश्फ़ी नज़ारा दिखाया जो आपके सामने वर्णन करना चाहता हूँ। कुछ दिन पहले या लगभग दो सप्ताह पहले शायद, अचानक मैंने यह नज़ारा देखा कि इस्लामाबाद जो इंग्लिस्तान में है वहां मैं प्रवेश कर रहा हूँ। इस कमरा में जहां हम ने नमाज़ पढ़ी थी और सब दोस्त सफ़ें बनाकर बैठे हुए हैं इसी तरह प्रतीक्षा में। ठीक मुसल्ला के पीछे चौधरी मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहिब अपनी इस उम्र के नज़र आ रहे हैं जो पंद्रह बीस साल की थी और रूमी टोपी पहनी हुई थी, वह जो कि किसी समय में पहना करते थे और बहुत ख़ुश ठीक इमाम के पीछे बैठे हुए हैं। मुझे देखते ही वह नमाज़ के लिए उठ कर खड़े हुए और मैं उन की ओर बढ़ने लगा। पूछूँ चौधरी साहिब आप कब आ गए आप तो बीमार थे अचानक कैसे आना हुआ? तो वह नज़ारा जाता रहा। आखें खुली थीं, वह जो मन्ज़र सामने

पहले था वह सामने आ गया। तो अल्लाह तआला ऐसी ख़ुश ख़बरियाँ भी प्रदान कर रहा है जिससे मालूम होता है अल्लाह की सहायता और उसके विजय के वादे इंशा अल्लाह तआला शीघ्र पूरे होंगे। यह बातें उनके इलावा हैं। जमाअत तो हर हाल में उन्नति कर रही है। जितना ख़ुदा इंतज़ार करवाए हम करेंगे। इंशा अल्लाह तआला। (ख़ुत्बा जुम्अ:16 नवम्बर 1984 ई)

जिन दिनों पाकिस्तान के हालात कारण कुछ बहुत परेशानी में रातें गुज़रीं तो सुबह के समय इल्हाम के द्वारा बड़ी शौकत के साथ अल्लाह तआला ने फ़रमाया अस्सलामो अलैकुम और ऐसी प्यारी रोशन आवाज़ थी और आवाज़ मिर्ज़ा मुज़फ़्फ़र की मालूम हो रही थी अर्थात जो मैंने भी सुनी और यूं लग रहा था जैसे वह मेरे कमरे की ओर आते हुए अस्सलामो अलैकुम कहते हैं। बाहर ही शुरू कर दिया हो अस्सलामो अलैकुम कहना और अंदर दाख़िल होने से अस्सलामो अलैकुम कहते हुए दाख़िल होने वाले हैं। तो उस समय तो ख़्याल ही नहीं था कि यह इल्हामी अवस्था है। क्योंकि मैं जागा हुआ था पूरी तरह परन्तु यह माहौल था, इससे सम्बन्ध कट गया था उस समय, अत: शीघ्र मेरी प्रतिक्रिया यह हुई कि मैं उठ कर बाहर जा के मिलूं उन को और उसी समय वह अवस्था जो थी वह ख़त्म हुई और मुझे पता चला कि यह तो ख़ुदा तआला ने न केवल यह कि अस्सलामो अलैकुम का वादा दिया है। बल्कि ज़फ़र का वादा भी साथ प्रदान कर दिया है क्योंकि मुज़फ़्फ़र की आवाज़ में अस्सलामो अलैकुम पहुंचाना यह एक बहुत बड़ी और दोहरी ख़ुशख़बरी है। और पहले भी ज़फ़रुल्लाह ख़ां ही ख़ुदा तआला ने दिखाए और दोनों में ज़फ़र एक साझी बात है। (ख़ुत्बा जुम्अ: 16 नवम्बर 1984 ई)

तबाह करने वाला और दर्दनाक

हुज़ूर फ़रमाते हैं : 1974 ई. में पाकिस्तान में अहमदियों के ख़िलाफ़ फ़साद फूट पड़े बल्कि बाक़ायदा मन्सूबा से यह फ़साद करवाए गए जिसमें अहमदियों का जानी तथा माली नुक़्सान हुआ। फिर सितम्बर 1974 ई. में मिस्टर भुट्टो ने क़ौमी असैंबली से अहमदियों को ग़ैर मुस्लिम क़रार दिलवाया। अहमदियों पर जो अत्याचार किए जा

रहे थे उन पर मेरा दिल ख़ून के आँसू रो रहा था। मैंने अपने रब के हुज़ूर दुआ की कि हे मेरे रब मेरी सहायता कर। मैंने यह दुआ भी की कि वह ज़ालिमों को उनके ज़ुल्म की सज़ा दे। कितनी ही रातें मैंने बहुत परेशानी की हालत में जाग-जाग कर काटी हैं।

एक रात अचानक मेरी आँख खुल गई और मैं बिना इरादा उछल कर बिस्तर से बाहर आ गया। मैं किसी ताक़त की ऐसी गिरफ़त में था जिसे शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। यह अनुभव उस रूहानी अनुभव से मिलता जुलता था जिसमें से मैं बचपन के दिनों में गुज़र चुका था। अर्थात जब अल्लाह तआला ने मुझे पहले पहले अपने इल्हाम से नवाज़ा था। अब भी ऐसी ही अवस्था मुझ पर छाई थी। मैं भावनाओं की शिद्दत के अधीन होकर ऊंची आवाज़ से यह शब्द बार-बार दोहरा रहा था। اَدْهٰى وَاَمَرُّ और अधिक तबाह करने वाला और अधिक दर्दनाक। यूं लगता था जैसे मेरा वजूद किसी और ताक़त के क़ब्ज़ा में हो और मुझे अपने आप पर कंट्रोल न रहा हो... मैंने महसूस किया कि यह शब्दों को दोहराने के साथ-साथ काँप भी रहा हूँ। फिर मैं शऊरी हालत की ओर स्थानान्तरित किया गया और वह शब्द जिन्हें मैं दोहरा रहा था। समझ में आने लगे और यह बात भी कि मैं यह शब्द दोहरा क्यों रहा हूँ। मुझे सामूहिक रूप से इन शब्दों के अर्थ का तो ज्ञान था परन्तु उनका सन्दर्भ याद न था। जैसे ही रबूदगी की यह अवस्था ख़त्म हो गई मैं उठा। इन शब्दों का स्थान तलाश करना शुरू कर दिया देखूं तो सही कि किस अवसर और सन्दर्भ में पवित्र क़ुरआन में यह शब्द आए हुए हैं और वह दिन और आज का दिन मैंने सम्पूर्ण तौर पर अल्लाह तआला के फ़ैसले के सामने सिर झुका दिया कि वह जिस तरह चाहे अपनी तक़दीर के रुख से पर्दा उठाए।

भुट्टो की फांसी

मिस्टर भुट्टो को फांसी की सज़ा सुनाए दो साल बीत चुके थे। यह किसी के सोच में भी नहीं था कि इस सज़ा पर काम भी होगा। 4 अप्रैल 1979 ई. की सुबह होने को थी। बाहर अभी अन्धेरा छाया हुआ थी कि हुज़ूर की अचानक आँख खुल गई। आप फ़रमाते हैं:

मुझे शिद्दत से आभास हुआ और लोहे की कील की तरह यह आभास मेरे सीने में गड़ गया जैसे कोई दुर्घटना हो गई हो। मैं जागृत अवस्था में बिस्तर पर लेटा हुआ था। यहां तक कि मेरे बिस्तर से उठने तक तहज्जुद और फ़ज्र की नमाज़ का समय हो गया। मैं प्राय सुबह के समय रेडियो पर ख़बरें सुनने का आदी नहीं हूँ। परन्तु आदत से हट कर आज के दिन मैंने रेडियो का बटन दबाया। पहली ही ख़बर जो मैंने सुनी वह थी कि मिस्टर भुट्टो को फांसी दे दी गई है।

अफ़ग़ानिस्तान पर रूसी क़ब्ज़ा

हुज़ूर वर्णन फ़रमाते हैं:

जिन दिनों में ईरान का इन्क़िलाब आ रहा था। अभी शुरू हुआ था 1977 ई. की बात है। मैंने रो'या में देखा कि मैं एक स्थान का नज़ारा कर रहा हूँ। परन्तु मेरे सब कुछ देखने के बावजूद मानो मैं इसका हिस्सा नहीं हूँ। मौजूद भी हूँ, देख भी रहा हूँ परन्तु बतौर नज़ारा के मुझे यह चीज़ दिखाई जा रही है। एक बड़े व्यापक गोल दायरे में नौजवान खड़े हैं और वह बारी बारी अरबी में बहुत सुर के साथ पढ़ते हैं और बारी बारी इस तरह मन्ज़र बदलता है पहले अरबी फिर अंग्रेज़ी फिर अरबी फिर अंग्रेज़ी फिर अरबी फिर अंग्रेज़ी और वह वाक्य जो उस समय लगता है जैसे पवित्र क़ुरआन की आयत...... कोई नहीं जानता सिवाए उसके और यह जो विषय है यह इस तरह मुझ पर खुलता है कि नज़ारे दिखाए जा रहे हैं, मैंने जैसा कि कहा है मैं वहां हूँ भी और नहीं भी। एक पहलू से सामने ये नौजवान गा रहे हैं और फिर मेरी नज़र पड़ती है उसकी ओर, सीरिया मुझे याद है इराक़ याद है और फिर ईरान की ओर फिर अफ़ग़ानिस्तान, फिर पाकिस्तान विभिन्न देश बारी बारी सामने आते हैं और विषय दिमाग़ में आता है कि यहां जो कुछ हो रहा है जो अजीब घटनाएं प्रकट हो रही हैं, जो इन्क़िलाब आ रहे हैं, उनका आख़िरी मक़सद सिवाए ख़ुदा के किसी को पता नहीं। हम उन को संयोगपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं के तौर पर देख रहे हैं हम समझते हैं कि संयोग से प्रकट होने वाली घटनाएं हैं परन्तु रो'या में जब वे मिलकर यह गाते हैं तो इससे यह सोच अधिक मज़बूत होती चली जाती है कि यह संयोग से

अलग-अलग होने वाले घटनाएं नहीं बल्कि घटनाओं की एक ज़ंजीर है जो तक़दीर बना रही है और हम देख रहे हैं परन्तु हमें कुछ समझ नहीं आ रहा है कि क्या हो रहा है। अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता जिस का हाथ यह तक़दीर बना रहा है तो वह रो'या थी जो चौधरी अनवर हुसैन साहिब उन दिनों तशरीफ़ लाए उनको भी मैंने सुनाई तथा कुछ और दोस्तों को भी .... कि यह कुछ अजीब सी बात है। मालूम होता है कोई बड़ी बड़ी घटनाएं इन घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में प्रकट होने वाली हैं जो उनके पीछे-पीछे आएँगी। हम जो स्यासी अंदाज़े कर रहे हैं यह कुछ और है जो ख़ुदा के वास्तविक उद्देश्य हैं वे कुछ और हैं। तो मैं समझता हूँ कि अफ़ग़ानिस्तान के साथ रूस की वर्णन की गई पालिसी का गहरा सम्बन्ध है कुछ शिक्षा उन्होंने वहां सीखी हैं कुछ और स्यासी बातें इन अनुभवों में ज़ाहिर हुई हैं कि जिनके नतीजा में यह बाद के महान इन्क़िलाब पैदा होने शुरू हुए।

क़दीर के एक नए अर्थ

हुज़ूर ने 10 जनवरी 1986 ई. को ख़ुत्बा जुम्अ: में शब्द क़दीर के अर्थ के अन्तर्गत एक नए विषय का विस्तार से वर्णन किया जो पिछले ख़ुत्बे के समय कश्फ में अल्लाह तआला ने आपको बताया और फिर विस्तार से समझाया गया। इस कश्फ़ का विस्तार वर्णन करते हुए फ़रमाया

"पिछले ख़ुत्बे में मैंने "कदरा" शब्द के एक अर्थ "उलमा" के वर्णन किए थे अर्थात उसने सिखाया। दरअसल मेरे नोटस में यह अर्थ लिखे हुए मौजूद नहीं थे। शंका के बावजूद पिछले ख़ुत्बा के समय मैंने पुन: नोटस देखे तो वहां साफ़ तौर पर उलमा लिखा हुआ था अत: मैंने यही पढ़ा और इन्हीं अर्थों को वर्णन किया परन्तु पूरी तसल्ली नहीं हुई। अत: अल्लाह तआला से दुआ की और उसने विस्तार से यह अर्थ समझाए जो बहुत हैरत-अंगेज़ और व्यापक हैं और पवित्र क़ुरआन से स्पष्ट तौर पर प्रमाणित हैं।

(ज़मीमा मासिक अन्सारुल्लाह रब्वा जनवरी 1986 ई पृष्ठ 3)

आर्थिक सहायता की ख़ुशख़बरी

हुज़ूर ने टिलफोर्ड में ईदुल फ़ितर का ख़ुत्बा देते हुए 9 जून 1986 ई को अपने एक नए स्वप्न का वर्णन फ़रमाया जो आज सुबह ही ईद के तोहफ़ा के तौर पर प्रदान हुआ था। जिसमें हुज़ूर की अम्माँ-जान सय्यदा नुसरत जहां बेगम साहिबा रज़ियल्लाहो अन्हा से मुलाक़ात हुई और उन्होंने बड़े प्यार और फ़रिश्तों की सी मुस्कराहट के साथ एक शेर पढ़ा (जो हुज़ूर ने फ़रमाया मुझे उस समय याद नहीं रह सका) जिस का अभिप्राय यह था कि शम्मा स्वयं ही अपने परवाने के पास आ गई है।

हुज़ूर ने फ़रमाया इस स्वप्न में बहुत ही महान ख़ुशख़बरी है पाकिस्तान वालों के लिए भी और सारी दुनिया की जमाअतों के लिए भी। और यह पैग़ाम है उनके नाम भी जो जमाअत की उन्नति के क़दम जकड़ना चाहते हैं कि तुम एक देश में जमाअत की उन्नति को रोकने के लिए सारी कोशिश कर रहे हो परन्तु ख़ुदा सारे संसार में अपनी सहायता लेकर आएगा और समस्त संसारों में इस जमाअत को ग़लबा (प्रभुत्व) प्राप्त होगा। यह ख़ुशख़बरी थी जो ईद के लिए प्रदान हुई और जमाअत की अमानत थी जो मैं जमाअत के सपुर्द करता हूँ।

(ज़मीमा मासिक अन्सारुल्लाह रब्वा जून 1986 ई पृष्ठ 5)

ख़ुदा से सम्बन्ध बढ़ाओ

हुज़ूर वर्णन फ़रमाते हैं कि आज रात मेरा ध्यान एक स्वप्न की ओर फेरा गया। इस रो'या में ख़ुदा तआला ने मुझे बताया कि जमाअत अहमदिया को दरअसल ख़ुदा तआला के हुज़ूर दुआएं करनी चाहिऐ और परिणाम की दृष्टि से अपनी दुआओं पर ही भरोसा करना चाहिए उसका परिपेक्ष यह हुआ कि कल मुझे कुछ ऐसी सूचनाऐं मिलीं जिनके परिणाम से मालूम होता था कि हमारी दुनिया की कुछ जमाअतों ने हुकूमतें पाकिस्तान पर अख़लाक़ी दबाव डालने के लिए असमान्य कार्यवाहियां की हैं। अत: ख़ुदा तआला ने मुझे रो'या में समझाया कि यह दुनिया की कार्रवाई कोई हक़ीक़त नहीं रखती तुम दुआओं के द्वारा अल्लाह तआला से अपना सम्बन्ध बनाए रखो और उसे बढ़ाओ और उसे मज़बूत करो तो ख़ुदा तआला अवश्य ही अपने फ़ज़ल और रहम

के साथ तुम्हारे हालात को बदल देगा और बे-इंतिहा रहमतें नाज़िल करेगा।

रो'या में मैंने अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक का वह कलाम एक विशेष शैली से पढ़ा जिसमें संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ख़ुशख़बरी देते हैं कि कौन वह अभागा होगा जो ख़ुदा के दर पर मांगने जाए और फिर वापस लौटे और यह कलाम यद्यपि प्राय: हमारे सामने पढ़ा जाता है परन्तु इस कलाम के कुछ ऐसे पद्य जो रो'या में मुझे याद रहे और मैं बार-बार पढ़ता रहा। परन्तु बेदारी की हालत में याद नहीं रहे। इससे भी मालूम होता है कि ख़ुदा तआला की ओर से एक पैग़ाम था। इन पद्यों में से एक पद्य विशेष रूप से जो बार-बार ज़बान पर जारी हुआ और दिल पर छप गया। उसका विषय यह था कि ख़ुदा तआला अपनी क़ुदरत दिखाने पर क़ादिर (समर्थ) है जब वह चाहेगा हैरत-अंगेज़ क़ुदरत के करिश्मे दिखाएगा। इसलिए दुआओं के द्वारा उस पर भरोसा करते हुए उसकी रहमत के क़दमों से चिपटे रहो और उम्मीद रखो कि वह अपने फ़ज़्ल के साथ हैरत-अंगेज़ क़ुदरत के निशान दिखाएगा और फिर एक पद्य जो विशेषत: मैंने बार-बार पढ़ा और दो-चार पद्यों के बाद फिर वह पद्य जीभ पर आ जाता वह यह था

हुआ मुझ पर वह ज़ाहिर मेरा हादी

और साथ ही साथ वह दूसरा पद्य भी इस शेर का कि

फ़-सुब्हानल्लज़ी अख़ज़ल अआदी

वाला पद्य हर बार नहीं पढ़ता परन्तु यह पद्य जो है कि "हुआ मुझ पर वह ज़ाहिर मेरा हादी" यह तो इतनी अधिकता के साथ रात अपनी रो'या में गुनगुनाता रहा और बार-बार पढ़ता रहा और ऐसा मालूम होता था कि बार-बार दूसरे पद्यों से मेरा ध्यान इस ओर स्थानान्तरित हो जाता है। इसकी ताबीर मैंने यह की कि संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत को ख़ुदा ने महदी बनाया है और ख़ुदा का हादी (मार्गदर्शक) के तौर पर आप पर ज़ाहिर होना यह बताता है यह बड़ी महान ख़ुशख़बरी अपने अन्दर रखता है कि अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से दुनिया की हिदायत के महान सामान पैदा करने वाला है।

नई मंज़िलों की फ़तह

हुज़ूर वर्णन फ़रमाते हैं कि एक रो'या में मैंने देखा कि जैसे पर्यटकों की बस होती है वैसे ही किसी बस में मैं और मेरे कुछ साथी सफ़र करते हुए एक दरिया को पार करने वाले हैं। अब यह जो बस की हालत का सफ़र है मुझे याद नहीं। परन्तु यूं मालूम होता है कि जैसे वह बस पुल के पास आकर नीचे उसके पास ही रुक गई है और किसी कारण वह बस स्वयं आगे नहीं बढ़ सकती। तो जैसे ऐसे अवसर पर मुसाफ़िर उतर कर चलना फिरना शुरू कर देते हैं उस तरह इस बस में से मैं उतरा हूँ और कुछ और भी मुसाफ़िर उतरे हैं। परन्तु मेरे दिमाग़ में इस समय और कोई नहीं आ रहा परन्तु यह अच्छी तरह याद है कि मुबारक मुस्लेहुद्दीन साहिब जो हमारे वाक़िफ़ ज़िन्दगी, तहरीक जदीद के काम करने वाले हैं वह साथ हैं और जैसे इंतज़ार में और कोई व्यस्त न हो तो इन्सान कहता है कि चलें अब नहा ही लेते हैं। मैं और वह हम दोनों नदी में छलांग लगा देते हैं मेरे दिमाग़ में इस समय यह ख़्याल है कि हम थोड़ा सा तैर कर वापस आ जाएँगे। परन्तु मुबारक मुस्लेहुद्दीन मुझ से थोड़ी सी दूर दो हाथ आगे हैं और वह मुझे कहते हैं कि चलें अब इस तरह ही दरिया पार करते हैं। तो मेरे ज़हन में यह ख़्याल है कि नदी तो भरपूर बह रही है जैसे सिंध नदी सैलाब के समय बहा करती है यद्यपि किनारों से छलकी नहीं परन्तु लबालब है और बहुत ही भरपूर और ज़ोर के साथ बह रही है। तो मैं यह समझता हूँ कि पता नहीं हम यह कर भी सकेंगे या नहीं। तो मुबारक मुस्लेहुद्दीन कहते हैं कि नहीं हम कर सकते हैं और मैं कहता हूँ कि ठीक है फिर चलते हैं। परन्तु मुझे हैरत होती है कि यद्यपि मैं कोई ऐसा तैराक नहीं परन्तु उस समय तैराकी की असामान्य ताक़त पैदा होती है और कुछ ही हाथों में बड़े बड़े फ़ासले तय होने लगते हैं यहां तक कि जब मैं मुड़ कर देखता हूँ तो वह पिछला किनारा बहुत दूर रह जाता है। और फिर दो-चार हाथ लगाने से ही वह बाक़ी नदी भी पार हो जाती है और दूसरी ओर हम किनारे लगते हैं। और आश्चर्य की बात यह है कि यद्यपि मुबारक मुस्लेहुद्दीन मुझे रो'या में अपने आगे दिखाई देते हैं परन्तु जब किनारे लगता हूँ तो पहले मैं लगता हूँ फिर वह लगते हैं और इस तरह

हम दूसरी ओर पहुंच जाते हैं और फिर यह समीक्षा कर रहे हैं कि किसी तरह यहां से बाहर निकल कर दूसरी ओर किनारे से बाहर की आम दुनिया में उभरें।

यह रो'या यहां ख़त्म हो गई और चूंकि यह ऐसी रो'या थी जो आम तौर पर इन्सान के दिमाग़ में आती नहीं। इसलिए रो'या ख़त्म होने के बाद मेरे दिमाग़ पर यह बड़ा भारी प्रभाव था कि यह एक स्पष्ट संदेश है जिसमें अल्लाह तआला किसी नई मंज़िल को फ़तह करने की ख़ुशख़बरी दे रहा है और यद्यपि एक हिस्सा उसका अभी तक मुझ पर स्पष्ट नहीं हुआ कि वह साथी जो हैं उनको हम क्यों पीछे छोड़ गए हैं और हम दो क्यों आगे निकल जाते हैं परन्तु बहरहाल दिमाग़ पर यह प्रभाव ज़रूर है कि इस में कोई चेतावनी नहीं थी बल्कि ख़ुशख़बरी थी कि नदी की लहरों ने यद्यपि बस को रोक दिया है परन्तु हमारे सफ़र की राह में वह रोक नहीं बन सकीं। तो अल्लाह तआला इस रो'या को भी जहां तक मेरा विचार है और विश्वास है कि यह एक ख़ुशख़बरी है, आशा से बढ़ कर शुभ बनाए और जमाअत के हक़ में इसकी अच्छी ताबीर प्रकट करे। (दैनिक अल्फ़ज़ल 15 मई 1996 ई पृष्ठ 4)

फ्रैंच स्पीकिंग देशों में जमाअत की उन्नति

हुज़ूर ने जलसा सालाना 1996 ई. पर फ़रमाया एक रात सारी रात निरन्तर मेरे मुँह पर डाकार, डाकार का शब्द जारी हुआ। यह एक हैरत-अंगेज़ बात थी। सुबह उठ कर पता करवाया तो पता चला कि डाकार सेनेगाल की राजधानी का नाम है। अत: उसकी ओर ध्यान दिलाया गया। उस समय वहां अहमदियों की संख्या केवल 5230 थी। उसके बाद तीन सालों में सेनेगाल में तीन लाख ग्यारह हज़ार अहमदियों की वृद्धि हुई। उस समय उस जलसा में 5 अहमदी पार्लियामेंट के मेम्बर भी मौजूद हैं जिन में एक डिप्टी स्पीकर हैं।

हुज़ूर ने डिप्टी स्पीकर साहिब को बुलाया जिन्होंने फ्रांसीसी भाषा में तक़रीर की और कहा कि पिछले साल सेनेगाल में केवल चार पार्लियामेंट सदस्य अहमदी थे। आज ख़ुदा के फ़ज़ल से 28 पार्लियामेंट सदस्य अहमदी हैं जिनके पास उच्च पद भी हैं, असैंबली में सेक्रेटरीज़ हैं। आठ पार्लियामेंट के सदस्यों के असैंबली में दफ़्तर हैं। डिप्टी स्पीकर ने

कहा हमारी इच्छा है हुज़ूर हमारे पास तशरीफ़ लाएं और सेनेगाल अहमदी हो जाएगा।

हुज़ूर ने फ़रमाया : ख़ुदा तआला जो ख़बरें बता रहा है उन को पूरा करने की गवाहियां भी स्वयं उपलब्ध करा रहा है। तीन साल पहले फ्रांसीसी बोलने वाले अफ़्रीक़ी देशों में अहमदियत फैलने के बारे में अल्लाह तआला ने मुझे रो'या के द्वारा ख़बर दी थी। इस रो'या से पहले चार सालों में इन क्षेत्रों में केवल 53 हज़ार 476 लोग अहमदी हुए थे। इस रो'या के अगले साल 1994 ई. में यह संख्या बढ़ कर एक लाख 62 हज़ार 22 हो गई और फिर इससे अगले साल 1995 ई. में संख्या और अधिक बढ़कर 3 लाख 88 हज़ार 933 हो गई और अब साल 1996 ई. में इस संख्या में ग़ैरमामूली वृद्धि हुई है और इस साल फ्रांसीसी बोलने वाले देशों में अहमदी होने वालों की संख्या 7 लाख 35 हज़ार 38 लोगों की है। मानो इस रो'या के बाद अब तक 13 लाख चार हज़ार 198 बैअतें फ्रांसीसी भाषा बोलने वाले इलाक़ों (जिन को फ्रैंको फ़ोन कहा जाता है) में हो चुकी हैं।

(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 23 अगस्त 1996 पृष्ठ 6)

1998 ई. के जलसा सालाना पर हुज़ूर ने फ़रमाया पाँच साल पहले मैंने अपनी एक रो'या का वर्णन किया था जिसमें वर्णन था कि फ्रैंच बोलने वाले क्षेत्रों में बहुत अधिक संख्या में अहमदियत फैलेगी। अत: 1993 ई. के बाद से उन क्षेत्रों में 70 लाख 50 हज़ार 511 लोग अहमदी हो चुके हैं। (अल-फ़ज़ल रब्वा 11 अगस्त 1998 ई)

इबादत (उपासना) को स्थापित करो

10 जून 1988 ई. को हुज़ूर ने मुबाहला का चैलेंज दिया। इससे अगले ख़ुत्बा 17 जून 1988 ई में फ़रमाया:-

समस्त जमाअत अहमदिया की एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है जिसकी ओर ख़ुदा तआला ने रो'या में मुझे ध्यान दिलाया है मैंने रो'या में देखा कि मैं बहुत वैभव वाले अंदाज़ और बड़ी शक्ति के साथ जमाअत को इबादत के स्थापित करने, इबादत के स्तर को बुलन्द करने, नमाज़ों में आगे क़दम बढ़ाने और ख़ुदा तआला से सम्बन्ध पैदा करने की ओर ध्यान दिला रहा हूँ। रो'या में इस विषय को मैं इस तरह वर्णन

कर रहा हूँ कि यदि तुम यह ख़्याल करते हो कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने के कारण तुम आकाश पर मुक्ति पाने वाले लिखे जाओगे तो यह विचार ग़लत है, मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ कि जब तक तुम ख़ुदा की इबादत को स्थापित नहीं करोगे आकाश पर तुम मुक्ति पाने वाले नहीं लिखे जाओगे इसलिए ज़मीन पर इबादतों को स्थापित करो।

(ज़मीमा मासिक तहरीक जदीद जून 1988 ई पृष्ठ 4)

शोला उतरता दिखाई दिया

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने एम.टी.ए के द्वारा प्रसारित होने वाले Live दर्सुल क़ुरआन का वर्णन करते हुए फ़रमाया:-

"दर्सों के आरम्भ पर मैं बिल्कुल अज्ञान था परन्तु दुआ के नतीजा में जो मेरा कुल सरमाया था सन्तुष्ट और निर्भय था और यक़ीन था कि अल्लाह तआला स्वयं हाथ थाम कर रास्ता दिखाएगा और प्रत्येक कठिनाई के समय सहायता करेगा। अत: ऐसा ही हुआ और अल्लाह तआला ने मेरे विचार तथा दृष्टिकोण और दिल के अंधेरे किनारों को प्रकाशित कर दिया और राह चलते-चलते दो चार हाथ आगे जहां कुछ दिखाई न देता था और आश्चर्य था कि वहां पहुंचते-पहुंचते बात जो चल निकली है कैसे कोई अच्छा परिणाम प्रकट करेगी कि अचानक जैसे किसी शक्तिशाली बिजली के बल्ब से वह स्थान दिन की तरह रोशन हो जाए। मैंने अंधेरों को रोशनी में बदलते हुए देखा।

कई बार ऐसा हुआ कि स्वयं एक मुश्किल की ओर सुनने वालों को ध्यान दिलाया और उसके हल करने की बात शुरू कर दी जबकि उसका कोई हल मेरे दिमाग़ में न था। कुछ शब्दों का दूसरों पर शंका के सिवा कुछ और नज़र न आता और आश्चर्य था कि अब मैं क्या कहूँगा कि अचानक दिमाग़ और दिल पर एक नूर का शोला उतरता हुआ दिखाई दिया और उठाए हुए प्रश्न का स्पष्ट और रोशन जवाब दिखाई देने लगा। अल्लाह तआला के ग़ैबी समर्थन के ऐसे नज़ारे देखे कि सारा वजूद साक्षात अहमद बन गया।" (दैनिक अल्फ़ज़्ल सालाना नम्बर 1998 ई)

विश्वव्यापी बैअत का नक़्शा

हुज़ूर ने पहली विश्वव्यापी बैअत के अवसर पर विश्वव्यापी बैअत की तजवीज़ का परिपेक्ष वर्णन करते हुए फ़रमाया

"विश्वव्यापी बैअत का विचार उस समय मेरे दिल में आया जब अभी इस साल के आरम्भ में कुल दस हज़ार लोगों की बैअतों की सूचना मिली थी और (जलसा सालाना के आने तक) साल का बहुत थोड़ा हिस्सा शेष रह गया था। मैंने सोचा कि मैंने कहा है कि साल भर में एक लाख बैअतें होनी चाहिएं तो अब बहुत थोड़ा समय रह गया है। यह लक्ष्य कैसे पूरा होगा। तब मैंने दुआ की तो अल्लाह तआला ने मेरे दिल में यह विचार डाला और पूरा नक़्शा समझा दिया कि विश्वव्यापी बैअत इस तरह से हो और जमाअत को विश्वव्यापी बैअत में सम्मिलित होने के लिए तैयार किया जाए। समस्त जमाअतों को लक्ष्य दिए गए। हुज़ूर ने फ़रमाया लक्ष्य बहुत बढ़ा कर रखने पड़े। कई स्थान पर यह लक्ष्य ज़ाहरी लिहाज़ से ग़ैर हक़ीक़ी थे। कुछ स्थान जहां पिछले दस साल में 100 बैअतें भी नहीं हुईं थीं उनको पाँच हज़ार का लक्ष्य दिया गया। अल्लाह ने दिमाग़ में यह विचार डाला था। इसी बात ने दिल को मज़बूती दी और सहारा दिया कि मानो अल्लाह तआला इस तहरीक का ज़िम्मेदार है।"

(अल्फ़ज़ल 5 अगस्त 1993 ई)

'अस्सलामु अलैकुम' का तोहफ़ा

"हुज़ूर की मज्लिस इर्फ़ान में प्रश्न हुआ कि अस्सलामो अलैकुम का जो कश्फ़ हुज़ूर ने देखा था क्या इस में हुज़ूर को समस्त बीमारियों से सुरक्षित रखने का वादा था? हुज़ूर ने इसके जवाब में फ़रमाया कि इस तरह की घटना मेरे साथ एक बार मन्सब ख़िलाफ़त पर फ़ाइज़ होने से पहले भी घटी थी। जबकि पीपल्ज़ पार्टी ने जमाअत के ख़िलाफ़ मुहिम चलाई थी। एक अवसर उस समय ऐसा भी आया कि जब कि न केवल कुछ मुश्किलें सम्मुख आने का ख़तरा था बल्कि जमाअत को हानि पहुँचने का भी ख़तरा था। मेरे सहित कुछ जमाअती सेवकों के ख़िलाफ़

केन्द्रीय हुकूमत कोई कार्रवाई करना चाहती थी। इन दिनों एक बार मैं दुआ करता हुआ लेट गया और लेटे हुए भी दुआएं कर रहा था कि मेरे दाएं कान में बड़ी साफ़ आवाज़ में तीन बार किसी ने अस्सलामो अलैकुम कहा। यह आवाज़ इतनी स्पष्ट और विश्वसनीय थी कि इस पैग़ाम में किसी शंका और शक की गुंजाइश नहीं थी। अत: मैंने प्रात: बड़ी तसल्ली से अपने साथियों को बता दिया कि अल्लाह तआला हमें प्रत्येक प्रकार की हानि से सुरक्षित रखेगा और हमें कुछ भी नहीं हो सकता। इस बार भी जो अस्सलामो अलैकुम का पैग़ाम ख़ुदा तआला की ओर से आया वह भी ऐसा विश्वसनीय और वाक़ई था कि इससे जमाअत की सुरक्षा के बारे में पूरी तसल्ली हो गई।"

(ज़मीमा मासिक ख़ालिद अगस्त 1985 ई पृष्ठ 8)

हुज़ूर ने 24 मार्च 1989 ई को जमाअत अहमदिया की दूसरी सदी के पहले ख़ुत्बा जुम्अ: में फ़रमाया :

"वह ख़ुदा जिस के हाथ में मेरी जान है उसको गवाह ठहरा कर कहता हूँ कि अल्लाह तआला ने बड़े प्यार और मुहब्बत के साथ स्पष्ट तथा खुली-खुली आवाज़ में इस सदी का पहला इल्हाम मुझ पर यह नाज़िल किया कि अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह ताकि मैं उसे समस्त दुनिया की जमाअतों के सामने प्रस्तुत कर सकूं। दुनिया चाहे हज़ार लानतें आप पर ज़बानी डालती फिरे। करोड़ कोशिशें करे आपको मिटाने की परन्तु इस सदी के सिर (आरम्भ) पर ख़ुदा की ओर से आने वाला सलाम हमेशा आपके सिरों पर रहमत की छाया किए रखेगा। अत: वे मुख़लसीन जो इस आवाज़ को सुन रहे हैं और वे सब अहमदी जो इस आवाज़ को नहीं सुन रहे सभी को (अल्लाह तआला की ओर से अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह का तोहफ़ा) पहुंचे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह सलाम उन अहमदियों को भी पहुँचेगा जो अभी पैदा नहीं हुए, उन अहमदियों को भी पहुँचेगा जो अभी अहमदी नहीं हुए। उन क़ौमों को भी पहुँचेगा जिन तक अभी अहमदियत का पैग़ाम नहीं पहुंचा। अगले सौ साल में अहमदियत ने जो उन्नति करनी है हम अभी उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। परन्तु यह मैं जानता हूँ कि दुनिया में जहां भी अहमदियत फैलेगी उन सभी को इस

सलाम का तोहफ़ा हमेशा पहुंचता रहेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अल्लाह तआला ने चाहा तो ख़ुदा तआला तक़्वा की नई लहर इस सदी के लिए भी जारी करेगा और रहमतों के नए पैग़ाम अगली सदी के लिए स्वयं प्रस्तुत करेगा।"

(दैनिक अल्फ़ज़ल 4 अप्रैल 1989 ई)

नई सदी का निशान

हुज़ूर ने 1989 ई में जर्मनी के जलसा सालाना से ख़िताब करते हुए बताया कि लाहौर की जमाअत ने नई सदी की मुबारकबाद के तौर पर एक प्लेट भिजवाई है जिस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और उनके ख़लीफ़ाओं के दस्तख़त और मिनारतुल मसीह की तस्वीर है इसके बाद फ़रमाया -

"आज रात अल्लाह तआला ने रो'या में मुझे इससे भी अधिक अछूता ख़्याल दिखाया और इस अजीब और दिलचस्प रो'या का जर्मनी की जमाअत के साथ सम्बन्ध है। ख़्वाब में यह विचार शुरू हुआ कि जमाअत जर्मनी शत वार्षिकी जश्ने तशक्कुर के तौर पर नए अंदाज़ में सुन्दर निशान या मुजस्समा बतौर यादगार बनाना चाहती है। इस में एक से अधिक विचार सम्मुख रखे गए हैं जिनके प्रस्तुत करने का अंदाज़ विशेष है जैसे उन्होंने यह मिनारा बनाया है जो शायद शरीफ़ ख़ालिद साहिब की डिज़ाइनिंग या ब्रेन वेव (Brain Wave) थी कि जिस स्थान से मैं ख़िताब करूँ वह मिनारतुल मसीह की तस्वीर का हो। मानो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जिस कश्फ़ी रंग में मिनारा दिखाया गया और शाब्दिक रूप से जिस मीनार की ख़ुशख़बरी दी गई थी उसको ज़ाहरी निशान के तौर पर आज यहां दिखाया गया और इस मीनार से मैं आप को सम्बोधन करूँ।

परन्तु रो'या में कुछ और अंदाज़ धारण किए हुए है। उस समय ख़ुदा तआला मुझे एक और नज़ारा दिखाता है कि यह भी अच्छे इज़हार हैं परन्तु मैं जो इज़हार चाहता हूं वह इस तरह होना चाहिए और इस में एक ब्लॉक दिखाया गया जिस तरह प्लास्टिक का ब्लॉक होता है परन्तु इस में घुमाव इतने सुन्दर हैं कि नज़र पर जादू करते हैं और मैं हैरत से देखता हूँ कि इतनी सुन्दर चीज़ भी कोई दुनिया में हो

सकती है। इस ब्लॉक पर कुछ लिखा नहीं है मुझे ग़ालिब का मिसरा

मौजे ख़िराम नाज़ भी क्या गुल कतर गई

याद आ गया। एक हैरत-अंगेज़ आर्ट का मुजस्समा था और उसके ऊपर दुनिया का ग्लोब था। मेरे दिल में यह बात छा गई कि यह निशान है जो अगली सदी का निशान है, इस समय मेरे दिमाग़ में यह ताबीर नहीं आई परन्तु रो'या ख़त्म होते ही मेरा दिमाग़ इस ओर स्थानान्तरित हुआ कि अगली सदी दूसरी मंज़िल है और दूसरी मंज़िल में समस्त दुनिया पर हमारा प्रभुत्व होना है।" (दैनिक अल्फ़ज़्ल 5 जून 1989 ई)

अलैसल्लाहो बेक़ाफिन अब्दहू

ख़ुत्बा जुम्अः 10 अक्तूबर 1997 ई में फ़रमाया

"गेम्बिया में जो शरारत चल रही थी उसके बारे में मैंने पहले भी आपको बताया था कि ख़ुदा तआला ने मुझे अलैसल्लाहो बेक़ाफिन अब्दहू के द्वारा बार बार ख़ुशख़बरी दी और इसके बाद मैंने चिन्ता करनी बन्द कर दी।"

(अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल 28 नवम्बर 1997 ई)

नूरुद्दीन बना दिया

हुज़ूर अपने हिजरत के सफ़र का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं:

"जब शुरू में इंग्लिस्तान पहुंचा हूँ तो अनिवार्य बात है कि कई प्रकार की चिन्ताएं थीं और मैंने एक फ़ैसला किया था कि जमाअत से कोई गुज़ारा नहीं लेना जो भी हालत होगी अल्लाह तआला सुरक्षा करेगा और दुआ की कि अल्लाह तआला स्वयं प्रबन्ध करे। रात मैंने रो'या में देखा कि ख़ुदा तआला ने मुझे कहा कि तुम से नूरुद्दीन जैसा व्यवहार किया जाएगा।

नूरुद्दीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि थे और आपके साथ ख़ुदा तआला का विशेष व्यवहार था। बिना किसी मांग के ठीक ज़रूरत के समय ग़ैब (पोरक्ष) से ज़रूरतें पूरी होती चली जाती थीं। यह रो'या मैंने किसी को नहीं बताई

परन्तु दूसरे या तीसरे दिन पत्नी ने ख़्वाब में देखा और मुझे बड़े मुस्कराकर ख़्वाब सुनाई कि मैंने देखा कि मस्जिद अक़सा में मेहर आपा (सय्यदा बुश्रा बेगम साहिबा) मिठाई बांट रही हैं और कोई पूछता है कि यह मिठाई किस बात की बंट रही है तो वह कहती हैं कि इस बात की कि ख़ुदा तआला ने मेरा वर्णन करते हुए उनको इल्हाम किया है कि "मैं तुझे नूरुद्दीन बना रहा हूँ।" एक ख़्वाब मुझे दिखाई गई है इसके समर्थन में अल्लाह तआला ने पत्नी को रो'या दिखाई और इसका फिर व्यावहारिक प्रमाण शीघ्र ज़ाहिर फ़रमाया कि दूसरे दिन जब मैं दफ़्तर गया हूँ तो वहां मेज़ पर चालीस पाऊंड का एक बिल पड़ा था जो मेरे किसी दामाद ने रखा था कि मुझ से ले लें। मैंने उन से कहा कि शाम को मुलाक़ात के समय आ के ले जाना, हालाँकि एक पैसा भी मेरे पास नहीं था और मुलाक़ात के समय और इसके मध्य में किसी पैसे के बज़ाहिर आने का कोई प्रश्न ही नहीं था। परन्तु उनके जाने के बाद ठीक चालीस पाऊंड का तोहफ़ा कहीं से आ गया। एक लिफ़ाफ़ा देखा तो इस में चालीस पाऊंड का तोहफ़ा था और जब वह आए तो मैंने उनको दे दिया।"(अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल 4 नवम्बर 1994 ई)

हुज़ूर नूरुल आलमीन

हुज़ूर ने 19 अक्तूबर 1983 ई. को आदरणीय मौलाना शेख़ मुबारक अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला के नाम लिखा कि

"आज सुबह नमाज़ के बाद लेटा तो पुनः आँख खुलने के बाद एक दो मिनट बिस्तर पर लेटा रहा। इसी हालत में मेरे कंधे के पास से प्रिय मुबारक खोखर की दो बार बिल्कुल स्पष्ट आवाज़ सुनाई दी हुज़ूर नूरुल आलमीन, हुज़ूर नूरुल आलमीन।

जब यह आवाज़ बन्द हुई तो पता चला कि यह इल्हामी अवस्था थी। परन्तु इसका अर्थ नहीं समझ सका कि क्या पैग़ाम है। परन्तु एक बात स्पष्ट है कि यह इल्हाम बहुत मुबश्शिर है क्योंकि मुबारक की आवाज़ में सुनाई दिया। इसी तरह आवाज़ में बड़ी मुहब्बत पाई जाती थी जिसकी अवस्था वर्णन करनी मुश्किल है। इस सफ़र में भी अल्लाह तआला ने कुछ ख़ुशख़बरियाँ प्रदान की।" (कैफ़ियाते ज़िन्दगी पृष्ठ 645)

निर्दोषों की रिहाई

असीराने राहे मौला साहीवाल रिहाई पाकर 27 जुलाई 1994 ई. को लंदन पहुंचे तो हुज़ूर ने उनके सम्मान में आयोजित किए जाने वाले एक आयोजन को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया- दूसरा निशान हमारे असीराने राहे मौला का मौत के चंगुल से निकल आना है जिस पर ज़िया उल हक़ के क़लम की स्याही गवाह थी कि ज़रूर ये मौत के चंगुल में डाले जाएँगे परन्तु ख़ुदा की स्याही में आकाश पर कुछ और लिख रखा था और यह गवाही भी ख़ुदा के फ़ज़ल से बड़ी शान के साथ हैरत-अंगेज़ तरीक़ा से पूरी हुई और आज हमारे सामने यह ज़िन्दा सलामत मौजूद हैं।

हुज़ूर ने फ़रमाया कि जब मुझे यह सूचना मिली कि ज़िया उल-हक़ ने मौत की सज़ा केवल एक व्यक्ति के लिए नहीं रहने दी बल्कि और निर्दोषों पर इस सज़ा को फैला दिया है तो उन्हीं दिनों में व्याकुलता से दुआओं का अवसर मिला और मैंने एक रो'या में देखा कि इलयास मुनीर खुली हवा में एक चारपाई पर मेरे पास बैठा हुआ है। उसी समय मैंने सब को बता दिया और ख़तों के द्वारा भी तसल्ली दी कि दुनिया इधर से उधर हो सकती है परन्तु इलयास मुनीर की गर्दन में फांसी का फंदा नहीं पड़ेगा और मैं समझता हूँ कि इस एक के छत्रछाया में ये सारे भी अल्लाह के फ़ज़ल से सम्मिलित थे। वह उन का सरदार था, वह जमाअत का प्रतिनिधि था और ख़ुदा के निकट उसके वक़्फ़ के कारण इसका एक मर्तबा था और है। अत: जो बात मैं उस समय नहीं समझ सका था वह बाद में हालात ने स्पष्ट की। वह यह थी कि केवल एक इल्यास की ख़ुशख़बरी नहीं थी बल्कि उन मासूमों की रिहाई की ख़ुशख़बरी इस एक ख़ुशख़बरी में सम्मिलित थी।

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 12 अगस्त 1994 ई)

मिठाई के डब्बे

"3 सितम्बर 1988 ई को हुज़ूर ने नैरुबी (कीनिया) से यूगेंडा रवानगी के समय हवाई अड्डा पर फ़रमाया कि मुबाहला के बारे में रो'या के द्वारा और अधिक सफलताओं की ख़ुशख़बरी दी गई है और ख़्वाब में देखा है कि मिठाई के चार डिब्बे हैं जिन्हें मैं मौलवी

नूरुल हक़ साहिब को बांटने के लिए दे रहा हूँ और उन्हें कहा है कि मस्जिद के चारों दरवाज़ों में खड़े होकर बांट दें। उनमें से थोड़ी-थोड़ी मिठाई तबर्रुक (बरकत) के तौर पर मैं स्वयं भी लेता हूँ। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इंशा अल्लाह तआला शीघ्र मुबाहला के नतीजा में और अधिक सफलताओं की ख़ुशख़बरी मिलने वाली है।" (ज़मीमा मासिक अन्सारुल्लाह सितम्बर 1988 ई पृष्ठ 13)

आकाश की सैर

3 फरवरी 2003 ई को हुज़ूर ने फ्रांसीसी प्रश्न तथा उत्तर की सभा में अपनी रो'या वर्णन फ़रमाई कि मैं घोड़े पर चढ़ा हूँ और आकाश के दो तीन चक्कर लगाकर वापस आया हूँ।

हुज़ूर की बरकतों वाले जन्म से लेकर देहान्त के अन्तिम क्षणों तक आप ने जिस तरह एक भरपूर और सफल ज़िन्दगी गुज़ारी, उसके कुछ नुक़ूश नीचे प्रस्तुत करने की कोशिश की जा रही है। यद्यपि अब भी कई एक पहलू बे-शक अधूरे रह जाएँगे परन्तु हुज़ूर की बरकतों वाली ज़िन्दगी के बहुत से नए आयाम पाठको के सामने प्रकट होंगे।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह की जीवनी के कुछ दिलकश पहलू

मासूम बचपन

* आदरणीया साहिबज़ादी अम्तुल बासित साहिबा वर्णन करती हैं कि हुज़ूर बचपन से ही बहुत निडर और बहादुर थे। एक बार चिड़िया घर की सैर के समय छलांग लगाकर शेर के जंगले में चले गए। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के पेहरेदार आदरणीय अब्दुल अहद ख़ान साहिब ने दौड़ कर आप को बाहर निकाला। सब घबराए हुए थे परन्तु आपके चेहरे पर भय के कोई निशान न थे। फिर आप इतने शरारती थे कि जब हम लड़कियां अपने गुड्डे गुड़िया की शादी करतीं तो आप अपने दोस्तों के साथ आते और हमारा पका हुआ खाना खा जाया करते। एक दिन हम ने कमरा बंद करके शादी का आयोजन किया ताकि लड़कों की आने की संभावना न रहे। अभी खाना शुरू करना ही था कि जैसे महसूस हुआ कि दरवाज़ा पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तशरीफ़ लाए हैं। हम ने कुंडी खोल दी। देखा तो हुज़ूर थे। आप ने एक बक़र: पकड़ा हुआ था जिस से डर कर लड़कियां भाग गईं और हुज़ूर ने अपने दोस्तों के साथ शादी के खाने मज़े से खाए।

* आदरणीया साहिबज़ादी अमतुन्नसीर साहिबा ने वर्णन किया कि मेरी और हुज़ूर की आयु में केवल चार माह का अन्तर था। आप छोटी बहनों के साथ ख़ूब खेलते, मज़ाक़ भी करते परन्तु मुझे याद नहीं कि कभी लड़ाई की हो या किसी का दिल दुखाया हो। शेरो शायरी में दिलचस्पी थी और जब सब मिल कर शेर सुनाते तो आप कई बार ज़बानी मज़ाक वाले शेर कह देते। बड़ी बहनों का बहुत सम्मान करते। कभी समय नष्ट न करते।

* हुज़ूर बचपन ही से जमाअत के कामों में भी हिस्सा लिया करते थे। फ़रमाया जब मैं अतफ़ाल था तो जो भी अतफ़ाल का काम मेरे सपुर्द होता था, मैं किया करता

था और हम वक़ारे अमल भी किया करते थे और मैं अतफ़ाल में दस बच्चों का साइक भी बन गया था।

* आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा वसीम अहमद साहिब वर्णन करते हैं कि उन्होंने और हुज़ूर ने बचपन में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के इरशाद पर कई महीने तक हज़रत ग़ुलाम रसूल साहिब अफ़ग़ान से तजवीद का फ़न सीखा था।

हमदर्द और दयालु बाप

आदरणीया साहिबज़ादी फ़ायज़ा लुक़्मान साहिबा वर्णन करती हैं कि हुज़ूर की जमाअत की व्यस्तता ख़िलाफ़त से पहले भी बहुत अधिक थीं। परन्तु जब भी आप घर होते तो हमारे दिमाग़ और उम्र के अनुसार प्रत्येक चीज़ हम से Share करते, खेलते भी थे हमारी दिलचस्पी की बात में हिस्सा लेते। मुझे बचपन से शायरी से लगाओ था, आप ने विभिन्न शायरों की कई ग़ज़लें मुझे सुनाईं और प्रत्येक शेर की व्याख्या भी की (प्राय: व्याख्या शेर से भी सुन्दर होती।) बहुत बचपन में मैंने एक शेर कहा जो मेरी उम्र के लिहाज़ से बिल्कुल बच्चों वाला था। मेरी बहन ने उसे कोयले से कमरे की दीवार पर सफ़ैद पेंट पर लिख दिया। हुज़ूर ने देखा तो बहुत मज़ा किया। बाद में पाँच छ: साल तक (जब तक हमारा नया घर नहीं बना) हुज़ूर ने इस दीवार पर पेंट नहीं करवाया।

हुज़ूर की तबीयत में सादगी और सच्ची विनम्रता थी। अपने ज़ाती काम स्वयं करते। ख़िलाफ़त से पहले कई बार अपने कपड़े भी धो लेते। अपना नाश्ता आख़िरी बीमारी शुरू होने तक स्वयं ही बनाते रहे। घर की छोटी-छोटी चीज़ें स्वयं मुरम्मत कर लेते। आप को प्रत्येक व्यक्ति की योग्यताओं को उभारने और उनसे फायदा उठाने का विशेष हुनर आता था। बचपन में कई बार दबे पांव आकर आँखों पर हाथ रख देते और इंतज़ार करते कि दूसरा पहचान ले। हमें साथ लेकर ज़मीनों पर जाते तो फसलों इत्यादि के बारे में बताते। रात को पवित्र क़ुरआन से ली गई कहानियां सुनाते। हमें हुज़ूर ने स्वयं तैरना, साईकल चलाना और घुड़सवारी सिखाई। पर्दा की सीमाओं में रहते हुए इच्छा रखते कि हम प्रत्येक काम में हिस्सा लें।

आपकी डाक के काग़ज़ात छेड़ती तो आप मुझे डाँट कर उठा देने की बजाय फ़रमाते कि मेरी प्राईवेट सैक्रेटरी बन जाओ और जिस तरह मैं कहूं उस तरह मेरे काग़ज़ात क्रम से रख दिया करो। इस तरह मुझ में अनुभव ज़िम्मेदारी भी पैदा करा देते और ख़ुश भी कर देते।

मेरी बहन मोना के जन्म से पहले अब्बा को स्वभाविक इच्छा थी कि बेटा हो। मुझे नमाज़ के लिए उठाते तो कहते कि भाई के लिए दुआ करना। परन्तु जब मोना पैदा हुई तो अब्बा ने बेहद ख़ुशी का इज़हार किया और उसके अक़ीक़ा के दो बकरे ज़िब्ह करवाए ताकि लोग यह न कहें कि बेटी पैदा होने पर इतनी ख़ुशी नहीं हुई जितना बेटा पैदा होने पर होती। आप हमारा बहुत अधिक ख़्याल रखते। मेरी बहन शौकी दमा के कारण बीमार हो जाया करती तो अब्बा सारी-सारी रात उसके लिए जागते। कभी मेरी आँख खुलती तो आप शौकी को उठाए टहलते नज़र आते।

हुज़ूर ने हमारे दिलों में सच्चाई से मुहब्बत पैदा करने की भरपूर कोशिश की। यहां तक कि फ़र्ज़ी कहानियां सुनाना भी नापसन्द करते थे। हमेशा कहते मेरी बेटियां झूठ नहीं बोलतीं।

मेहमानों का बहुत अधिक सम्मान करते। जलसा सालाना का उस तरह आयोजन होता जैसे शादी ब्याह का समारोह हो। एक बार सारा घर मेहमानों को देकर स्वयं आंगन में टेंट लगाकर वहां स्थानान्तरित हो गए। प्रत्येक आने वाले का आतिथ्य करते। कई बार खाना भी स्वयं बना लिया करते।

इबादत का शोक (नमाज़ और तहज्जुद)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं : (हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि) ने बच्चों को नमाज़ का बहुत महत्व सिखाया। नमाज़ के मामले में छोटे बच्चों को वह मारा भी करते थे ताकि याद रहे। नमाज़ का महत्व ही नहीं सिखाया बल्कि नमाज़ बाजमाअत का महत्व सिखाया। जो बाजमाअत नमाज़ न पढ़े और पकड़ा जाए तो आप उसको सज़ा दिया करते थे। सबसे अधिक जो उन्होंने अपने बच्चों पर उपकार किया है, वह नमाज़ का महत्व है।

एक बार फ़रमाया मैंने एक बार बाक़ायदा हिसाब लगाकर देखा था कि पिछले

तीनों ख़लीफ़ाओं से अधिक मैंने बाजमाअत नमाज़ें पढ़ाई हैं और यह हिसाबी बात है कि इस में कोई शक की बात नहीं। बहुत अधिक बीमारी के समय भी कई बार नज़ला से आवाज़ नहीं निकल रही होती थी परन्तु नमाज़ बाजमाअत की मुझे इतनी आदत थी, बचपन से थी।

इसी तरह फ़रमाया मुझे तो छोटी उम्र से शौक़ था ... बचपन से ही ख़ुदा ने दिल में डाल दिया था कि तहज्जुद ज़रूर पढ़नी चाहिए और इसको मैंने आज तक यथा सम्भव बरक़रार रखा है।

फिर अपना एक अनुभव यूं वर्णन फ़रमाया नए साल के आरम्भ के समय जब लंदन में ईद का अवसर था तो संयोग से मैंने वह रात यूस्टन स्टेशन बिताई। मैंने वहां अख़बार के काग़ज़ बिछाए और दो नफ़ल पढ़ने लगा।

हुज़ूर की बेटी आदरणीया साहबज़ादी फ़ायज़ा लुक़्मान साहिबा वर्णन करती हैं कि जब से मैंने होश सँभाला, अब्बा को बहुत पाबंदी से नमाज़ तहज्जुद अदा करने वाला पाया। नमाज़ तो ख़ैर उन की रूह की ख़ुराक़ थी। इसीलिए बचपन में ही हमें अनुभव था कि यदि हम नमाज़ पढ़ लें तो बाक़ी बचपन की नादानियाँ और शरारतें माफ़ी के योग्य हैं। सुबह की नमाज़ के लिए हमेशा स्वयं मुझे उठाया। यदि पुनः सो जाती तो फिर उसी प्यार से उठाते। मुझे याद नहीं कि कभी इस बात पर चिड़ कर डाँटा हो हां नमाज़ का पाबंद बनाने के लिए ज़रूर डाँट पड़ी। कभी नमाज़ तहज्जुद या नमाज़ फ़ज्र के लिए उठाते तो बताते कि क्या-क्या दुआएं माँगो। ये दुआएं इन्सानियत की बेहतरी, समस्त नबियों, आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा रज़ि अल्लाह, ख़लीफ़ाओं समस्त इस्लामी जगत, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, आपके ख़लीफ़ाओं, शुहदा, समस्त क़ुर्बानी करने वाले, वाक़फ़ीन ज़िन्दगी और उनके ख़ानदान, यतीमों, बेवाओं, कैदियों, बीमारों, ग़रीबों के बाद अपने बुज़ुर्गों, ख़ानदान, माँ बाप, बहन भाईयों के बाद फ़रमाते फिर अपने लिए दुआ करना।

दुआ की आदत के बारे में हुज़ूर ने एक बार स्वयं फ़रमाया था कि : हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि का तरीक़ा था कि मुसीबत के समय में हम बच्चों से भी फ़रमाते

कि आओ बच्चो! दुआ करो कि अल्लाह तआला मेरी मदद करे। जब मैं बचपन में भी दुआ करता तो उसे क़बूलियत का सौभाग्य प्राप्त हो जाता। फिर मेरी विनम्र दुआएं बहुत अधिक क़बूल होने लगीं यहां तक कि वह समय भी आ पहुंचा जब ख़ुदा तआला ने अपने फ़ज़्ल से मुझे सीधा अपने इल्हाम के इनाम से सुशोभित किया।

आदरणीया साहबज़ादी अम्तुल बासित साहिबा वर्णन करती हैं कि प्राय नमाज़ पढ़ने का हुज़ूर को बहुत ख़्याल रहता। यदि कभी मस्जिद में नमाज़ बाजमाअत न पढ़ सकते तो कई बार हमारे यहाँ आ जाते और हमें सम्मिलित करके नमाज़ बाजमाअत पढ़ते।

आदरणीय बशीर अहमद साहिब आफ़ लंदन छोटी उम्र में ही हुज़ूर के यहाँ आ गए और यहीं पले बढ़े और हुज़ूर की तर्बीयत और दयालुता से लाभ उठाया। वह वर्णन करते हैं कि हुज़ूर किसी भी मौसम की परवाह किए बिना नमाज़ मस्जिद में जाकर अदा करते और जाते हुए मुझे विशेष रूप से मस्जिद आने की नसीहत फ़रमाते। फ़ज्र की नमाज़ के लिए अपनी साईकल पर बिठा कर मस्जिद ले जाते और नमाज़ की पाबंदी न करने पर ख़ूब डाँटते। सफ़र में या ज़मीनों पर जाते तो नमाज़ का समय होते ही वहीं नमाज़ बाजमाअत अदा करते। इस बात से बे-फिक्र होते कि खेतों की गीली ज़मीन कपड़े ख़राब कर देगी। इतना नमाज़ से इश्क़ था कि साधारण इन्सान सोच भी नहीं सकता। नमाज़ तहज्जुद का भी प्रबन्ध फ़रमाते। बीमारी में कमज़ोरी के बावजूद भी खड़े होकर नमाज़ अदा करते। हमारे निवेदन के बावजूद घर पर नमाज़ अदा नहीं करते थे बल्कि मस्जिद जाते।

आदरणीय सऊद अहमद ख़ान साहिब देहलवी लिखते हैं कि मस्जिद ख़ुशख़बरी स्पेन के उद्घाटन के अवसर पर हुज़ूर और क़ाफ़िला के लोग एक होटल में ठहरे थे। पहले दिन हुज़ूर अपने कमरा में जाने से पहले अन्य लोगों के कमरों में तशरीफ़ ले गए। स्थान का जायज़ा लिया और कमरे का नम्बर अपनी मुबारक ज़बान से दुहराया। इसका राज़ अगले दिन सुबह फ़ज्र की नमाज़ से पहले खुला जब दरवाज़े पर दस्तक हुई और पूछने पर हुज़ूर ने बाजमाअत नमाज़ खड़ी होने की सूचना दी इस घटना में नमाज़ बाजमाअत के लिए हुज़ूर की इच्छा का भी इज़हार होता है।

आदरणीय नईमुल्लाह ख़ान साहिब वर्णन करते हैं कि हुज़ूर को इबादत का बेहद शौक था। कराची में मेरे पास तशरीफ़ लाते तो फ़रमाते कि नमाज़ की इमामत करवाओ। मुझे हिचकिचाहट होती तो फ़रमाते कि यदि तुम नहीं पढ़ाओगे तो मुसाफ़िर होने की कारण आधी पढ़ूँगा।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम

आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हुज़ूर के अत्यधिक प्रेम ने जहां आप की नज़म (पद्य) तथा नस्र (गद्य) में ऐसे फूल पिरो दिए जिनकी ख़ुश्बू से आप का पवित्र जीवन का प्रत्येक पक्ष सुन्दर दिखाई देता है। एक ओर मुहब्बत का ऐसा इज़हार था कि जैसे ही ज़बान पर मुबारक नाम आया तो दिल नर्म हो गया और आँखें छलक उठीं। और दूसरी ओर जहां किसी बद-बख़्त ने क़ुरआन और मुहम्मद रसूलुल्लाह के नूर को गंदा करने की कोशिश की, आप ने उस ज़ालिम के ज़ुल्म के सिर को ऐसा कुचला कि दूसरों को भी सीख हो। एक-बार अपने इश्क़ तथा ग़ैरत का यूं स्पष्ट शब्दों में इज़हार फ़रमाया।

"(वह) महान नबी था। उसका रहम, उसका फ़ैज़ न पूर्व के लिए रहा न पश्चिम के लिए, सारे संसार के लिए जैसे सूरज बराबर चमकता है, इस तरह उसका फ़ैज़ समस्त संसार पर बराबर चमकता रहा... क़ुरआन मुहम्मद रसूलुल्लाह के जिस आचरण को प्रस्तुत करता है उस आचरण को ख़राब करने के लिए चाहे हज़ार बहाने बना लें, हज़ार आयतें इकट्ठी कर दें परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह की हस्ती अनुमानों को अस्वीकार कर देगी और धुतकार देगी। अन्य अर्थों को प्रस्तुत करने वालों को अस्वीकार क़र देगी। अत: मुहम्मद रसूलुल्लाह उनके तर्कों को तोड़ कर पारा-पारा कर रहा है, क़ुरआन से भी मैं ऐसी सुदृढ़ दलीलें आपके सामने रखूँगा और हदीसों से भी कि उनका कुछ बाक़ी नहीं रहेगा... आज अल्लाह तआला ने क़ुरआन की महानता के लिए क़ुरआन की दलीलों की तलवार मेरे हाथ में थमाई है। मैं क़ुरआन पर हमला नहीं होने दूँगा। मुहम्मद रसूलुल्लाह और आपके साथियों पर हमला नहीं होने दूँगा जिस ओर से आएं जिस भेस में आएं। उनके भाग्य में शिकस्त और असफलता लिखी

जा चुकी है। क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद के द्वारा पुनः पवित्र क़ुरआन की महानता के गीत गाने के जो दिन आए हैं, आज यह ज़िम्मेदारी मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की ग़ुलामी में मेरे सपुर्द है। इसलिए जब तक मैं हक़ अदा न कर लूं इन आयतों पर ठहरा रहूँगा यहां तक कि आप पर और सब पर, प्रत्येक अक़्ल वाले पर प्रमाणित हो जाएगा कि ये झूठे अक़ीदे हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से प्रेम

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह को हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम से एक विशेष समानता थी। आप का दौरे ख़िलाफ़त भी हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के अवतरण के दावे से समानता रखता था जिसका इज़हार आपने बार बार फ़रमाया। फिर आप ने ख़िलाफ़त से पहले भी और ख़लीफ़ा बनने के बाद भी अपनी निजी महफ़िलों में भी और विश्वव्यापी स्तर पर होने वाली मज्लिसों में भी, हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर होने वाले प्रत्येक प्रकार के आरोपों का जिस तरह तर्कपूर्ण तरीका से जवाब दिया और अपने आक़ा की भरपूर प्रतिरक्षा करने का सामर्थ्य पाया, उसका उदाहरण बहुत कम नज़र आता है। इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के प्रादुर्भाव के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आप ने बहुत अधिक मेहनत और परिश्रम से अपनी समस्त योग्यताओं को प्रयोग करते हुए ऐसे प्रमुख और महान कार्य किए जिनके कारण जमाअत अहमदिया को विश्वव्यापी स्तर पर एक सम्मान और महत्व प्राप्त हुआ और अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम का विश्वव्यापी पैग़ाम एक समय में ही दुनिया के कोने-कोने में प्रसारित होने लगा।

ख़िलाफ़त का आज्ञापालन

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमाहुल्लाह ख़िलाफ़त का बेहद सम्मान फ़रमाते और समय के ख़लीफ़ा की अतुलनीय आज्ञापालन का प्रदर्शन करते। अतः आप ने एक बार वर्णन किया कि : हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने एक

काम मेरे सपुर्द किया और आदेश दिया शीघ्र पूर्वी बंगाल (वर्तमान बंग्लादेश) चले जाओ। मैंने पता करवाया तो सारी सीटें बुक थीं। मालूम हुआ कि बीस व्यक्ति चांस पर मुझ से पहले हैं। मैंने कहा कोई अन्य जाए या न जाए, मैं ज़रूर जाऊंगा क्योंकि मुझे आदेश आ गया है। एअर पोर्ट पर लंबी लाइन थी। कुछ देर बाद लोगों को कहा गया कि जहाज़ चल पड़ा है इस ऐलान के बाद सब चले गए परन्तु मैं वहां खड़ा था। मुझे यक़ीन था कि मैं ज़रूर जाऊंगा। अचानक डैसक से आवाज़ आई कि एक मुसाफ़िर का स्थान है किसी के पास टिकट है। मैंने कहा मेरे पास है उन्होंने कहा दौड़ो, जहाज़ एक मुसाफ़िर की प्रतीक्षा कर रहा है।

आदरणीय सय्यद शमशाद अहमद नासिर साहिब मुरब्बी सिलसिला लिखते हैं कि हुज़ूर ख़िलाफ़त का बहुत सम्मान करते थे। स्वयं ख़लीफ़ा बनने से पहले हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह के आदेशों के शीघ्र अनुकरण की इच्छा रखते। एक बार जब आपने कार बेच कर जीप ख़रीदी तो किसी दोस्त ने बे-तकल्लुफ़ी से कहा कि आपने अच्छी भली कार बेच कर यह जीप ख़रीद ली। तो आप ने फ़रमाया इस में एक टीवी और एक वी सी आर रखूंगा और गांव-गांव जा कर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह के ख़ुत्बे सुनाया करूँगा। आदरणीय चौधरी मुहम्मद इब्राहीम साहिब वर्णन करते हैं कि 1979 ई. में जब हुज़ूर मज्लिस अन्सारुल्लाह के सदर बने तो सबसे पहले हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस के ख़ुत्बों की कैसेट्स तैयार करने के निज़ाम को व्यावहारिक रूप देने पर ज़ोर दिया और इसके लिए यूरोप से कैसेट्स की कापियां शीघ्र तैयार करने वाले duplicator मंगवाए।

आपने एक बार फ़रमाया रब्वा में जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस का ख़ुत्बा हुआ करता था तो मैं किसी कोने में बैठता ताकि नमाज़ ख़त्म होते ही निकल सकूं और सुन्नतें घर में अदा किया करता। तबीयत में ऐसी नफ़रत थी इस बात से कि ख़लीफ़तुल मसीह की मौजूदगी में मेरी कोई अलग मज्लिस लग रही हो।

आदरणीया साहबज़ादी अम्तुल बासित साहिबा वर्णन करती हैं कि हज़रत

ख़लीफ़तुल मसीह सालिस की आख़री बीमारी में इस्लामाबाद (पाकिस्तान) के गेस्ट हाऊस में हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब सारा दिन बहुत गर्मी के बावजूद एक दरी बिछा के उस पर पड़े रहते थे। खाने पीने का भी होश न रहता था और कहीं जाते नहीं थे कि कहीं हुज़ूर को कोई ज़रूरत पड़े और मैं मौजूद न रहूँ।

आदरणीय ज़ियाउर्रहमान साहिब कारकुन दफ़्तर वक़्फ़ जदीद वर्णन करते हैं कि हुज़ूर के दिल में ख़िलाफ़त का अथाह सम्मान था। कई बार किसी ज़रूरी काम में व्यस्त होते कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस का फ़ोन आ जाता तो बिना किसी देरी के आप तशरीफ़ ले जाते। जो चीज़ भी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस के लिए बाज़ार से ख़रीदनी होती तो आप स्वयं जा कर बहुत अच्छी और मज़बूत चीज़ ख़रीदते। यदि मुझे ख़रीद कर लाने के लिए कहते तो यह हिदायत विशेष रूप से फ़रमाते कि सबसे उत्तम और अच्छी चीज़ ख़रीदनी है।

समाज सेवा

एक बार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने फ़रमाया कि मैं मरीज़ों के लिए विभिन्न समय निर्धारित करता था। आते भी बहुत अधिक थे। कभी मग़रिब के तुरन्त बाद अपने घर में मरीज़ों की भीड़ लगा लिया करता परन्तु तनिक भी शौक़ नहीं था कि मरीज़ मेरे गिर्द इकट्ठे हों। एक ख़ुदा ने दिल में भावना पैदा की थी कि ग़रीब लोग बाहर से इलाज नहीं करवा सकते इसलिए वे नि:संकोच से आ जाया करें।

हुज़ूर की एक बच्ची जलसा सालाना के आख़िरी दिन वफ़ात पा गई। आप जलसा की डयूटियों से फ़ारिग़ होकर लोगों को दवाएं देते रहे। फिर साहिबज़ादा मिर्ज़ा मन्सूर अहमद साहिब ने आकर कहा कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह जनाज़ा पर आप का इंतज़ार कर रहे हैं। लोग यह सुनकर शर्मिंदा हुए। परन्तु आप को ख़्याल था कि बच्ची फ़ौत हो ही गई है परन्तु जो लोग दूर-दूर से आ रहे हैं उनको दवाएं देनी ज़रूरी हैं।

आदरणीया साहबज़ादी फ़ाइज़ा लुक़्मान साहिबा वर्णन करती हैं कि गरीबों से

शुरू से प्यार भरा मुहब्बत का सुलूक था। हमें नसीहत फ़रमाते कि वही ख़ुदा उनका भी ख़ालिक़ (स्रष्टा) है जो हमारा है, उनकी महरूमी के कारण स्वयं को उनसे बेहतर न समझना, जिन नेअमतों से ख़ुदा ने तुम्हें नवाज़ा है, ग़रीबों का भी उनमें हक़ है (अल्लाह तआला ने भी हमारी जायदाद में ज़रूरतमंदों के लिए हक़ का शब्द प्रयोग किया है, हिस्से का नहीं।) ख़िलाफ़त के बाद तो अब्बा ने प्रत्येक अहमदी से अत्यधिक मुहब्बत की। अम्मी ने मुझे एक बार बताया कि तुम्हारे अब्बा प्रतिदिन तन्हाई में इस तरह तड़प-तड़प कर दुआएं करते हैं कि मुझ से बर्दाश्त नहीं होता। कई बार दिल चाहता है कि उनको रोक दूं कि अपनी जान पर इतना बोझ न लें। अब्बा के देहान्त के बाद किसी ने मुझ से पूछा कि क्या मुझे कभी हुज़ूर की शख़्सियत में कोई कमज़ोर पहलू महसूस हुआ? मैंने जवाब दिया कि आप में कोई कमज़ोरी का पहलू तो नहीं देखा परन्तु एक चीज़ जो हमें बहुत कष्ट दिया करती थी वह यह थी कि आप अपनी जान पर बहुत अधिक ज़ुल्म करने वाले थे और ख़ुदा की सृष्टि की हमदर्दी में अपनी जान के प्रत्येक हक़ को पीछे डालने वाले इन्सान थे। हमेशा मुझे यह अनुभव होता कि अब्बा जितना प्यार मुझ से करते हैं, शायद उतना या उससे भी अधिक प्रत्येक अहमदी बच्ची से करते हैं। उनके दुखों को दूर करने के लिए दुआएं भी करते और व्यावहारिक प्रयत्न भी करते। जिन बच्चियों से कोई काम लेते तो वे आप के विशेष ध्यान और मुहब्बत का हक़दार बन जातीं। बहुत बारीकी से उनकी तर्बीयत फ़रमाते और उनकी ज़रूरतों का ध्यान रखते। अपनी आख़िरी उम्र में मरियम फ़ंड भी इसीलिए जारी फ़रमाया कि कोई अहमदी बच्ची दहेज के कारण अत्याचार का शिकार न हो।

आदरणीय अब्दुल बारी मलिक साहिब वर्णन करते हैं कि हुज़ूर ग़रीबों से बहुत दया और हमदर्दी से व्यवहार करते। एक-बार रहमत बाज़ार रब्वा के सारे मोचियों को मेरे पिता जी के द्वारा कुछ रक़म भिजवाई गई। एक मोची को जब रक़म मिली तो उसकी आँखों से आँसू जारी हो गए और उस ने बताया कि उसकी पत्नी के यहाँ बच्चे का जन्म अगले कुछ घंटों में होने वाला है और घर में खाने के लिए कुछ नहीं।

आदरणीय ज़ियाउर्रहमान साहिब वर्णन करते हैं कि एक बार हुज़ूर ने मुझे आदेश दिया कि अमुक व्यक्ति को जूते ख़रीद दें। मैंने बाज़ार में उस दोस्त को देखा तो उनके जूते पूरी तरह से ख़राब होकर फट चुके थे। मैंने उसी समय उन्हें जूते ख़रीद दिए।

आदरणीय मन्ज़ूर अहमद सईद साहिब कारकुन वक़्फ़ जदीद वर्णन करते हैं कि एक बार एक व्यक्ति ने हुज़ूर से निवेदन किया कि मुझे कोई पुराना साइकिल दिलवा दें। हुज़ूर ने मुझे आदेश दिया कि उसे पुराना साइकिल ले दूं। बाज़ार से पता किया परन्तु साइकिल न मिल सका। हुज़ूर को पता चला तो फ़रमाया कि फिर मेरा यह साइकिल उसको दे दें। जो दे दिया गया। इसी तरह एक दोस्त ने कहा कि इन की बेटी का बुर्क़ा पुराना है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि उन की बच्ची को नया बुर्क़ा भी ले दें, नया यूनीफार्म और नए बूट भी दिलवा दें। कई बूढ़ी औरतें जब डिस्पेंसरी से दवाई लेने आतीं तो आप मुझे फ़रमाते कि सर्दी है, उन्हें गर्म चादर ले दें।

आप इसी तरह वर्णन करते हैं कि हुज़ूर जब नाज़िम इरशाद वक़्फ़ जदीद थे तो एक ग़रीब नाई से बाल कटवाते थे जो बूढ़ा था और उसकी नज़र भी कमज़ोर थी। फिर उसे कभी दस और कभी बीस रुपए दे देते जबकि उस समय बाल काटना एक दो रुपए में होता था। यह केवल उसकी मदद का बहाना था ताकि उसकी इज़्ज़त नफ़स भी स्थापित रहे। इसी तरह जब मेरे पास साइकिल नहीं थी तो हुज़ूर यदि रास्ते में मिलते तो मुझे अपने साथ साइकिल पर बिठा लेते और मेरे बार-बार कहने पर पर भी साइकिल मुझे न चलाने देते। आप वर्णन करते हैं कि एक दिन हुज़ूर ने मुझे देखा तो पूछा कहाँ से आ रहे हो? मैंने कहा बाज़ार से दूध ला रहा हूँ। पूछा बाज़ार से अच्छा दूध मिल जाता है? निवेदन किया लेना तो है ही। पूछा कितना दूध लाए हो? मैंने कहा : एक किलो। यह सुनकर आप ख़ामोश हो गए। अगले दिन सुबह हुज़ूर ने अपना बावर्ची भिजवाया जो एक किलो दूध लाया और फिर दूध प्रतिदिन आने लगा। एक माह बाद मैंने एक महीना के दूध के पैसे आप की सेवा में प्रस्तुत किए तो फ़रमाया हम कोई दूध बेचते हैं? अत: फिर दूध प्रतिदिन आता रहा। एक दिन हुज़ूर

स्वयं दूध लेकर आ गए और फ़रमाया कि बावर्ची छुट्टी पर था इसलिए मैं स्वयं ही आ गया। फिर एक दिन बावर्ची ने कहा कि कल से अपना दूध का प्रबन्ध स्वयं कर लेना। परन्तु अगले दिन जब वह फिर दूध लाया तो बताने लगा कि कल घर में बेगम साहिबा ने कहा था कि दूध कम है और घर में ही ज़रूरत है। परन्तु मियां साहिब ने फ़रमाया कि मन्ज़ूर को दूध ज़रूर भेजना है स्वयं बेशक बाज़ार से मंगवाना पड़े। अतः उपकार का यह सिलसिला 35 साल से जारी है।

बच्चों से स्नेह

आदरणीय अब्दुस्समद क़ुरैशी साहिब वर्णन करते हैं कि जब हुज़ूर लंगर ख़ाना नम्बर 2 (स्थित दारुरहमत ग़र्बी) के नाज़िम हुआ करते थे। हम चार पाँच इत्फ़ाल बतौर सहायक काम करते थे। आप हमारा बहुत ख़्याल रखते। एक रात शायद 12 बजे हम दफ़्तर में एक ओर लेटे हुए थे कि कोई साहिब गर्म जलेबियां लाए जिनकी ख़ुशबू सारे कमरा में फैल गई। हमारे मुँह में भी पानी भर आया परन्तु किसी ने हमारी ओर ध्यान न दिया। उसी समय किसी ने आवाज़ दी कि मियां साहिब तशरीफ़ ला रहे हैं। वहां मौजूद लोगों ने हुज़ूर से निवेदन किया कि आप खाना आरम्भ करें। परन्तु आप की नज़र उस ओर गई जहां हम इत्फ़ाल लेटे हुए थे और जलेबियों के आने के बाद स्वयं को सोया हुआ ज़ाहिर कर रहे थे। हुज़ूर ने काफ़ी सारी जलेबियां एक प्लेट में डालीं और स्वयं यह कहते हुए हमारी ओर आए कि यह कैसे हो सकता है कि कमरा में ताज़ा जलेबियों की महक फैली हो और हमारे ये शेर बच्चे सोए हुए हूँ। अतः हुज़ूर अपने मुबारक हाथ से हमें मोहब्बतों का यह तोहफ़ा प्रदान करके वापस तशरीफ़ ले गए।

दूसरों पर उपकार

आदरणीय फ़हीम अहमद ख़ादिम साहिब मुरब्बी सिलसिला वर्णन करते हैं कि लगभग 21 साल पहले जमाअत अहमदिया घाना का हेडक्वार्टर सालट पांड में था। आदरणीय मौलाना अब्दुल वह्हाब आदम साहिब अमीर तथा मुबल्लिग़ इंचार्ज

थे। किसी नौकर की ग़लती से एक दिन उनके घर के रसोई घर में आग लग गई। बावजूद इसके कि दो सिलन्डर जल रहे थे, रसोई घर भी लकड़ी का बना हुआ था, मिशन हाऊस से जुड़ा एक पैट्रोल पंप भी था परन्तु अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से आग पर क़ाबू पा लिया गया हां लेकिन नौकरानी के शरीर का कुछ हिस्सा झुलस गया। उसे हस्पताल में भर्ती करवा कर इलाज करवाया गया और बाद में उसे सिलाई मशीन और कुछ नक़दी देकर राज़ी ख़ुशी विदा कर दिया गया। 2000 ई में 20 साल बाद इसी नौकरानी ने अचानक जमाअत के ख़िलाफ़ हर्जाना का दावा कर दिया। यद्यपि घाना के क़ानून के अनुसार इतने समय बाद मुक़द्दमा दर्ज नहीं हो सकता था परन्तु ज़ाहिर ऐसे होता था कि औरत की कोई चाल है या वह किसी के इशारों पर खेल रही है। बहरहाल अदालत ने कुछ समय बाद मुक़द्दमे का फ़ैसला जमाअत के हक़ में कर दिया और इस औरत को हिदायत जारी की कि वह एक लाख सीडीज़ जुर्माना जमाअत को अदा करे। जब इस मुक़द्दमा की ख़बर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे की सेवा में भिजवाई गई तो आप ने दया करते हुए तहरीर किया उस लड़की से सद्व्यवहार करें। वह ग़रीब पहले जल गई और अब मुक़द्दमा हार गई है तो जो जुर्माना इस पर पड़े वह इससे वसूल न करें। वही जमाअत की ओर से सदक़ा हो जाएगा।

आदरणीय ज़ियाउर्रहमान साहिब कारकुन दफ़्तर वक़्फ़े जदीद वर्णन करते हैं कि एक ज़रूरतमंद ने हुज़ूर से सहायता मांगी तो आप ने एक चिट पर कुछ रक़म लिख कर उसे मेरी ओर भिजवा दिया। उस ने रास्ता में रक़म तबदील करके अधिक लिख दी। मुझे शक हुआ तो मैंने आप से माजरा वर्णन किया। आप ने फ़रमाया कि यह वृद्धि इस ने स्वयं ही की है परन्तु अब इसको इतना ही दे दो, हो सकता है उसे उतनी ही रक़म की ज़रूरत हो।

ज्ञान का समुद्र

स्वर्गीय चौधरी ग़ुलाम अहमद साहिब भूतपूर्व अमीर जमाअत बहावलपुर सिंचाई विभाग में रेवेन्यू ऑफीसर थे। बहावलपुर के चीफ़ इंजीनियर को विशेष मेहमान

बनाया गया। जब हुज़ूर से उनका परिचय हुआ तो हुज़ूर ने सिंचाई के बारे में बातें शुरू कीं। कुछ ही देर में चीफ़ इंजीनियर साहिब घबरा गए तो हुज़ूर ने उन की हालत का अंदाज़ा करके मज्लिस सवाल जवाब शुरू कर दी। अगले दिन चीफ़ इंजीनियर साहिब ने आदरणीय चौधरी साहिब को बुला कर कहा कि मैं तो समझा कि रब्वा से तुम्हारा कोई मौलवी आएगा परन्तु वह साहिब तो ज्ञान का कोई समुद्र थे, मैं विभाग में रह कर वह कुछ नहीं जानता जो वह जानते थे।

आदरणीया साहिबज़ादी अम्तुल बासित साहिबा ने ख़लीफ़ा बनने से पहले सवाल जवाब की मज्लिसों के बारे में हुज़ूर से पूछा कि कभी फंसे भी हैं? फ़रमाया एक-बार फंसने लगा था जब एक व्यक्ति ने कहा कि आप जो कहते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तीन दिन के बाद सूली से ज़िन्दा उतर आए तो आप अपना एक व्यक्ति हमारे सपुर्द कर दें। हम उसे एक घंटा के लिए सूली पर लटका देंगे, यदि वह ज़िन्दा उतर आया तो आप को सच्चा मान लेंगे। यह सुन कर पहले मैं घबराया परन्तु अल्लाह तआला ने मदद फ़रमाई और मैंने कहा कि आप मानते हैं कि हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट में तीन दिन तक रहे? आप अपना एक व्यक्ति दे दें, हम उसे मछली को खिलवाते हैं, यदि वह ज़िन्दा बच गया तो हम तुम्हें सच्चा मान लेंगे।

आदरणीय इरशाद अहमद ख़ान साहिब मुरब्बी सिलसिला वर्णन करते हैं कि जामिया के शाहिद की परीक्षा में मवाज़ना मज़ाहिब के विषय में कम्यूनिज़्म बहुत कठिन था। इस बारे में हमारी कक्षा ने हुज़ूर से मदद मांगी तो हुज़ूर ने पिछले दस सालों के पर्चे निकलवा कर उनसे चुने गए प्रश्नों पर दो दिन लैक्चर दिया जो दफ़्तर से छुट्टी होने पर शुरू होता और देर तक जारी रहता और इस तरह हमारे सारे प्रश्नों के उत्तर दे दिए।

आप इसी तरह वर्णन करते हैं कि जब हुज़ूर ने सिफ़ात बारी तआला पर ख़ुत्बे दिए तो मैं नौ शहर कैन्ट में मुरब्बी था। वहां एक ग़ैर अहमदी प्रोफ़ेसर ने ख़ुत्बा सुनकर कहा कि वह पिछले 35 साल से यह विषय समझने की कोशिश कर रहा था परन्तु

वह आज ख़ुत्बा सुनकर उसे समझ सका है।

सादगी तथा विनम्रता

हुज़ूर की स्वभाव बहुत सरल था और मिज़ाज फ़क़ीराना था। आप ने एक-बार अपने पसन्दीदा पीने वाली चीज़ के बारे में फ़रमाया सबसे अच्छा ड्रिंक ठंडा पानी होता है। दूसरा ठंडा दूध और यदि शहद मिला दें तो बहुत अच्छा ड्रिंक बन जाता है। फिर नारियल के अंदर का पानी भी बहुत अच्छा होता है।

* स्विट्ज़रलैंड का एक अख़बार लिखता है:

"हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद बहुत अच्छे आचरण वाले और मिलनसार हैं। आप अपनी ज़ात के बारे में बात करने की बजाय अपने दायित्वों और जमाअत के बारे में बात करना अधिक पसन्द करते हैं।"

(दैनिक वाइन लैंड टॉग बुलेट ज़्यूरिक स्विटज़रलैंड 3 सितम्बर 1982 ई)

* एक दूसरा अख़बार लिखता है:

"मिर्ज़ा ताहिर अहमद उस समय तो ख़ूब खुल कर बात करते थे जब आपकी जमाअत की आस्थाओं के बारे में कुछ पूछा जाता है परन्तु जब आपकी ज़ात के बारे में कुछ पूछा जाता तो आप खुल कर बात करने से किसी क़दर बचते। आप ने बताया कि आप एक सरल और विनम्र इन्सान हैं। आपके कहने के अनुसार आप ने कोई विशेष योग्य शिक्षा प्राप्त नहीं की। आप स्कूल में पीछे बेंचों पर बैठने वालों में से थे। आप स्वयं इस बात पर हैरान थे कि ख़ुदा तआला ने आपको जमाअत अहमदिया का ख़लीफ़ा चुन लिया।... आप बात को मज़ाक का रंग देने का एक क़ुदरती स्वभाव रखते हैं।

(Neue Zurcher Zetlung Zurich 31 अगस्त 1982 ई)

आदरणीया साहिबज़ादी अम्तुल बासित साहिबा वर्णन करती हैं कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह की बीमारी के समय मैं भी इस्लामाबाद में थी। हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब भी वहां थे। आप को अपना कुछ होश न था। बहुत गर्मी में ड्राइंग रुम के एक ओर एक तकिया लेकर सो जाते। खाने को कुछ मिल जाता तो खा लेते, स्वयं न मांगते। शेख़ूपुरा के एक ग़ैर अहमदी घराने में ठहरे

तो उनकी घर वाली ने कहा कि उसने बहुत बड़ा आदमी बनना है क्योंकि इतनी सरल तबीयत बड़े आदमियों की ही हो सकती है। इसी तरह पाकिस्तान बनने के बाद जब हमारा रतन बाग़ में निवास था तो जोधामल बिल्डिंग के मैदान में मुहाजरीन के ख़ेमे लगे हुए थे। एक बार सफाई करने वालों ने हड़ताल कर दी तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह ने ख़ुद्दाम को आदेश दिया कि स्वयं लोगों के घरों की सफाई कर दें ताकि बीमारियां न फैलें। मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब इस काम में सब से आगे थे। एक मुहाजिर औरत कहने लगी:

बच्चे तू ते बड़े घर दा लग दा ईं, तेरे उत्ते की आफ़त आई ए?

आदरणीय नईमुल्लाह ख़ान साहिब वर्णन करते हैं कि हुज़ूर की सादगी ऐसी थी कि मेरे साथ मोटर साईकल पर बैठ कर ही सफ़र कर लेते और कार के लिए किसी को कष्ट न देते। सफर के समय छोटे होटलों पर भी खाना खा लेते और तकल्लुफ़ न करते। हमेशा खाने की प्रशंसा करते।

हुज़ूर के विनम्रता की कुछ घटनाएं हज़रत मिर्ज़ा अब्दुलहक़ साहिब वर्णन करते हुए लिखते हैं कि हुज़ूर ख़लीफ़ा बनने से पहले कुछ ऐसे इज्लासों में सम्मिलित होते जिन में मैं भी सम्मिलित होता तो इज्लास के बाद मुझे बस पर चढ़ाने के लिए तशरीफ़ ले आते और फिर सारा समय सड़क के किनारे खड़े रहते।

आप इसी तरह वर्णन फ़रमाते हैं कि किसी मज्लिस में मुख्य स्थान की बजाय हुज़ूर एक ओर होकर बैठते थे। ख़िलाफ़त के बाद सदारत के स्थान पर बैठना विवशता थी परन्तु लंदन में एक बार आपने जलसा के कुछ मेहमानों को खाने पर बुलाया जिनमें हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मन्सूर अहमद साहिब और साहिबज़ादा मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब (अय्यदहुल्लाहो) भी सम्मिलित थे। जब हुज़ूर तशरीफ़ लाए तो मेज़ के एक ओर बैठ गए। मैंने निवेदन किया कि हुज़ूर मुख्य स्थान पर तशरीफ़ ले आएं तो फ़रमाया कि मेरा यही स्थान है और वहां हज़रत मिर्ज़ा मन्सूर अहमद साहिब बैठेंगे।

आदरणीय मिर्ज़ा ख़लील अहमद क़मर साहिब कारकुन दफ़्तर वक़्फ़ जदीद वर्णन

करते हैं कि 1974 ई. में क़ौमी असैंबली में महज़रनामा प्रस्तुत करने की तैयारी हो रही थी। दफ़तर में कई लोग काम में व्यस्त थे, खाने इत्यादि का भी प्रबन्ध था। हुज़ूर मुसव्वदा लेकर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह को दिखाने जाते। एक बार वापस आए तो पूछा कुछ खाने को है। देखा तो थोड़ा सा सालन था परन्तु रोटी बिल्कुल नहीं थी। हुज़ूर ने मेज़ पर पड़े हुए रोटी के कुछ टुकड़े देखे तो फ़रमाया कि यह रोटी तो है। फिर वही टुकड़े आप ने एक-एक करके खा लिए।

इसी तरह आदरणीय ज़ियाउर्रहमान साहिब कारकुन दफ़्तर वक़्फ़ जदीद वर्णन करते हैं कि जब हुज़ूर लंगर ख़ाना न. तीन के नाज़िम थे तो एक दिन जब हम सहायकों ने खाना खा लिया तो फिर हुज़ूर तशरीफ़ लाए। आप ने हम से खाने का पूछा और फिर दस्तर-ख़्वान पर हमारे बचे हुए टुकड़ों को खा कर हमें भी शिक्षा दी कि नेमत का इन्कार नहीं करना चाहिए।

मेहनत की आदत

हुज़ूर अत्यधिक मेहनत के आदी थे। आप ने एक-बार स्वयं फ़रमाया :

"मैंने स्वयं खेती की हुई है। अकेला ढाई मन की बोरी अपनी पीठ पर उठा कर ट्राली में लादा करता था और निरन्तर लादा करता था ताकि मज़दूरों को पता चले कि यह कोई काम ऐसा नहीं जो मैं उनको देता हूँ और ख़ुद नहीं कर सकता। कई बार फ़सल पकने पर अठारह अठारह घंटे ज़मीनों पर जाकर मेहनत करता था। यूरोप में भी ऐसी सख़्त मेहनत की हुई है जिस के बारे में सोचने से भी रौंगटे खड़े हो जाते हैं। अख़बार के बहुत भारी पैकेट गाड़ियों पर लादने होते थे और रात से सुबह तक पूरे आठ घंटे निरन्तर यह काम करना पड़ता था। वापस घर आकर बुख़ार चढ़ जाता .. यह न समझें कि मैं मेहनत की क़ीमत नहीं जानता और अपने हाथ की कमाई में जो बरकत है इससे अपरिचित हूँ।"

*आदरणीया साहिबज़ादी ताहिरा बेगम साहिबा ने वर्णन किया कि हुज़ूर बहुत अधिक मेहनती इन्सान थे परन्तु अनथक मेहनत करने के बावजूद इतने प्रसन्न रहते और ख़ुश दिली से मिलते कि अपनी थकन का इज़हार तक न होने देते। जेहलम में

हमारे यहाँ कभी कभी तशरीफ़ लाते तो बहुत जल्दी में होते और केवल चाय पी कर आगे रवाना हो जाते।

आपने हज़रत सय्यदा आसिफ़ा बेगम साहिबा के हवाले से वर्णन किया कि एक बार हुज़ूर को Mumps निकले हुए थे और 103 तक तेज़ बुख़ार था परन्तु मेरे रोकने के बावजूद भी ख़ुद्दाम के प्रोग्राम में सम्मिलित होने के लिए इस्लामाबाद चले गए। अपनी बिल्कुल परवाह नहीं करते थे, हर समय काम की धुन थी।

आदरणीय चौधरी मुहम्मद इब्राहीम साहिब लिखते हैं कि हुज़ूर अनथक मेहनत के आदी थे। 1980 ई. में मुल्तान में एक मज्लिस सवाल जवाब थी जिसके लिए रब्वा से रवाना होकर हुज़ूर मग़रिब से कुछ पहले मुल्तान पहुंच गए। रात ग्यारह बजे मज्लिस ख़त्म हुई तो सोने से पहले फ़रमाया कि सुबह आठ बजे बहावलपुर के लिए निकलना है। सुबह जब सफ़र शुरू किया तो रास्ता में इस निबन्ध लिखने वाले की इच्छा पर उनकी खेती वाली ज़मीन पर कुछ देर ठहरे और दुआ की और फिर रवाना होकर लोधरां में एक गांव में मज्लिस सवाल जवाब का प्रोग्राम था। वहां खाना खा कर शहर पहुंचे तो वहां भी मज्लिस सवाल जवाब का प्रोग्राम था। जिसके बाद रवाना होकर बहावलपुर पहुंचे तो नमाज़ों की अदायगी और खाने के बाद मज्लिस सवाल जवाब आयोजित हुई। रात ग्यारह बजे जब मज्लिस ख़त्म हुई तो साथ जाने वालों का ख़्याल था कि रात वहीं व्यतीत होगी परन्तु हुज़ूर ने फ़रमाया कि मुझे शीघ्र रब्वा पहुंचना है क्योंकि सुबह आठ बजे फ़ज़्ले उमर फाऊंडेशन की मीटिंग है। अत: सारी रात स्वयं ड्राइविंग करते हुए हुज़ूर सुबह फ़ज्र की अज़ान के समय रब्वा पहुंचे। घर से वुज़ू करके नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले आए। नमाज़ के बाद घर पर गए तो नाश्ता या आराम किया होगा परन्तु ठीक आठ बजे मीटिंग में तशरीफ़ ले आए और दो तीन घंटा की मीटिंग के बाद दफ़्तर में तशरीफ़ ले आए और दफ़्तर बंद होने के बाद किसी समय घर तशरीफ़ ले गए।

आदरणीय नईमुल्लाह ख़ान साहिब वर्णन करते हैं कि हुज़ूर से 1970 ई. में इंतिख़ाबों (चुनावों) के समय परिचय का अवसर मिला। जब मुझे आदरणीय चौधरी अनवर हुसैन

साहिब के पास शेख़ूपूरा भिजवाया गया। हुज़ूर हमें निर्देश देने के लिए रात को आया करते और रात में ही वापस रवाना हो जाते। कभी न थकने वाली शख़्सियत थे।

असीरान राह मौला (धर्म के लिए क़ैद होने वालों) के साथ स्नेह

26 अप्रैल 1984 ई. को डिक्टेटर ज़िया उल-हक़ के कानून के लागू होने के साथ ही पाकिस्तान में अहमदियों पर मुसीबतों का न ख़त्म होने वाला सिलसिला जारी हो गया। इस अत्याचारपूर्ण क़ानून के नतीजा में बेशुमार अहमदियों ने जान तथा माल की क़ुर्बानियां बहुत ख़ुशी के साथ प्रस्तुत कीं। बहुत से बेगुनाह लोगों को विभिन्न मुक़द्दमों में पकड़ कर कई कई साल कैद में रखा गया। इन्हीं में आदरणीय मुहम्मद इल्यास मुनीर साहिब वर्तमान जर्मनी और आदरणीय राना नईमुद्दीन साहिब आफ़ लंदन भी हैं जिन्हें अहमदिया मस्जिद साहीवाल पर रात को अहरारी मौलवियों के हमले के समय पर अहमदियों द्वारा अपनी आत्मरक्षा में गोली चलाने की सज़ा में दस अन्य अहमदियों के साथ झूठा मुक़द्दमा बना कर क़ैद कर दिया गया और आख़िर फांसी की सज़ा के ऐलान के बाद अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से उन अहमदियों को रिहाई प्रदान की और एक नई ज़िन्दगी प्रदान की।

यूं तो हुज़ूर का दिल पाकिस्तान के प्रत्येक अहमदी के लिए बिना पानी के मछली की तरह तड़पता था परन्तु असीराने राह मौला का वर्णन आते ही ज़ब्त के सारे बंधन टूट जाते। साहीवाल की घटना के बारे में जब हुज़ूर की सेवा में रिपोर्ट भिजवाई गई तो आप ने सारी रात दुआएं करते हुए व्याकुलता में गुज़ार दी। थोड़ी सी देर के लिए जो आप की आँख लगी तो आप ने हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मुज़फ़्फ़र अहमद साहिब को देखा जिन्होंने हुज़ूर को अस्सलामु अलैकुम कहा। इस ख़्वाब से हुज़ूर को यक़ीन हो गया कि जमाअत इस तूफ़ान में सलामती और सफलता के साथ निकल जाएगी। परन्तु इसके साथ असीरान राहे मौला के ग़म को आप ने अपने ऊपर पूरी तरह हावी कर लिया।

आदरणीय इल्यास मुनीर साहिब के नाम हुज़ूर ने अपने एक ख़त में फ़रमाया :

मुझे तो कई बार लगता है कि मेरा शरीर आज़ाद परन्तु असीराने राहे मौला के साथ क़ैद में रहता है। अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि मैं कहाँ-कहाँ रहता हूँ।

एक ख़त में फ़रमाया:-

"आपके यूसुफ़ी युग में एक दिन भी मुझे ऐसा याद नहीं कि आप याद न आए हों। कई बार अल्लाह तआला के दरवाज़ा पर इस विनम्र दुआ से मेरा दिल पिघल पिघल कर बहा है कि हे मेरे प्यारे रब! मुझे जल्द अपने प्यारों की रिहाई दिखा कर इस जान को प्राण धातक ग़म से रिहाई दे जिसने मुझे कैदी बना रखा है और जो मेरी आज़ादी की ख़ुशी में ऐसी कड़वाहट घोलता है कि यह आज़ादी जुर्म दिखाई देने लगती।"

हुज़ूर ने क़ैदियों के लिए एक लंबे समय तक इस रूप में दुआएं की कि मानो सारी फ़िज़ा में क़यामत का शोर मचा था। इसके साथ-साथ प्रत्येक क़ुर्बानी के लिए अपने रब के हुज़ूर हाज़िर भी दिखाई देते। अत: उसका हाल यूं वर्णन फ़रमाते हैं:-

कई बार इस दर्द के साथ दिल से दुआ निकलती है कि विश्वास नहीं होता कि ख़ुदा की रहमत उसे ठुकरा सकेगी परन्तु वह हकीम है और हम नादान अज्ञानी बंदे। वह हमारी भलाई और सफलता को हमसे बेहतर समझता है। यदि इस्लाम के पुनरुद्धार के लिए वह हम नाकारा बंदों को क़ुर्बानी का सौभाग्य प्रदान करना चाहता है तो हम हाज़िर हैं। परन्तु बड़े ख़ुशनसीब वे लोग हैं जिन्हें उसकी कृपा दृष्टि फूलों की तरह चुन ले परन्तु इन असहायों का क्या हाल होगा जिनके दिल के नसीब में अपनी महरूमी का अनुभव और अपने प्यारों की यादों के कांटे रह जाएं।

अपने शेरों में भी हुज़ूर ने अपनी मुहब्बत का अतुलनीय प्रकटन किया और अपनी यह नज़्म अपनी आवाज़ में रिकार्ड करवा के असीरान को जेल में भिजवाई:

क्या तुम को ख़बर है रहे मौला के असीरो!
तुम से मुझे एक रिश्ता-ए-जाँ सबसे सिवा है
किस दिन मुझे तुम याद नहीं आए मगर आज
क्या रोज़े क़यामत है कि एक हश्र बपा है

हुज़ूर को यह भी अनुभव था कि सारी जमाअत अपने क़ैदी भाइयों के लिए दुआ

कर रही है। अत: फ़रमाया

"अपने दिल की अवस्था और अधिक कुछ नहीं लिखता कि तुम बेचैन न हो जाओ। क्या तुम्हें जानकारी नहीं कि करोड़ों अहमदियों के दिलों का चैन तुम कुछ पीड़ित अहमदियों के दिलों से जोड़ दिया गया है।"

फिर फ़रमाया "तुम्हारी तो ज़िन्दगी भी ज़िन्दगी और मौत भी ज़िन्दगी है। तुम मिट्टी पर रहने वाले थे, मेरे मौला की रज़ा ने तुम्हें अर्श पर रहने वाला बना दिया, मसीह की ग़ुलामी में तुम भी ज़मीन के किनारों तक शौहरत पा गए। आज एक करोड़ अहमदियों के धड़कते हुए दिल तुम्हें दुआएं दे रहे हैं और दो करोड़ भीगी हुई आँखें तुम पर मुहब्बत और रश्क के मोती निछावर कर रही हैं। मेरा दिल भी इन दिलों में सम्मिलित है, मेरी आँखें भी इन आँखों में घुल मिल गई हैं।"

हुज़ूर ने कैद के समय तर्बीयत का पहलू भी सम्मुख रखा और आइन्दा आने वाले हालात के लिए तैयार करते रहे। अत: क़ैदियों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की किताब तज़किरतुश्शहादतैन के अध्ययन की नसीहत फ़रमाई। यही कारण था कि किसी असीरे राहे मौला का सिर दुनिया की अदालत के सामने और फांसी की सज़ा के ऐलान के बाद सदर के सामने रहम की अपील करने को नहीं झुका। उस समय हुज़ूर ने एक ख़ुत्बा में फ़रमाया -

हम तो उस महाप्रतापी ख़ुदा को जानते हैं, किसी और की ख़ुदाई के मानने वाले नहीं इसलिए अहमदियों का सिर उन ज़ालिमाना सज़ाओं के नतीजा में झुकेगा नहीं बल्कि और बुलन्द होगा यहां तक कि ख़ुदा की ग़ैरत यह फ़ैसला करेगी कि दुनिया में सबसे अधिक सिर-बुलन्दी अहमदी को प्राप्त होगी क्योंकि यही वह सिर है जो ख़ुदा के हुज़ूर सबसे अधिक विनम्रता से झुकने वाला सिर है।

इसी तरह एक पत्र में फ़रमाया -

ये चार दिन की ज़िन्दगी तो बहुत अधिक भरोसा करने के योग्य नहीं है और यह भी पता नहीं कि कैसे अंजाम को पहुँचती है। हम हरगिज़ नहीं चाहते कि वह हम से इतनी जल्द जुदा हों परन्तु मौला की इच्छा यदि यही है तो हे ख़ुश नसीबो ! जो

अल्लाह तआला की रज़ामंदी की समाप्त न होने वाली ज़िन्दगी पाने वाले हो और आकाश अहमदियत के चमकदार सितारे बन कर चमकने वाले हो और जो तारीख़-ए-अहमदियत में हमेशा मुहब्बत और महानता और प्यार और सम्मान के साथ याद किए जाओगे, वापसी के समय अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम की फ़तह और प्रभुत्व की दुआ करना और इस विनम्र नाकारा इन्सान की बख़्शिश की भी दुआ करना। तुम तो प्रत्येक परीक्षा में सफल ठहरे और प्रत्येक परीक्षा से कामयाब होकर निकले। काश मेरी भी यह फरियाद क़बूल हो कि رَبَّنَا تَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَار

मौत की सज़ा सुनाए जाने के बाद जब असीरान ने फांसी की कोठड़ी के हवाला से ख़त लिखा तो हुज़ूर ने जवाब में तहरीर फ़रमाया

तुम तो काल कोठड़ी के नहीं नूर के कमरा के रहने वाले हो। यह तुमने क्या लिख दिया। अल्लाह तआला की रज़ा के क़ैदी तो जिस क़ैद में भी रहें उसे नूर का शोला बना देते हैं। एक और बात भी तुम ने अपने ख़त में ग़लत लिख दी। तुम तो अनश्वर ज़िन्दगी के सज़ावार ठहराए गए हो। कौन है जो तुम्हें मौत की सज़ा दे सके। वे तो स्वयं मुर्दा हैं। कभी मुर्दों ने भी ज़िन्दों की शहरग (मुख्य रग) पर पंजा मारा है। यदि शहादत तुम्हारे मुक़द्दर में लिख दी गई है तो किसी माँ ने वह बच्चा नहीं जना जो तुम्हें मार सके। शहादत की स्थायी ज़िन्दगी मौत की मंज़िल से होकर नहीं गुज़रती।

उसके बाद असीरान ने अन्धेरी कोठड़ियों को "ज़िन्दगी के नूर की कोठड़ी" लिखना शुरू कर दिया।

हौसला अफ़ज़ाई का अंदाज़ इस ख़त में देखें:

"यदि ख़ुदा की तक़दीर आपको एक महान शहादत का अवसर प्रदान करने का फ़ैसला कर चुकी है। तो यह एक सौभाग्य है जो क़यामत तक आपका नाम धर्म तथा दुनिया कि में रोशन रखेगी और आप हमेशा ज़िन्दा रहेंगे और कोई नहीं जो आपको मार सके। क़यामत तक आने वाली नस्लें आपके वर्णन पर रोते हुए और तड़पते हुए आपके लिए दुआएं किया करेंगी और हसरत किया करेंगी कि काश वे आपके स्थान पर होते।... मैंने अपने दिल को टटोला तो यह मालूम करके मेरा दिल प्रशंसा और

शुक्र से भर गया कि यदि आपको बचाने के लिए मुझे फांसी के तख़्त पर लटका दिया जाता तो मैं ख़ुशी से अपने आप को इसके लिए तैयार पाता।

असीरान राहे मौला के ख़तों के हवाला से हुज़ूर ने एक बार लिखा:

"मुहब्बत जब बुद्धि और दिमाग़ को पराजित कर लेती है तो एक अनुभवी इन्सान भी बच्चों की सी हरकतें करने लगता है। यही हाल मेरा हुआ जब मैंने आपका ज़िन्दगी की कोठड़ी से लिखा हुआ ख़त देखा। बे-इख़्तियार उसे चूमा, उसके माथे के बोसे लिए और उसे सिर आँखों से लगा कर अजीब रूहानी सन्तोष प्राप्त किया।"

अपने बेशुमार ख़तों में हुज़ूर ने अल्लाह तआला से असीरान की रिहाई और ज़िन्दगी की भीख मांगी। कभी फ़रमाया-

"मैं जानता हूँ कि शहादत और फिर ऐसी महान शहादत एक रश्क करने योग्य सौभाग्य है परन्तु मैं यह भी जानता हूँ कि अल्लाह तआला ज़ाहिर में जान लिए बिना भी अनन्त ज़िन्दगी प्रदान कर सकता है।"

एक ख़त में लिखा:

"हे अल्लाह! ... उन्हें मौत की तंग राह से गुज़ारे बिना सदैव की ज़िन्दगी प्रदान कर दे और इसी दुनिया में उन्हें सदैव रहने वालों में गिन ले और मुझे यह ख़ैर की भीख प्रदान कर कि मैं उन्हें अपने सीने से लगा कर उनके माथे को चुम्बन दूं और अपने दिल की प्यास बुझाऊं।"

हुज़ूर ने असीरान को अपने हाथ से ख़त लिखने के इलावा ख़ुत्बों और ख़िताबों में बार-बार उन की क़ुर्बानियों का वर्णन किया और दुआ की तहरीक की। हुज़ूर के ख़िताब जब असीरान तक पहुंचते तो जेल की दीवारों में भी उन्हें आज़ादी का अनुभव होने लगता। असीरान की दिलदारी के लिए हुज़ूर प्रत्येक ईद और अन्य अवसरों पर तोहफ़े भिजवाते। सारी दुनिया में जमाअत को मिलने वाली तरक्कियों को शहीदों और असीरान की क़ुर्बानियों की ओर मंसूब कर देते। फिर जब अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से किसी असीर को ज़ालिमों की क़ैद से रिहाई बख़्शता तो हुज़ूर अल्लाह की प्रशंसा के गीत गाते हुए शुक्र के जश्न मनाते, मिठाई बांटी जाती,

एम. टी. ए. की क्लासों में वर्णन होता और ख़तों में मुबारकबाद देते हुए कुछ इस किस्म का इज़्हार होता:

इन्सान के हाथों इन्सान के क़ैद होने के इतिहास में और फिर उसकी रिहाई में ऐसी घटना कहीं नहीं हुई कि सारी दुनिया से लोगों को पहले क़ैद पर ग़म हुआ हो और फिर रिहाई की ख़ुशियां मनाई हों। यह सब अल्लाह का उपकार है।"

एक ऐतिहासिक भाषण

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे ने ख़िलाफ़त के अत्यधिक बरकतों वाले पद पर आसीन होने के तुरन्त बाद ख़िलाफ़त की चयन कमेटी से ख़िताब के समय फ़रमाया।

"मैं सिवाए इसके कुछ नहीं कहना चाहता कि अपने लिए भी दुआएं करें और मेरे लिए भी दुआएं करें

رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَالَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْلَنَا وَارْحَمْنَا اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ

यह ज़िम्मेदारी इतनी सख़्त है, इतनी व्यापक है और इतनी दिल दहला देने वाली है कि इसके साथ हज़रत उमर रज़ि का मृत्यु शय्या पर अन्तिम सांस लेने के क़रीब यह वाक्य याद आ जाता है। اَللّٰهُمَّ لَا لِیْ وَلَا عَلَیَّ यह दरुस्त है कि समय का ख़लीफ़ा ख़ुदा बनाता है और हमेशा से मेरा इसी पर ईमान है और मरते दम तक, अल्लाह तआला के सामर्थ्य से इस पर ईमान रहेगा। यह दरुस्त है कि इस में किसी मानवीय ताक़त का हस्तक्षेप नहीं और इस लिहाज़ से बहैसीयत ख़लीफ़ा अब मैं न आपके सामने और न किसी और के सामने जवाबदेह हूँ और न जमाअत के किसी व्यक्ति के सामने जवाबदेह हूँ। परन्तु यह कोई आज़ादी नहीं क्योंकि मैं सीधा अपने रब के हुज़ूर जवाबदेह हूँ। आप तो मेरी ग़लतियों से ग़ाफ़िल हो सकते हैं, आपकी मेरे दिल पर नज़र नहीं। आप हाज़िर तथा ग़ायब की बातों का इल्म नहीं रखते। मेरा रब मेरे दिल की पाताल तक देखता है यदि झूठे बहाने हों तो उन्हें स्वीकार नहीं करेगा। यदि निष्ठा और पूरी वफ़ा के साथ, तक़्वा को सामने रखते हुए मैंने कोई फ़ैसला किया तो उसके समक्ष केवल वही पहुँचेगा। इसलिए मेरी गर्दन कमज़ोरों से आज़ाद हुई

परन्तु ब्रह्माण्ड की सबसे अधिक शक्तिशाली हस्ती के सामने झुक गई और उसके हाथों में आई है। यह कोई मामूली बोझ नहीं। मेरा सारा वजूद उसकी कल्पना से काँप रहा है कि मेरा रब मुझ से राज़ी रहे, उस समय तक ज़िन्दा रखे जिस समय तक मैं उसकी रज़ा पर चलने के योग्य हूँ और सामर्थ्य प्रदान करे कि एक लम्हा भी उसके आज्ञापालन के बिना मैं न सोच सकूं, न कर सकूं, वहम तथा गुमान भी मुझे उसका पैदा न हो। सबके अधिकारों का ख़्याल रखूं और इन्साफ़ को स्थापित करूँ जैसा कि इस्लाम की मांग है क्योंकि मैं जानता हूँ कि इन्साफ़ के बिना उपकार की स्थापना संभव नहीं और उपकार की स्थापना के बिना वह जन्नत का समाज वजूद में नहीं आ सकता जिसे ईताए ज़िल कुर्बा का नाम दिया गया है।"

दो स्वर्णिम उपदेश

हुज़ूर ने अपने ख़िलाफ़त के युग में जमाअत को बेशुमार नसीहतें फ़रमाईं और क़ुरआन तथा सुन्नत की रोशनी में हदीस और इल्मे कलाम (पिछली धार्मिक पुस्तकों का ज्ञान) के हवालों से सुसज्जित हिदायतों से नवाज़ा। नीचे केवल दो नसीहतें लिखी हैं जो हमें हमेशा सम्मुख रखने की ज़रूरत है।

प्रत्येक ख़लीफ़ा का अपना अलग रंग है

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने ख़ुत्बा जुम्अः 2 जुलाई 1982 ई. में फ़रमाया कि आंहुज़ूर के ख़लीफ़ाओं में प्रत्येक सुन्नते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर चलने वाला था परन्तु उसका अपना एक अलग रंग भी था। जिन लोगों ने इस अन्तर को सामने नहीं रखा, उन्होंने नादानी में ख़लीफ़ाओं का एक दूसरे से मुक़ाबला शुरू कर दिया। हज़रत उमर रज़ि की ज़िन्दगी में कहने लगे कि हुज़ूर अबूबकर रज़ि तो यूं किया करते थे और हज़रत अली रज़ि के युग में हज़रत उसमान रज़ि के साथ मुक़ाबले शुरू हो गए। हालाँकि नादान और अज्ञानी लोग नहीं समझते कि किसी ने कौन सा कर्म क्यों अपनाया यह अल्लाह ही बेहतर जानता था। बंदे का काम नहीं कि वहां ज़बान खोले जहां ज़बान खोलने के लिए उसको निर्धारित नहीं

किया गया। इसलिए मैं जमाअत अहमदिया को नसीहत करता हूँ कि वह ऐसी व्यर्थ दिलचस्पियों से दूर रहें। किसी के कहने से किसी ख़लीफ़ा के स्थान में, उसके मन्सब में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। जो फ़र्क़ पड़ेगा और पड़ता है वह केवल अल्लाह की नज़र में है। इन्सान को क्या पता कि किस का सामर्थ्य क्या था और कौन ख़ुदा की नज़र में अपने सामर्थ्यों को पूर्णता तक पहुंचा कर उनके चरम सीमा तक पहुंच गया।

अत: अपनी अज्ञानता और जहालत को समझना चाहिए और यही मांग है विनम्रता की। बंदे का काम यह है कि इस्तिग़फ़ार से काम ले और दुआएं करे, समय के ख़लीफ़ा की कमज़ोरियों की पर्दापोशी करे और यह कि अल्लाह तआला उस पर रहम करे और जो सामर्थ्य उसको प्रदान हुआ है, उसके बेहतरीन प्रयोग का अवसर उसको प्रदान करे ताकि उसकी रज़ा की नज़र उस पर पड़े। यदि आपके ख़लीफ़ा पर आपके अल्लाह की रज़ा की नज़र पड़ेगी तो मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि सारी जमाअत पर अल्लाह की रज़ा और मुहब्बत और प्यार की नज़रें पड़ेंगी।

नए मुसलमानों की सुरक्षा

नए मुसलमानों की सुरक्षा के लिए हुज़ूर ने आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद नासिर साहिब को उस समय एक नसीहत लिखी जब वह स्पेन में दावत इलल्लाह में व्यस्त थे। हुज़ूर ने लिखा :-

मेरी ताकीदी नसीहत यह है कि नए मुस्लिमों को कभी निगरानी के बिना न छोड़ें वर्ना वे नष्ट हो जाते हैं। विशेष रूप से स्पेन में तब्लीग़-ए-इस्लाम की पिछले तीस साला की कोशिश से हमें यही शिक्षा मिलती है। कैसा दर्दनाक मन्ज़र है कि अंदर आने और बाहर जाने के दोनों रास्ते एक जैसे गुज़रगाह बने हुए हैं। यूं लगता है जैसे कोई शिकारी ख़ौफ़नाक दरिंदों से भरे हुए जंगल में हिरनों और भेड़ियों को अपने कब्ज़ा में ला-ला कर वृक्षों से बाँधता हुआ गुज़रता चला जाए, इस उम्मीद पर कि फ़ुर्सत के बाद किसी दिन उनके रेवड़ बनाऊंगा। क्या ऐसे शिकारी का अन्जाम हसरत के सिवा कुछ हो सकता है?

अत: इस्लाम में आने वाली किसी मासूम रूह को निगरानी के बिना भौतिकता के

भयंकर जंगल में अकेला न छोड़ें और अल्लाह तआला से बेहतर और किस के सुपर्द किया जा सकता है। उस समय तक उन की तर्बीयत करते रहें, अल्लाह तआला की मुहब्बत पैदा करने वाली ईमान वर्धक घटनाएं उन्हें सुनाते रहें। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अन्य नबियों की जीवनी का सबसे नुमायां पहलू अर्थात अपने रब की मुहब्बत उनके सामने बार-बार प्रस्तुत करें। स्वयं उनसे दुआएं करवाएं और साथ ही उनके लिए दुआओं में लग जाएं कि अल्लाह तआला उन्हें क़बूलियत दुआ का चसका लगा दे, वे अल्लाह से मुहब्बत और प्यार की बातें किए बिना न रह सकें। दुआ उनका ओढ़ना बिछौना, उनकी रूह की ख़ुराक, उनकी प्रिय वस्तु बन जाए। तब आप समझें कि निगरानी का हक़ अदा हुआ।

दूसरों की श्रद्धांजलि

* जर्मनी का एक प्रसिद्ध अख़बार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे के बारे धन्यवाद प्रस्तुत करते हुए लिखता है:

"एक सच्चे ख़लीफ़ा के द्वारा पूर्वी हीरो का एक नई कल्पना उभरी है। अहमदिया मुस्लिम जमाअत के प्रमुख के लिए ज़ाहिरी नहीं बल्कि आन्तरिक रूहानी दुनिया महत्व रखती है।... आपके पैग़ाम में सबसे प्रभावित करने वाली बात यह है कि आप अमन के शहज़ादे हैं। दस मिलियन से अधिक अनुयायियों के प्रमुख ने कहा : हथियार हाथ में लेकर मानव जाति के दिल फ़तह नहीं किए जा सकते इस तरह के पवित्र जिहाद का कोई वजूद नहीं।"

(NEUE PRESSE फ्रैंकफ़र्ट 27 अक्तूबर 1986 ई.)

* कोपनहेगन के एक अख़बार ने आपके बारे में लिखा:

"ख़लीफ़तुल मसीह निसन्देह एक प्रभावित करने वाले व्यक्तित्व के मालिक हैं। यही नहीं बल्कि आप मुस्लिम फ़िर्क़ा जमाअत अहमदिया के विश्वव्यापी प्रमुख भी हैं जिसके मेम्बरों की संख्या एक करोड़ बीस लाख है।"

(दैनिक Aktulet 12 अगस्त 1982 ई पृष्ठ10)

* डेनमार्क का एक अख़बार लिखता है:

"पिछले शाम हमें ख़लीफ़तुल मसीह से पंद्रह मिनट की मुलाक़ात का अवसर प्राप्त हुआ परन्तु उच्च योग्यताओं के मालिक इस आकर्षक शख़्सियत के साथ जिस में क़ुदरत ने मज़ाक़ का स्वभाव रखा है हमारी मुलाक़ात लम्बी होती चली गई और पंद्रह मिनट की बजाए पैंतालीस मिनट तक जारी रही।"

(दैनिक बी.टी 13 अगस्त 1982 ई)

* आस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध पत्रकार जेम्ज़ ऐस मरे लिखते हैं:

"अहमदिया जमाअत के प्रमुख जो एक चुने हुए ख़लीफ़ा की हैसियत में ज़बरदस्त भरोसे के मालिक हैं, यह बात किसी किस्म के दिखावे का कारण नहीं। वह कहते हैं कि अहमदियों को जिस किस्म के अत्याचारों का सामना करना पड़ रहा है इससे उनकी समानता आरम्भिक ईसाइयों से प्रमाणित होती है और अन्त में वह भी उन ही की तरह फ़तह प्राप्त करके रहेंगे।"

(दी ऑस्ट्रेलियन 29 सितम्बर 1983 ई)

* जलसा सालाना बर्तानिया 1992 ई. के अवसर पर सेरालियून के सदर के व्यक्तिगत प्रतिनिधि और सेहत विभाग के वज़ीर, समाजी तथा मज़हबी मामलों के मिस्टर एकिन ए जिब्रील तशरीफ़ लाए और जलसा में सम्मिलित होने वालों से कहा:

"मैंने पहली बार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे से मुलाक़ात की तो इसका गहरा प्रभाव मेरे दिल पर पड़ा। मैं हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया से बार-बार मिलना चाहता हूँ।" (दैनिक अल्फ़ज़ल 4/ 1992 ई)

1982 ई में एक कैथोलिक पादरी जनाब शैल आरलड पोलीसताद ने हुज़ूर से नार्वे में मुलाक़ात की और वहां के अख़बार "Stavanger Aftenbla" में सितम्बर 1982 ई में अपने विचार वर्णन करते हुए उन्होंने वर्णन किया:

"इमाम जमाअत अहमदिया बिना किसी ज़ाहरी शान तथा शौकत के मौजूद थे। परन्तु वह क़ुदरती वक़ार जो एक वास्तविक मज़हबी रहनुमा का विशेष गुण है उनमें उत्तम रंग में नज़र आ रहा था। आप काले रंग की शेरवानी और सफ़ैद तुर्रादार पगड़ी बांधे हुए थे।

आपका सारा वजूद एक ऐसे सन्तोष का द्योतक था जिस की नींव ख़ुदा तआला

की हस्ती पर गहरे ईमान से प्राप्त हो सकती है। निसन्देह यह सन्तोष का स्थान उन्हें इसी राह को बेहतरीन और निरन्तर तौर पर अपनाने से मिला है जिसे वह सच्चा जानते हैं। हाँ वही मज़हब जो पूर्ण आज्ञापालन का सन्देश देने वाला है।"

(सोवेनियर 1986, 1987 ई. मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया कराची पृष्ठ 17)

* लार्ड एरिक एवबरी ने जलसा सालाना बर्तानिया 2002 ई. के अवसर पर ख़िताब करते हुए कहा:

"मैं विशेष रूप से आपके प्रमुख हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद को श्रद्धांजलि प्रस्तुत करता हूँ जिनके उत्तम मार्गदर्शन ने आपको मुश्किलों के भंवर से बचा लिया और सुदृढ़ उम्मीद है कि उनका नेतृत्व जमाअत अहमदिया के लिए न केवल बर्तानिया में बल्कि पूरी दुनिया में एक रोशन भविष्य पैदा करेगी जिससे सारी मानवता को लाभ होगा।" (दैनिक अल्फ़ज़्ल सालाना नम्बर 2002 ई पृष्ठ 66)

* जलसा सालाना बर्तानिया 1994 ई. के अवसर पर कैनेडा में बोस्निया रीलीफ़ सैंटर के डायरेक्टर जनाब महमूद बासिक़ ने कहा कि मैंने हाल ही में क्रोशिया और ज़ाग़रब का दौरा किया है जहां मेरी बोस्निया के सदर सम्माननीय बेगूविच से मुलाक़ात हुई। उन्होंने मेरे विचार में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे और समस्त अहमदियों को सलाम भिजवाया है। आदरणीय महमूद बासिक़ साहिब ने दुआ की कि:

"हुज़ूर ऐसा नेतृत्व बोस्निया को भी प्राप्त हो।"

(दैनिक अल्फ़ज़्ल 11 अगस्त 1994 ई)

* जनाब कृष्ण रेले चीफ़ ऐडीटर इंडिया लिंकर लन्दन लिखते हैं:

"मैं एक रूहानी लीडर के बारे में और अधिक जानने का इच्छुक था जो कुछ दिन पहले अपने अनुयायियों की दस हज़ार की भीड़ को जलसा सालाना टेलफ़ोर्ड (सिर्रे) के अवसर पर अपनी तक़रीर से प्रभावित कर रहा था। प्रत्येक व्यक्ति उनकी तक़रीर ख़ामोशी के साथ ध्यान से सुन रहा था कि जैसे प्रत्येक शब्द वह्यी की तरह नाज़िल हो रहा हो। हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद एक स्कॉलर थे। जिन्होंने अपने जीवन को नेक उद्देश्यों के लिए वक़्फ़ कर रखा था। उनकी ज़िन्दगी में अनुशासन था और वह इस युग की जदीद साईंसी तथा सोशल तरक्कियों से अच्छी तरह परिचित थे।"

(साप्ताहिक लाहौर, लाहौर 4 अक्तूबर 2003 ई.)

* बर्तानवी सैकण्डरी स्कूलों के लिए प्रकाशित होने वाली एक किताब Religion in Life में इस्लाम के प्रमुख लोगों में हुज़ूर का परिचय और तस्वीर भी सम्मिलित की गई है।

(ज़मीमा अन्सारुल्लाह सितम्बर 1987 ई.)

* 1987 ई. में जब हुज़ूर ने अमरीका का दौरा फ़रमाया तो वाशिंगटन डी सी में 7 अक्तूबर का दिन वहां के मेयर ने आपके नाम करने का ऐलान किया। इसी तरह अमरीकी सेनेट के प्रतिनिधि जनाब वीनस हारिक़ ने "निशान अमरीका" का सम्मान हुज़ूर की सेवा में प्रस्तुत किया।

(ज़मीमा मिस्बाह फरवरी 1988 ई.)

* बर्तानवी मैंबर आफ़ पार्लीमैंट टॉम कॉक्स ने हुज़ूर की किताब Revelation, Rationality Knowledge & Truth पर टिप्पणी करते हुए कहा:

"आप कई योग्यताओं के मालिक व्यक्तित्व हैं और विभिन्न ज्ञानों के माहिर हैं। आप एक माहिर वैद्य हैं और साईंसी ज्ञानों के ज्ञाता हैं, एक महान फिलासफर और मंझे हुए शायर हैं। दरअसल आप इब्ने सीना और इब्ने रुशद की तरह इल्म का बेपनाह ख़ज़ाना हैं और विभिन्न विषयों और ज्ञान की विभिन्न शाख़ाओं पर ख़ूब पकड़ रखते हैं। इस बहुत व्यापक और गहरे ज्ञान के साथ-साथ जो विभिन्न पक्षों से आपको प्राप्त है, आप इस्लाम की शिक्षाओं की हिक्मत और महानता को समझने में समस्त दुनिया से बुलन्द एक विशेष स्थान पर स्थापित हैं। हक़ीक़त का इन्कार करने वाले तथा नास्तिकों के ख़िलाफ़ आप एक काटने वाली दलील हैं और ऐसे हैं कि उन्हें उनके समझ से परे और अक्ल से दूर विचारों के बारे में सोचने पर विवश कर दें। इस किताब की सबसे अहम विशेषता पवित्र क़ुरआन का वह गहरा और महान इल्म है जो आप किसी दृष्टिकोण के समर्थन में प्रस्तुत करते हैं। दरअसल धार्मिक पुस्तकों का ज्ञान केवल अध्ययन के आधार पर प्राप्त नहीं किया जा सकता। यह तुहफ़ा ख़ुदावंदी है जो केवल कुछ लोगों के हिस्सा में आता है और मैं विश्वास रखता हूँ कि आप इन ख़ुशनसीब लोगों में से हैं जो इल्हाम की नेअमत से हिस्सा पाते हैं

और जिन्हें ख़ुदा तआला अपनी ओर से इस महान वरदान के लिए चुन लेता है। मैं बहुत विश्वास से कह सकता हूँ कि आप इस्लामी दुनिया के विद्वानों से भरे हुए लोगों के सरदार हैं और मैं आपकी महानता को सलाम करता हूँ।

* संयुक्त राष्ट्रीय मूवमैंट के संस्थापक लीडर जनाब अलताफ़ हुसैन ने हुज़ूर के देहान्त पर कहा:

"एक महान रहनुमा और स्कॉलर इस दुनिया से विदा हुआ है और अपने पीछे एक बड़ा खालीपन छोड़ गया है। उनकी याद अनमिट और हमेशा रहने वाली है।"

(मुहर्रिर 20 अप्रैल 2003 ई.)

इसके अतिरिक्त भी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह को सारी दुनिया के बेशुमार इल्मी तथा अदबी व्यक्तियों ने विभिन्न समय में श्रद्धांजलि प्रस्तुत की। हुज़ूर को बहुत से शहरों की चाबियाँ प्रस्तुत की गईं और विभिन्न दिन आपके नाम के साथ विशेष किए गए। सारी दुनिया के असंख्य अख़बारों तथा पत्रिकाओं ने हुज़ूर के व्यक्तित्व के संदर्भ से निबन्ध लिखे और आपके इंटरव्यूज़ अपनी पत्रिकाओं में प्रकाशित किए। बहुत से प्रकाशन संस्थाओं ने स्वयं हुज़ूर अनवर के इंटरव्यूज़ रिकार्ड किए। हुज़ूर को ज्ञान रूपी, साहित्यिक व्यक्तित्व की मानवता की सेवा के हवाले से भी दुनिया भर में सराहना की गई।

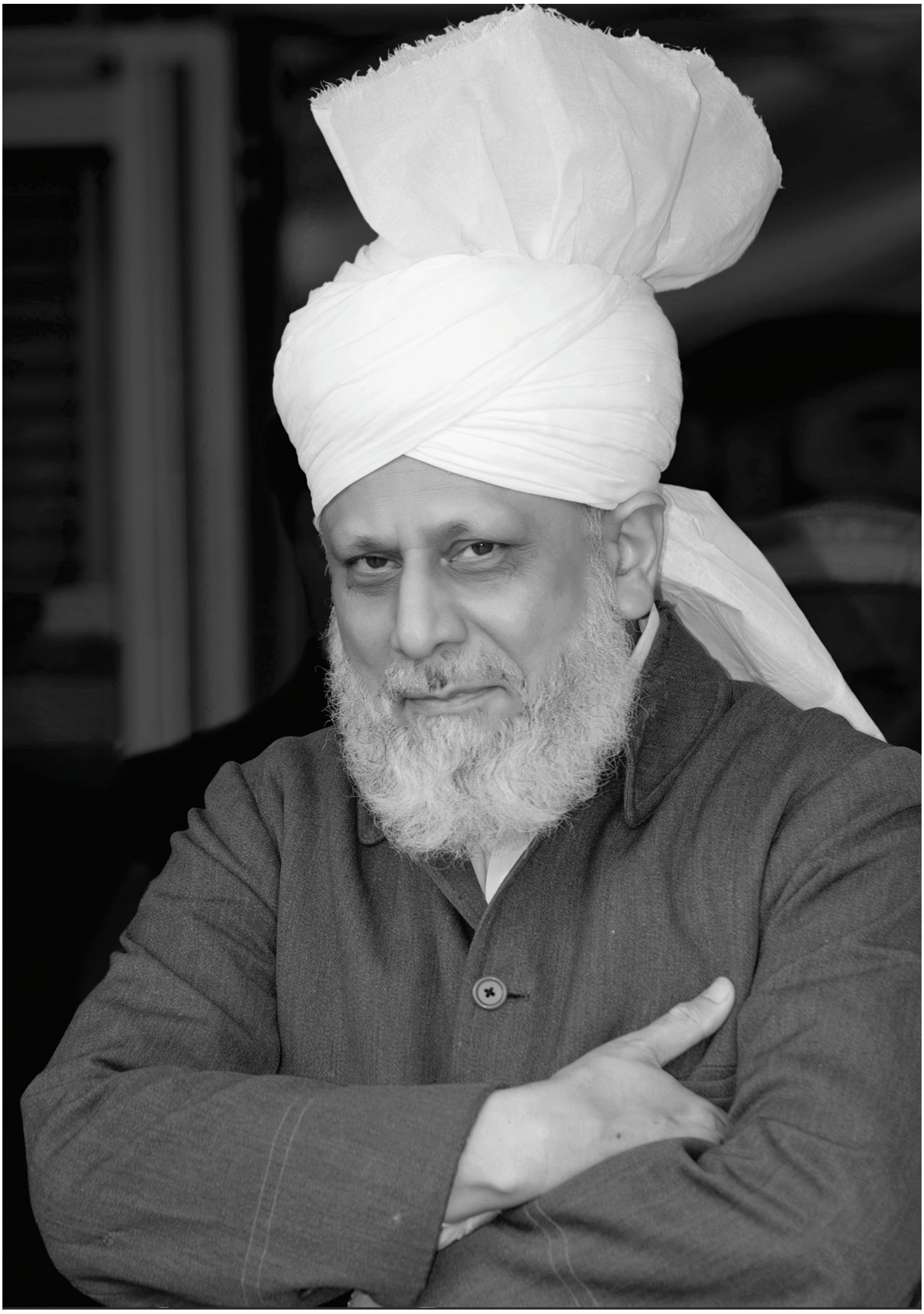

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब
ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रिहिल अज़ीज़

आठवाँ अध्याय

क़ुदरत-ए-सानिया के पांचवें द्योतक

जमाअत अहमदिया अल्लाह तआला के हाथ की स्थापित की गई जमाअत है और अल्लाह तआला की सहायता तथा समर्थन का साया हमेशा इसके सिर पर रहा है। जमाअत का सौ साल से अधिक समय का इतिहास इस बात पर गवाह है कि अल्लाह तआला ने इस ख़ुदाई जमाअत को कभी एक क्षण के लिए असहाय तथा अकेला नहीं छोड़ा बल्कि प्रत्येक क्षण अपने विशेष समर्थन और सहायताओं से नवाज़ता है और प्रत्येक स्तर पर अपने उपकार के व्यवहार को जारी रखा। जो ख़ुदा तआला की क़ुदरत का निशान भी है और जमाअत अहमदिया की सच्चाई का प्रमाण भी है।

जमाअत अहमदिया के चौथे ख़लीफ़ा अर्थात क़ुदरत-ए-सानिया के चौथे द्योतक सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब 19 अप्रैल 2003 ई. को ख़ुदा तआला की इच्छा के अनुसार इस संसार से स्वर्ग सिधार गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। परन्तु अल्लाह तआला ने शीघ्र अपनी प्यारी जमाअत को सँभाल लिया और एक दयालु अस्तित्व अपनी ओर से प्रदान किया। आप सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहो तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ हैं। 22 अप्रैल 2003 ई. वह बरकतों वाला दिन है जब सारी जमाअत ने संयुक्त रूप से आप को सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पांचवां ख़लीफ़ा चुना और आपके हाथ पर बैअत की। आपकी बैअत ख़ुदाई मंशा और ख़ुदा के आदेश के अनुसार हुई। अतः अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ख़ुदाई इल्हाम में आपका नाम बताया कि "इन्नी मअक या मसरूर" अर्थात हे मसरूर मैं तेरे साथ हूँ।

इसी तरह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत अक़दस मिर्ज़ा मसरूर अहमद अय्यदहुल्लाहो तआला की जानशीनी (उत्तराधिकारी

होने) के बारे में महान भविष्यवाणी की। आपने ख़ुत्बा जुम्अः 12 सितम्बर 1997 ई. को अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहो तआला के पिता आदरणीय हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मन्सूर अहमद साहिब के देहान्त के अवसर पर उनकी महान ख़िदमतों का वर्णन करने के बाद फ़रमाया कि:

"अब मैं सारी जमाअत को हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मन्सूर अहमद साहिब के लिए दुआ की ओर ध्यान दिलाता हूँ और बाद में मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब के बारे में भी कि अल्लाह तआला उनको भी सही उत्तराधिकारी बनाए। तू हमारे स्थान पर बैठ जा का विषय पूरी तरह उन पर चरितार्थ हो और अल्लाह तआला हमेशा स्वयं उनकी सुरक्षा करे और उनकी सहायता करे।

(उद्धृत अख़बार बदर 20/27 दिसम्बर 2005 पृष्ठ 7)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे की बात कि "उनको भी सही उत्तराधिकारी बनाए।" ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा पर आसीन होने के द्वारा शब्दशः पूरी हो गई।

पवित्र जीवनी और आपके बारे में इल्हाम

युग के इमाम महदी मौऊद सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने विशेष अपनी ओर से क़बूलियत दुआ का सौभाग्य प्रदान किया। आप वर्णन फ़रमाते हैं:

"मैं बहुत अधिक दुआ की क़बूलियत का निशान दिया गया हूँ। कोई नहीं कि जो इसका मुक़ाबला कर सके। मैं अल्लाह की क़सम खा कर कह सकता हूँ कि मेरी दुआएं तीस हज़ार के लगभग स्वीकार हो चुकी हैं और इनका मेरे पास प्रमाण है।"

(ज़रूरतुल इमाम, पृष्ठ 44)

जहां आपने अपनी आध्यात्मिक संतान अर्थात जमाअत के लिए असंख्य दुआएं कीं वहीं शारीरिक सन्तान के लिए भी अनगिनत दुआएं की हैं। ये दुआएं ख़ुदा तआला के हुज़ूर क़ुबूल हुईं। अतः आप फ़रमाते हैं:

ख़ुदाया तेरे फ़ज़लों को करूँ याद
बिशारत तूने दी और फिर ये औलाद

कहा हरगिज़ नहीं होंगे ये बर्बाद
बढ़ेंगे जैसे बाग़ों में हों शमशाद
ख़बर मुझ को यह तूने बारहा दी
फ़सुब्हानल्लज़ी अख़्ज़ल अआ दी

इसी तरह फ़रमाया :-

मेरी औलाद सब तेरी अता है हर इक तेरी बशारत से हुआ है

(दुर्रे समीन)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की इस मक़बूल दुआ के नतीजा में अल्लाह तआला ने आपको शुभ सूचना देने वाली संतान प्रदान की जिनके बाग़े अहमद के शमशाद होने पर सारी धरती गवाही दे रही है। हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब रज़ि इसी पवित्र बाग़ के शुभ सूचक बेटे हैं।

प्रिय पाठको ! सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने देहान्त से पहले एक और शुभ सूचना अपनी जमाअत को इन शब्दों में दी थी कि:

"तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना ज़रूरी है और उसका आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह स्थायी है जिसका सिलसिला क़यामत तक विच्छेद नहीं होगा।"

(अलवसीयत पृष्ठ 6-7)

अत: आपके देहान्त 26 मई 1908 ई पर अल्लाह तआला ने इस क़ुदरत-ए-सानिया को ख़िलाफ़त अला मिनहाज नबुव्वत के रंग में ज़ाहिर फ़रमाया। दीने अहमद की शमा ने जहां नूरुद्दीन के द्वारा अंधकारों को दूर किया, वहां बशीरुद्दीन ने इस नूर को दुनिया के किनारों तक पहुंचा दिया। अल्लाह तआला की सहायता नासिर के साथ रही तो ताहिर के द्वारा यह पवित्र तथा पाक वृक्ष सारे संसार में फैल गया और आज ख़ुदा तआला ने मसरूर अय्यदहुल्लाहो तआला के द्वारा मोमिनीन के दिलों को प्रसन्नता और ख़ुशी प्रदान की है। आप अय्यदहुल्लाहो तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के मस्नद-ए-ख़िलाफ़त पर आसीन होने से सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह मुबारक इरशाद एक नई शान में प्रकट हुआ कि:

"दूसरा तरीक़ा रहमत के अवतरित होने का रसूलूं, नबियों, औलियाओं तथा

ख़लीफ़ाओं का भेजना है ताकि उनके अनुकरण तथा हिदायत से लोग सदमार्ग पर आ जाएं और उनके आदर्शों पर चल कर नजात पाएं। अत: ख़ुदा तआला ने चाहा कि इस विनीत की औलाद के द्वारा ये दोनों भाग प्रकट में आ जाएं।

(सब्ज़ इश्तिहार रूहानी ख़ज़ायन भाग 2 पृष्ठ 462 प्रकाशन 1984 ई. लन्दन)

अलहमदु लिल्लाह सुम्मा अलहमदु लिल्लाह कि हम ने एक बार फिर इस मुबारक इरशाद का प्रादुर्भाव क़ुदरत-ए-सानिया के पांचवें बरकतों वाले द्योतक की सूरत में देख लिया जबकि अल्लाह तआला के इरादे और तक़दीर के नतीजा में ख़िलाफ़त का ताज सय्यदना इमामना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ के सिर पर रखा गया।

आप सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वंश में से हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पड़पोते हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब रज़ि के पोते हैं। 15 सितम्बर 1950 ई. को रब्वा पाकिस्तान में साहिबज़ादा मिर्ज़ा मन्सूर अहमद साहिब और आदरणीया साहिबज़ादा नासिरा बेगम साहिबा के यहाँ पैदा हुए। आप ने दुनियावी उच्च शिक्षा प्राप्त की और ख़ुदा की इच्छा के अनुसार वक़्फ़-ए-ज़िन्दगी का महान सौभाग्य प्राप्त किया। मैट्रिक तालीमुल इस्लाम हाई स्कूल और बी ए तालीमुल इस्लाम कॉलेज रब्वा से किया। 1976 ई. में कृषि विश्वविद्यालय फैसलाबाद से एम.एस.सी. की डिग्री ऐग्रिकल्चरल इकनॉमिक्स में प्राप्त की। 31 जनवरी 1977 ई. को आपकी शादी आदरणीया सय्यदा अमतुस्सबूह बेगम साहिबा पुत्री साहबज़ादी अम्तुल हकीम साहिबा मरहूमा तथा आदरणीय सय्यद दाऊद मुज़फ़्फ़र शाह साहिब से हुई। आपको अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से एक बेटी आदरणीया अम्तुल वारिस फ़ातिह पत्नी आदरणीय फ़ातिह अहमद साहिब डाहरी और बेटे साहिबज़ादा मिर्ज़ा वक़ास अहमद साहिब सल्महुल्लाह से नवाज़ा है। आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा वक़ास अहमद साहिब की शादी अज़ीज़ा सय्यदा हिबतुर्रऊफ साहिबा सल्महुल्लाह पुत्री आदरणीय डाक्टर सय्यद तासीर मुज्तबा साहिब निवासी रब्वा के साथ हुई है।

सम्माननीय पाठको ! हुज़ूर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ साढ़े सतरह

साल की उम्र में वसीयत के निज़ाम में शामिल हुए। 1977 ई. में वक़्फ़ करके नुसरत जहां स्कीम के अधीन घाना रवाना हुए। जहां 1977 ई. से 1985 ई बतौर प्रिंसिपल अहमदिया सकैंडरी स्कूल और फिर अहमदिया ज़रई फ़ार्म टमाले उत्तर घाना में सेवा का सौभाग्य प्राप्त किया। इस समय आप ने पहली बार घाना में गेहूं उगाने का सफल तजुर्बा किया।

1985 ई. को पाकिस्तान वापसी हुई और 17 मार्च 1985 ई. को नायब वकीलुल माल सानी के तौर पर तक़र्रुर हुआ। 18 जून 1994 ई. को आपका तक़र्रुर बतौर नाज़िर तालीम सदर अन्जुमन अहमदिया रब्वा हो गया। 10 दिसम्बर 1997 ई. को आप नाज़िर आला तथा स्थानीय अमीर निर्धारित हुए। अत: हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह रहमहुल्लाह ने आपके तक़र्रुर के बारे में फ़रमाया

"मैंने उनके स्थान पर (हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मन्सूर अहमद साहिब) नाज़िर आला तथा स्थानीय अमीर उनके साहिबज़ादे मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब को बनाया है। तो मेरा इस इल्हाम की ओर भी ध्यान फिरा कि मानो अब आप यह कह रहे हैं कि मेरे स्थान बैठ।" (उद्धृत बदर 29 अप्रैल 2003 ई.)

हुज़ूर अय्यदहुल्लाहो तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के बारे में इल्हाम

सदैव से ख़ुदा तआला की यह सुन्नत है कि वह अपने मामूरीन को भविष्य की ख़बरें देता है। यह भविष्य की ख़बरें विभिन्न प्रकार की होती हैं। कुछ का सम्बन्ध उनकी ज़ात, उनकी औलाद, बल्कि औलाद की औलाद से होता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा भी ख़ुदा तआला ने बहुत सी पेशगोइयां तथा इल्हाम वर्णन करे हैं।

पाठको ! भविष्यवाणियों का यह नियम है कि कुछ भविष्यवाणियों में मुलहम अभिप्राय होता है जबकि कुछ में उसका बेटा बल्कि अन्य औलाद अभिप्राय होती है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह वर्णन फ़रमाते हैं कि:

"यह वास्तविक घटना है कि कुछ भविष्यवाणियों में जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग में ऐसा घटित हो चुका है एक व्यक्ति के बारे में की जाती हैं परन्तु बेटा अभिप्राय होता है।" (उद्धृत बदर 29 अप्रैल 2003 ई.)

इस नियम को समक्ष रखते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ इल्हाम सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ के बारे में देखें।

"15 सितम्बर 1950 ई. को आप अय्यदहुल्लाहो तआला का जन्म रब्वा में हुआ। चूँकि आपका वजूद मुबारक "रिजालुन मिन फ़ारस" का प्रमाण तथा दलील बनने वाला था। इसलिए आपका नाम मसरूर अहमद रखा गया जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इल्हामी नाम है। अत: दिसम्बर 1907 ई. को इल्हाम हुआ। मैं तेरे साथ हूँ और तेरे समस्त प्यारों के साथ हूँ। इन्नी मअक या मसरूर। अर्थात हे मसरूर मैं तेरे साथ हूँ।" (बदर 19 दिसम्बर 1907 ई. पृष्ठ 4-5)

(अल्हकम 24 दिसम्बर 1907 ई. पृष्ठ 4 तज़्किरा प्रकाशन चतुर्थ पृष्ठ 744)

सय्यदना हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को 21 अप्रैल 1903 ई को यह इल्हाम हुआ:

"यह बात आकाश पर क़रार पा चुकी है। तब्दील होने वाली नहीं।"

(अल्हकम 24 अप्रैल 1903 ई. पृष्ठ 12)

इस के अन्तर्गत अल्लाह तआला की ज़बरदस्त तक़्दीर चयन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रेहिल अज़ीज़ के द्वारा नए रूप में प्रकट हुई और 21 अप्रैल 2003 ई. को मौलाना अताउल मुजीब राशिद साहिब सैक्रेटरी मज्लिस चयन ख़िलाफ़त लन्दन की ओर से एम.टी.ए में 22 अप्रैल को इसका ऐलान बार-बार हो रहा था।

इस तरह अप्रैल के आख़िरी दस दिनों के मुबश्शिर इल्हाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम में से एक यह भी है कि:

"इस में समस्त संसार की भलाई है।"

(अलबदर 8 मई 1903 ई. तज़किरा पृष्ठ 471)

इस नए इन्क़िलाब वाले युग की महानता का पहला नमूना आकाश पर क़रार पा चुका है में शब्द आकाश से ही प्रमाणित है। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहो तआला की

विश्वव्यापी बैअत और आकाशीय सैटेलाइट चैनल एम.टी.ए के द्वारा उसका लाईव प्रसारित होना एक अजीब शान पैदा कर रहा था। सच है:

साफ़ दिल को कसरते एजाज़ की हाजत नहीं
इक निशाँ काफ़ी है गर दिल में हो ख़ौफ़े किरदगार

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं:

"यह (हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब रज़ि) मिर्ज़ा मन्सूर अहमद साहिब के पिता थे। उनका जन्म 1895 ई. में हुआ और वफ़ात 1961 ई. में हुई। उन्होंने 66 साल की उम्र पाई। सब भाईयों में सबसे छोटी उम्र में फ़ौत हुए।

हज़रत मियां शरीफ़ अहमद साहिब के बारे में इल्हाम था कि अल्लाह उनको बहुत उम्र देगा और इमारत देगा और एक इल्हाम यह भी था कि वह बादशाह आया इसके बावजूद तीनों भाईयों में सबसे छोटी उम्र पाई और कभी भी अमीर नहीं बने। इस पर लोग घबराते थे। देखने में उन में से कोई इल्हाम भी आप पर पूरा नहीं हुआ और यह हो ही नहीं सकता कि इल्हाम पूरे न हों।"

(उर्दू क्लास नम्बर 336 उद्धृत दैनिक अल्फ़ज़ल 20 मार्च 1999 ई)

सम्माननीय पाठको ! हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए इल्हामों के बारे में एक बात वर्णन फ़रमाते हैं कि "अल्लाह तआला की यह भी सुन्नत है कि जिस व्यक्ति के बारे में कोई बात ख़ुदा की ओर से प्रकट नहीं की जाती वह काई बार उसकी बजाय उसकी औलाद या नस्ल में पूरी होती है जैसा कि हमारे आक़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने हाथ में क़ैसर तथा किसरा की चाबियां देखीं परन्तु आप उन चाबियों के मिलने से पहले ही फ़ौत हो गए और ये चाबियां आपके ख़लीफ़ाओं और रूहानी बेटों के हाथ में आईं ... यह क़ुदरत ख़ुदा के आश्चर्य हैं जिन से रूहानी दुनिया भरी हुई नज़र आती है और ख़ुदा अपनी बातों को बेहतर समझता है।"

(दैनिक अल्फ़ज़ल रब्वा 9 जनवरी 1962 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह रहमहुल्लाह ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्हाम हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब रज़ि के बारे में "अब तू हमारे स्थान पर बैठ हम चलते हैं।" (तज़्किरा पृष्ठ 487) को स्पष्ट करते हुए फ़रमाया :

"मेरा हमेशा यह ख़्याल रहा है कि यह कश्फ़ हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब पर हरगिज़ नहीं बल्कि उनके बेटे हज़रत मिर्ज़ा मन्सूर अहमद साहिब पर चरितार्थ आता है। हुज़ूर ने फ़रमाया कि घटनाओं ने इस अंदाज़ा को बड़ी उत्तमता से प्रमाणित कर दिया क्योंकि हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मन्सूर अहमद साहिब को 45 बार रब्वा में समय के ख़लीफ़ा की अनुपस्थिति में स्थानीय अमीर के तौर पर प्रतिनिधित्व करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और फिर इसी तरह यह कि ख़िलाफ़त-ए-राबिया के समय 14 साल स्थानीय अमीर रहने का असाधारण सम्मान प्राप्त हुआ। यह घटना इससे पहले कभी अहमदियत के इतिहास में नहीं हुई, इस विषय को वर्णन करने के बाद हुज़ूर ने एक और आध्यात्मिक बात यह वर्णन की जिसका सम्बन्ध हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला से है। अत: हुज़ूर ने ख़ुत्बा जुम्अ: के आख़िर में फ़रमाया :

"अब जबकि मैंने उनके स्थान पर नाज़िर आला तथा स्थानीय अमीर उनके साहिबज़ादे मिर्ज़ा मसरूर अहमद को बनाया है तो मेरा इस इल्हाम की ओर भी ध्यान फिरा कि मानो आप अब यह कह रहे हैं कि मेरे स्थान पर बैठ।"

(उद्धृत साप्ताहिक अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल लन्दन 30 जनवरी 1998 ई)

सम्माननीय पाठको ! दुनिया ने अपनी आंख़ों से स्वयं एम.टी.ए के द्वारा इस नज़ारा को देखा कि तू हमारे स्थान पर बैठ हम चलते हैं, का विषय किस तरह हमारे प्यारे इमाम हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब के द्वारा पूरा हुआ। फ़ल्हमदो लिल्लाह अला ज़ालिक।

एक ख़ुत्बा निकाह में भी हमारे मौजूदा हुज़ूर अय्यदहुल्लाहो तआला के चयन ख़िलाफ़त की ओर इशारा मौजूद है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के तीसरे बेटे हज़रत मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब के निकाह का ऐलान हज़रत हकीम मौलाना नूरुद्दीन साहिब रज़ि ने किया। अत: आप ने इस अध्यात्मिकता से भरे ख़ुत्बे में फ़रमाया

"हमारी ख़ुशक़िसमती है कि ख़ुदा ने हमारे इमाम को भी आदम कहा है और

بث منهما رجالاً كثيراً की आयत स्पष्ट करती है इस आदम की औलाद जो दुनिया में इस तरह फैलने वाली है मेरा ईमान है कि बड़े ख़ुश क़िस्मत वे लोग हैं जिन के सम्बन्ध इस आदम के साथ पैदा हों क्योंकि इसकी औलाद में से इस किस्म के मर्द और औरतें पैदा होने वाली हैं जो ख़ुदा तआला के हुज़ूर विशेष रूप से चुने जा कर उसकी वाणी से संमानित होंगे। मुबारक हैं वे लोग।"

(अल्हकम भाग 46 इसी तरह ख़ुत्बा नूर पृष्ठ 240)

इस निकाह के अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी इस सभा की शोभा बढ़ा रहे थे।

यह बात इस स्थान पर विचार योग्य है कि यह बात किसी और अवसर पर या किसी और बेटे के निकाह पर नहीं कही गई बल्कि एक विशेष अवसर पर हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा शरीफ़ अहमद साहिब के निकाह पर जबकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मौजूद थे कही गई। इस आदेश के यह शब्द बहुत ही अर्थपूर्ण हैं कि ख़ुदा तआला के हुज़ूर में खासतौर पर चयनित होकर उसके साथ वार्तालाप से लाभान्वित होंगे। यह प्रकट करते हैं कि यह चयन कोई साधारण चयन नहीं होगा। निस्संदेह यह शब्द बहुत स्पष्ट तौर पर ख़िलाफ़त के कथन की ओर इशारा कर रहे हैं।

आख़िर में हुज़ूर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ के पहले ख़िताब के साथ इस विषय को समाप्त करता हूँ। हुज़ूर फ़रमाते हैं:

"जमाअत के लोगों से केवल एक निवेदन है कि आज कल दुआओं पर ज़ोर दें दुआओं पर ज़ोर दें, दुआओं पर ज़ोर दें। बहुत दुआएं करें बहुत दुआएं करें बहुत दुआएं करें। अल्लाह तआला अपनी सहायता तथा समर्थन दे। अहमदियत का क़ाफ़िला अपनी तरक्क़ियों की ओर जारी रहे। आमीन।"

(साप्ताहिक अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल लन्दन 25 अप्रैल 2003 ई)

आख़िर में दुआ है कि अल्लाह तआला हमारे प्यारे हुज़ूर की उम्र तथा सेहत में ग़ैरमामूली बरकत डाले और रूहुल-क़ुदुस के द्वारा हुज़ूर की मदद तथा सहायता करता चला जाए। आमीन।

ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा (पंचम) के बारे में ख़िलाफ़त के चयन से पहले देखी जाने वाली मुबश्शिर ख़्वाबें

सम्माननीय पाठको ! अल्लाह तआला का एक गुण क़दीर है अर्थात वह क़ुदरत वाला है। इसका अर्थ यह है कि उसी में प्रत्येक कार्य के करने की ताक़त और शक्ति मौजूद है। यदि वह चाहे तो बिना किसी माध्यम के प्रत्येक कार्य कर सकता है। परन्तु अल्लाह तआला ने दुनिया में कामों की पूर्णता के लिए माध्यमों की प्रणाली स्थापित की है।

ख़लीफ़ा का चयन भी वास्तव में ख़ुदा तआला का ही कार्य है और वह अपने नेक बंदों में से जो सद कर्मों की कसौटी को स्थापित रखते हैं, ख़लीफ़ा बनाता है यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से मोमिन ख़लीफ़ा का चयन कर रहे होते हैं परन्तु इस में ज़रा भी शक नहीं है कि मोमिनीन के दिल अल्लाह तआला के परिवर्तन के अधीन उस व्यक्ति का चयन करते हैं जो वास्तव में ख़ुदा तआला की नज़र में पहले से चुना गया हो चुका होता है।

अल्लाह तआला का मोमिनों की जमाअत पर उपकार है कि वह दिलों की मज़बूती और ईमान में मज़बूती के लिए ख़लीफ़ा के चयन से पहले ही मोमिनों को अपने फ़ैसला से स्पष्ट या इशारा से सूचित कर देता है। ताकि वह इस ख़ुदाई तक़दीर के प्रकट होने पर बाक़ी मोमिनीन के लिए ईमान की वृद्धि का कारण बनें।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ के ख़िलाफ़त के पद पर आसीन होने से पहले भी अल्लाह तआला ने अपनी सुन्नत के अनुसार बहुत से मर्द औरतों, बच्चों तथा बूढ़ों को मुबश्शिर ख़्वाबें दिखाईं। उनमें से कुछ एक का नीचे वर्णन किया जाता है। इन ख़्वाबों के लिए विनीत ने आदरणीय मौलाना अताउल मुजीब राशिद साहिब के निबन्ध "ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा के बारे में ख़िलाफ़त के चयन से पहले दिखाई जाने वाली मुबश्शिर ख़्वाबें" उद्धृत बदर 20/27

दिसम्बर 2005 ई से सहायता ली है।

(1) जर्मनी से आदरणीय मक़्सूदुल हक़ साहिब पुत्र आदरणीय मौलाना अबुल मुनीर नूरुल हक़ साहिब मरहूम ने 28 अगस्त 2003 ई को लिखा:

सत्यापन के लिए आज मैंने अपनी अम्मी को फ़ोन किया था उन्होंने बताया कि तुम्हारे अब्बा के देहान्त (30 दिसम्बर 1995 ई.) से दो तीन साल पहले की बात है कि सुब्ह-सवेरे उठने पर उन्होंने बताया कि मैंने आज रात ख़्वाब में देखा कि एक कमरा है जिसमें ख़ानदान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लोग एक दायरे की शक्ल में बैठे हुए हैं कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहेमहुल्लाह तशरीफ़ लाते हैं उनके हाथ में दो हार हैं एक बड़ा हार है एक छोटा हार है। आप दायरे में बैठे हुए समस्त लोगों पर नज़र डालते हैं और बड़ा हार साहिबज़ादा मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब के गले में डाल देते हैं और छोटा ख़ानदान के एक और बुज़ुर्ग जो बड़ी उम्र के हैं के गले में डाल देते हैं।

यह ख़्वाब वर्णन कर के तुम्हारे अब्बा ने कहा कि मालूम होता है कि ख़ुदा तआला इन दोनों वजूदों से अपने धर्म के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य लेगा उन्होंने कहा कि मैंने यह ख़्वाब तुम्हारे सामने इसलिए वर्णन की है कि ख़ुदा जाने उस समय मैं मौजूद हूँ या न हूं। मेरी अम्मी ने कहा है कि ख़्वाब को वर्णन करते हुए शब्दों में तो फ़र्क़ हो सकता है परन्तु इसका अभिप्राय यही था।

(2) हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला को संबोधित करते हुए आदरणीय इकरामुल्लाह साहिब चीमा जर्मनी लिखते हैं:

शायद 1997 ई. में विनीत ने देखा कि आप हमारे घर रब्वा में तशरीफ़ लाए हैं और आपने हुज़ूर वाली पगड़ी पहन रखी है और लिबास भी हुज़ूर वाला है मैं आप को हुज़ूर करके सम्बोधन होता हूँ। मैं कहता हूँ कि हुज़ूर आप अकेले ही आ गए, कोई बॉडीगार्ड साथ नहीं फिर मैं पूछता हूँ कि हुज़ूर यह कैसे हो गया। आप फ़रमाते हैं कि यह मेरे अल्लाह का फ़ज़्ल है जो मुझ पर हुआ है। थोड़ी देर के लिए यूं महसूस होता है कि जैसे आप की रूह अल्लाह का शुक्र अदा करने आकाश पर चली गई

है। मैं आपको बाज़ू से पकड़ कर बुलाता हूँ तो फिर आपको होश आ गई है फिर आप चलने लगते हैं।

ख़्वाब के समय आप का नाम मुझे बताया गया मसरूर अहमद इससे पहले मैंने आपको कभी नहीं देखा था फिर जब मैं रब्वा साल के बाद गया तो आपको देखा ख़ुदा की क़सम बिल्कुल आप वही थे। ख़्वाब में मैंने आपके चेहरे पर इतना नूर देखा जिसका समतुल्य मैंने इससे पहले कभी नहीं देखा था।

(3) आदरणीय शेख़ उम्र अहमद मुनीर साहिब पुत्र आदरणीय शेख़ नूर अहमद मुनीर साहिब मरहूम रावलपिण्डी लिखते हैं:

मैं अल्लाह तआला को हाज़िर नाज़िर जान कर यह निवेदन करता हूँ दिसम्बर 1999 ई में विनीत ने एक ख़्वाब देखा जो निम्नलिखित है:

"दिसम्बर 1999 में इस्लामाबाद (पाकिस्तान) की मस्जिद में दाख़िल हुआ हूँ और मैं देखता हूँ कि एक बड़े कमरे के बाहर अय्यूबी साहिब (जो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस की गाड़ी चलाया करते थे) खड़े हैं मैं उनसे कहता हूँ कि सब लोग नमाज़ पढ़ रहे हैं और आप यहां क्यों खड़े हैं वह कहते हैं आने वाले ख़लीफ़तुल मसीह का पहरा दे रहा हूँ। मैं उनसे कहता हूँ मुझे भी तो देखने दें नए ख़लीफ़तुल मसीह कौन हैं मेरे निरन्तर आग्रह करने पर वह हामी भरते हैं और वादा लेते हैं कि तुम किसी को बताओगे नहीं। जब मैं कमरे में दाख़िल होता हूँ तो क्या देखता हूँ कि साहिबज़ादा मिर्ज़ा मसरूर अहमद विराजमान हैं और इसके साथ मेरी आँख खुल जाती है।"

(4) आदरणीया अमतुन्नसीर मुनीर साहिबा मुहल्ला दारुन्नसर वसती रब्वा ने लिखा:

1999 ई उस महीने का वर्णन है जब हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर साहिब (अल्लाह तआला स्तर बुलन्द करे) को बद-नसीबों ने शहीद कर दिया।

देखती हूँ कि एक कमरे में दाख़िल हुई हूँ वह कमरा नहीं बल्कि बहुत बड़ा हाल है। दरवाज़ा से दो-चार क़दम अंदर गई हूँ तो खड़ी होकर देख रही हूँ कि

ख़लीफ़तुल मसीह उर्दू क्लास ले रहे हैं आप का चेहरा दरवाज़े की ओर है। इतने में बाहर से मुझे आवाज़ पड़ती है मैंने पलट कर देखा कि कौन है परन्तु कोई नज़र नहीं आया तो मैं दुबारा हुज़ूर अय्यदहुल्लाहो को देखने लगी हूँ तो क्या देखती हूँ कि हुज़ूर अय्यदहुल्लाहो ग़ायब हो गए हैं और कुर्सी पर एक दरमियानी उम्र के व्यक्ति विराजमान हैं। मैं बड़े ध्यान से देखे जा रही हूँ। अच्छी तरह देखने के बाद मेरी आँख खुल जाती है।

प्यारे आक़ा ! मैंने अपना ख़्वाब किसी को नहीं सुनाया और अल्लाह तआला के हुज़ूर बार-बार दुआएं की और रोई कि अल्लाह मियां वह व्यक्ति कौन था मुझे तूने चेहरा दिखा दिया मैं तो जानती नहीं वह कौन हैं? नाम क्या है?

मैं अपने हलक़ा की मेम्बरों को अहमद नगर हुज़ूर अय्यदहुल्लाहो के बाग़ों में ले जाने के लिए इजाज़त नामा लेने स्थानीय अमीर के दफ़्तर के अंदर दाख़िल हुई। प्यारे आक़ा ! उस समय जब आपने मुझे सम्बोधन करने के लिए चेहरा उठाया तो मैं सिर से पांव तक पसीने से भीग गई कि यह तो वही चेहरा है जो मैंने ख़्वाब में देखा था।

(5) आदरणीय नासिर महमूद अहमद साहिब अपने ख़त दिनांक 10 मई 2003 ई में लिखते हैं:

आज से लगभग दो साल पहले जब विनीत गिनी किनाकरी में नौकरी करता था तो एक रात ख़्वाब में देखा कि एक बहुत बड़ी तस्वीर जो कि लकड़ी के फ्रेम में है एक साहिब उठाए हुए मुझे दिखाते हैं। तस्वीर में एक व्यक्ति पगड़ी पहने खड़ा है। मैं पूछता हूँ कि यह कौन है तो आवाज़ आई है कि यह अगले ख़लीफ़ा हैं। मैं पूछता हूँ कि इन का नाम क्या है तो आवाज़ आती है मिर्ज़ा मसरूर अहमद। अगले दिन सुबह मैंने इस ख़्वाब का वर्णन मौलाना ख़ुशी मुहम्मद शाकिर मुबल्लिग़ गिनी किनाकरी से किया। आपने कहा कि इस ख़्वाब का वर्णन किसी से न करें जब तक ऐसा न हो जाए। परन्तु ख़लीफ़ा राबे रहमहुल्लाह के देहान्त पर चयन से पहले मैंने यह ख़्वाब अपनी माता को सुना दी थी।

(6) आदरणीया अमतुल मुसव्विर साहिबा दारुल ऊलूम शर्क़ी रब्वा अपने ख़त

दिनांक 21 जनवरी 2004 ई. में वर्णन करती हैं:

"मैं अपनी एक ख़्वाब का वर्णन करना चाहती हूँ जो मैंने 23 अप्रैल 2002 ई. को देखा था। मैं ख़्वाब में देखती हूँ कि मैं ख़ुत्बा सुन रही हूँ जो ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह दे रहे हैं और अचानक ग़ायब हो जाते हैं और उनके स्थान पर आप हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़ुत्बा देना शुरू कर देते हैं। और मैं जब ख़ुत्बा सुन कर बैठती हूँ तो मैं अकेली हूँ और जब हुज़ूर ख़लीफ़तुल मसीह राबे ग़ायब होते हैं तो मैं देखती हूँ कि मेरे सामने बहुत अधिक औरतें बैठी हैं तो मैं उनसे पूछती हूँ कि यह क्या हो गया है कि अभी तो ख़लीफ़ा अल-राबे ख़िताब कर रहे थे। अब यह कौन ख़िताब कर रहे हैं। वे औरतें मुझे बताती हैं कि आपको नहीं पता यह मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब हैं जो हमारे ख़लीफ़ा हैं। यह ख़्वाब मैंने 25 अप्रैल 2002 ई. को अपने घर जा कर अपनी रिशते की बहन को सुनाई तो उसने कहा कि तुम्हारे पास यह ख़्वाब अल्लाह तआला की अमानत है। यह किसी को नहीं सुनानी।

(7) आदरणीय मुहम्मद शरीफ़ ऊदा साहिब अमीर जमाअत कबाबीर फ़िलस्तीन ने अरबी भाषा में अपने ख़त लिखित 28 मई 2005 ई में जो लिखा इसका अनुवाद यह है।

"मई 2002 ई में मैंने एक फ़िलस्तीनी दोस्त से सम्पर्क करके कहा इस साल आप भी जलसा सालाना बर्तानिया में सम्मिलित हों उन्होंने कहा कि मैं इस्तिख़ारा करके बताऊंगा। कुछ दिन के बाद उन्होंने बताया कि मैंने ख़्वाब में देखा है कि मैं लन्दन गया हूँ और समय के ख़लीफ़ा से मुलाक़ात भी हुई है परन्तु हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब से नहीं बल्कि दूसरे ख़लीफ़ा हैं और इस दोस्त (अमजद कुमैल) ने इस ख़लीफ़ा का नक़्शा वर्णन करना शुरू कर दिया कि उनकी दाढ़ी छोटी है आँखें इस तरह की हैं इत्यादि। मैंने कहा मैं यह नहीं सुनना चाहता परन्तु मुझे समझ आ गई कि शायद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह के देहान्त की ओर इशारा है। बहरहाल मैं इस ख़्वाब को भूल गया।

जब अप्रैल 2003 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह का देहान्त

हुआ और आदरणीय अताउल मुजीब राशिद ने विनीत को फ़ोन के द्वारा ख़िलाफ़त चयन कमेटी के मैंबर होने की सूचना दी तो इस भारी ज़िम्मेदारी के अनुभव से मुझे तो जान के लाले पड़ गए बहुत दुआएं कीं और करवाईं। जब लन्दन पहुंचे और मग़रिब तथा इशा की नमाज़ों के बाद चयन के लिए मस्जिद में दाख़िल होने के उद्देश्य से लाईन बना कर खड़े थे तो मैंने अपने पीछे देखा कि जिस शख़्सियत को ख़लीफ़ा बनने के लिए मैं वोट देना चाहता था वह शख़्सियत मेरे पीछे खड़ी है। मैंने अपने दिल में कहा कि जिस को मैं ख़लीफ़ा के लिए वोट देना चाहता हूँ यह उचित नहीं लगता है कि मैं उसके आगे खड़ा हूँ अत: इस लाईन से निकल कर आख़िर पर आ गया। उस समय दो व्यक्ति एक चौधरी हमीदुल्लाह साहिब थे जबकि दूसरी शख़्सियत को मैं नहीं जानता था परन्तु एक बिजली की चमक जैसी तेज़ी से वह शख़्सियत मेरे दिल में उतर गई और मैं सोचने लगा कि यह आख़िर हैं कौन? और इस सोच की अवस्था यह थी कि मुझे यूं महसूस हुआ कि शायद मैं मस्जिद में दाख़िल होने से पहले ही मर जाऊंगा।

इज्लास के समय मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब को देख कर मैंने कहा यह तो वही हैं जिनकी सूरत बिजली की तेज़ी से मेरे दिल में उतर चुकी है। अत: चयन के वक़्त मैंने उन्हीं के लिए वोट देने को हाथ खड़ा किया तो देखा अधिकतर ने उन्हीं को वोट दिया है। यूं ग़म की अवस्था जाती रही और ऐसी ख़ुशी नसीब हुई कि मुझे ज़िन्दगी में ऐसी ख़ुशी कोई नहीं मिली। वापसी पर फ़िलस्तीन में आदरणीय हानी ज़ाहिर के घर आदरणीय अमजद कुमैल से मुलाक़ात हुई जिनके घर एम.टी.ए नहीं था और उन्होंने अभी हुज़ूर अय्यदहुल्लाहो तआला की तस्वीर नहीं देखी थी इस मुलाक़ात में मैंने उन को हुज़ूर की तस्वीर दिखाई तो उन्होंने अपने आप कहा कि यह तो वही हैं जिनसे मैंने रो'या में मुलाक़ात की थी यहां तक कि कोट और कुर्सी भी वही है।

अब मैं समस्त मुनाफ़क़ीन को कहता हूँ कि यदि हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अय्यदहुल्लाहो तआला को ख़ुदा ने ख़लीफ़ा नहीं बनाया तो बताएं कि किस ने समय से पहले आदरणीय अमजद कुमैल को उन की सूरत दिखा दी और किस ने

मुझे लाईन से निकल कर पीछे जाने पर विवश किया और मुझे वह सूरत दिखा दी जो मेरे दिल में उतर गई जिसको मैं जानता तक न था।

(8) आदरणीय मुहम्मद अब्दुल्लाह सपरा साहिब आफ़ जर्मनी हुज़ूर अनवर के नाम अपने पत्रों में दो ख़्वाबों का वर्णन करते हैं:

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह रहमहुल्लाह के देहान्त से कुछ महीना पहले विनीत पाकिस्तान जाने लगा तो रात काफ़ी देर तक सामान बांधता रहा। परेशानी थी सो नहीं सका। थोड़ी देर के लिए लेटा तो आँख लग गई। तो देखा कि एक बहुत बड़ा कमरा है इस में सब से ऊपर हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बहुत सुन्दर तस्वीर लगी हुई है और बड़े क्रम से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे के बाद हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मियां मसरूर अहमद साहिब की तस्वीर लगी हुई है। फिर मैं देखकर दुरूद शरीफ़ पढ़ने लगता हूँ और देखता हूँ कि हज़रत मियां साहिब की तस्वीर से एक बहुत बड़ी लाईट निकली रही है। फिर जब मैं बड़े ध्यान से देखता हूँ कि तस्वीर है या हज़रत मियां साहिब स्वयं खड़े हैं तो तस्वीर आगे हिलती है तो मैं कहता हूँ यह तो मियां साहिब स्वयं हैं और यह हालत जाती रही। मैं बड़ी ज़ोर-ज़ोर से दरूद पढ़ रहा था।

(9) आदरणीय मुबश्शिर अहमद साहिब ताहिर मुरब्बी ज़िला लोधरां पाकिस्तान अपने पत्र लिखित 28 अप्रैल 2003 ई में लिखते हैं:

फ़रवरी 2003 ई की आख़िरी तारीखें थीं मैंने ख़्वाब में देखा कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे वफ़ात पा गए हैं। ख़्वाब में ही मुझे इतना ग़म था रोए चला जा रहा था और ज़ाहरी आँसू भी महसूस कर रहा था। कुछ देर बाद रोते-रोते मैं कह रहा था कि हुज़ूर तो फ़ौत हो गए हैं अब नया ख़लीफ़ा कौन होगा? तभी मेरे दिल में डाला गया कि मिर्ज़ा मसरूर अहमद जो हैं। यह ख़्वाब मैंने अपने अमीर साहिब ज़िला चौधरी मुनीर अहमद साहिब को भी सुनाई थी।

(10) आदरणीय शेख़ निसार अहमद साहिब सुमन आबाद लाहौर 26 अप्रैल 2003 ई के पत्र में लिखते हैं:

विनीत ने आज से लगभग एक महीने पहले लाहौर में ख़्वाब देखा कि हज़रत अक़दस ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहेमहुल्लाह वफ़ात पा गए हैं और साहिबज़ादा मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब को ख़लीफ़ा चुन लिया गया है ... विनीत ने अपनी माता और अपनी बेग़म को सुबह यह ख़्वाब सुनाई...विनीत ख़ुदा तआला के पाक नाम की क़सम खा कर वर्णन करता है कि विनीत ने यह ख़्वाब इसी तरह देखी।

(11) आदरणीया नसीरा लियाक़त साहिब दारुर्हमत ग़र्बी अलिफ़ रब्वा अपने पत्र लिखित 26अप्रैल 2003 ई में लिखती हैं:

हुज़ूर मैंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहेमहुल्लाह की बीमारी के समय आप के आप्रेशन से पहले एक स्वप्न देखा था जो मैं आप को सुनाना चाहती हूँ। मैं रात को हुज़ूर की सेहत के लिए दुआ करती करती सोई कि ख़्वाब में मैं स्वयं से कहती हूँ कि "हाय हुज़ूर वफात पा गए अब मियां मसरूर साहिब ख़लीफ़ा बनेंगे" साथ ही एक दम मेरी आँख खुल गई। मैं सख़्त बेचैन हुई हुज़ूर के लिए बहुत दुआएं करती थी फिर हुज़ूर के आप्रेशन के बाद अल्लाह तआला ने हुज़ूर को जब सेहत दी तो मैंने मसरूर की का भाव ख़ुशी का लिया और मैं बहुत ख़ुश थी कि ख़ुदा ने हुज़ूर को सेहत देकर हमें ख़ुशी दी है। और जब मैंने अचानक हुज़ूर के देहान्त की ख़बर सुनी तो दिल काँप उठा और साथ ही वह ख़्वाब दुबारा मेरे ज़हन में आ गई तो इस रात मैंने आपका नाम एक पर्चे पर लिख कर उसको बंद करके अपनी बेटी को दिया कि इसको ताले में रख दो यह मेरी अमानत है जब मैं कहूं तो इसको खोलना। जब ख़ुदा ने हमें दुबारा ख़िलाफ़त की नेअमत प्रदान की और जैसे ही आप का नाम बोला गया मैंने बे-इख़्तियार अलहमदो लिल्लाह कहा और बेटी से कहा जाओ और पर्ची निकाल कर उसको पढ़ो इससे ईमान बढ़ता है कि ख़लीफ़ा, ख़ुदा बनाता है।

(12) आदरणीय सय्यद हमीदुल हसन शाह साहिब ज़ईम अन्सारुल्लाह ज़िला सियालकोट लिखते हैं:

जिन दिनों हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहेमहुल्लाह तआला बीमार थे विनीत इन दिनों अपने बेटे मुरब्बी सिलसिला (चंगा बंगयाल) ज़िला रावलपिंडी के पास अपने काम के सिलसिले में गया हुआ था। मुरब्बी साहिब का नाम सय्यद सईदुल हसन साजिद है। रात को मैंने एक ख़्वाब देखी जो कि निम्नलिखित है एक बहुत बड़ा हाल है जिसमें हमारी जमाअत का इज्तिमा हो रहा है। इस हज्तिमा में एक स्टेज लगा हुआ है जमाअत के उलमा किराम और बुज़ुर्गान सिलसिला ओहदेदार मौजूद हैं अचानक आप अर्थात साहिबज़ादा मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब के सिर पर ख़िलाफ़त की पगड़ी है मैं देखकर हैरान होता हूँ और किसी से पूछता हूँ कि ख़लीफ़ा साहिबज़ादा साहिब बन गए हैं। मुझे बताया गया कि अभी देर है मैंने कहा कि ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तो सेहतमंद हो रहे हैं। मुझे कहा गया कि अभी देर है ख़लीफ़ा यही होंगे। फिर मेरी आँख खुल गई इस ख़्वाब के गवाह मुरब्बी सिलसिला चंगा बंगयाल हैं। मैंने उसी दिन उन को बता दी थी।

(13) आदरणीय महमूद अहमद साहिब ख़ालिद मुअल्लिम वक़्फ़-ए-जदीद शादीवाल ज़िला गुजरात अपने पत्र लिखित 28 अप्रैल 2001 ई. में वर्णन करते हैं:

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहेमहुल्लाह तआला के देहान्त की ख़बर सारी विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के लिए एक बहुत बड़ा सदमा है... उसी बेक़रारी की अवस्था में रात पौने बारह बजे टीवी बंद किया और लेट गया। यह दिनांक 21 अप्रैल की रात थी ख़्वाब में देखा कि हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वाला कोट और अँगूठी पहनाई जा रही है इसके साथ ही आँख खुल गई।

फिर सो गया और दुबारा यही दृश्य देखा। जब आँख खुली तो अढ़ाई बजे का समय था। सुबह मैंने ये ख़्वाब वाली घटना डायरी में लिख दी। और इसके बाद अपनी पत्नी को भी बता दिया कि आज रात अल्लाह तआला ने मुझे नए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह के बारे में बताया है ख़्वाब में। वह भी बेचैनी से पूछने लगीं कि फिर शीघ्र बताओ कौन हैं मैंने कहा कि यह मैं बताऊंगा नहीं। उनके बार-बार आग्रह करने के

बावजूद मैंने न बताया। परन्तु इतना बताया कि मैंने अपनी डायरी में लिख दिया है परन्तु यह भी चयन के ऐलान के बाद दिखाऊंगा। फिर वह कहने लगीं कि अच्छा इतना बता दें कि क्या ख़ानदान में से हैं ? मैंने कहा हाँ।

22 अप्रैल रात को कई लोग सोए नहीं थे टीवी देख रहे थे कि रात के एक बजे दो और औरतें भी हमारे घर M.T.A देखने आ गईं। रात तीन बज कर चालीस मिनट पर जब इमाम साहिब ने ऐलान किया तो उनके मुँह से हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब का नाम सुनते ही बे-इख़्तियार मेरी ज़बान से अल्लाहु-अकबर का नारा बुलन्द हुआ और मैंने उछल कर डायरी उठाई और सब के सामने खोल कर दिखाई कि यह देखें बिल्कुल यही नाम अल्लाह तआला ने मेरे हाथ से लिखवाया है। अल्हम्दुलिल्लाह।

और मैं था कि ख़ुशी से रोए चला जा रहा था और मेरी पत्नी साहिबा और दो दूसरी बहनें भी ख़ुश भी और हैरान भी थीं। इस अवसर पर मेरी पत्नि नासिरा महमूद साहिबा और दोनों मेहमान औरतें बुशरा नस्रुल्लाह और मुब्शरह नस्रुल्लाह मौजूद थीं। मैंने इसी डायरी पर जहां ख़्वाब लिखा था साथ ही इन तीनों के हस्ताक्षर करवाए।

जहां प्रत्येक अहमदी नए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह के चयन पर ख़ुश था कि ख़ौफ़ के बाद अमन की हालत ख़ुदा तआला के वादा के अनुसार प्राप्त हुई। वहां मेरी ख़ुशी की कोई इंतिहा न थी कि मेरे प्यारे अल्लाह तआला ने बहुत दयालुता का प्रदर्शन करते हुए मुझ विनीत को, इक ज़र्रा बे मुक़द्दरत को, इस योग्य समझा कि इस धरती पर मौजूद सबसे आदरणीय और सबसे मुक़द्दस और मुबारक वजूद के बारे में समय से पहले सुचित कर दिया। और फिर यही नहीं बल्कि बतौर गवाही मेरे हाथ से इस मुबारक और आदरणीय मुक़द्दस वजूद का नाम भी लिखवाया। ज़ालिका फ़ज़्लुल्लाह अला यूतीहे मन्नयशाओ ।

मेरे लिए तो यह बहुत अधिक सुनहरा क्षण था और सम्मान की बात थी कि हाँ वाक़ई मेरे प्यारे अल्लाह ने हाँ उस रहमान ने बेपनाह दयालुता के प्रदर्शन के तौर पर अपने प्यारे बंदे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस के ज़हूर के बारे में सूचित

फ़रमाया। الحمدللہ فالحمدللہ۔ الحمدللہ رب العلمین۔

(14) आदरणीया हिना ज़फ़र हाश्मी साहिबा लाहौर से अपने पत्र दिनांक 29 मई 2003 ई में लिखती हैं:

जब हुज़ूर के देहान्त के समय बार-बार M.T.A पर ऐलान होता था कि दुआएं करें कि अल्लाह तआला चयन के समय हमारा सही मार्ग दर्शन करे। मैं भी प्रत्येक नमाज़ में और चलते फिरते दुआएं करती रही। मैं प्रत्येक नमाज़ में यह दुआ करती थी कि हे ख़ुदा बेशक ख़लीफ़ा तू ही बनाता है परन्तु बनाने वालों का सही मार्ग दर्शन कर। रात को लेटे लेटे भी यही वाक्य दुहराती थी। मैंने दो दिन लगातार ये ख़्वाब देखे:

पहले दिन मैंने देखा कि कुछ लोग एक चारपाई पर बैठे हैं। कोई मुझे यह बताता है कि (एक व्यक्ति की ओर इशारा करके) यह ख़लीफ़ा बने हैं। मैंने देखा कि इस व्यक्ति ने काली टोपी पहनी हुई है और सिर इतना झुका हुआ है कि मुझे उस व्यक्ति की शक्ल नज़र नहीं आती। उनके आगे हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह रहमहुल्लाह का ताबूत भी पड़ा हुआ है।

दूसरे दिन चयन से कुछ घंटे पहले मैं थोड़ी देर के लिए सोई तो देखा किसी ने एक काग़ज़ लाकर मुझे दिया है इस पर इंग्लिश में बहुत सुन्दर लिखाई में एक लाईन लिखी हुई है। लिखा हुआ तो इंग्लिश में है परन्तु मैं इसको उर्दू में पढ़ती हूँ इस काग़ज़ पर लिखा था:

मिर्ज़ा मसरूर अहमद जमाअत के नए ख़लीफ़ा चुने गए हैं ।

साथ ही मेरी आँख खुल गई। मैंने उठ कर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ी और शीघ्रता से M.T.A लगाया। उस समय टीवी पर हुज़ूर आपकी तस्वीर काली टोपी के साथ दोनों हाथों से चेहरा छिपाकर दुआ मांगने वाली देखी। शीघ्र मुझे अपने पहले ख़्वाब की ताबीर नज़र आई। साथ ही मैंने आपका नाम लिखा हुआ पढ़ा तो अल्लाह तआला ने मेरे दोनों ख़्वाबों की ताबीर मुझे दिखा दी।

(15) आदरणीय मुबश्शिर अहमद तारिक़ साहिब निगरान मुरब्बी नज़ारत दावत इलल्लाह रब्वा लिखते हैं:

ख़िलाफ़त कमेटी का इज्लास हो रहा था विनीत की मस्जिद में आँख लग गई तो ख़्वाब में आवाज़ आई कि चयन सम्पूर्ण हो गया है। और ख़लीफ़तुल मसीह चुने गए हैं मैंने पूछा तो बड़ी स्पष्ट आवाज़ आई मसरूर अहमद और साथ ही आँख खुल गई।

(16) आदरणीया अमतुल क़ुद्दूस शौकत साहिबा सुपुत्री आदरणीय अब्दुस्सतार ख़ान साहिब मुरब्बी सिलसिला कारकुन अल्फ़ज़ल रब्वा अपने पत्र दिनांक 25 अप्रैल 2003 ई. में लिखती हैं:

दिनांक 20 अप्रैल 2003 ई. को नमाज़ ज़ुहर की अदायगी के बाद आराम करने के लिए सो गई। तो ख़्वाब में देखा कि एक बहुत बड़ी भीड़ है जिसमें हम सब लोग घर वाले भी मौजूद हैं। मैं देखती हूँ कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे ने सफ़ेद अचकन पहन रखी है और चेहरा मुबारक बहुत ही नूरानी है। आप मुस्कुरा रहे हैं। मैं हज़रत साहिब के बहुत निकट हूँ हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब भीड़ के सामने खड़े हैं और हाथ हिला-हिला कर सलाम कर रहे हैं। सब लोग बहुत ख़ुश दिखाई दे रहे हैं।

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहेमहुल्लाह तआला मुझे फ़रमाते हैं कि हुज़ूर को (अर्थात हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब) को दुआ का ख़त दे दो। साथ ही फ़रमाते हैं अल्लाह बड़ा करीम है मेरे हाथ में पत्र सफ़ेद envelope में बंद हैं मैं आगे बढ़ कर वह ख़त हुज़ूर की सेवा में प्रस्तुत करती हूँ हुज़ूर (अर्थात हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़) मुझे बहुत प्यार से देखते हैं और वह ख़त पकड़ लेते हैं।

(17) आदरणीय हिदायतुल्लाह साहिब पीर कोटि नसीराबाद सुलतान रब्वा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला को सम्बोधन करते हुए लिखते हैं:

20 अप्रैल को रात ख़्वाब में देखा कि मैं लन्दन में हूँ और बहुत सारे लोग हुज़ूर के जनाज़े के पास खड़े हैं। उस समय विनीत ने हुज़ूर की आवाज़ सुनी कि आप लोग क्यों परेशान हैं। मुझे यहां लन्दन में ही दफ़न कर दें। जब मैंने दूसरी ओर देखा

तो आपके सिर पर ख़िलाफ़त की पगड़ी थी। मैं बहुत ख़ुश हुआ और दिल में कह रहा हूँ कि पहले तो आपने कभी ऐसी पगड़ी नहीं पहनी। इसके बाद आँख खुल गई।

ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा का मुबारक युग

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ख़िलाफ़त ख़ामसा के पवित्र तथा मुबारक पद पर दिनांक 21अप्रैल 2003 ई. को चयनित हुए थे। इसके ठीक एक सौ साल पहले अर्थात 21 अप्रैल 1903 ई. को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इल्हाम हुआ कि:

"यह बात आकाश पर क़रार पा चुकी है तब्दील होने वाली नहीं।"

(तज़्किरा पृष्ठ 482)

मानो कि आपका ख़िलाफ़त पर चयनित होना अल्लाह तआला की तक़दीर और ख़ुदा तआला की इच्छा के अनुसार था आपकी बैअत का नज़ारा M.T.A के द्वारा सारी दुनिया में दिखाया गया जो धार्मिक इतिहास में पहली घटना थी।

यहां एक बात विशेष रूप से वर्णन योग्य है कि ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा के चुनाव के बाद जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला मस्जिद फ़ज़ल लन्दन से बाहर तशरीफ़ लाए तो हज़ारों अहमदियत के आशिक ख़िलाफ़त के फिदाई चुनाव का नतीजा जानने के लिए बेचैन और व्याकुल होकर खड़े थे तो आपने सबसे पहला आदेश यह दिया कि आप लोग बैठ जाएं। आप का यह फ़रमान कान में पड़ा था कि वह बहुत बड़ी भीड़ शीघ्र इस तरह बैठ गया कि मानो कोई उठा ही न हो।

यह नज़ारा सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के इस फ़रमान की याद दिलाता है कि वह जमाअत जो एक उंगली के इशारे पर बैठ जाए और एक उंगली के इशारे पर खड़ी हो दुनिया की कोई ताक़त उसे तबाह नहीं कर सकती।

ख़ुदा तआला की कृपा से जमाअत अहमदिया इस महान और आज्ञापालन योग्य इमामत के अनुसरण से हमेशा लाभान्वित हो रही है। जिस के परिणामस्वरूप जमाअत अहमदिया ने अपने आपको मज़बूत और सुदृढ़ क़िले में सुरक्षित कर लिया। अतः हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमतुल्लाह के देहान्त के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल

मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला ने आपको संबोधित करते हुए फ़रमाया:-

हे जाने वाले तूने इस प्यारी जमाअत को जो शुभ-सूचना दी थी वह शब्दश: पूरी हुई और यह जमाअत फिर मज़बूत नींव की तरह ख़िलाफ़त की स्थापना और दृढ़ता की ओर खड़ी हुई है।

इसी तरह आप ने फ़रमाया :-

"हम ख़ुदा को हाज़िर जान कर यह वादा करते हैं कि हम हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के संदेश को दुनिया में पहुंचाने के लिए और समस्त दुनिया को आपके झंडे के नीचे एकत्र करने के लिए इसी तरह ख़िलाफ़त अहमदिया को स्थापित रखने के लिए हर क़ुर्बानी देने के लिए तैयार रहेंगे और इसके लिए हमेशा दुआओं के द्वारा भी आप की मदद करते रहेंगे।"

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल लन्दन 2 मई 2003 ई.)

जब से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ख़िलाफ़त के पद पर विराजमान हुए उसी समय से विश्वव्यापी जमाअत को वादे की पाबन्दी और सिलसिले के निज़ाम के आज्ञापालन पर ज़ोर दे रहे हैं। ख़िलाफ़त की बरकत प्राप्त करने के लिए यह एक बहुत बड़ा माध्यम है। इस बारे में आप फ़रमाते हैं:

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी उचित बात पर आज्ञापालन की बैअत ली है और अब तक यह सिलसिला शरायत-ए-बैअत भी साथ चल रहा है। इसलिए यह ख़्याल कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ यह बैअत का अहद था अब नहीं आया अब यदि उसको तोड़ेंगे तो गुनाह कोई नहीं होगा, यह ख़्याल दिमाग़ से निकाल दें क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार ही यह सिलसिला स्थपित हुआ है। इसलिए यह उसी का क्रम है।

इस सिलसिले में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला फ़रमाते हैं :-

अल्लाह तआला फ़रमाता है अल्लाह का आज्ञापालन करो उसके रसूल का भी और आपस में मत झगड़ो वर्ना तुम कायर बन जाओगे और तुम्हारा रोब जाता रहेगा और धैर्य से काम लो। निस्संदेह अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। अल्लाह तआला ने हमें इस में बताया है कि याद रखो तुम्हारे एक होने के लिए तुम्हें इकट्ठे

बांध कर रखने के लिए बुनियादी चीज़ अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन है। इसलिए इस पर स्थापित रहो आपस में न झगड़ो। यह आदेश भी अल्लाह तआला के बहुत से आदेशों में से एक आदेश है कि मुसलमान आपस में लड़ें नहीं। परन्तु आज-कल देख लें कि क्या हो रहा है। (ग़ैर अहमदियों) के एक फ़िर्क़ा ने दूसरे फ़िर्क़ा का गरेबान पकड़ा हुआ है। एक संस्था दूसरी संस्था के ख़िलाफ़ गाली-गलोज कर रही है तो भविष्यवाणी कर दी थी कि इस तरह करने से तुम कायर बन जाओगे और तुम्हारा वैभव जाता रहेगा।

अत: आज-कल देख लें इसके ठीक अनुसार नतीजा निकल रहा है। बावजूद मुसलमानों की इतनी बड़ी संख्या होने के और बे-तहाशा तेल का पैसा होने के वैभव कोई भी नहीं है। दूसरे अपनी इच्छा के अनुसार इन देशों को भी चलाते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला इसी तरह फ़रमाते हैं :

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से ख़ुदा तआला ने वादा कर दिया था यह वादा दिया हुआ है। نصرت بالرعب आपके वैभव को स्थापित रहने के लिए अल्लाह तआला स्वयं भी मदद के सामान पैदा फ़रमाता रहेगा। स्वयं ही मदद करेगा अत: जो लोग जमाअत में सम्मिलित रहेंगे जमाअत के निज़ाम का आज्ञापालन करेंगे उनका भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ चिमटे रहने के कारण इंशा अल्लाह तआला वैभव स्थापित रहेगा। अत: हमेशा याद रखें कि आज्ञापालन में ही बरकत है और आज्ञापालन में ही सफलता है। (अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल लन्दन 10 सितम्बर 2004 ई)

ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की एक महान बरकत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह वर्णन फ़रमाई है कि ख़िलाफ़त का आज्ञापालन करने वालों के लिए अमन और मज़बूती का वादा है जैसा कि अल्लाह तआला ने इस आयत में वर्णन फ़रमाया है:

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا
اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ
مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ (आयत इस्तिख़लाफ़ सूरत नूर आयत- 56)

अनुवाद : तुम में से जो लोग ईमान लाए और नेक कर्म किए उनसे अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि उन्हें ज़रूर ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाएगा जैसा कि उसने उनसे पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया और उनके लिए उनके धर्म को, जो उसने उनके लिए पसन्द किया ज़रूर मज़बूती प्रदान करेगा और उनकी ख़ौफ़ की हालत के बाद ज़रूर उन्हें अमन की हालत में बदल देगा। वे मेरी इबादत करेंगे। मेरे साथ किसी को सम्मिलित नहीं ठहराएँगे और जो इसके बाद भी नाशुक्री करे तो यही वे लोग हैं जो अवज्ञाकारी हैं।

इस आयत की दृष्टि से सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने अपने बरकतों वाले युग में विश्वव्यापी स्तर पर साल 2005 ई में जो महान कार्य हुए हैं उनका वर्णन लन्दन में आयोजित जलसा सालाना में फ़रमाया।

आपने जमाअत अहमदिया पर अल्लाह तआला के फ़ज़्लों की जो बारिश हुई और उसकी नेअमतों और फ़ज़्लों का नुज़ूल हुआ उसका वर्णन करते हुए बताया कि इस साल ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से तीन नए देशों में जमाअत अहमदिया स्थापित हुई है। इस तरह अब तक 181 देशों में अहमदियत का पौधा लग चुका है। (2021 ई तक जमाअत अहमदिया 213 देशों में स्थापित हो चुकी है। अनुवादक)

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से पाकिस्तान के अतिरिक्त सारी दुनिया में जो नई जमाअतें स्थापित हुई हैं उनकी संख्या 985 है। नई जमाअतों की स्थापना में हिन्दुस्तान सब से ऊपर है। यहां 137 नई जमाअतें स्थापित हुई हैं।

ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से इस साल जमाअत में 319 मस्जिदों की वृद्धि हुई है। उन में से 184 नई बनाई गई मस्जिदें हैं 135 बनी बनाई मस्जिदें इमामों के साथ मिली हैं। जबकि पिछले साल 74 मस्जिदें नई बनी हुई हैं 88 बनी बनाई मिली थीं मानो कि हुज़ूर अनवर के बरकतों वाले युग में 481 मस्जिदों की वृद्धि हुई है।

1984 ई. से जबकि ज़ियाउल इस्लाम ने अपने काले आर्डिनैंस के द्वारा जमाअत अहमदिया को समाप्त करने का षडयन्त्र रचा था। उस समय से लेकर अब तक 13774 मस्जिदों की वृद्धि हुई है। इस में 11695 मस्जिदें ऐसी हैं जो इमामों और

अनुयायियों सहित अल्लाह तआला ने जमाअत अहमदिया को दी हैं।

ज़ियाउल हक़ की हुकूमत ने 8 अहमदिया मस्जिदों को बुलडोज़र के द्वारा शहीद किया। ख़ुदा तआला ने इसके बदला में 13774 मस्जिदें दीं। मानो कि एक के बदला में 1722 मस्जिदें दीं।

इसके अतिरिक्त दुनिया के विभिन्न देशों में बहुत सारी बड़ी मस्जिदें बन रही हैं और उनसे जुड़ी ख़रीदी गई। सैंकड़ों एकड़ ज़मीन का वर्णन करने के बाद हुज़ूर ने बताया कि ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से इस साल तब्लीग़ी मर्कज़ों में 189 की वृद्धि हुई है।

पिछले साल को सम्मिलित करके 85 देशों में तब्लीग़ी मर्कज़ों की कुल संख्या 1587 हो चुकी है। हिन्दुस्तान यहां भी सब से पहले है।

हुज़ूर ने बताया कि अब तक क़ुरआन के अनुवादों की संख्या 58 थी इस साल दो की वृद्धि हुई है। इस तरह ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से पवित्र क़ुरआन के 60 भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। 12 भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं। इस समय उनकी चैकिंग हो रही है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी विभिन्न किताबों में पवित्र क़ुरआन की विभिन्न आयतों की जो व्याख्या की थी वह आठ भागों में अलग प्रकाशित हुई है। इस साल चार और भाग प्रकाशित हुए हैं। इस तरह 18 भाषाओं में 58 किताबें और फोल्डरज़ तैयार करवाए गए हैं। इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी 53 भाषाओं में छप चुकी है। इस समय अन्य चार भाषाओं में इसका अनुवाद करवाया जा रहा है। इसी तरह अलवसीयत पत्रिका नौ भाषाओं में छप चुकी है इसी तरह इसका 21 भाषाओं में अनुवाद करवाया जा रहा है। तफ़सीर कबीर का अरबी भाषा में चार भागों में अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। अब पांचवां भाग प्रकाशित हो चुका है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह की किताब होम्योपैथी का अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा हनीफ़ अहमद साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों में से उद्धरण लेकर तालीम फ़हमुल क़ुरआन के नाम से एक बहुत अच्छी पुस्तक प्रकाशित की है।

हुज़ूर ने बताया कि ताहिर फाऊंडेशन के अधीन भी कुछ कार्य हुए हैं पिछले साल ख़ुत्बाते ताहिर का भाग प्रथम प्रकाशित हुआ था इस में 1982 ई. के ख़ुत्बे सम्मिलित थे। अब दूसरे और तीसरे भाग प्रकाशित हुए हैं। जो 1983-84 ई. के ख़ुत्बों पर आधारित हैं। इसी तरह हुज़ूर अक़्दस अय्यदहुल्लाहो तआला ने इस विभाग में होने वाले महान कार्यों का विस्तारपूर्वक जायज़ा लेकर बताया कि दुनिया के विभिन्न देशों में 257 नुमाइशें लगाई गईं।

सारांश यह कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने अपनी ऊपर वर्णन की गई तक़रीर में सारे संसार में बहुत सफलता से चलने वाले शैक्षिक मर्कज़, तिब्बी मर्कज़, मानवता की सेवा इत्यादि विभिन्न बातों के बारे में बहुत विस्तार से रोशनी डाली मानो कि ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से आप के इस अहद में विश्वव्यापी स्तर पर बहुत स्पष्ट रंग में ख़िलाफ़त अहमदिया की बरकतें और नेअमतें नाज़िल होते हुए नज़र आ रही हैं।

जब से हुज़ूर अय्यदहुल्लाहो तआला ख़िलाफ़त के पद पर आसीन हुए हैं इसी कार्य के लिए अपनी जमाअत को ध्यान दिला रहें हैं। हुज़ूर अक़्दस ने अपने इस मुबारक युग में पश्चिमी तथा पूर्वी अफ़्रीकन देशों जर्मनी, अमरीका, कैनेडा इत्यादि देशों में दौरों में अपनी जमाअत को इबादत की ओर विशेष तौर पर ध्यान दिलाया। इन सफल और बरकतों वाले दौरों में विभिन्न प्रोजेक्टों की नींवें रखीं। कई मस्जिदों, मिशन हाऊसों इत्यादि का उद्घाटन किया। सबसे बढ़कर अपनी जमाअत की तर्बीयत तथा इबादत की ओर विशेष ध्यान दे रहे हैं।

जलसा सालाना यू.के 2005 ई. के अवसर पर भाषण के अन्त में हुज़ूर अनवर ने इन शब्दों में दुआ फरमाई:

"अत: मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला आपको इन दोनों निज़ामों (अर्थात ख़िलाफ़त और वसीयत) से जोड़े रखे जो अभी तक निज़ाम-ए-वसीयत में सम्मिलित नहीं हुए अल्लाह तआला उनको भी सामर्थ्य प्रदान करे कि वह इस में हिस्सा लेकर दीनी दुनियावी बरकतों से माला-माल हो सकें। और अल्लाह करे कि प्रत्येक अहमदी

हमेशा निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त से निष्ठा और वफ़ा का सम्बन्ध स्थापित रखे और ख़िलाफ़त की बक़ा के लिए ख़िलाफ़त की रस्सी को मज़बूती से थामे रखे। अल्लाह तआला प्रत्येक अहमदी को अपनी ज़िम्मेदारियाँ समझने और उनको पूरा करने की सामर्थ्य दे और हमें अपनी शिक्षाओं तथा अपनी प्रसन्नता के मार्गों पर चलाते हुए हम सब का अंजाम बख़ैर करे।"

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल लन्दन 29 जुलाई 2005 ई)

ख़ुदा तआला ने सच्चे मोमिनों की एक निशानी यह वर्णन की है कि वे हमेशा कहते रहते हैं कि "समिअना व अतअना" अर्थात हमने सुन लिया और हमने आज्ञापालन किया। आज्ञापालन का पहला क़दम सुनना है फिर आज्ञापालन है यदि हम सुनने के लिए ही तैयार न हों तो फिर किस प्रकार उसका अनुसरण कर सकते हैं।

अत: प्रत्येक अहमदी की ज़िम्मेदारी है कि वह समय के ख़लीफ़ा की आवाज़ पर लब्बैक कहे जब हमारा ईमान है कि ख़लीफ़ा ख़ुदा ही बनाता है तो ख़िलाफ़त के दरबार से निकलने वाली प्रत्येक तहरीक ख़ुदा की तहरीक मान कर इस पर दिल और जान से अनुकरण करने की ज़रूरत है। अल्लाह तआला हम सबको इसका सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।

सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी पर आरोप और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला के द्वारा खण्डन

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ के खलीफ़ा बनने के बाद से ही जमाअत की शिक्षा तथा तर्बीयत की ओर विशेष ध्यान कर रहे हैं। और इस बात के लिए बेहद दर्द मंद हैं कि सारी की सारी जमाअत तक़्वा और ख़ुदा से डरने की राहों पर क़दम मारने वाली हो जाए, इसके लिए आप निरन्तर तर्बीयती मामलों ख़ुत्बे तथा ख़िताब इरशाद कर रहे हैं और आपके निरन्तर विभिन्न देशों के दौरे भी वास्तव में इसी सिलसिला की कड़ी हैं।

यद्यपि हुज़ूर अनवर के ख़ुत्बे तथा ख़िताब क़ुरआन की आयतों तथा हदीसों से सुसज्जित होते हैं जिससे हमारे प्यारे आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत तय्यबा के किसी न किसी पक्ष पर रोशनी पड़ती है। परन्तु आलोचकों की ओर से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र बरकतों वाली ज़ात पर होने वाले आरोपों के जवाबों में आपने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र सीरत पर निरन्तर ख़ुत्बे इरशाद फ़रमाए और विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया को इस बात की ताकीद फ़रमाई कि जहां कहीं भी इस तरह के आरोप हो रहे हों, उसका जवाब दिया जाए। सीरत के विषय पर बहुत अधिक जलसे और तक़रीरों के प्रोग्राम आयोजित किए जाएं, फ़रमाया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क़ की मांग यही है कि आपकी सीरत के प्रत्येक पक्ष को देखा जाए और वर्णन किया जाए। हुज़ूर ने अपने 11 फरवरी 2005 ई. के ख़ुत्बा जुम्अ: में फ़रमाया:

"आज भी आपकी पवित्र ज़ात पर घटिया आरोप लगाए जाते हैं, हंसी ठट्ठे और उपहास का निशाना बनाया जाता है, और ऐसे लोग जो आज भी यह काम कर रहे हैं उनको याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला आज भी अपने प्यारे नबी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ैरत रखता है, कुछ लोग जो अपने मीडिया के द्वारा इतिहास को या वास्तविकता को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं, हक़ को छुपाने की कोशिश करते हैं। उनको मक्का के कुफ़्फ़ार के उदाहरण सामने रखने चाहिएं जिन में से कुछ एक मैंने प्रस्तुत किए हैं, उदाहरण तो बेशुमार हैं, हमारे आक़ा तथा मौला का सच और सच्चाई का नूर न कभी पहले मांद पड़ा था या छुप सका था न आज तुम लोगों के इन हथकण्डों से यह मांद पड़ेगा या छुपेगा। यह नूर इंशा अल्लाह तआला समस्त दुनिया पर ग़ालिब आना है। और इस सच्चाई के नूर ने समस्त दुनिया को अपनी लपेट में लेकर मुहम्मद रसूलुल्लाह के क़दमों में ला कर डालना है। जैसा कि मैंने कहा था कि आज-कल भी कुछ लोगों ने आपकी पवित्र ज़ात के बारे में कुछ किताबें लिखी हैं और समय-समय पर आती रहती हैं, इस्लाम के बारे में इस्लाम की शिक्षा के बारे में या आपकी ज़ात के बारे में कुछ निबन्ध इंटरनैट या अख़बारों में भी आते हैं, किताबें भी लिखी गईं हैं। एक औरत अपने आप को मुसलमान ज़ाहिर करके इनसाईड स्टोरी (Inside Story) बताने वाली भी आजकल कैनेडा में हैं, जब अहमदी उसको चैलेंज देते हैं कि आओ और बात करो तो बात नहीं करती और दूसरों में वैसे अपने तौर पर जो मर्ज़ी गन्द फैला रही है। तो बहरहाल आज-कल फिर यह मुहिम है। प्रत्येक अहमदी को इस बात पर नज़र रखनी चाहिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम की मांग यही है कि आपकी सीरत के प्रत्येक पक्ष को देखा जाए और वर्णन किया जाए इज़हार किया जाए यह नहीं कि यदि कोई ख़िलाफ़ बात सुनी जलूस निकाला एक बार जलसा किया, एक बार ग़ुस्से का इज़हार किया और बैठ गए। बल्कि स्थायी ऐसे आरोपों को जो आपकी पवित्र ज़ात पर लगाए जाते हैं उनको दूर करने के लिए, आपकी सीरत के विभिन्न पक्ष वर्णन किए जाएं। इन आरोपों को सामने रख कर आपकी सीरत के रोशन पहलू दिखाए जा सकते हैं। कोई

भी एतराज़ ऐसा नहीं जिसका जवाब मौजूद न हो। जिन देशों में ऐसा व्यर्थ लिट्रेचर प्रकाशित हुआ है अथवा अख़बारों में है। वहां की जमाअत का कार्य है कि इसको देखें और सीधा यदि किसी बात का जवाब देने की ज़रूरत है अर्थात इस एतराज़ के जवाब में, तो फिर वह जवाब यदि लिखना है तो पहले मर्कज़ को जवाब दिखाएंगे नहीं तो जैसा कि मैंने कहा है सीरत का वर्णन तो हर समय जारी रहना चाहिए यहां भिजवाएं ताकि यहां भी इसका जायज़ा लिया जा सके और यदि उसका जवाब देने की ज़रूरत है तो दिया जाए। जमाअत के लोगों में भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के बारे में जिस तरह मैंने कहा है निबन्धों और तक़रीरों के प्रोग्राम बनाए जाएं। प्रत्येक के भी इल्म में आए। नए सम्मिलित होने वालों को भी और नए बच्चों को भी। ताकि विशेष रूप से नौजवानों में, क्योंकि जब कॉलेज की उम्र में जाते हैं तो अधिक प्रभाव पड़ते हैं तो जब ये बातें सुनें तो नौजवान भी जवाब दे सकें। फिर यह है कि प्रत्येक अहमदी अपने अंदर पवित्र परिवर्तन पैदा करे ताकि दुनिया को यह बता सकें कि यह पवित्र परिवर्तन आज आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आध्यात्मिक शक्ति के कारण हैं जो चौदह सदियों से अधिक का समय गुज़र जाने के बावजूद भी आज इसी तरह ताज़ा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपने अगले ख़ुत्बा जुम्अ: दिनांक 18 फरवरी में फ़रमाया :-

"परन्तु दुनिया में ऐसे लोग पैदा होते आए हैं और आजकल भी पैदा हो रहे हैं, जो इस्लाम दुश्मनी में स्वयं या तथाकथित मुसलमानों को ख़रीद कर, लालच देकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर घटिया और व्यर्थ आरोप लगाते हैं।

यहां आज-कल एक साहिब ने पिछले दिनों निबन्ध में लिखा था जर्नलिस्ट हैं चार्ल्स मोरो (Charles Moore) उपहास के रंग में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हज़रत आयशा रज़ि से शादी के बारे में लिखा। परन्तु वह बेचारा अपने द्वेष के कारण दिल में जो ईर्ष्या भरी हुई था उसके कारण बिल्कुल ही अंधा हो गया है। यह प्रमाणित करने की कोशिश कर रहा है कि नऊज़ बिल्लाह आँहज़रत

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को छोटी उम्र की बच्चियों से कोई दिलचस्पी थी हालाँकि जिस किताब का हवाला देकर उसने अपनी बात की है राजर्सन की किताब है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उसने स्पष्ट तौर पर लिखा है कि विदाई हज़रत आयशा की युवावस्था को पहुंचने के बाद हुई थी, फिर उस अंधे को यह भी नज़र नहीं आया कि आपकी पहली शादी किस उम्र में हुई जो जवानी की उम्र थी। फिर यह नज़र नहीं आया कि आपकी समस्त दूसरी पत्नियां बड़ी उम्र की थीं। जब इन्सान अंधा हो जाए तो इतिहास को भी तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करता है। जब द्वेष और ईर्ष्या बढ़ जाएं तो सच बात कहने की ओर ध्यान नहीं होता। बहरहाल इस बेहस को मैं इस समय नहीं ले रहा। इस समय मैं यह बताना चाहता हूँ कि जिस कार्य का अल्लाह तआला ने आपको आदेश दिया था कि मेरी इबादत करो और मेरे इबादत करने वाले पैदा करो केवल इसी कार्य से आपको दिलचस्पी थी और इसी के उच्च स्तर स्थापित करके दिखाने पर अल्लाह तआला ने गवाही दी थी। तो बहरहाल जैसा कि मैंने कहा (Moore) की इन व्यर्थ बातों का इस समय जवाब नहीं दे रहा। परन्तु वास्तविकता और घटनाएं और इतिहास को सामने रखकर यह बताना चाहता हूँ कि आप को यदि कोई दिलचस्पी थी तो अपने पैदा करने वाले ख़ुदा से थी और न केवल दिलचस्पी थी बल्कि इश्क़ था और ऐसा इश्क़ था जो किसी इश्क़ की दास्तान में नहीं मिल सकता यदि कोई इच्छा थी तो केवल यह कि मेरा शरीर, मेरी जान, मेरी रूह अल्लाह तआला के दरवाज़े पर पड़ी रहे और इसकी राह में क़ुर्बान होती रहे। जवानी के दिनों में भी आपको औरतों या व्यर्थ के कार्यों या खेल कूद से कोई दिलचस्पी नहीं थी। उस समय भी एक ख़ुदा की तलाश में, उसकी मुहब्बत में घर-बार छोड़कर बीवी बच्चे छोड़ कर मीलों दूर एक गुफा में जा कर इबादत किया करते थे। ताकि कोई भी वहां आकर परेशान करने वाला न हो। क्या दुनिया से दिलचस्पी रखने वाला या दुनिया की चीज़ों से दिलचस्पी रखने वाला, दुनिया की चीज़ों पर मुँह मारने वाला इस तरह के कर्म दिखाया करता है? और यह ऐसी चीज़ है जिससे विरोधी भी अपनी किताबों में इन्कार नहीं कर सके। चाहे नतीजे अपनी इच्छा से जो भी निकालें परन्तु

वास्तविकता से इन्कार नहीं हो सकता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने प्यारे आक़ा तथा मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र जीवनी पर 17 ख़ुत्बे इरशाद फ़रमाए। नीचे आपके प्रत्येक ख़ुत्बे की तिथि और संक्षेप में सार वर्णन किया जाता है:

11 फरवरी 2005 ई

क़ुर्आन की فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (सूरत यूनुस आयत नम्बर- 17) (अनुवाद: अत: मैं इस रिसालत से पूर्व भी तुम्हारे बीच एक लम्बी आयु व्यतीत कर चुका हूं। तो क्या तुम विवेक से काम नहीं करते?) की रोशनी में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दावा नबुव्वत से पहले की ज़िन्दगी जो प्रत्येक प्रकार के दाग़ तथा आरोपों से पवित्र और बहुत अधिक पाक तथा साफ़ और सच्चाई से भरी थी, को प्रस्तुत फ़रमाया, अत: दावा नबुव्वत से पहले की ज़िन्दगी आपकी सच्चाई पर बहुत बड़ी दलील है। आपकी सच्चाई की दलील में हुज़ूर ने दुश्मनों और विरोधियों की गवाहियाँ भी प्रस्तुत फ़रमाईं। हुज़ूर ने फ़रमाया : आज भी आपकी पवित्र हस्ती पर घटिया इल्ज़ाम लगाए जाते हैं। हंसी ठट्ठे और उपहास का निशाना बनाया जाता है इस आधार पर हुज़ूर ने विश्वव्यापी अहमदिया जमाअत के लोगों को हिदायत फ़रमाई कि जहां-जहां इस तरह के लिट्रेचर प्रकाशित हो रहे हैं उनका जवाब देने की ज़रूरत है। सीरतुन्नबी के जलसे आयोजित करने की ज़रूरत है। निबन्ध और तक़रीर के प्रोग्राम बनाए जाएं। फ़रमाया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क़ का तक़ाज़ा यही है कि आपकी सीरत के प्रत्येक पक्ष को देखा जाए और प्रकट किया जाए।"

18 फ़रवरी 2005 ई.

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की समस्त ज़िन्दगी ख़ुदाई इश्क़ और इबादतों की स्थापना में गुज़री है। हज़ारों हज़ार दुरूद और सलाम हों उस पवित्र नबी

पर जिसने स्वयं भी इबादतों के उच्च स्तर स्थापित किए और अपनी उम्मत को भी इसकी नसीहत की। पवित्र क़ुरआन और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों के हवाला से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इबादत का ईमान वर्धक वर्णन किया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर व्यर्थ आरोप लगाने वालों को उत्तर देने के लिए ख़ुद्दामुल अहमदिया और लज्ना इमा इल्लाह की विशेष टीमें तैयार करने की हिदायत फ़रमाई।

25 फ़रवरी 2005 ई.

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कर्म ख़ुदा तआला की निगाह में इतने प्रिय थे कि अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए आदेश दिया कि भविष्य में लोग शुक्रगुज़ारी के तौर पर आप पर दुरूद भेजें। प्रत्येक वह व्यक्ति जो अल्लाह का ख़ौफ़ रखता है और उसे आख़िरत पर विश्वास है और वह अल्लाह की इबादत करने वाला बनना चाहता है तो उसको अनिवार्य रूप से नबी करीम के आदर्शों का अनुकरण करना होगा।

4 मार्च 2005 ई.

पवित्र क़ुरआन की शिक्षा दुनिया के सुधार की ज़मानत रखने वाली है। दुनिया में नेकियां इसी पुस्तक की शिक्षा से प्रचलित हो सकती हैं और दुनिया की शान्ति इसी पवित्र शिक्षा पर अनुकरण करने से जुड़ी है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पवित्र क़ुरआन के प्रत्येक आदेश को अपने जीवन का हिस्सा बनाया। आपकी ज़िन्दगी मानो पवित्र क़ुरआन की व्याख्या और तस्वीर है। आपने उम्मत को पवित्र क़ुरआन पढ़ने और इस पर अनुकरण करने की खासतौर पर नसीहत फ़रमाई। ताकि पवित्र क़ुरआन की शिक्षा समस्त दुनिया में जारी हो जाए।

11 मार्च 2005 ई.

सबसे बड़े रहमान ख़ुदा के बन्दे नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे जिनकी आध्यात्मिक शक्ति ने रहमान ख़ुदा के बन्दे

पैदा किए। बहुत अधिक उच्च स्तर पर होने के बावजूद आप ने विनम्रता और विनय के हैरान करने वाले आदर्श स्थापित करे।

18 मार्च 2005 ई

ख़र्च करने के जो तरीक़े हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिखाए हैं इसका उदाहरण दुनिया में कहीं नहीं मिलता। दान तथा दया के जो स्तर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी से पहले दुनिया ने देखे और न कभी भविष्य में देखेगी। अल्लाह तआला की प्रसन्नता और लोगों के कष्टों को दूर करने और उनकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए दान तथा दया की असाधारण शान के नज़ारे हमें केवल और केवल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में ही नज़र आएँगे।

25 मार्च 2005 ई.

जब शूरा पर परमार्श दें तो केवल इसलिए न दें कि अपने इल्म तथा अक़्ल का इज़हार करना है बल्कि इसलिए दें कि इन परामर्शों पर अनुकरण करने और करवाने के लिए हम स्वयं भी प्रत्येक प्रकार की क़ुर्बानी देने के लिए तैयार होंगे। तभी समस्त दुनिया के शूरा के प्रतिनिधि, ख़िलाफ़त और निज़ामे ख़िलाफ़त और निज़ाम जमाअत की सुरक्षा में सच्चे प्रमाणित हो सकते हैं।

1 अप्रैल 2005 ई.

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हर समय प्रत्येक क्षण इस तलाश में रहते थे कि किस तरह अल्लाह तआला का शुक्रिया अदा किया जाए कोई अवसर हाथ से न जाने देते थे जिसमें ख़ुदा तआला के समक्ष शुक्र की भावनाओं के साथ दुआ न की हो।

8 अप्रैल 2005 ई.

अल्लाह तआला पर तवक्कुल (भरोसे) का हक़ उस समय अदा हो सकता है जब

उस पर पूर्ण विश्वास हो उसकी समस्त क़ुदरतों और उसके गुणों पर सम्पूर्ण ईमान हो। उसके आदेशों का सम्पूर्ण अनुकरण हो तो विश्वास का व्यावहारिक उदाहरण हमारे नबी हैं।

15 अप्रैल 2005 ई.

मरीज़ों की इयादत करना भी ख़ुदा तआला के सानिध्य को पाने का एक माध्यम है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने और दूसरों के लिए जहां रूहानी सुधार के लिए बेचैन रहते थे वहीं उनकी शारीरिक बीमारी पर भी आप कष्ट महसूस करते थे। हर समय अल्लाह की मख़लूक़ की हमदर्दी की फ़िक्र में रहते थे। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि ज़ैली तन्ज़ीमों को विशेष रूप से इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे प्रोग्राम बना कर मरीज़ों की इयादत के लिए जाया करें।

22 अप्रैल 2005 ई.

अल्लाह तआला के नबियों का एक आचरण बहादुरी भी होता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में यह गुण समस्त इन्सानों से बल्कि समस्त नबियों से भी बढ़कर था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बहुत अधिक कठिन हालात में भी न केवल साहस तथा बहादुरी को प्रकट किया बल्कि अपनी क़ौम का हौसला बुलन्द रखने के लिए और उनको धैर्य तथा दृढ़ता प्रदान करने के लिए प्रत्येक संभव नसीहत की और उच्च से उच्च उदाहरण अपने जीवन का प्रस्तुत किया।

15 जुलाई 2005 ई.

हुज़ूर अनवर ने इस ख़ुत्बा में अमानत तथा दयानत एवं उहदों की पाबंदी से बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश और आपकी पवित्र जीवन की घटनाएं वर्णन कीं। फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अमानत तथा दयानत और ओहदों की पाबंदी के जो उच्च स्तर स्थापित किए हैं, वही स्तर, जिन पर चल कर इन्सान अल्लाह तआला का सानिध्य प्राप्त कर सकता है।

22 जुलाई 2005 ई.

मेहमान-नवाज़ी नबियों के गुणों में से एक उच्च गुण है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हमारे नबी करीम जिन को अल्लाह तआला ने समस्त नबियों का सार और समस्त रसूलों में अफ़ज़ल रसूल फ़रमाया है उन में तो यह गुण ऐसा स्थापित था जिसकी उदाहरण नहीं मिलता बल्कि नबुव्वत के युग से पहले भी आपके इस आचरण ने दूसरों को प्रभावित किया था।

12 अगस्त 2005 ई.

हुज़ूर अनवर ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सादगी और कम ख़र्च करने पर ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया :-

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में सादगी और संतुष्टि कूट कूट-कर भरी हुई थी। हुज़ूर का आदर्श हमें बताता है कि अल्लाह तआला ने हमें दुनिया के जो वरदान प्रदान किए हैं उनको प्रयोग करने में कोई हर्ज नहीं परन्तु वे वरदान ज़िन्दगी का लक्ष्य नहीं बन जाने चाहिए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी सादगी और संतुष्टि का बेनज़ीर उदाहरण है।

19 अगस्त 2005 ई.

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन समस्त उच्चतम आचरण के सार हैं जो नबियों में अलग-अलग रूप से पाए जाते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला से सीख कर लोगों को ख़ुदाई कलाम और उसकी हिक्मत की बातें सिखाईं और अपने जीवन में स्वयं इन बातों पर अनुकरण करके उच्च आचरण के स्तर हमारे सामने स्थापित करे। आपने बताया कि समाज में किस तरह रहना है और तहज़ीब तथा सभ्यता को किस तरह धारण करना है और ख़ानदान की छोटी-छोटी इकाई की सतह पर रिश्तों की ज़िम्मेदारियों के बारे में बताया और फिर यह समझाया कि एक शहरी की हैसियत से हम ने किस तरह ज़िन्दगी गुज़ारनी है पड़ोसियों से किस तरह सुलूक करना है। अधीन होने की अवस्था में हमारा कैसा

सुलूक होना चाहिए। अफ़्सर होने की हालत में किस तरह ज़िन्दगी गुज़ारनी है। सार यह कि समाज के विभिन्न स्तरों में एक व्यक्ति की जो ज़िम्मेदारियाँ हैं वह आप ने हमें सिखाईं। यहां तक कि उजड्ड और गँवार लोगों को भी आचरण वाला इन्सान बना कर उन्हें ख़ुदा वाला इन्सान बना दिया। उच्च आचरण के साथ-साथ एक ख़ुदा के हुज़ूर झुकने वाला और उसका संयम धारण करने वाला बना दिया। और उच्च शिष्टाचार के ऐसे उदाहरण स्थापित करे कि सहाबा किराम रज़ि अल्लाह की ज़िन्दगियां भी उदाहरण योग्य ज़िन्दगियां बन गईं।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ की मुबारक तहरीकें

अल्लाह तआला जब अपने बन्दों में से किसी को ख़लीफ़ा चुनता है तो उसकी जहां दुआओं को क़बूल फ़रमाता है वहां उसके कामों में बरकतें रख देता है। जो व्यक्ति भी समय के ख़लीफ़ा का आज्ञापालन करता है वह सफल हो जाता है। और स्वयं ख़ुदा तआला भी युग के ज़रूरतों के अनुसार समय के ख़लीफ़ा से विभिन्न कार्य लेता है। इसी लिए समय का ख़लीफ़ा जमाअत के लिए भलाई और सफलता के लिए विभिन्न अवसरों पर विभिन्न तहरीकें करते हैं। ताकि जमाअत के ईमान में असाधारण उन्नति हो। सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह समय के ख़लीफ़ा की तहरीक के बारे में एक स्थान पर वर्णन फ़रमाते हैं कि:

वास्तव में तो समय के ख़लीफ़ा की तहरीक बहुत अधिक बरकतों वाली और ख़ुदाई तहरीक होती है। आप फ़रमाते हैं कि :

"अल्लाह तआला जब भी कोई तहरीक जमाअत अहमदिया के किसी ख़लीफ़ा के दिल में डालता है। इसके बारे में आपको पूरी तरह सन्तुष्ट होना चाहिए कि ज़रूर कोई ख़ुदाई इशारे ऐसे हैं जो भविष्य की अच्छी बातों का पता दे रहे हैं और वह तहरीक जो ज़ाहिर में मामूली सी आवाज़ से उठती हुई नज़र आती है एक महान

इमारत में बदल जाती है। जिस तहरीक में आप इसलिए हिस्सा लेंगे कि अल्लाह तआला के स्थापित किए गए मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़लीफ़ा की तहरीक है इस में महान बरकतें पड़ेंगी जो आपके विचारों से बड़ी होंगी।

(मासिक पत्रिका ख़ालिद, रब्वा जून 1986 ई पृष्ठ 21)

हुज़ूर अनवर के इरशाद की रोशनी में ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ की कुछ बरकतों वाली तहरीकें वर्णन की जाती हैं। ताकि जमाअत के लोग समइना (सुनना) तथा अतअना (आज्ञापालन करना) के क़ुरआन के आदेश के अनुसार अनुकरण करते हुए अपने प्यारे आक़ा की तहरीकों पर अनुकरण करें।

1. जमाअत अहमदिया यू.के और M.T.A में काम करने वालों के लिए दुआ की तहरीक

जमाअत यू.के को और एम.टी.ए का शुक्रिया अदा करें जो लोग यहां नहीं आ सके उन्होंने जिस विस्तार से एम. टी. ए के द्वारा आपके दिलों की सन्तुष्टि के सामान पाए इस पर दुनिया में करोड़ों अहमदी एम. टी. ए के काम करने वालों के उपकृत हैं कि उन्होंने न आने वाले मजबूरों को भी प्यासा नहीं रहने दिया। मेरी सूचना के अनुसार तो मुझे पता चला है कि कुछ काम करने वाले निरन्तर 48 घंटे तक डयूटी देते रहे और फिर थोड़ा सा आराम करते थे। ये सब अवश्य ही हमारी दुआओं के अधिकारी हैं। समस्त जमाअत को इन समस्त काम करने वालों के लिए जिन्होंने प्रबन्धकीय दृष्टि से सेवा की या एम.टी.ए में सेवा कर रहे हैं, दुआ का विशेष निवेदन करता हूँ अल्लाह तआला इन सब को बेहतरीन बदला दे और भविष्य में भी इसी वफ़ा और इख़लास के साथ इसी तरह क़ुर्बानियां देते हुए काम करते चले जाएं। आमीन।

(ख़ुत्बाते मसरूर भाग 1 पृष्ठ 37,38)

2. दुआ की तहरीक

अप्रैल 1903 ई. में फिर यह इल्हाम है:

رَبِّ اِنِّیْ مَظْلُوْمٌ فَانْتَصِرْ فَسَحِّقْهُمْ تَسْحِیْقًا

हे मेरे रब मैं पीड़ित हूँ। मेरी मदद कर और उन्हें अच्छी तरह पीस डाल।

(तज़्किरा)

यह दुआ आज-कल प्रत्येक अहमदी को करनी चाहिए। इस पर ध्यान दें।

(ख़ुत्बा जुम्अः 25 जुलाई 2003 ई.)

3. ताहिर फाऊंडेशन की स्थापना की घोषणा

विभिन्न लोगों ने ध्यान दिलाया है स्वयं भी ख़्याल आया कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहेमहुल्लाह की जारी तहरीकें हैं और इस्लाम के विजय के लिए आपके विभिन्न मन्सूबे थे। आपके ख़ुत्बे हैं, तक़रीरे हैं, मज्लिस-ए-इर्फ़ान हैं। उनके संकलन और प्रकाशन का काम है। तो ये काफ़ी व्यापक काम है जिसके लिए अलग संस्था के बनाने की ज़रूरत है। तो काफ़ी सोच के बाद फ़ैसला किया है कि एक संस्था ताहिर फाऊंडेशन के नाम से स्थापित की जाए और इसके लिए इंशा अल्लाह एक मज्लिस होगी, बोर्ड आफ़ डायरेक्टर होगा, जो कि बीस मेम्बरों पर आधारित होगा और इसकी एक सब कमेटी लंदन में भी होगी। क्योंकि दुनिया में विभिन्न स्थानों में फैले हुए, विभिन्न भाषाओं के काम हैं और जहां तक फ़ंडज़ का सम्बन्ध है मुझे उम्मीद है कि इंशा अल्लाह तआला तीनों मर्कज़ी अंजुमनें मिल कर ये फ़ंडज़ उपलब्ध करेंगी परन्तु कुछ लोगों की भी इच्छा होगी तो इस में कोई पाबंदी नहीं है जो कोई अपनी ख़ुशी से, अपनी इच्छा से इस तहरीक में हिस्सा लेना चाहें, उन मन्सूबों को व्यावहारिक रूप पहनाने के लिए, उनको आज्ञा होगी, दे सकते हैं इस में कुछ। तो दुआ करें जो कमेटी बनेगी उसको अल्लाह तआला काम करने की तौफ़ीक़ भी दे और प्रत्येक लिहाज़ से वह काम जो हुज़ूर रहेमहुलल्लाह की तहरीके हैं जो दुनिया के सामने प्रस्तुत करने की ज़रूरत है उनको सम्पूर्ण करने की तौफ़ीक़ मिले।

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 19 सितम्बर 2003 ई)

4. नुसरत जहां स्कीम के अधीन अहमदी डाक्टरों को वक़्फ़ ज़िन्दगी की तहरीक

"जलसा (जलसा बर्तानिया 2003 ई) पर मैंने डाक्टरों को ध्यान दिलाया था कि

हमारे अफ़्रीक़ा के अस्पतालों के लिए डाक्टर स्थायी या कुछ समय के लिए वक़्फ़ करें। अब तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हालात बहुत बेहतर हैं। वे दिक्कतें और वे मुश्किलें भी नहीं रहीं जो शुरू के वाक़्फ़ीन को सम्मुख आईं और अधिकतर स्थान तो बहुत बेहतर हालात हैं और समस्त सुविधाएं उपलब्ध हैं। और यदि कुछ थोड़ी बहुत मुश्किलें हों भी तो इस अहद बैअत को सामने रखें कि केवल अल्लाह के लिए अपनी ख़ुदा तआला द्वारा दी गई ताक़तों से मानव जाति को लाभ पहुंचाऊंगा। आगे आएं और युग के मसीह से किए हुए इस वादा को पूरा करें और उनकी दुआओं के वारिस बनें। इसी तरह रब्वा में फ़ज़्ले उम्र अस्पताल के लिए भी डाक्टरों की ज़रूरत है वहां भी डाक्टर साहिबों को अपने आप को पेश करना चाहिए।

फिर पाकिस्तान में भी और दूसरे देशों में भी बच्चों की शिक्षा और मरीज़ों के इलाज के लिए स्थायी जमाअत के लोगों के प्रबन्ध के अधीन आर्थिक सहायता करते हैं और पाकिस्तान और हिन्दुस्तान जैसे देशों में जहां ग़रीबी बहुत अधिक है इस उद्देश्य के लिए आर्थिक सहायता करने वाले इस सेवा के कारण मरीज़ों की दुआएं ले रहे हैं। तो इस नेक काम को भी जमाअत के लोगों को जारी रखना चाहिए और पहले से बढ़कर जारी रखना चाहिए और पहले से बढ़ कर करना चाहिए कि दुखों में वृद्धि भी तेज़ी से हो रही है।" (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 12 दिसम्बर 2003 ई)

5. मानवता की सेवा की तहरीक

"जमाअत की सतह पर यह इन्सानियत की सेवा यथा सामर्थ्य हो रही है। जमाअत के निष्ठावान लोगों को मानव सेवा के उद्देश्य से अल्लाह तआला तौफ़ीक़ देता है, वे बड़ी-बड़ी रक़में भी देते हैं जिनसे मानवता की सेवा की जाती है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अफ़्रीक़ा में भी और रब्वा और क़ादियान में भी वाक़्फ़ीन डाक्टर और टीचर सेवा कर रहे हैं। परन्तु मैं प्रत्येक अहमदी डाक्टर, प्रत्येक अहमदी टीचर और प्रत्येक अहमदी वकील और प्रत्येक वह अहमदी जो अपने पेशे के लिहाज़ से किसी भी रंग में मानवता की सेवा कर सकता है, ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों के काम आ सकता है, उनसे यह कहता हूँ कि वे ज़रूर ग़रीबों और ज़रूरतमंदों के काम आने

की कोशिश करें। तो अल्लाह तआला आप के मालों तथा नफ्सों में पहले से बढ़कर बरकत प्रदान करेगा। इंशा अल्लाह यदि आप सब इस नीयत से यह सेवा कर रहे हों कि हमने युग के इमाम के साथ एक बैअत का अहद किया है जिसको पूरा करना हम पर फ़र्ज़ है तो फिर देखें कि इंशाअल्लाह, अल्लाह तआला के फ़ज़्लों और बरकतों की किस क़दर बारिश होती है जिसको आप सँभाल भी नहीं सकेंगे।"

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 7 नवम्बर 2003 ई.)

6. इंटरनैट का ग़लत प्रयोग एक सामाजिक बुराई बन कर सामने आ रहा है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने इंटरनैट का वर्णन करते हुए फ़रमाया कि:-

"यह भी पर्दा करने के अन्तर्गत आता है। कुछ लड़के लड़की बन कर बातचीत कर रहे होते हैं। जब जमाअत का परिचय हो जाए तो लड़की ख़ुश हो जाती है कि चलो तब्लीग़ हो रही है। यदि आपकी नीयत साफ़ है तो दूसरी ओर जो लड़का-लड़की बन कर बैठा हुआ है आप को क्या पता कि इसकी क्या नीयत है। फिर कई बार तस्वीरों के तबादले शुरू हो जाते हैं कुछ स्थानों पर रिश्ते भी हुए हैं और भयानक परिणाम सामने आए हैं। इंटरनैट एक सामाजिक बुराई बन कर सामने आ रहा है यदि तब्लीग़ ही करनी है तो लड़कियां लड़कियों ही को तब्लीग़ करें, लड़कों को न करें यह काम लड़कों के लिए ही रहने दें माता पिता इस बात पर नज़र रखें कि खुले तौर पर इंटरनेट के सम्पर्क नहीं होने चाहिएं जो समझबूझ की आयु को पहुंच चुके वे स्वयं भी होश करें।" (अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 28 नवम्बर 2003 ई)

7. बुरी रस्में छोड़ने की तहरीक

फ़रमाया- "आज भी औरतों को इन बातों का ख़्याल रखना चाहिए। केवल अपने क्षेत्र की या देश की रस्मों के पीछे न चल पड़ें बल्कि जहां भी ऐसी रस्में देखें जिनसे हल्की सी भी शिर्क की शंका होती हो उनसे बचने की कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह करे समस्त अहमदी औरतें इसी भावना के साथ अपनी और अपनी नस्लों

की तर्बीयत करने वाली हों। हमारे देशों में, पाकिस्तान और हिन्दुस्तान इत्यादि में मुसलमानों में भी यह रिवाज है कि लड़कियों को पूरी जायदाद नहीं देते। पूरी क्या, देते ही नहीं। खासतौर पर देहाती लोगों में, ज़मींदारों में। इसका एक नमूना है, चौधरी नसरुल्लाह ख़ान साहिब का। चौधरी साहिब लिखते हैं कि हमारी बहन साहिबा मरहूमा को उस युग के रिवाज के अनुसार पिता जी ने उनकी शादी के अवसर पर बहुत सारा दहेज दिया और फिर आपने वसीयत भी कर दी कि आपका विरसा शरीयत मुहम्मदी के अनुसार बटेगा भी, लड़कों में भी और लड़कियों में भी। अत: उसके अनुसार उनके देहान्त के बाद उनकी बेटी को भी शरीयत के अनुसार हिस्सा दिया गया।

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 5 दिसम्बर 2003 ई.)

8. सिगरेट छोड़ने की तहरीक

फ़रमाया "आज-कल यही बुराई है हुक़्क़ा वाली, जो सिगरेट की अवस्था में प्रचलित है। तो यह जो सिगरेट पीने वाले हैं उनको कोशिश करनी चाहिए कि सिगरेट छोड़ें। क्योंकि छोटी उम्र में ख़ासतौर पर सिगरेट की बीमारी जो है वह आगे सिगरेट की कई किस्में निकल आई हुई हैं जिन में नशे वाली चीज़ें मिला कर पी जाती है। तो वह नौजवानों की ज़िन्दगी बर्बाद करने की ओर एक क़दम है जो दज्जाल का फैलाया हुआ है और बद-क़िस्मती से मुसलमान देश भी इस में सम्मिलित हैं। बहरहाल हमारे नौजवानों को चाहिए कि कोशिश करें कि सिगरेट पीना छोड़ दें।"

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 5 दिसम्बर 2003 ई.)

9. लाटरी हराम है

फ़रमाया "यही आज-कल यहां यूरोप में रिवाज है, पश्चिम में रिवाज है लाटरी का कि जो लोग लाटरी डालते हैं और उनकी रकमें निकलती हैं वह हरगिज़ उनके लिए जायज़ नहीं बल्कि हराम है। इसी तरह जिस तरह जूए की रक़म हराम है पहले तो लेनी नहीं चाहिए और यदि ग़लती से निकल भी आई है तो फिर अपने पर प्रयोग नहीं हो सकती।" (ख़ुत्बाते मसरूर भाग 1 पृष्ठ 381)

10. जादू-टोने, टोटके से बचने की तहरीक

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि: "पीर बनो, पीर परस्त न बनो।" यहां यह भी बता दूं कि कुछ रिपोर्टें ऐसी आती हैं, सूचनाएं मिलती रहती हैं, पाकिस्तान में भी और दूसरे स्थानों में भी, कहीं-कहीं रब्वा में भी कि कुछ अहमदियों ने अपने दुआ करने वाले बुज़ुर्ग बनाए हुए हैं और वे बुज़ुर्ग भी मेरे निकट तथाकथित हैं जो पैसे लेकर या वैसे तावीज़ इत्यादि देते हैं या दुआ करते हैं कि 20 दिन की दवाई ले जाओ, 20 दिन का पानी ले जाओ या तावीज़ ले जाओ। ये सब व्यर्थ काम और लग़्ू बातें हैं। मेरे निकट तो वे अहमदी नहीं हैं जो इस तरह तावीज़ इत्यादि करते हैं। ऐसे लोगों से दुआ करवाने वाला भी यह समझता है कि मैं जो मर्ज़ी करता रहूं, लोगों के हक़ मारता रहूं, मैंने अपने बुज़ुर्ग से दुआ करवा ली है इसलिए बख़्शा गया, या मेरे काम हो जाएँगे। अल्लाह तआला तो कहता है कि मोमिन कहलाना है तो मेरी इबादत करो, और तुम कहते हो कि पीर साहिब की दुआएं हमारे लिए काफ़ी हैं। ये सब शैतानी विचार हैं इन से बचें। औरतों में खासतौर पर यह बीमारी अधिक होती है, जहां-जहां भी हैं हमारे एशियन (Asian) देशों में इस तरह का अधिक होता है या जहां-जहां भी Asians इकट्ठे हुए होते हैं वहां भी कई बार हो जाता है। इसलिए ज़ैली तंज़ीमें इस बात की समीक्षा करें और ऐसी जो बिदअतें फैलाने वाले हैं इसकी रोकथाम करने की कोशिश करें। यदि कुछ एक भी ऐसी सोच वाले लोग हैं तो फिर अपने माहौल पर प्रभाव डालते रहेंगे, न केवल ज़ैली तंज़ीमें बल्कि जमाअत का निज़ाम भी जायज़ा ले और जैसा कि मैंने कहा कि कुछ एक भी यदि लोग होंगे तो अपने प्रभाव डालते रहेंगे और शैतान तो हमले की ताक में रहता है। अल्लाह तआला की बात मानने वाले बनने की बजाय इस तरह कुछ शिर्क में पड़ने वाले हो जाएँगे।

अल्लाह तआला सब को इससे सुरक्षित रखे। परन्तु मैं फिर कहता हूँ कि यह बीमारी चाहे कुछ एक में ही हो, जमाअत के अंदर बर्दाश्त नहीं की जा सकती। अल्लाह तआला तो यह दुआ सिखाता है कि अपने-अपने क्षेत्र में प्रत्येक यह दुआ करे कि मुझे मुत्तक़ियों का इमाम बना। समय का ख़लीफ़ा भी यह दुआ करता है कि मुझे मुत्तक़ियों का इमाम

बना और यह पीर की पूजा करने वाले लोग कहते हैं कि हम जो मर्ज़ी काम करें हमारे पीर साहिब की दुआओं से हम बख़्शे जाएँगे। इन्ना लिल्लाह। यह तो नऊज़ बिल्लाह ईसाइयों के कफ़्फ़ारा वाला मामला ही धीरे-धीरे बन जाएगा। वही दृष्टिकोण पैदा होता जाएगा। अत: इस ओर चाहे यह छोटे माहौल में ही हो, बहुत ध्यान की ज़रूरत है। अभी से इसको दबाना होगा और प्रत्येक अहमदी यह वादा करे कि इस रमज़ान में अपने अंदर इंशा अल्लाह तआला इन्क़िलाबी तब्दीलियां पैदा करनी हैं। प्रत्येक अहमदी यह कोशिश करे और प्रत्येक अहमदी स्वयं उन दुआओं और अल्लाह तआला के सानिध्य के मज़े चखे बजाय इस के की दूसरों के पीछे जाए। (ख़ुत्बाते मसरूर भाग 2 पृष्ठ 764)

11. निज़ाम जमाअत की पाबंदी की तहरीक

"पंद्रह वर्ष की उम्र के बाद जैसा कि मैंने कहा कि लज्ना या ख़ुद्दाम में जाकर ये लोग अपने ओहदेदार अपने में से चुनते हैं और फिर मर्कज़ी हिदायतों की रोशनी में विभिन्न मामले और तर्बीयती मामले स्वयं कर रहे होते हैं और उन पर अनुकरण भी करते हैं तो बचपन से ही ऐसी तर्बीयत प्राप्त करने के कारण, ऐसे प्रोग्रामों में सम्मिलित होने के कारण उनको ट्रेनिंग हो जाती है और फिर यही बच्चे जब बड़े होते हैं और जमाअत के निज़ाम में पूरी तरह समोए जाते हैं तो जमाअत के कामों में भी अधिक लाभदायक और फायदा वाला वजूद प्रमाणित होते हैं और इस निज़ाम का एक हिस्सा बनते हैं। तो बहरहाल इन्हीं ज़ैली निज़ामों का हिस्सा बनते हुए प्रत्येक बच्चा, जवान, औरत, मर्द, जब जमाअत के निज़ाम का हिस्सा बन जाते हैं तो मानो जमाअत का निज़ाम पहले ही, मुक़द्दम है... चूँकि आरम्भ से ही निज़ाम का तसव्वुर प्यार मुहब्बत और भाईचारा और मिल-जुल कर काम करने की रूह के साथ वह बच्चा परवान चढ़ रहा होता है और फिर समय के ख़लीफ़ा के साथ प्रत्येक अवसर पर ज़ाती प्यार तथा मुहब्बत का सम्बन्ध इस ट्रेनिंग के कारण हो रहा होता है और हो जाता है इसलिए जमाअत का प्रत्येक व्यक्ति जब जमाअत के कामों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा ले रहा हो और अपने ओहदेदारों का आज्ञापालन ख़ुशी के साथ करता है तो इसलिए करता है कि बचपन से निज़ाम के बारे में पड़ने वाली आवाज़ और समय

के ख़लीफ़ा से ज़ाती सम्बन्ध और प्यार के कारण विवश है और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से निज़ाम जमाअत चूँकि मज़बूत नींवों पर स्थापित हो चुका है और समय के ख़लीफ़ा की सीधा उस पर नज़र होती है इसलिए नए सम्मिलित होने वाले, नौ मुबाईन भी इन अहमदियों के इलावा भी जो जनमजात अहमदी हों, बड़ी शीघ्रता से प्रणाली में समोए जाते हैं। (ख़ुत्बात मसरूर भाग 1 पृष्ठ 515)

12. दुआ की तहरीक

यह दुआ विशेष रूप से अन्य दुआओं के साथ ज़रूर किया करें और जैसा कि मैंने कहा था प्रत्येक नई ख़िलाफ़त के बाद इसका महत्व बढ़ जाता है और वह दुआ यह है। हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा को ख़्वाब के द्वारा अल्लाह ने सिखाई, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़्वाब में आए थे और कहा था कि यह दुआ जमाअत पढ़े:

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ

(आले इम्रान:9)

हे हमारे रब! हमारे दिलों को टेढ़ा न होने दे बाद इसके कि तू हमें हिदायत दे चुका हो और हमें अपनी ओर से रहमत प्रदान कर। अवश्य तू ही है जो बहुत प्रदान करने वाला है। यह दुआ बहुत किया करें अल्लाह तआला हमें प्रत्येक बुराई से सुरक्षित रखे। आमीन (ख़ुत्बा जुम्अ: 5 दिसम्बर 2003 ई)

13. सच्चाई के उच्च स्तर स्थापित करने की नसीहत

अल्लाह तआला हम में से प्रत्येक को सच के उच्चतर स्तर स्थापित करने और झूठ से घृणा कर के नफ़रत करने वाला बनाए। प्रत्येक अहमदी जिधर भी जाए इस पर कभी इस इशारे के साथ उंगली न उठे के यह झूठा है बल्कि प्रत्येक उंगली प्रत्येक अहमदी पर इन शब्दों पर उठे कि यदि सच्चाई का कोई साक्षात रूप देखना है तो यह अहमदी जा रहा है। यदि किसी क़ौम के अंदर कोई सच्चाई देखनी है, इस दुनिया में मौजूदा हालात में किसी ने सच्चाई देखनी है तो इन अहमदियों में देखो। तो

प्रत्येक अहमदी चाहे वह अमरीका में रहने वाला हो या यूरोप में हो, प्रत्येक देखने वाले अहमदी के बारे में यही कहे कि सच्चाई उनका स्पष्ट पक्ष है और पहचान है। अल्लाह तआला हम सब को इस गुण पर स्थापित रहने की और इस पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। (ख़ुत्बाते मसरूर भाग 1 पृष्ठ 564)

14. शादी विवाह के अवसर पर सादगी और अल्लाह की रज़ा को सम्मुख रखने की नसीहत

शादियों पर लड़कों को खाना खिलाने के लिए बुलाया जाता है और कहा जाता है कि यह छोटी उम्र के हैं परन्तु यह लड़के युवावस्था को पहुंच चुके होते हैं और उनसे पर्दे का आदेश है यदि वे छोटी उम्र के भी हैं तो उनके माहौल के कारण उनके दिमाग़ गंदे हो चुके होते हैं, माताओं को इस ओर ध्यान देना चाहिए। अहमदी परिवेश में अहमदी की टीम बनाई जाए इस तरह मानव सेवा का काम हो जाएगा और ख़र्चों में भी कमी आ जाएगी। लजना के फंक्शनज़ में लजना इमाइल्लाह की लड़कियां काम करें। चेहरा छिपाने का बहरहाल आदेश है। यदि पर्दे की स्वयं व्याख्या करनी शुरू कर दें और प्रत्येक अपनी पसन्द के पर्दे की व्याख्या करने लग जाए तो फिर पर्दे की पवित्रता कभी स्थापित नहीं रह सकती। माँ बाप दोनों को बच्चियों के पर्दे की ओर ध्यान देना चाहिए और यह दोनों की ज़िम्मेदारी है। ग़लत किस्म की ग़ैर अहमदी नौकरानियों को रखने की सावधानी करनी चाहिए और उन को बिना तहक़ीक़ के नहीं रखना चाहिए। शरीयत ने डांस करने से मना किया है और शरीफ़ों का नाच से कोई सम्बन्ध नहीं। शादियों पर लड़कियां जो शरीफ़ाना नग़मे गाती हैं इस में कोई हर्ज नहीं फिर उस अवसर पर दुआ की नज़्में भी पढ़ी जाती हैं और नए शादीशुदा जोड़े को दुआओं से विदा किया जाता है। अल्लाह तआला का हमें यही आदेश है कि ख़ुशियां मनाओ तो सादगी से मनाओ और अल्लाह की रज़ा को हमेशा सम्मुख रखो। हमारी सफलता का भरोसा ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने और उसकी ओर झुकने में ही है।"

15 जमाअत की इमारातों के माहौल को साफ़ रखने का बाक़ायदा प्रबन्ध हो

इसके लिए ख़ुद्दामुल अहमदिया और लजना इमा इल्लाह वक़ारे अमल करें।

“यदि जलसे नहीं होते तो यह अर्थ नहीं कि रब्वा साफ़ न हो बल्कि जिस तरह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने फ़रमाया था कि ग़रीब दुल्हन की तरह सजा के रखो। यह सजावट अब स्थायी रहनी चाहिए। शूरा के दिनों में रब्वा की कुछ सड़कों को सजाया गया था। तज़ईन रब्वा वालों ने इसकी तस्वीरें भेजी हैं, बहुत सुन्दर सजाया गया परन्तु रब्वा का अब प्रत्येक चौक इस तरह सजना चाहिए ताकि अनुभव हो कि वहां रब्वा में सफाई और सुन्दरता की ओर ध्यान दिया गया है और प्रत्येक घर के सामने सफाई का एक उच्च स्तर नज़र आना चाहिए और यह काम केवल तज़ईन कमेटी नहीं कर सकती बल्कि प्रत्येक शहरी को इस ओर ध्यान देना होगा।

इसी तरह क़ादियान में भी अहमदी घरों के अन्दर और बाहर सफाई का विशेष ख़्याल रखें। एक स्पष्ट अन्तर नज़र आना चाहिए। गुज़रने वाले को पता चले कि अब वह अहमदी मुहल्ले या अहमदी घर के सामने से गुज़र रहा है।

सफाई के अन्तर्गत एक बहुत अधिक ज़रूरी बात जो जमाअत के तौर पर ज़रूरी है वह है जमाअत की इमारतों के माहौल को साफ़ रखना। इसका पहले मैं वर्णन कर चुका हूँ। इसका नियमित प्रबन्ध होना चाहिए और ख़ुद्दामुल अहमदिया को वक़ारे अमल भी करना चाहिए और यदि इमारत के अंदर का हिस्सा है तो लज्ना को भी इस में हिस्सा लेना चाहिए और इस में सबसे प्रमुख इमारतें मस्जिदें हैं मस्जिदों के माहौल को भी फूलों, क्यारियों और हरियाली से सुन्दर रखना चाहिए, सुन्दर बनाना चाहिए और इसके साथ ही मस्जिद के अंदर की सफाई का भी विशेष प्रबन्ध होना चाहिए।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 23 अप्रैल 2004 ई

16. शादी ब्याह में फुज़ूल ख़र्ची की मनाही

आज-कल के शादी ब्याहों पर फुज़ूल ख़र्ची इतनी होती है कि जिसकी सीमा नहीं है, पाकिस्तान हिन्दुस्तान इत्यादि में भी, और यूरोप और पश्चिम के दूसरे देशों में भी।

अब तो कुछ लोगों ने कहना शुरू कर दिया है कि इस ओर लोगों को ध्यान दिलाना चाहिए। एक तो दहेज की दौड़ लगी हुई है, ज़ेवर बनाने की दौड़ लगी हुई है, फिर दावतों में ग़ैर ज़रूरी ख़र्चे और नाम तथा दिखावे की दौड़ लगी हुई है और जो बेचारा न कर सके, यदि स्वयं अपने संसाधनों से कर सकते हैं तो ठीक है परन्तु जो न कर सके इस पर फिर बातें बनाते हैं कि बुलाया था, वहां यह था वह था और फिर कई कई दिन विभिन्न नामों से रस्में जारी हो चुकी हैं और दावतें की जाती हैं। दावत तो केवल एक दावत वलीमा है, जो इस्लाम की यह सही शिक्षा में हमें नज़र आती है। इसके इलावा तो जिस की तौफ़ीक़ नहीं है दिखावे के लिए तो दावतें करनी ही नहीं चाहिएं और कभी अपने ऊपर बोझ नहीं डालना चाहिए हाँ जब मेहमान आते हैं हल्की फुल्की मेहमान नवाज़ी फ़र्ज़ है वे कर दी जाए और फिर जिसके पास संसाधन हैं वे यदि दावत कर लेता है तो अपने ही संसाधनों से ख़र्च करता है। इसकी देखा देखी अपने पर बोझ डाल कर जिसके कम संसाधन वाले हैं जिसकी तौफ़ीक़ नहीं है इसको क़र्ज़ लेकर या फिर सहायता की दरख़वास्त देकर ऐसा नहीं करना चाहिए और कम संसाधन वालों को यथा सम्भव कोशिश यही करनी चाहिए कि जितना कम से कम हो सके ख़र्च करें क्योंकि उन को तो इस बात पर ख़ुश होना चाहिए वे अल्लाह के नबी की सुन्नत का अनुकरण कर रहे हैं, बजाए इसके कि हीन भावना में पीड़ित हों।

17. मुझे जिस बात से दिलचस्पी है वह यह है कि अफ़्रीक़ा के प्यासे लोगों को पीने का पानी उपलब्ध हो। अहमदी इंजीनियर्ज़ इस बारे में जायज़ा लेकर Feasibility रिपोर्ट तैयार करें

हुज़ूर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि:

"अब मैं संक्षिप्त रूप से आपके सामने उन सेवाओं का वर्णन करता हूँ जो जमाअत अफ़्रीक़ा के ग़रीब लोगों की करती है और जिसके लिए आपके कौशल तथा सेवाओं की ज़रूरत है। अफ़्रीक़ी देशों के अभी के दौरे में मैंने अनुभव किया है कि साफ़ पानी का उपलब्ध न होना एक गंभीर समस्या है। वहां के दूर दराज़ क्षेत्रों

में यद्यपि विश्वव्यापी संस्थाएं और NGOs इत्यादि ने हैंडपंप लगाने का कार्य शुरू किया हुआ है परन्तु फिर भी वह उन सब लोगों की ज़रूरतों के लिए बिल्कुल पर्याप्त नहीं है।

हमारी जमाअत भी Humanity First के द्वारा मानवता की भलाई के इस काम में व्यस्त है परन्तु Technical Knowledge की कमी और बोर करने के लिए ड्रिलिंग मशीन (Drilling Machines) न होने के कारण हम अपनी इस इच्छा के बावजूद कि हम इन देशों के ग़रीब लोगों की सेवा करें अपने लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सके। जब हम बोर होल ड्रिल करवाने के उद्देश्य से उन माहिर कंपनियों से सम्पर्क करते हैं तो वह इतनी अधिक रक़म की मांग करते हैं कि आर्डर देने का फ़ैसला करने के लिए कई बार सोचना पड़ता है। अर्थात एक हैंडपंप लगवाने के लिए 4000/-पाऊंड से लेकर 5000/-पाऊंड तक की रक़म की ज़रूरत होती है। जबकि पाकिस्तान में इसी किस्म का एक हैंडपंप लगाने के लिए चालीस से पचास पाऊंड की ज़रूरत होगी। इतनी अधिक क़ीमत का कारण माहेरीन के अनुसार यह है कि ज़मीन में कुछ स्थान पर कुछ गहराई पर जा कर ग्रेफ़ाईट की चट्टानें हैं और उन चट्टानों के कारण उन स्थानों पर बोर होल करने के लिए डाइमंड (Diamond) की Bit प्रयोग करनी पड़ती है जो कि बहुत महंगी होती है और कई बार एक डाइमंड ड्रिल एक बोर होल के लिए काफ़ी भी नहीं होती। हुज़ूर अय्यदहुल्लाहो तआला ने फ़रमाया कि मुझे उनका तो बहुत अधिक ज्ञान नहीं है जो इस काम में होती हैं यह इंजीनयर्ज़ और भू-विज्ञानियों का काम है परन्तु इस सिलसिला में जिस बात में मुझे दिलचस्पी है वह यह है कि अफ़्रीक़ा के प्यासे लोगों को पीने का पानी उपलब्ध होना चाहिए एक अहमदी को इस पहलू से बहुत फ़िक्रमंद होना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए मैं आर्कीटेक्ट और इंजीनीयर्ज़ एसोसीएशन के यूरोपियन चैप्टर को विशेष तौर पर ध्यान दिलाता हूँ कि वे एक विस्तारपूर्वक सर्वे करके एक Feasibility Report तैयार करें कि हम किस तरह से कम क़ीमत पर ड्रिलिंग करके अफ़्रीक़ा के इन देशों में अधिक हैंडपंप लगा सकते हैं।

दूसरी बात यह है कि जमाअत इन देशों में विभिन्न उद्देश्यों के लिए इमारतें बना रही है। जैसे मस्जिदें, मिशन हाऊसज़, स्कूल्ज़, हस्पताल इत्यादि। इसके लिए भी सिवल इंजीनीयर्ज़ और आर्कीटेक्ट को इन देशों में सेवा के उद्देश्य से जाना चाहिए मुझे मालूम हुआ है कि आप में से अधिकतर सफ़र के समस्त ख़र्चे आसानी से स्वयं बर्दाशत कर सकते हैं और कुछ देशों में तो हमारे पास कोई इंजीनियर या आर्कीटेक्ट भी नहीं हैं जो हमें यह परामर्श दे सकें कि किस किस्म की इमारतें हमें बनानी चाहिएं जिससे हमारा ख़र्चा भी कम हो और इमारत भी बेहतर हो। मुझे आशा है कि आप में से कुछ इंजीनीयर्ज़ और आर्कीटेक्ट अपने आप को पेश करते हुए वक़्फ़ आरिज़ी के अधीन इन देशों में जाएँगे और हमें यह परामर्श देंगे कि हम किस तरह कम ख़र्च पर यह इमारतें बना सकते हैं जो कि कम ख़र्च के साथ-साथ सुन्दर भी नज़र आएं।

इसी तरह जैसा कि रिपोर्ट में वर्णन किया गया है कि यूरोप में भी निर्माण और डिज़ाइन के लिए आपके कौशल की ज़रूरत है। अकरम अहमदी साहिब और एसोसीएशन के कुछ दूसरे मैंबर इस सिलसिला में बहुत मददगार प्रमाणित हुए हैं और मुझे आशा है कि इंशा अल्लाह भविष्य में भी इसी तरह मददगार होंगे परन्तु अब एसोसीएशन के मेम्बरों को अफ़्रीक़ी देशों के बारे में भी सोचना चाहिए।

एक और बड़ी परेशानी अफ़्रीक़ी देशों में बिजली या आकाशीय ताक़त का उपलब्ध न आना है। इस सिलसिला में मेरे ख़्याल में हमें सूरज से प्राप्त होने वाली शक्ति के बारे में विचार करना चाहिए क्योंकि कुछ क्षेत्रों में डीज़ल या पैट्रोल से चलने वाले जनरेटर (Generator) का प्रयोग भी आसान नहीं है कुछ गांव सड़क से 70, 80 मील दूर होते हैं या उन स्थानों से जहां से पैट्रोल या डीज़ल मिलता है बहुत दूर होते हैं और दूसरे यह कि इन जनरेटरों के ब्रेक डाउन की सूरत में कोई मकेनिक भी नहीं मिल सकता जो ठीक कर सके।

मेरे ख़्याल में हमें इसके बारे में ख़ूब विचार करके बुनियाद किस्म के Solar System बनाने की कोशिश करनी चाहिए। इस समय तक जो मालूमात मुझे मिली हैं वे तो बहुत हौसला गिराने करने वाली हैं क्योंकि Solar Cells बहुत

महंगे हैं बल्कि पूरा सिस्टम ही बहुत अधिक क़ीमत का है। इसलिए मैं आप में से उन को जो इस फ़ील्ड के हैं अर्थात Solar Energy System की फ़ील्ड में, उनको कहता हूँ कि ऐसे तरीक़े और डिज़ाइन तलाश करें जिन से क़ीमत में कमी की जा सके।

यह आपके लिए अर्थात अहमदी इंजीनीयर्ज़ के लिए बहुत बड़ा चैलेंज है क्योंकि जहां तक मुझे ज्ञात है फ़िलहाल अमरीका ने सोलर सेल की Manufacturing को सम्पूर्ण तौर पर अपने क़ब्ज़ा में लिया हुआ है। यदि यह बात ठीक है तो फिर हमें और भी अधिक संजीदा होना चाहिए क्योंकि वह समय बहुत तेज़ी से निकट आ रहा है जब आप देखेंगे कि प्रत्येक वह चीज़ जो अमरीका से आएगी वह बहुत कम प्राप्त होगी।

(इंटरनेशनल एसोसीएशन आफ़ अहमदी आर्कीटेक्टस ऐंड इंजनीयरज़ के यूरोपीयन चैप्टर के अधीन आयोजित पहले सिंपोज़ियम से सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला का ख़िताब उद्धृत अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 4 जून 2004 ई)

18. प्रत्येक अहमदी दावत-ए-इलल्लाह के लिए साल में कम से कम दो सप्ताह वक़्फ़ करे

(क) दुनिया में प्रत्येक अहमदी अपने लिए फ़र्ज़ कर ले कि उसने साल में कम से कम एक या दो बार एक या दो सप्ताह तक इस काम के लिए वक़्फ़ करना है। यह मैं एक या दो बार कम से कम इसलिए कह रहा हूँ कि जब एक सम्पर्क होता है तो पुन: उसका सम्पर्क होना चाहिए और फिर नए मैदान भी मिल जाते हैं। इसलिए इस बारे में पूरी संजीदगी के साथ समस्त सामर्थ्य को प्रयोग करते हुए अपने आपको प्रत्येक को पेश करना चाहिए। चाहे वे हॉलैंड का अहमदी हो या जर्मनी का हो। या बेल्जियम का हो या फ्रांस का हो या यूरोप के किसी भी देश का हो या दुनिया के किसी भी देश का हो चाहे घाना का हो अफ्रीक़ा में या बोरकीना फासो का हो, कैनेडा का हो या अमरीका का हो या एशियाई किसी देश का हो, प्रत्येक को अब इस बारे में संजीदा हो जाना चाहिए यदि दुनिया को तबाही से बचाना है प्रत्येक को ज़ौक़ तथा

शौक के साथ इस पैग़ाम को पहुंचाएं, अपने देशवासियों को अपने इस पैग़ाम को पहुंचाएं और जैसा कि मैंने कहा दुनिया को तबाही से बचाएं क्योंकि अब अल्लाह तआला की ओर झुके बिना कोई क़ौम भी सुरक्षित नहीं। इसलिए अब उनको बचाने के लिए दाईयान इलल्लाह की विशेष संख्या या विशेष लक्ष्य प्राप्त करने का समय नहीं है या उसी पर गुज़ारा नहीं हो सकता। बल्कि अब तो जमाअतों को ऐसा प्लान तैयार करना चाहिए, जैसा कि मैंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक अहमदी इस पैग़ाम को पहुंचाने में व्यस्त हो जाए। (ख़ुत्बा जुम्अः जून 2004 ई.)

(ख) इस में कोई शक नहीं कि आपको ख़िलाफ़त से संबध और निष्कपटता है परन्तु दावत इलल्लाह की ओर इस तरह ध्यान नहीं दिया जा रहा जिस तरह होना चाहिए इसलिए जमाअत का निज़ाम भी और ज़ैली तंज़ीमें भी दावत इलल्लाह के प्रोग्राम बनाएँ। (ख़ुत्बा जुम्अः 9 दिसम्बर 2005 ई.)

19. ज़कात के महत्व और इसकी अदायगी की ओर ध्यान दें

एक प्रमुख बात जिसकी ओर मैं ध्यान दिलाना चाहता हूँ वह ज़कात है ज़कात का भी एक निसाब है और निर्धारित शरह है। प्राय इस ओर ध्यान कम होता है। ज़मींदारों के लिए भी जो किसी किस्म का टैक्स नहीं दे रहे होते उन पर ज़कात वाजिब है इसी तरह जिन्होंने जानवरों इत्यादि भेड़, बकरियां, गाय इत्यादि पाली होती हैं उन पर भी एक निर्धारित संख्या से अधिक होने पर या एक निर्धारित संख्या होने पर ज़कात है फिर बैंक में या कहीं भी जो एक निर्धारित रक़म साल भर पड़ी रहे उस पर भी ज़कात होती है फिर औरतों के ज़ेवरों पर ज़कात है अब प्रत्येक औरत के पास कुछ न कुछ ज़ेवर ज़रूर होता है और कुछ औरतें बल्कि प्राय औरतें जो घरेलू औरतें हैं जिनकी कोई कमाई नहीं होती वे लाज़िमी चन्दे देतीं, दूसरी तहरीकों में हिस्सा ले लेती हैं परन्तु यदि उनके पास ज़ेवर है, इसकी भी शरह के लिहाज़ से विभिन्न फुक़हा ने बेहस की हुई है। 52 तोले चांदी तक का ज़ेवर है या उसकी क़ीमत के बराबर यदि सोने का ज़ेवर है तो इस पर ज़कात फ़र्ज़ है, और अढ़ाई प्रतिशत उसके हिसाब से ज़कात देनी चाहिए उसकी क़ीमत के लिहाज़ से। इसलिए इस ओर भी औरतों को खासतौर पर

ध्यान देना चाहिए और ज़कात अदा किया करें कुछ स्थान पर यह भी है कि किसी ग़रीब को पहनने के लिए ज़ेवर दे दिया जाए तो इस पर ज़कात नहीं होती परन्तु आज कल इतनी हिम्मत कम लोग करते हैं किसी को दें कि पता नहीं उसका क्या हश्र हो इसलिए चाहिए कि जो भी ज़ेवर है, चाहे स्वयं हमेशा पहनती हैं या अस्थायी तौर पर किसी ग़रीब को पहनने के लिए देती हैं सावधानी की मांग यही है कि इस पर ज़कात अदा कर दिया करें। (ख़ुत्बा जुम्अ: 28. मई 2004 ई)

20. ख़िलाफ़त के साथ सम्पर्क

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जमाअत के नाम अपने पहले पैग़ाम में फ़रमाया :-

"यदि क़ुदरत-ए-सानिया न हो तो इस्लाम कभी उन्नति नहीं कर सकता। अत: इस क़ुदरत के साथ सम्पूर्ण आज्ञापालन और मुहब्बत एवं वफ़ा और आस्था का सम्बन्ध रखें और ख़िलाफ़त के आज्ञापालन की भावना को स्थायी बनाएँ और इसके साथ मुहब्बत की भावना को इतना बढ़ाएं कि इस मुहब्बत के मुक़ाबला में दूसरे रिश्ते तुच्छ नज़र आएं। इमाम से जुड़ाव में ही सब बरकतें हैं और वही आपके लिए प्रत्येक प्रकार के फ़ित्नों और परीक्षाओं के मुक़ाबला के लिए एक ढाल है।"

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 23 मई 2003 ई)

फिर हुज़ूर ने फ़रमाया :-

"ख़लीफ़ाओं की ओर से विभिन्न समयों में विभिन्न तहरीकें भी होती रहती हैं। रूहानी उन्नति के लिए भी जैसा कि मस्जिदों को आबाद करने के बारे में है, नमाज़ों के क़ियाम के बारे में है, औलाद की तर्बीयत के बारे में है, अपने अन्दर आचरण बुलन्द करने के बारे में, बुलन्द हौसला पैदा करने के बारे में, दावत इलल्लाह के बारे में विभिन्न माली तहरीकें हैं। तो यही बातें हैं जिनका आज्ञापालन करना ज़रूरी है। दूसरे शब्दों में आज्ञापालन दर मअरूफ के अन्तर्गत यही बातें आती हैं तो नबी ने या किसी ख़लीफ़ा ने तुम्हारे से अल्लाह के आदेशों के ख़िलाफ़ और अक़्ल के ख़िलाफ़ तो काम नहीं करवाने। यह तो नहीं कहना कि तुम आग में कूद जाओ और समुद्र में

छलांग लगा दो ... तो स्पष्ट हो कि नबी या समय के ख़लीफ़ा कभी भी मज़ाक़ में भी ये बात नहीं कर सकता। (ख़ुत्बाते मसरूर भाग 1 पृष्ठ 343)

21. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज्ञान (अर्थात आपकी पुस्तकों) से लाभ उठाएं

"इस ज़माने में जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि दुआओं के साथ-साथ हज़रत अक़दस मसीह मौऊद की तफ़ासीर (व्याख्या) और इलमे कलाम (पुस्तकों) से लाभ उठाना चाहिए। यदि क़ुरआन को समझना है या हदीसों को समझना है तो हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों की ओर ध्यान देना चाहिए। यह तो बड़ी नेअमत है उन लोगों के लिए जिन को उर्दू पढ़नी आती है कि समस्त किताबें उर्दू में हैं अधिकतर उर्दू में हैं, कुछ एक अरबी में भी हैं फिर जो पढ़े लिखे नहीं उनके लिए मस्जिदों में दर्सों का प्रबन्ध मौजूद है उनमें बैठना चाहिए और दर्स सुनना चाहिए। फिर एम.टी ए के द्वारा उससे लाभ उठाना चाहिए और एम. टी. ए वालों को भी विभिन्न देशों में अधिक से अधिक अपने प्रोग्रामों में ये प्रोग्राम भी सम्मिलित करने चाहिएं जिनमें हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्धरणों के अनुवाद भी उनकी भाषाओं में प्रस्तुत हों। जहां-जहां तो हो चुके हैं और तसल्ली वाले अनुवाद हैं वे तो बहरहाल पेश हो सकते हैं और इसी तरह उर्दू जानने वाला वर्ग जो है, देश जो हैं, वहां से उर्दू के प्रोग्राम बन कर आने चाहिएं जिसमें अधिक से अधिक हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस आध्यात्मिक ज्ञान की पुस्तकों के बिन्दु दुनिया को नज़र आएं और हमारी भी और दूसरों की भी हिदायत का कारण बनें। " (ख़ुत्बा जुम्अ: 11 जून 2004 ई.)

21. इज्तिमाओं और जलसों से भरपूर लाभ की नसीहत

"इसके लिए पहले भी मैं कह चुका हूँ इज्तिमाओं और जलसों के समय, जब इज्तिमाओं या जलसों पर आते हैं तो वहां उनसे पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहिए और केवल यही उद्देश्य होना चाहिए कि हम ने यहां से अपनी ज्ञान रूपी और आध्यात्मिक प्यास बुझानी है और जलसों का जो उद्देश्य है इसको प्राप्त करने की

कोशिश करनी है यदि जलसों पर आ कर फिर दुनयावी मज्लिसें लगा कर बैठना है और उनसे पूरा लाभ नहीं उठाना तो फिर इन जलसों पर आने का लाभ क्या है? यह मैं पहले भी कह चुका हूँ कि आज-कल के युग में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों को भी पढ़ने की ओर ध्यान देना चाहिए और उनसे भी लाभ उठाना चाहिए यह भी पवित्र क़ुरआन की एक व्याख्या तथा तफ़सीर है जो हमें आप की किताबों से मिलती है।"

23. वाक़फ़ीन-ए-नौ भाषाएं सीखें

"इस के अन्तर्गत मैं वाक़फ़ीन-ए-नौ से भी कुछ कहना चाहता हूँ कि वे वाक़फ़ीन-ए-नौ जो विवेक की आयु को पहुंच चुके हैं और जिनका भाषाएं सीखने की ओर रुझान भी है और योग्यता भी है खासतौर पर लड़कियां वे अंग्रेज़ी, अरबी, उर्दू और देश की भाषा जो सीख रही हैं जब सीखें तो इस में इतनी निपुणता प्राप्त कर लें, (मैंने देखा है कि अधिकतर लड़कियों में भाषाऐं सीखने की योगय्ता होती है) कि जमाअत की किताबों और लिट्रेचर इत्यादि का अनुवाद करने के योग्यता हो सकें तभी हम हर जगह प्रवेश कर सकते हैं।" (ख़ुत्बा जुम्अः 18 जून 2004 ई.)

24. अपनी और अपनी नस्लों की ज़िन्दगियों को पवित्र करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए वसीयत के आकाशीय निज़ाम में सम्मिलित हों

"निज़ाम वसीयत को स्थापित हुए 2005 ई में इंशा अल्लाह एक सौ साल हो जाएँगे। जैसा कि मैंने पहले बताया कि 1905 ई. में आप ने इसे जारी फ़रमाया था परन्तु जैसा कि बार-बार कई बार हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस वसीयत के निज़ाम में सम्मिलित होने वालों को ख़ुशख़बरियाँ दे चुके हैं। आप ने जमाअत पर सुधारणा फ़रमाई है कि ऐसे मोमिनीन मिलते रहेंगे और ज़रूर मिलते रहेंगे जो इस तरह अल्लाह तआला के लिए अपनी माली क़ुर्बानियां प्रस्तुत करने वाले होंगे परन्तु जिस तेज़ी से जमाअत के लोगों को इस निज़ाम में सम्मिलित होना चाहिए था,

नहीं हो रहे। जिस से मुझे फ़िक्र भी पैदा हुई है और मैंने सोचा है कि आपके सामने गिनती भी रखूं तो आप भी परेशान हो जाएँगे वह गिनती यह है कि आज 99 साल पूरे होने के बाद भी लगभग 1905 ई. से लेकर आज तक केवल 38 हज़ार के लगभग अहमदियों ने वसीयत की है अगले साल इंशा अल्लाह तआला वसीयत के निज़ाम को स्थापित हुए सौ साल हो जाएँगे। मेरी यह इच्छा है और मैं यह तहरीक करना चाहता हूँ कि आकाशीय निज़ाम में अपनी ज़िन्दगियों को पवित्र करने के लिए सम्मिलित हों आगे आएं और इस एक साल में कम से कम 15 हज़ार नई वसीयतें हो जाएं ताकि कम से कम 50 हज़ार वसीयतें ऐसी हों कि जो हम कह सकें कि सौ साल में हुईं, तो ऐसे मोमिन निकलें कि कहा जा सके कि उन्होंने ख़ुदा के मसीह की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए क़ुर्बानीयों के उच्च स्तर स्थापित किए।

फिर बहुत से लोगों की ओर से यह परामर्श भी आए हैं कि 2008 ई. में ख़िलाफ़त को सौ साल पूरे हो जाएँगे उस समय ख़िलाफ़त की भी सौ वर्षीय जुबली मनानी चाहिए तो बहरहाल वह तो एक कमेटी काम कर रही है। वे क्या करते हैं, रिपोर्टें देंगे तो पता लगेगा परन्तु मेरी यह इच्छा है कि 2008 ई में जो ख़िलाफ़त को स्थापित हुए इंशा अल्लाह तआला सौ साल हो जाएँगे तो दुनिया के प्रत्येक देश में, प्रत्येक जमाअत में जो कमाने वाले लोग हैं, जो चन्दा देने वाले हैं इन में से कम से कम पच्चास प्रतिशत तो ऐसे हों जो हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस महान निज़ाम में सम्मिलित हो चुके हों और रूहानियत को बढ़ाने के और क़ुर्बानियों के यह उच्च स्तर स्थापित करने वाले बन चुके हों और यह भी जमाअत की ओर से अल्लाह तआला के हुज़ूर एक तुच्छ सा नज़राना होगा जो जमाअत ख़िलाफ़त के सौ साल पूरे होने पर शुक्राने के तौर पर अल्लाह तआला के हुज़ूर प्रस्तुत कर रही होगी।"

(समापन भाषण जलसा सालाना UK 1 अगस्त 2004 ई.)

25. Humanity First की ओर ध्यान दें

ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट एक ऐसी संस्था है जो नियमत रूप से रजिस्टर्ड है और इसकी मर्कज़ी इंतिज़ामीया लंदन में है। लंदन से नियमित रूप में मैनिज (Manage)

किया जाता है। अफ़्रीक़ा में अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मर्कज़ी संस्था है विभिन्न देशों ने इस में बहुत काम किया है। जर्मनी के अतिरिक्त जर्मनी में यह इस तरह सक्रिय नहीं है। सक्रिय इसलिए नहीं है कि कुछ मामलों में इन्होंने अधिक आज़ाद होने की कोशिश की है इसलिए मैं यहां अमीर साहिब को इसका निगरान आला बनाता हूँ और वह अब अपनी निगरानी में इसको री आर्गेनाईज़ (Re-organize) करें और चेयरमैन और तीन मेम्बरों की कमेटी बनाएँ और फिर जिस तरह बाक़ी देशों में मानवता की सेवा कर रहे हैं यह भी करें, परन्तु मर्कज़ी हिदायत के अनुसार क्योंकि मर्कज़ी रिपोर्ट के अनुसार भी यहां की ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट की इंतिज़ामीया का सहयोग अच्छा नहीं था। बार-बार ध्यान दिलाने पर अब बेहतरी आई है परन्तु सम्पूर्णता नहीं, तो यह भी आज्ञापालन की कमी है। जैसा कि मैंने कहा कि कुछ लोग समझते हैं कि समय के ख़लीफ़ा से सीधा सम्पर्क हो जाए तो बाक़ी निज़ाम से जो चाहे सुलूक करो कोई हर्ज नहीं है। यह ग़लत विचार है। दिमाग़ों से निकाल दें यदि कोई परेशानी और मुश्किल हो किसी प्रबन्ध को चलाने में तो आप समय के ख़लीफ़ा को भी पत्र लिख सकते हैं परन्तु बहरहाल सम्बन्धित अमीर को इसकी कापी जानी चाहिए परन्तु सीधा किसी किस्म का स्वयं क़दम उठाने की आज्ञा नहीं है।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 27 अगस्त 2004 ई.)

26. बच्चों को अस्सलामो अलैकुम कहने की आदत डालनी चाहिए

"पाकिस्तान में तो हमारे सलाम कहने पर पाबंदी है, बहुत बड़ा जुर्म है। बहरहाल एक अहमदी के दिल से निकली हुई सलामती की दुआएं यदि ये लोग नहीं लेना चाहते तो न लें और तभी तो उनका हाल यह हो रहा है परन्तु जहां अहमदी इकट्ठे हों वहां तो सलाम को रिवाज दें खासतौर पर रब्वा, क़ादियान में और कुछ और शहरों में भी एक साथ अहमदी आबादियां हैं और एक दूसरे को सलाम करने का रिवाज देना चाहिए। मैंने पहले भी एक बार रब्वा के बच्चों को कहा था कि यदि बच्चे याद से इसको रिवाज देंगे तो बड़ों को भी आदत पड़ जाएगी फिर इसी तरह वाक़फ़ीन नौ बच्चे हैं। हमारे जामिया नए खुल रहे हैं, उनके छात्र हैं। यदि ये सब इसको रिवाज

देना शुरू करें और उनकी यह एक विशेषता बन जाए कि यह सलाम कहने वाले हैं तो चारों ओर सलाम का रिवाज बड़ी आसानी से पैदा हो सकता है और डरने की कोई बात नहीं है कुछ और दूसरे शहरों में किसी दूसरे को सलाम करके पाकिस्तान में क़ानून है कि मुजरिम न बन जाएं। अहमदी का तो चेहरे से ही पता चल जाता है कि यह अहमदी है इसलिए फ़िक्र की या डरने की कोई बात नहीं है और मौलवी हमारे अंदर वैसे ही पहचाना जाता है।" (ख़ुत्बा जुम्अः 3 दिसम्बर 2004 ई.)

27. तिलावत पवित्र क़ुरआन और अनुवाद पढ़ने की नसीहत

(क) "अतः प्रत्येक अहमदी को इस बात की फ़िक्र करनी चाहिए कि वह स्वयं भी और उसके बीवी बच्चे भी पवित्र क़ुरआन पढ़ने और उसकी तिलावत करने की ओर ध्यान दें फिर अनुवाद पढ़ें। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तफ़सीर पढ़ें यह तफ़सीर भी तफ़सीर की सूरत में तो नहीं परन्तु बहरहाल एक काम हुआ-हुआ है कि विभिन्न किताबों और ख़त्बों से, मल्फ़ूज़ात से हवाले इकट्ठे करके एक स्थान पर कर दिए गए हैं और यह बहुत बड़ा इल्म का ख़ज़ाना है यदि हम पवित्र क़ुरआन को इस तरह नहीं पढ़ते तो फ़िक्र करनी चाहिए और प्रत्येक को अपने बारे में सोचना चाहिए कि क्या वह अहमदी कहलाने के बाद इन बातों पर अनुकरण न करके अहमदियत से दूर तो नहीं जा रहा।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 सितम्बर 2004 ई.)

(ब) "बहरहाल एक अहमदी को विशेष रूप से याद रखना चाहिए कि उसने पवित्र क़ुरआन पढ़ना है, समझना है, चिन्तन करना है और जहां समझ न आए वहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वज़ाहतों से या फिर उन्हीं नियमों पर चलते हुए और अधिक वज़ाहत करते हुए ख़लीफ़ाओं ने जो वज़ाहतें की हैं उनको उनके अनुसार समझना चाहिए और फिर इस पर अनुकरण करना है।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 सितम्बर 2004 ई.)

(ज) "अतः एक अहमदी को बारीकी में जाकर अपने सुधार की कोशिश करनी चाहिए यदि आप यह कर लेंगे तो उन देशों में भी और दुनिया में प्रत्येक स्थान पर

जहां अहमदियों के छोटी छोटी बातों पर झगड़े होते हैं, रंजिशें पैदा होती हैं, दिलों में द्वेष और हसद पलते बढ़ते हैं उनका सुधार हो जाएगा। अतः अपने सुधार के लिए पवित्र क़ुरआन को ध्यान से पढ़ें और इसके आदेशों को ज़िन्दगियों का हिस्सा बनाएँ अन्यथा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस चेतावनी के नीचे भी आ सकते हैं।" (ख़ुत्बा जुम्अः 16 सितम्बर 2005 ई.)

28. रिश्ता नाता की समस्याओं के हल की ओर ध्यान दें

"आज-कल शादी ब्याह की बहुत सी समस्याएँ सामने आई हैं प्रतिदिन पत्रों में उनका वर्णन होता है.....विधवाओं के रिश्तों की समस्याएँ हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर से एक ऐलान था इसी के अधीन अब यह विभाग रिश्ता नाता मर्कज़ में भी स्थापित है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से रिश्ते जुड़ते हैं फिर भी मुश्किलें हैं। अल्लाह तआला वे भी दूर करे।

माता-पिता के अतिरिक्त लड़कों को भी इस ओर ध्यान देना चाहिए कि एक तो जमाअत के अंदर लड़कियों का रिश्ता तय करने की कोशिश करें और यदि अपने अज़ीज़ रिश्तेदारों में नहीं मिलता तो जमाअत के निज़ाम के अधीन तय करने की कोशिश करें और फिर कुछ लोग ख़ानदानों और ज़ातों और शक्लों इत्यादि के मस्लों में उलझ जाते हैं थोड़ा सा मैंने पहले भी बताया था और फिर इन्कार कर देते हैं फिर इन मस्लों में इस तरह उलझते हैं तो फिर लड़कियों के रिश्ते तय करने में परेशानी होती है तो यह ज़ात-पात के भेदभाव इत्यादि भी अब छोड़ने चाहिए।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 दिसम्बर 2004 ई.)

29. यह वादा करें कि यदि ख़ुदा तआला तौफ़ीक़ दे तो ख़िलाफ़त ख़ामसा के इस दौर में हम जर्मनी के प्रत्येक शहर में मस्जिद बनाएंगे

(क) "यहां जर्मनी में 100 मस्जिदों के निर्माण का मामला है। कुछ शिकवा है कि कुछ बड़ी-बड़ी इमारतें ख़रीदी गई हैं यदि वे न ख़रीदी जातीं तो और छोटी-छोटी कई मस्जिदें बन सकती थीं। फिर यह कि जो बनी बनाई इमारतें ख़रीदी गई हैं वे

100 मस्जिदों के अन्तर्गत नहीं हैं। कुछ लोग ख़त लिखते रहते हैं कि हम आपको वास्तविकता से आगाह करना चाहते हैं यहां यूं हो रहा है और यूं हो रहा है। एक तो इन सब लिखने वालों की सूचना के लिए मैं बता दूं कि पिछले साल या इससे बहुत पहले मैं इसका जायज़ा ले चुका हूँ और मुझे पता है कि कौन सी इमारत ख़रीदी गई हैं और किन-किन को 100 मस्जिदों के अन्तर्गत सम्मिलित करना है या नहीं करना। इसलिए आप बेफ़िकर रहें।" (ख़ुत्बा जुम्अः 27 अगस्त 2004 ई.)

(ख) "दूसरे उन्होंने कहा है कि इस ख़िलाफ़त के दौर में सौ मस्जिदों का वह वादा जो ख़िलाफ़त राबिया के युग में किया था उसको पूरा करने वाले हों। मैं तो कहता हूँ कि आप यह अहद करें कि सौ मस्जिदें क्या वे तो हम कुछ सालों में बना लेंगे। यदि ख़ुदा तआला तौफ़ीक़ दे तो ख़िलाफ़त ख़ामसा के इस युग में तो हम जर्मनी के प्रत्येक शहर में मस्जिद बनाएंगे। तो यह अहद आप करें तो अल्लाह तआला, इंशा अल्लाह तआला आपकी मदद भी करेगा और अल्लाह तो कहता है कोशिश करो और मुझ से माँगो और मैं दूँगा।

उम्मीद है इंशा अल्लाह अपने हौसले भी बढ़ाएंगे, अपने टेलैंट भी बढ़ाएंगे और अपनी कोशिश भी बढ़ाएंगे। अल्लाह तआला आप सब को तौफ़ीक़ दे। जज़ाकमुल्लाह।" (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 8 अक्तूबर 2004 ई.)

30. अहमदियत का पैग़ाम दुनिया के किनारों तक पहुंचाएं

"अतः जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि पिछली सुस्तियों पर ख़ुदा तआला से माफ़ी मांगें और मग़फ़िरत मांगें और भविष्य में एक जोश और एक वलवले और भावना के साथ अहमदियत के पैग़ाम को दुनिया में फैलाने के लिए आगे बढ़ें। अभी दुनिया के बल्कि इस प्रान्त के, स्कॉटलैंड के बहुत से हिस्से ऐसे हैं जहां अहमदियत का पैग़ाम नहीं पहुंचा, किसी को अहमदियत के बारे में पता ही नहीं है। अतः बहुत अधिक कोशिशों की ज़रूरत है, दुआओं की भी ज़रूरत है तभी हम इस दावा में सच्चे हो सकते हैं कि हम समस्त दुनिया को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे तले लेकर आएँगे इंशा अल्लाह और इसीलिए हमने हज़रत मसीह मौऊद

अलैहिस्सलाम की बैअत की है और आपकी बैअत में सम्मिलित हुए हैं। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ प्रदान करे।" (ख़ुत्बा जुम्अ: 8 अक्तूबर 2004 ई.)

31. तहरीक-ए-जदीद के दफ़्तर 5 का आरम्भ

1966 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहेमहुल्लाह ने नए आने वालों के लिए दफ़्तर 3 का आरम्भ फ़रमाया और फ़रमाया कि क्योंकि यह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के युग में शुरू होना चाहिए था इसलिए मैं इसको 1 नवम्बर 1965 ई. से शुरू करता हूँ। तो इस तरह से यह दफ़्तर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. के युग ख़िलाफ़त से मंसूब हो जाएगा। क्योंकि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि. का देहान्त 9 नवम्बर 1965 ई को हुआ था परन्तु हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने फ़रमाया कि क्योंकि ऐलान मैं कर रहा हूँ इसलिए उसका सवाब मुझे भी मिल जाएगा। तो बहरहाल इस दफ़्तर 3 का ऐलान ख़िलाफ़त सालिसा में हुआ था और फिर दफ़्तर 4 का आरम्भ 19 साल बाद 1985 ई. में ख़िलाफ़त राबिया में हुआ और इस नियम के अधीन कि (वह जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने नियम रखा था कि 19 वर्ष का ज़माना होगा) आज 19 साल पूरे हो गए हैं इसलिए आज से दफ़्तर 5 का आरम्भ होता है। इंशा अल्लाह तआला अब आइन्दा से जितने भी नए मुजाहिदीन तहरीक जदीद की माली क़ुर्बानी में सम्मिलित होंगे वे दफ़्तर 5 में सम्मिलित होंगे।

एक तो जैसा कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि नए बैअत में सम्मिलित होने वालों को अहमदियत में सम्मिलित होने वालों को माली क़ुर्बानी की आदत डालनी चाहिए। ऐसे समस्त लोगों को, अब मैं इस माध्यम से दफ़्तर को हिदायत कर रहा हूँ कि चाहे जो पिछले सालों में अहमदी हुए हैं परन्तु तहरीक जदीद में सम्मिलित नहीं हुए इन सब को अब तहरीक जदीद में सम्मिलित करने की कोशिश करें और उनकी गणना अब दफ़्तर 5 में होगी। जैसा कि मैंने पहले कहा यदि उनको बताया जाए कि माली क़ुर्बानी देनी ज़रूरी है और उनको बताएं कि तुम्हारे पास जो यह अहमदियत का पैग़ाम पहुंचा है यह तहरीक जदीद में माली

क़ुर्बानी करने वालों के कारण ही पहुंचा है इसलिए इस में सम्मिलित हों ताकि तुम अपनी ज़िन्दगियों को भी संवारने वाले बनो और इस पैग़ाम को आगे पहुंचाने वालों में भी सम्मिलित हो जाओ। हिस्सादार बन जाओ और जैसा कि मैंने कहा है मेरे इल्म में है कि हिन्दुस्तान में भी और अफ़्रीक़ा में भी बहुत बड़ी संख्या ऐसी है जिन को माली क़ुर्बानी में सम्मिलित नहीं किया गया उनको माली क़ुर्बानी में सम्मिलित करें फिर इस दफ़्तर 5 में नए पैदा होने वाले भी अर्थात जो अब अहमदी बच्चे पैदा होंगे वे दफ़्तर 5 में सम्मिलित होंगे।" (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 19 नवम्बर 2004 ई.)

32. तहरीक जदीद दफ़्तर-1 के खातों को ज़िन्दा करने की तहरीक

"हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहिमहुल्लाह ने यह भी फ़रमाया था कि जिन बुज़ुर्गों के खाते कोई ज़िन्दा नहीं करता उनके हिसाब में कोई चन्दा नहीं देता, उनके उस समय के अनुसार जो कुछ रूपयों में अदायगी होती थी, (पाँच दस रुपए में) या वैसे भी उनका नाम ज़िन्दा रखने के लिए टोकन की सूरत में हो सकती है। फ़रमाया था कि पाँच रुपए के हिसाब से एक हज़ार की मैं ज़िम्मेदारी उठाता हूँ। मैं अपने ज़िम्मा लेता हूँ यदि उनकी औलादें उनके नाम के साथ चन्दा नहीं दे सकतीं आप ने यह भी फ़रमाया था कि और इस तरह लोग आगे आएं और ज़िम्मेदारी उठाएं और अपने बारे में यह फ़रमाया कि मेरे बाद मेरी औलाद उम्मीद करता हूँ इस काम को जारी रखेगी तो बहरहाल आपको भी दफ़्तर ने ध्यान नहीं दिलाया या रिकार्ड दरुस्त नहीं रखा, हो सकता है कि अपने चन्दों में सम्मिलित करके आप उन लोगों के लिए चन्दे देते रहे हूँ परन्तु बहरहाल रिकार्ड में यह बात नज़र नहीं आ रही कि आपका वादा था। इसलिए उनकी इस इच्छा की पूर्णता में उनका जो इक्कीस साला दौर-ए-ख़िलाफ़त था जिस हिसाब से भी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे ने फ़रमाया था, अपने ख़ुत्बे में वर्णन किया था अब दफ़्तर तहरीक जदीद को मैं कहता हूँ कि यह हिसाब मुझे भिजवा दें मुझे उम्मीद है कि इंशा अल्लाह तआला उनकी औलाद उसकी अदायगी कर देगी जो भी उनका हिसाब बनता है, इन एक हज़ार बुज़ुर्गों का। बहरहाल यदि औलाद नहीं भी करेगी तो मैं ज़िम्मादारी लेता हूँ इंशा अल्लाह तआला अदा कर दूँगा और इसी हिसाब से दफ़्तर ऐसे समस्त लोगों के खातों के बारे

में मुझे बताए जिनके खाते अभी तक जारी नहीं हुए ताकि उनकी औलादों को ध्यान दिलाया जाता रहे। परन्तु जब तक उनकी औलादों की इस ओर ध्यान पैदा नहीं होता, उसी हिसाब से जो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने फ़रमाया था कि खाते टोकन के तौर पर ज़िन्दा रखने चाहिऐं, उन लोगों की अदायगी मैं अपने ज़िम्मे लेता हूँ, इंशा अल्लाह मैं अदा करूँगा और जब तक ज़िन्दगी है अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे अदा करता रहूँगा उसके बाद अल्लाह मेरी औलाद को तौफ़ीक़ दे परन्तु ये लोग जिनकी क़ुर्बानियों के हम फल खा रहे हैं उनके नाम बहरहाल ज़िन्दा रहने चाहिऐं। अल्लाह तआला उन सब की औलादों को तौफ़ीक़ दे।" (ख़ुत्बा जुम्अ: 5 नवम्बर 2004 ई.)

33. मस्जिद हारटले पोल और ब्रैडफोर्ड के लिए चन्दा की तहरीक

फ़रमाया अब मैं यू. के की जमाअत के लिए कुछ बातें संक्षिप्त में कहना चाहता हूँ पिछले दिनों में मैंने कुछ शहरों का दौरा किया था जिसमें बर्मिंघम की मस्जिद का उद्घाटन भी हुआ। ब्रैडफोर्ड की मस्जिद की नींव रखी गई, यह प्लाट उन्होंने बड़ी अच्छे स्थान पर लिया है पहाड़ी की चोटी पर है, नीचे सारा शहर नज़र आता है। प्लाट इतना बड़ा नहीं है परन्तु उम्मीद है तामीर के बाद इस में काफ़ी नमाज़ियों की गुंजाइश हो जाएगी। Covered क्षेत्र यह अधिक कर लेंगे फिर हारटले पोल की मस्जिद की नींव रखी, यह भी अच्छा सुन्दर स्थान है परन्तु यहां जमाअत छोटी है और अब कुछ संख्या में वृद्धि हुई है।

मुझे अमीर साहिब ने सफ़र में बताया कि किसी समय में अन्सारुल्लाह यू.के. ने (यादाशत से ही बताया था कोई निर्धारित नहीं था। अब पता नहीं अभी तक निर्धारित किया है कि नहीं) हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे से यह वादा किया था कि हारटले पोल में हम अन्सारुल्लाह मस्जिद बनाएंगे। यदि किया था तो ठीक है इसको पूरा करें और यदि नहीं भी किया तो अब मैं यह काम अन्सारुल्लाह यू. के. के सपुर्द कर रहा हूँ कि उन्होंने वहां इंशा अल्लाह स्थानीय लोगों की जिस हद तक मदद हो सके करनी है और यह जो असल बुनियादी नक़्शा है इसके अनुसार मस्जिद बनानी है। इस मस्जिद पर लगभग पाँच लाख पौंड का अंदाज़ा ख़र्च है। तो अन्सारुल्लाह ने किस

तरह पूरा करना है वह अपना प्लान कर लें और हिम्मत कर लें बहरहाल उनको मदद करनी होगी वहां जमाअत बहुत छोटी सी है।

ब्रैडफोर्ड में लगभग जो उनका अंदाज़ा है 1.6 मिलियन या 16 लाख पौंड का (यदि मैं सही हूँ और याददाश्त ठीक है) तो वहां काफ़ी बड़ी मस्जिद बन जाएगी यद्यपि कि वहां कारोबारी लोग काफ़ी हैं और मुझे उम्मीद है वे अपने माध्यमों से काफ़ी हद तक शीघ्र इकट्ठे करके मस्जिद सम्पूर्ण कर लेंगे परन्तु हो सकता है कि कुछ सुस्ती हो जाए। कुछ वादे करते हैं पूरे नहीं कर सकते कुछ मजबूरियाँ पैदा हो जाती हैं तो उनकी मदद के लिए ख़ुद्दामुल अहमदिया और लज्ना इमाइल्लाह यू.के. के ज़िम्मा मैं डालता हूँ कि ये भी उनकी मदद करें और यह इस क्षेत्र में एक बड़ा अच्छा विस्तृत जमाअत की योजना है जो मुझे उम्मीद है जमाअत के फैलाव का कारण बनेगी वहां इसके लिए वे भी इनमें कुछ हिस्सा डालेंगे और लज्ना हमेशा क़ुर्बानियां करती रही हैं यहां बैयतुल फज़ल है इसके लिए भी लज्ना ने ही रक़म इकट्ठी की थी जो पहले बर्लिन मस्जिद के लिए थी फिर बाद में बैयतुल फज़ल में प्रयोग हुई तो यू. के की लज्ना को इस बारे में कोशिश करनी चाहिए क्योंकि मेरी इच्छा है कि ये दोनों मस्जिदें "एक साल के अंदर-अंदर सम्पूर्ण हो जाएं इंशा अल्लाह। अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे तो इस रमज़ान में दुआओं और क़ुर्बानी की भावना के साथ इस ओर भी ध्यान दें और कोशिश करें। अल्लाह तआला सब को तौफ़ीक़ दे।"(ख़ुत्बा जुम्अः 15 अक्तूबर 2004 ई.)

33. स्पेन में Valencia के स्थान पर एक दूसरी मस्जिद बनाने की महान तहरीक

फ़रमाया- "मेरे दिल में बड़ी शिद्दत से यह ख़्याल पैदा हुआ कि पाँच सौ साल बाद इस देश में धार्मिक आज़ादी मिलते ही जमाअत अहमदिया ने मस्जिद बनाई और अब इसको बने भी लगभग 25 साल होने लगे हैं। अब समय है कि स्पेन में मसीह मुहम्मदी के मानने वालों की मस्जिदों के रोशन मीनार अन्य स्थानों पर भी नज़र आएं। जमाअत अब विभिन्न शहरों में स्थापित है जब यह मस्जिद बनाई गई तो उस समय यहां

शायद कुछ लोग थे अब कम से कम सैंकड़ों में तो हैं पाकिस्तानियों के इलावा भी हैं जमाअत के संसाधन के अनुसार इबादत करने वालों के लिए, न कि नाम तथा दिखावा के लिए अल्लाह के और घर भी बनाए जाएं तो उसके लिए मेरा चयन जो मैंने सोचा और जायज़ा लिया तो वेलनसिया (Valencia) के शहर की ओर ध्यान हुआ यहां भी एक छोटी सी जमाअत है और यह शहर देश के पूर्व में स्थित है आप को तो पता है दूसरों को बताने के लिए बता रहा हूँ और आबादी के लिहाज़ से भी तीसरा बड़ा शहर है और यहां भी आरम्भ में ही 711 ई. में मुसलमान आ गए थे मुसलमानों का इतहिास भी इस क्षेत्र में मिलता है, अभी तक मिलता है खेती बाड़ी की दृष्टि से भी इस स्थान को मुसलमानों ने डवैलप (Develop) किया है। बहुत से अहमदी जो वहां काम करते हैं। माल्टों के बाग़ों में बहुत से लोग काम करते हैं ये माल्टों के बाग़ों को रिवाज देना भी मुसलमानों के ज़माने से ही चला आ रहा है तो बहरहाल हम ने भी यहां मस्जिद बनानी है। इंशा अल्लाह तआला और अल्लाह तआला के फ़ज़ल और इसकी तौफ़ीक़ से शीघ्र बनानी है।

स्पेन में जमाअत की संख्या तो कुछ सौ है और यह भी मुझे पता है कि आप लोगों के संसाधन इतने अधिक नहीं हैं ज़मीनें भी काफ़ी महंगी हैं। अमीर साहिब को जब मैंने कहा वह एक दम बड़े परेशान हो गए थे कि किस तरह बनाएंगे तो मैंने उन्हें कहा था कि आप छोटा सा, दो तीन हज़ार मुरब्बा मीटर का प्लाट तलाश करें और अपनी कोशिश करें और जमाअत स्पेन अधिक से अधिक कितना हिस्सा डाल सकती है यह बताएं। कौन अहमदी है जो नहीं चाहेगा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छा को पूरा करने वाला बने? कौन है जो नहीं चाहेगा कि जन्नत में अपना घर बनाए? अत: आप लोग अपनी कोशिश करें बाक़ी अल्लाह तआला स्वयं अपने फ़ज़ल से प्रबन्ध कर देगा। यही हमेशा अल्लाह तआला का जमाअत से व्यवहार रहा है और इंशा अल्लाह आगे भी रहेगा और वह स्वयं प्रबन्ध कर देगा। बहरहाल बाद में अमीर साहिब ने लिखा कि मुझ से ग़लती हो गई थी या ग़लतफ़हमी हो गई थी कि मैंने मायूसी का इज़हार कर दिया, बात समझा नहीं शायद तो हम इंशा अल्लाह मस्जिद बनाएंगे और दूसरे शहरों में भी बनाएंगे तो

बहरहाल इरादा, हिम्मत और हौसला होना चाहिए और फिर साथ ही सबसे ज़रूरी चीज़ अल्लाह तआला के आगे झुकते हुए उससे दुआऐ मांगते हुए, उससे मदद चाहते हुए काम शुरू किया जाए तो इंशा अल्लाह बरकत पड़ती है और पड़ेगी। तो बहरहाल मुझे पता है कि शीघ्र तौर पर शायद स्पेन की जमाअत की हालत ऐसी नहीं कि प्रबन्ध कर सके कि साल दो साल के अंदर मस्जिद सम्पूर्ण हो। परन्तु हम ने इंशा अल्लाह, अल्लाह तआला का नाम लेकर शीघ्र तौर पर इस काम को शुरू करना है इसलिए ज़मीन की तलाश शीघ्र शुरू हो जानी चाहिए। चाहे स्पेन जमाअत को कुछ ग्रांट और क़र्ज़ देकर ही कुछ काम शुरू करवाया जाए और बाद में अदायगी हो जाए तो यह काम बहरहाल इंशा अल्लाह शुरू होगा और जमाअत के जो केन्द्रीय इदारे हैं या दूसरे सामर्थ्य वाले लोग हैं यदि ख़ुशी से कोई इस मस्जिद के लिए देना चाहेगा तो दे दें इस में रोक कोई नहीं है परन्तु समस्त दुनिया की जमाअत को या अहमदियों को मैं सार्वजनिक तहरीक नहीं कर रहा कि इसके लिए ज़रूर दें। इंशा अल्लाह तआला यह मस्जिद बन जाएगी चाहे मर्कज़ी तौर पर फ़ंड उपलब्ध करके बनाई जाए या जिस तरह भी बनाई जाए और बाद में फिर स्पेन वाले इस क़र्ज़ को वापस भी कर देंगे जिस सीमा तक क़र्ज़ है। तो बहरहाल यह काम जल्द शुरू हो जाना चाहिए और इस में अब और अधिक इंतज़ार नहीं करना चाहिए। अल्लाह तआला आप सब को इसकी तौफ़ीक़ दे। क्योंकि अब तक जो सरसरी अंदाज़ा लगाया है इसके अनुसार दो तीन सौ नमाज़ियों की गुंजाइश की मस्जिद इंशा अल्लाह ख़्याल है कि 5-6 लाख यूरो (Euro)में बन जाएगी। यहां भी और स्थानों पर भी मस्जिद बनाने का इरादा किया है तो फिर बनाएँ। इंशा अल्लाह शुरू करें यह काम इरादा जब कर लिया है तो वादा करें। अल्लाह तआला अपने फ़ज़ल से इस में बरकत डालेगा जलसे के दिनों में जो वज़ारत इन्साफ़ के शायद डायरेक्टर जो आए हुए थे बड़े पढ़े लिखे और खुले दिल के व्यक्ति हैं मुझे कहने लगे कि जमाअत के संसाधन कम हैं वह तो दुनियादारी की नज़र से देखते हैं कहने लगे कि हुकूमत मुसलमान तन्ज़ीमों को कुछ सुविधाएं देती है अब क़ुर्तुबा में भी उन्होंने मस्जिद बनाई है तो इस तरह और सुविधाएं हैं परन्तु आपको (जमाअत अहमदिया को) वे मुसलमान

अपने में सम्मिलित नहीं करना चाहते। इसलिए जो हुकूमत का मदद देने का तरीक़ा है इससे आपको हिस्सा नहीं मिलता क्या ऐसा नहीं हो सकता आप इन मुसलमानों की कुछ बातें मान जाएं और हुकूमत से माली लाभ उठा लिया करें बाक़ी उनकी बातों में सम्मिलित न हों। तो मैंने उनको जवाब दिया था कि यदि बाक़ी मुसलमान संस्थाएं राज़ी भी हो जाएं तो फिर भी हम यह नहीं कर सकते क्योंकि कल को फिर आपने ही यह कहना है कि तुम्हारा अमन पसन्द होने का दावा यूं ही है, अन्दर से तुम भी उन लोगों के साथ सम्मिलित हो जो कट्टरवादी हैं और दूसरे सबसे बड़ी बात यह है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वाला वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार अल्लाह तआला ने ऐसे सामान कर दिए हैं कि हम बाक़ी मुसलमानों से अलग होकर जो उनके कर्म हैं, जो इस्लामी शिक्षा के ख़िलाफ़ हैं, इससे बच कर सही इस्लामी शिक्षा के अनुसार अपनी पहचान कर सकें। अल्लाह तआला ने ऐसे सामान उपलब्ध कर दिए हैं, भविष्यवाणी पूरी हो चुकी है कि हमारी अलग एक पहचान है तो कुछ पैसों के लिए या थोड़े से स्वार्थ के लिए हम अल्लाह के रसूल की सच्ची भविष्यवाणी और अल्लाह के फ़ज़्लों को ग़लत प्रमाणित करने की कोशिश करें यह नहीं हो सकता अहमदी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अल्लाह और उसके रसूल के लिए बड़ी ग़ैरत रखता है प्रत्येक अहमदी के दिल में अल्लाह और उसके रसूल के नाम की बड़ी ग़ैरत है यदि हुकूमत अहमदियों का हक़ समझ कर हमें लाभ दे सकती है तो हमें स्वीकार है, अन्यथा जमाअत अहमदिया में प्रत्येक व्यक्ति क़ुर्बानी करना जानता है वह अपना पेट काट कर भी मस्जिदों के बनाने के लिए प्लाट ख़रीद सकता है रक़म उपलब्ध कर सकता है, या जमाअत के दूसरे ख़र्च बर्दाश्त कर सकता है।"

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 28 जनवरी 2005 ई)

35. आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर आरोपों के जवाब देने के लिए टीमें तैयार करें

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर व्यर्थ आरोप लगाने वालों के जवाब देने के लिए ख़ुद्दामुल अहमदिया और लज्ना इमा इल्लाह को विशेष टीमें तैयार करने

की तहरीक। (ख़ुत्बा जुम्अ: 18 फरवरी 2005 ई.)

36. लज्ना इमा इल्लाह, ख़ुद्दामुल अहमदिया और अन्सारुल्लाह के विभागों को मानव सेवा तथा मरीज़ों की इयादत के प्रोग्राम बनाने की नसीहत

मरीज़ों की इयादत करना भी ख़ुदा तआला के सानिध्य को पाने का ही एक माध्यम है। हमें इस ओर ध्यान देना चाहिए। विशेष रूप से जो ज़ैली तन्ज़ीमें हैं उनको मैं हमेशा कहता हूँ। मानव सेवा के जो उनके विभाग हैं लज्ना के, ख़ुद्दाम के, अन्सार के ऐसे प्रोग्राम बनाया करें कि मरीज़ों की इयादत किया करें, अस्पतालों में जाया करें। अपनों और दूसरों की सब की इयादत करनी चाहिए। इस में कोई हर्ज नहीं, बल्कि यह भी एक सुन्नत के अनुसार है और हमेशा इस कोशिश में रहना चाहिए कि अधिक से अधिक अल्लाह तआला के सानिध्य को पाने के माध्यम हम धारण करें।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 15 अप्रैल 2005 ई.)

37. मरियम शादी फ़ंड की ओर ध्यान दें

"इसके साथ ही मैं कुछ और तहरीकों का भी वर्णन करना चाहता हूँ, उनकी ओर भी ध्यान दिलाना चाहता हूँ। उनमें एक तो मरियम शादी फ़ंड है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहेमहुल्लाह की यह आख़िरी तहरीक थी। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बहुत बरकतों वाली प्रमाणित हुई है। बेशुमार बच्चियों की शादियां इस फ़ंड से की गई हैं और की जा रही हैं। लोग सामर्थ्य के अनुसार इस में हिस्सा लेते हैं परन्तु मैं समझता हूँ कि शुरू में जिस तरह इस ओर ध्यान पैदा हुआ था। अब इतना ध्यान नहीं रहा जो लोग माली दृष्टि से अच्छे हैं, बेहतर माली हालात हैं उनको पता ही नहीं कि बच्चियों की शादियों पर ग़रीब लोगों के कितनी समस्याएं होती हैं।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 17 जून 2005 ई.)

(ब) "अमीरों को पहले भी कह चुका हूँ अब भी कहता हूँ पुन: तहरीक कर देता हूँ कि मरियम शादी फ़ंड में ज़रूर सम्मिलित हुआ करें और खासतौर पर जो सामर्थ्य वाले हैं

और जब उनके बच्चों की शादियां होती हैं उस समय ज़रूर ज़हन में रखा करें कि किसी न किसी ग़रीब की शादी करवानी है।" (ख़ुत्बा जुम्अः 25 नवम्बर 2005 ई.)

38. ताहिर हार्ट इंस्टीटियूट के लिए माली क़ुर्बानी की तहरीक

"मैं आज एक तहरीक करना चाहता हूँ विशेष रूप से जमाअत के डाक्टरों को और दूसरे लोगों को भी सामान्य रूप से, यदि सम्मिलित होना चाहें तो सामर्थ्य के अनुसार सम्मिलित हो सकते हैं, जिन को तौफ़ीक़ हो, गुंजाइश हो। यह ताहिर हार्ट इंस्टीटियूट के लिए माली क़ुर्बानी की तहरीक है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहेमहुल्लाह की रब्वा में ख़िलाफ़त राबिया के शुरू में यह इच्छा थी कि यहां एक ऐसी संस्था हो जो इस क्षेत्र में दिल की बीमारियों के इलाज के लिए सुविधा उपलब्ध कर सके। इस दौर में कुछ बात चली भी थी परन्तु फिर इस पर काम न हो सका बहरहाल मेरा ख़्याल है कि आख़िरी दिनों में हुज़ूर का इस ओर पुनः ध्यान हुआ था परन्तु ख़िलाफ़त ख़ामसा के शुरू में इस पर काम शुरू हुआ। एक हमारे अहमदी भाई हैं उन्होंने अपने माता पिता की ओर से ख़र्च उठाने की हामी भरी फिर अमरीका के एक अहमदी डाक्टर भी इस में सम्मिलित हुए उन्होंने इच्छा की कि मैं भी सम्मिलित होना चाहता हूँ। बहरहाल नक़्शे इत्यादि बनाए गए और बड़ी सुन्दर एक छः मंज़िल की इमारत बनाई जा रही है जो अपनी तामीर के आख़िरी चरणों में है और इस फ़ील्ड के माहिर डाक्टरों के परामर्शों से यह सारा काम हुआ है। वे इस में सम्मिलित हैं विशेष रूप से डाक्टर नूरी साहिब से परामर्श लिया गया है एक हार्ट इंस्टीट्यूट के लिए कैसी कैसी चीज़ों की ज़रूरत होती है। डाक्टर साहिब मर्कज़ी कमेटी में सम्मिलित भी हैं स्थायी समय देते हैं माशा अल्लाह फिर जो नक़्शे उन्होंने बनवाने थे जैसा कि मैंने कहा वह छः मंज़िल की इमारत के थे जिसमें समस्त सम्बन्धित सुविधाएं रखी गई थीं जो दिल के एक हस्पताल के लिए ज़रूरी हैं। तो उस समय उन्होंने जो ख़र्च का अंदाज़ा दिया था उस समय भी उस रक़म से अधिक था जिसकी इन दो साहिबों ने (जिनका मैंने वर्णन किया) देने की हामी भरी थी तो इंतिज़ामिया कुछ परेशान थी मैंने उन्हें कहा कि यह नक़्शे जो बनाए गए हैं जिन की मैंने मंज़ूरी दी थी उसकी मंज़ूरी

देता हूँ अल्लाह का नाम लेकर इसी के अनुसार काम करें। इंशा अल्लाह, अल्लाह तआला बरकत डालेगा, फ़ज़्ल करेगा फिर कुछ और लोग भी इस में सम्मिलित होते रहे और अब जहां तक इमारत का सम्बन्ध है वह लगभग सम्पूर्ण हो चुकी है, शीघ्र कुछ महीनों में हो जाएगी। इस तामीर में (बता चुका हूँ) कुछ लोगों ने हिस्सा भी लिया और फ़ज़्ले उम्र हस्पताल की इंतिज़ामिया ने बड़ी मेहनत से और प्रत्येक स्थान पर जहां बचत हो सकती थी जहां ज़रूरत थी, उन्होंने बचत कराई और तामीर करवाने में सावधानी की खासतौर पर डाक्टर नूरी साहिब के टेक्नीकल परामर्श भी बाक़ायदा प्रत्येक क़दम पर मिलते रहे। अल्लाह तआला इन सब को बदला दे परन्तु अब जो एक्यीपमेंट (Equipment) और सामान इत्यादि हस्पताल का आना है वे काफ़ी क़ीमती हैं मैंने उन्हें कहा है कि जैसे-जैसे रक़म का प्रबन्ध होता जाएगा ये चरणों (Phases) में खरीदें परन्तु आरम्भिक काम के लिए भी काफ़ी बड़ी रक़म की ज़रूरत है।

इसलिए मैं अहमदी डाक्टरों से विशेष रूप से कहता हूँ कि अल्लाह तआला ने आप लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल फ़रमाया है और खासतौर पर अमरीका और यूरोप के जो डाक्टर साहिब हैं इसी तरह पाकिस्तान में भी कुछ ऐसे डाक्टर हैं जो माली लिहाज़ से बहुत अच्छी हालत में हैं। यदि आप लोग ख़ुदा की रज़ा प्राप्त करने और ग़रीब मानवता की सेवा के लिए इस हार्ट इंस्टीटियूट को सम्पूर्ण करने में हिस्सा लें तो निसन्देह आप उन लोगों में सम्मिलित होंगे जिन को ख़ुदा बे-इंतिहा नवाज़ता है और उनके इस क्रम का बदला उसके वादों के अनुसार ख़ुदा के पास असीमित है। कोशिश करें कि जो वादा करें उन्हें शीघ्र पूरा भी करें। इस संस्था को सम्पूर्ण करने की मेरी भी बहुत इच्छा है क्योंकि मेरे समय में शुरू हुआ और इं अल्लाह तआला से उम्मीद हैशा अल्लाह तआला वह इच्छा पूरी करेगा जैसा कि वह हमेशा करता आया है। अल्लाह तआला आप लोगों को यह अवसर दे रहा है कि इस नेक काम में, इस अच्छे काम में हिस्सा लें और सम्मिलित हो जाएं और इस इलाक़े के बीमार और दुखी लोगों की दुआएं लें। आजकल दिल की बीमारियां भी अधिक हैं प्रत्येक को पता है कि प्रत्येक स्थान पर बहुत अधिक हो गई हैं और फिर इलाज भी इतना महंगा है कि ग़रीब व्यक्ति

तो अफोर्ड (Afford) कर ही नहीं सकता। एक ग़रीब व्यक्ति तो इलाज करवा ही नहीं सकता। अतः ग़रीबों की दुआएं लेने का एक बेहतरीन अवसर है जो अल्लाह तआला आपको दे रहा है इससे लाभ उठाएं।

जहां तक इंस्टीटियूट के लिए डाक्टरों का सम्बन्ध है, हमारे अमरीका के एक डाक्टर ने स्थायी रूप से वक़्फ़ किया है। इंशा अल्लाह वह शीघ्र रब्वा पहुंच जाएँगे। दूसरे यहां भी कुछ नौजवान वाक़्फ़ीन ज़िन्दगी डाक्टर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं जो अपनी शिक्षा सम्पूर्ण होने पर वहां चले जाएँगे और पाकिस्तान में भी कुछ नौजवान हैं जिन्होंने वक़्फ़ किया है ट्रेनिंग ले रहे हैं और इसी तरह डाक्टर नूरी साहिब की सरपरस्ती में इंशा अल्लाह यह संस्था चलती रहेगा। अल्लाह तआला उनकी उम्र और सेहत में भी बरकत डाले और फिर यह संस्था सम्पूर्ण होने के बाद में दूसरे विशेषज्ञ डाक्टरों से भी कहूँगा कि वे भी वक़्फ़ आरज़ी करके यहां आया करें। अल्लाह तआला, इंशा अल्लाह उनकी क़ुर्बानियों के बदले ज़रूर देगा, फल ज़रूर देगा और दुआ करते रहें अल्लाह तआला इस संस्था को बहुत सफल संस्था बनाए।"

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 17 जून 2005 ई.)

39. सौ वर्षीय ख़िलाफ़त जुबली का रूहानी प्रोग्राम

फ़रमाया "तीन साल के बाद ख़िलाफ़त को 100 साल भी पूरे हो रहे हैं। जमाअत अहमदिया की शतवर्षीय जुबली से पहले हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने जमाअत को कुछ दुआओं की ओर ध्यान दिलाया था, तहरीक की थी। मैं भी अब इन दुआओं की ओर पुनः ध्यान दिलाता हूँ एक तो आप ने उस समय कहा था कि सूरत फ़ातिहा प्रतिदिन सात बार पढ़ें तो सूरत फ़ातिहा को ध्यान से पढ़ें ताकि प्रत्येक प्रकार के फ़ित्ना तथा फ़साद से और धोखे से बचते रहें।

फिर رَبَّنَآ اَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرًا وَّثَبِّتۡ اَقۡدَامَنَا وَانۡصُرۡنَا عَلَى الۡقَوۡمِ الۡكٰفِرِيۡنَ की दुआ भी बहुत बार पढ़ें और इसके साथ ही एक और दुआ की ओर ध्यान दिलाता हूँ जो पहलों में सम्मिलित नहीं थी कि رَبَّنَا لَا تُزِغۡ قُلُوۡبَنَا بَعۡدَ اِذۡ هَدَيۡتَنَا وَهَبۡ لَنَا مِنۡ لَّدُنۡكَ رَحۡمَةً ۚ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡوَهَّابُ यह भी दिलों को सीधा रखने के लिए बहुत

ज़रूरी और बड़ी दुआ है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा ने ख़्वाब में यह देखा था कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए हैं और फ़रमाया है कि यह दुआ बहुत पढ़ा करो। फिर اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِیْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْ पढ़ें। फिर इस्तग़फ़ार बहुत किया करें-اَسْتَغْفِرُاللّٰهَ رَبِّیْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ फिर दुरूद शरीफ़ बहुत पढ़ें, विर्द करें। अगले तीन सालों में प्रत्येक अहमदी को इस ओर बहुत ध्यान देना चाहिए।

फिर जमाअत की उन्नति और ख़िलाफ़त की स्थापना और दृढ़ता के लिए ज़रूर प्रतिदिन दो नफ़ल अदा करने चाहिएँ। एक नफ़ली रोज़ा हर महीने रखें और खासतौर पर इस नीयत से कि अल्लाह तआला ख़िलाफ़त को जमाअत अहमदिया में हमेशा स्थापित रखे।" (अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 10 जून 2005 ई)

40. शत वर्षीय ख़िलाफ़त जुबली 2008 ई. और मानवजाति के अधिकारों की अदायगी

फ़रमाया "तीन साल के बाद इंशा अल्लाह ख़िलाफ़त अहमदिया को स्थापित हुए सौ साल का समय हो जाएगा और जमाअत इस जुबली को मनाने के लिए बड़े ज़ोर शोर से तैयारियां भी कर रही है। इसके लिए दुआओं और इबादत का एक मन्सूबा मैंने भी दिया है। एक तहरीक दुआओं की, नफ़लों की मैंने भी की थी तो बहुत बड़ी संख्या अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इस पर अनुकरण भी कर रही है परन्तु यदि इन बातों पर अनुकरण के साथ साथ हमें मानवजाति के अधिकारों को भी उच्च स्तर अदा करने की ओर ध्यान पैदा नहीं होता तो ये रोज़े भी बेकार हैं, यह नफ़ल भी बेकार हैं, ये दुआएं भी बेकार हैं।" (ख़ुत्बा जुम्अ: 26 अगस्त 2005 ई.)

41. झूठे अहंकारों की समाप्ति के लिए प्रत्येक अहमदी कोशिश करे

"अत: यदि अल्लाह की मुहब्बत प्राप्त करनी है तो उन झूठे अहंकारों को समाप्त करना होगा और न केवल यह कि किसी से बुराई नहीं करनी या बुराई का जवाब बुराई से नहीं देना बल्कि उपकार का सुलूक करना है। यही बातें हैं जो एक सुन्दर

परिवेश स्थापित करती हैं और इसके लिए प्रत्येक अहमदी को जिहाद करना चाहिए क्योंकि यदि दिल में तक़्वा है तो अल्लाह तआला के धर्म की मज़बूती के लिए, अपने ईमानों में मज़बूती के लिए एक दूसरे के अधिकारों की अदायगी की ओर ध्यान पैदा होता रहेगा और अपने अहंकारों और ग़ुस्सा को दबाने की तौफ़ीक़ मिलती रहेगी।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 26 अगस्त 2005 ई.)

42. जमाअत अहमदिया नार्वे को मस्जिद की तामीर के सिलसिला में बढ़-चढ़ कर माली क़ुर्बानियां करने की ज़ोरदार तहरीक

फ़रमाया- "जमाअत अहमदिया का शतवर्षीय इतिहास इस बात का गवाह है कि जमाअत के लोगों तथा जमाअत ने जब भी एक मंसूबे के अधीन एक होकर, एक इरादा के साथ किसी काम को शुरू किया है तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से फिर उसे अंजाम तक पहुंचाया है यदि आप भी अब इसकाम को दृढ़ इरादा से शुरू करें तो यह मस्जिद निसन्देह बन सकती है। मैंने आप में से मर्दों, औरतों, बच्चों, नौजवानों के अधिकतर के चेहरे पर इख़लास तथा वफ़ा की भावनाएं देखी हैं। मैं नहीं समझता कि आपके इख़लास तथा वफ़ा में कमी है या किसी से भी कम हैं। कुछ व्यक्तिगत कमज़ोरियाँ हैं इन को दूर करें। एक दूसरे से सहयोग करना सीखें मज़बूत इरादा करें तो अल्लाह तआला पहले से बढ़कर आपकी मदद करेगा और अपने वादों के अनुसार ऐसे माध्यमों से आपके रिज़्क़ के और आपके कामों की पूर्णता के और आपके इस वादा को पूरा करने के सामान पैदा करेगा कि जिसका आप सोच भी नहीं सकते। जो कमज़ोर हैं उनको भी साथ लेकर चलें। उन को भी बताएं कि ख़ुदा का घर बनाने के क्या लाभ हैं। जो क़ुर्बानियां कर रहे हैं वे पहले से बढ़कर अल्लाह तआला से मदद मांगते हुए अपने वादों की नए सिरे से तजदीद करते हुए, नए सिरे से प्लैनिंग करें, सब सिर जोड़ कर बैठें, एक दूसरे पर आरोप लगाने के स्थान पर अपने कर्तव्य अदा करने की कोशिश करें। आज जब दुनिया में प्रत्येक स्थान पर मस्जिदों की तामीर हो रही है, प्रत्येक स्थान पर जमाअत का एक विशेष ध्यान पैदा हुआ है। आज जब दुश्मन जहां उसका ज़ोर चलता है हमारी मस्जिदों को नुक़सान पहुंचाने और उनको बन्द करवाने

की कोशिश कर रहा है इन देशों में जहां अमन है जहां आपके माली हालात पहले से बेहतर हैं, जहां ख़ुदा के नाम को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने की बहुत अधिक ज़रूरत है, आज जहां अल्लाह तआला के पैग़ाम और इस्लाम के नूर को फैलाने की ज़रूरत है। यदि बेहतर हालात उपलब्ध होने के बाद भी आपने ख़ुदा के इस घर और इसके रोशन मीनारों की तामीर न की तो यह कृतघ्नता होगी। याद रखें यह आख़िरी अवसर है यदि इस बार भी और आज्ञा मिलने के बाद भी आप लोग उसे तामीर न कर सके तो फिर ज़मीन भी हाथ से निकल जाएगी और जो रक़म अब तक इस पर ख़र्च हुई है वह भी नष्ट हो जाएगी और जमाअत के सम्मान को भी धक्का लगेगा। अतः आज एक होकर इस घर की तामीर करें, इस तामीर से जहां आप जमाअत के सम्मान को रोशन कर रहे होंगे वहां अपने लिए ख़ुदा की रज़ा प्राप्त करते हुए जन्नत में घर बना रहे होंगे और याद रखें कि प्रत्येक बड़े काम के लिए क़ुर्बानी देनी पड़ती है। दुआओं के साथ इस क़ुर्बानी के लिए तैयार होंगे तो निसन्देह अल्लाह तआला भी मदद करेगा।

याद रखें यदि यह अवसर आप ने नष्ट कर दिया तो आज नहीं तो कल जमाअत अहमदिया की कई मस्जिदें देश में बन जाएँगी। परन्तु अहमदियत की अगली नस्लें, इस स्थान से गुज़रते हुए आपको इस तरह याद करेंगी कि यह वह स्थान है जहां जमाअत को मस्जिद बनाने का अवसर उपलब्ध हुआ परन्तु इस समय के लोगों ने अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा न किया और यह स्थान उनके हाथ से निकल गया। अल्लाह न करे कि कभी वह दिन आए जब आपको इतिहास इस तरह याद करे। ”

(ख़ुत्बा जुम्अः 23 सितम्बर 2005 ई.)

43. चन्दा तहरीक जदीद और तामीर मस्जिद की ओर ध्यान देने की तहरीक

“इस दौर में जिसमें भौतिकता का बोलबाल है अहमदी ही है जो अल्लाह की राह में ख़र्च करते हुए उसके घर भी तामीर करता है और उसकी इबादत से अपने आपको सजाने की कोशिश भी करता है। अपनी नस्लों में भी उनकी उच्च तरबियत के द्वारा यह रूह फूँकने की कोशिश करता है। इस सन्दर्भ में मुझे याद आया कि हमारे बचपन में तहरीक जदीद

में एक फ़ंड मस्दिज बैरून का भा हुआ करता था प्रत्येक साल जब बच्चे पास होते थे तो प्राय: इस ख़ुशी के अवसर पर बच्चों को बड़ों की ओर से कोई रक़म मिलती थी। वे इस में से इस विभाग में ज़रूर चन्दा देते थे या अपने जेब ख़र्च से देते थे। यह विभाग अब भी शायद हो हालात के कारण पाकिस्तान में तो मैं इस पर ज़ोर नहीं देता परन्तु बाहर पता नहीं, है कि नहीं और उसे अब बैरून कहने की तो ज़रूरत भी नहीं। सामान्यत: मस्जिदों का एक विभाग होना चाहिए इस में जब बच्चे पास हो जाएं तो उस समय या किसी और ख़ुशी के अवसर पर अल्लाह तआला के घर की तामीर में चन्दा दिया करें और अब तो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दुनिया के कोने-कोने में बेशुमार अहमदी बच्चे परीक्षाओं में पास होते हैं। यदि प्रत्येक साल ज़ैली तंज़ीमें इस ओर ध्यान दें, उनको कहें और जमाअत का निज़ाम भी कहे कि इस अवसर पर वे इस विभाग में अपने पास होने की ख़ुशी में चन्दा दिया करें तो जहां वे अल्लाह तआला का घर बनाने के लिए माली क़ुर्बानी की आदत डाल रहे होंगे वहां इस कारण अल्लाह तआला का फ़ज़ल समेटते हुए अपना भविष्य भी सँवार रहे होंगे। माता पिता भी इस बारे में अपने बच्चों की तरबियत करें और उन्हें ध्यान दिलाएँ तो अल्लाह तआला उन माता पिता को भी खासतौर पर इस माहौल में बहुत सी चिन्ताओं से आज़ाद कर देगा।" (ख़ुत्बा जुम्अ: 11 नवम्बर 2005 ई.)

44. लाखों की संख्या में वक़्फ़-ए-नौ चाहिए

"हमें लाखों वाक़फ़ीन नौ चाहिए। अब तक तो वाक़फ़ीन-ए-नौ की संख्या हज़ारों में है परन्तु जिस तरह जमाअत की संख्या बढ़ रही है और जिस तरह माता पिता का इस ओर ध्यान पैदा हो रहा है इंशा अल्लाह लाखों की संख्या हो जाएगी और फिर ज़ाहिर है कि प्रत्येक देश में जामिया अहमदिया खोलना पड़ेगा और यह इंशा अल्लाह तआला एक दिन होगा।"

(जामिया अहमदिया लन्दन उद्घाटन ख़िताब 1 अक्तूबर 2005 ई)

45. ज़ैली तंज़ीमें अपनी ज़िम्मेदारियां अदा करें

"अत: इस दृष्टि से अन्सार भी ज़िम्मेदार हैं और पूछे जाएँगे कि उन्होंने अपनी

ज़िम्मेदारियाँ अदा की हैं या नहीं, लज्ना भी अपने दायरे में ज़िम्मेदार है और पूछी जाएगी कि उसने अपनी ज़िम्मेदारियाँ अदा की हैं या नहीं और ख़ुद्दाम भी ज़िम्मेदार हैं और पूछे जाएँगे कि उन्होंने अपनी ज़िम्मेदारियाँ अदा की हैं या नहीं और ख़ुद्दाम में क्योंकि नौजवान लड़के और मर्द सम्मिलित होते हैं जिनमें अधिक ताक़त होती है और सेहत भी अच्छी होती है, योग्यता भी होती है इसलिए जमाअत की उन्नति के लिए ख़ुद्दाम की बेहतरीन तर्बीयत और सक्रिय होना और समस्त प्रोग्रामों में हिस्सा लेना, सारी इन बातों पर अनुकरण करना जो समय के ख़लीफ़ा की ओर से समय समय पर कही जाती हैं, अधिक ज़रूरी है। ख़ुद्दाम ही हैं जिन्होंने भविष्य की नस्ल के बाप बनना है और ख़ुद्दाम ही हैं जिन में अगली नस्ल के बाप मौजूद हैं। जो शादीशुदा हैं और बच्चों वाले हैं वे अगली नस्ल के बाप हैं और एक बाप के इसी महत्व को सम्मुख रखते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि अच्छी तर्बीयत से बढ़कर कोई तोहफ़ा नहीं है जो बाप अपनी औलाद को देता है। अत: यह तर्बीयत भी अगली नस्ल की तब ही होगी जब आप लोग स्वयं भी अपनी तर्बीयत की ओर ध्यान दे रहे होंगे।"

(मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया बर्तानिया के इज्तिमा से समापन ख़िताब 2 अक्तूबर 2005 ई.)

46. कर्ज़ों की अदायगी उत्तम ढंग से करें

"अहमदियों ने यदि दुनिया से फ़साद दूर करना है तो आपस के लेन-देन और कर्ज़ों की अदायगी उत्तम तरीक़ा से करना चाहिए और कोई धोखा और किसी किस्म की बदनीयती उनमें सम्मिलित नहीं होनी चाहिए।" (ख़ुत्बा जुम्अ: 18 नवम्बर 2005 ई.)

47. शादी ब्याह के आयोजनों के अवसर पर बेहूदा रसूमो रिवाज, नापन्दीदा और फ़ुज़ूल गाने और सामर्थ्य से बढ़ कर रकम ख़र्च करने से बचने की नसीहत

"अत: जो शिकायतें आती हैं ऐसे घरों की उनको मैं सचेत करता हूँ कि इन लग़वयात और फुज़ूलीयात से बचें। फिर डांस है, नाच है, लड़की की जो रौनक़ें लगती हैं इस में

या शादी के बाद जब लड़की ब्याह कर लड़के के घर जाती है वहां कई बार इस किस्म के बेहूदा किस्म के म्यूज़िक या गानों के ऊपर नाच हो रहे होते हैं और सम्मिलित होने वाले प्रिय रिश्तेदार इस में सम्मिलित हो जाते हैं तो इसकी किसी अवस्था में भी आज्ञा नहीं दी जा सकती। कुछ घर जो दुनिया-दारी में बहुत आगे बढ़ गए हैं उनकी ऐसी रिपोर्टें आती हैं और कहने वाले कहते हैं कि क्योंकि अमुक अमीर व्यक्ति था इसलिए इस पर कार्रवाई नहीं हुई या अमुक ओहदेदार का रिश्तेदार था इसलिए उसके ख़िलाफ़ कोई कार्यवाही नहीं हुई, इससे आंखें मूंद ली गई ग़रीब व्यक्ति यह हरकत करे तो उसे सज़ा मिलती है। यदि मुझे पता चल जाए तो उन पर मैं बिना किसी लिहाज़ के कार्रवाई करूँगा और की भी जाती है .... जमाअत के निज़ाम और ज़ैली तन्ज़ीमों का जो निज़ाम है यह भी इन ब्याह शादियों पर नज़र रखे और जहां कहीं भी इस किस्म की बेहूदा फिल्मों के नाच गाने या ऐसे गाने जो सरासर शिर्क फैलाने वाले हों देखें तो उनकी रिपोर्ट आनी चाहिए इस बारे में हरगिज़ डरने की ज़रूरत नहीं कि किस ख़ानदान का है और क्या है।" (ख़ुत्बा जुम्अः 25 नवम्बर 2005 ई.)

48. M.T.A से लाभ उठाएं। ज़ैली तंज़ीमें निगरानी करें

"एम.टी.ए के प्रोग्रामों से भरपूर लाभ उठाएं। विशेष रूप से ख़ुत्बा जुम्अः सुनने की आदत डालें। ज़ैली तंज़ीमें निगरानी करें और देखें कि लोग एम टी ए से लाभान्वित हो रहे हैं या नहीं। एक अहमदी और दूसरे लोगों में स्पष्ट अन्तर होना चाहिए। आपके ख़ामोश पाकीज़ा आचरण भी ख़ामोश दावत इलल्लाह हैं अल्लाह तआला इसकी तौफ़ीक़ दे।" (ख़ुत्बा जुम्अः 2 दिसम्बर 2005 ई. मारीशस)

49. लज्ना इमा उल्लाह तर्बीयत के निज़ाम को सक्रिय बनाए

"लज्ना इमा इल्लाह तर्बीयत के निज़ाम को सक्रिय बनाते हुए नई बैअत करने वालियों और बच्चों की तर्बीयत की ओर विशेष ध्यान दे और इसके साथ पुरानी अहमदी औरतों की ओर भी ध्यान दें ताकि कोई बुराई या शिर्क अहमदी परिवेश में दाख़िल न हो।" (जलसा लज्ना इमा इल्लाह क़ादियान से ख़िताब 27 दिसम्बर 2005 ई.)

50. नौ मुबाईन को माली निज़ाम का हिस्सा बनाएँ

"यह जो मैं बार-बार ज़ोर देता हूँ कि नौ-मुबाईन को भी माली निज़ाम का हिस्सा बनाएँ यह अगली नस्लों को सँभालने के लिए बड़ा ज़रूरी है कि जब इस तरह बड़ी संख्या में नौमुबाईन आएँगे तो मौजूदा क़ुर्बानियां करने वाले कहीं उस संख्या में गुम ही न हो जाएं और बजाय उनकी तर्बीयत करने के उनके अधीन न आ जाऐं। इसलिए नौमुबाईन को बहरहाल क़ुर्बानियों की आदत डालनी पड़ेगी और नौ-मुबाइन केवल तीन साल के लिए है। तीन साल के बाद बहरहाल उसे जमाअत का एक हिस्सा बनना चाहिए। ख़ासतौर पर नई आने वाली औरतों की तर्बीयत की ओर बहुत ध्यान की ज़रूरत है।" (दैनिक अल्फ़ज़्ल 28 मार्च 2006 ई)

51. आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपकारों से दुनिया को अवगत कराएं और बहुत अधिक दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाए

(क) "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपकार तथा विशेषताएं और अमन वाली शिक्षा से दुनिया को परिचित करें। इश्क़ रसूल प्रेम की ऐसी आग दिलों में लगाऐं जिसके शोले आसमानों तक पहुँचें और बहुत अधिक दरूद भेजें।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 10 फरवरी 2006 ई.)

(ख) "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क़ और मुहब्बत का यह तक़ाज़ा है कि बहुत अधिक दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाए सच्चे दिल से फ़िज़ा में इतना दुरूद बिखेरा जाए कि फ़िज़ा का प्रत्येक कण इससे महक जाए कसरत से यह दुआ पढ़ी जाए رَبِّ اَصْلِحْ اُمَّةَ مُحَمَّدٍ (अर्थात हे मेरे रब उम्मत-ए-मुहम्मदिया को सुधार दे)

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 फरवरी 2006 ई.)

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में पश्चिम में अपमानजनक कार्टूनों का प्रकाशन और सरासर झूठे और ग़लत प्रापेगंडा के दूर करने के लिए हुज़ूर अनवर ने जमाअत को भी और ज़ैली तन्ज़ीमों को भी एक बार फिर ध्यान दिलाया कि अख़बारों में निबन्ध लिखें, पत्र लिखें, सम्पर्क बढाएं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी की खूबियां और उपकार वर्णन करें।

हुज़ूर ने फ़रमाया कि प्रत्येक देश में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी के पहलुओं को उजागर करने की ज़रूरत है। विशेष रूप से इस्लाम के बारे में जंगी जुनूनी होने की एक कल्पना है इसका तर्कों के साथ खण्डन करना हमारा फ़र्ज़ है। पहले भी मैंने कहा था कि अख़बारों में भी प्रचुरता से लिखें। अख़बारों पर लिखने वालों को जीवनी से सम्बन्धित किताबें भी भेजी जा सकती हैं।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 3 से 9 मार्च 2006 ई.)

52 जर्नलिज़्म पढ़ने की ओर ध्यान दें

"फिर यह भी एक परामर्श है भविष्य के लिए, यह भी जमाअत को प्लान (Plan) करना चाहिए कि नौजवान जर्नलिज़्म (Journalism) में अधिक से अधिक जाने की कोशिश करें जिन को इस ओर अधिक दिलचस्पी हो ताकि अख़बारों के अन्दर भी उन स्थानों पर भी, उन लोगों के साथ भी हमारा सम्पर्क रहे।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 3 से 9 मार्च 2006 ई.)

53. माली क़ुर्बानियों के जिहाद में हिस्सा लेने की नसीहत

फ़रमाया "यह ज़माना जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ज़माना है इस में एक जिहाद माली क़ुर्बानियों का जिहाद भी है क्योंकि इसके बिना न इस्लाम की प्रतिरक्षा में लिट्रेचर प्रकाशित हो सकता है, न पवित्र क़ुरआन के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हो सकते हैं, न यह अनुवाद दुनिया के कोने कोने में पहुंच सकते हैं। न मिशन खोले जा सकते हैं, न मुरब्बियान, मुबल्लग़ीन तैयार हो सकते हैं और मुरब्बियान, मुबल्लग़ीन जमाअतों में भिजवाए जा सकते हैं। न ही मस्जिदें बनाई जा सकती हैं। न ही स्कूलों, कॉलिजों के द्वारा ग़रीब लोगों तक शिक्षा की सुविधाएं पहुंचाई जा सकती हैं। न ही हस्पतालों के द्वारा दुखी इन्सानियत की सेवा की जा सकती है। अतः जब तक दुनिया के समस्त किनारों तक और प्रत्येक किनारे के प्रत्येक व्यक्ति तक इस्लाम का पैग़ाम नहीं पहुंच जाता और जब तक ग़रीब की ज़रूरतों को सम्पूर्ण तौर पर पूरा नहीं किया जाता उस समय तक यह माली जिहाद जारी रहना है।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 21 से 27 अप्रैल 2006 ई.)

54. चन्दा की प्रत्येक तहरीक में हिस्सा लेने की कोशिश करें

फ़रमाया "कुछ मूसियान यह समझते हैं कि हमने वसीयत की हुई है इसलिए हम केवल वसीयत का चन्दा देंगे बाक़ी ज़ैली तन्ज़ीमों के चन्दे या विभिन्न तहरीकों के चन्दे हम पर लागू नहीं होते। आशा एक वसीयत करने वाले से यह की जाती है कि एक वसीयत करने वाले का क़ुर्बानी का स्तर दूसरों की तुलना में, ग़ैर मूसी की तुलना में अधिक होना चाहिए। तो यदि वसीयत का केवल कम से कम 1/10 हिस्सा देकर बाक़ी चन्दे नहीं दे रहे तो हो सकता है ग़ैर मूसी दूसरे चन्दे सम्मिलित करके मूसियान से अधिक क़ुर्बानी कर रहे हों। तो इस दृष्टि से स्पष्ट कर दूं कि कोई भी चन्दा देने वाला, चाहे वे मूसी है या ग़ैर मूसी है यदि तौफ़ीक़ है तो समस्त तहरीकों में चन्दे देने चाहिऐ क्योंकि प्रत्येक तहरीक अपनी-अपनी ज़रूरत के लिहाज़ से बड़ी प्रमुख है।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 21 से 27 अप्रैल 2006 ई)

55. डाक्टरों को ताहिर हार्ट इंस्टीटियूट में हिस्सा लेने की तहरीक

"इस माली क़ुर्बानी के अन्तर्गत मैं एक दुआ का भी निवेदन करना चाहता हूँ। जैसा कि मैंने एक बार ऐलान किया था बल्कि शायद दो बार कर चुका हूँ, कि ताहिर हार्ट इंस्टीटियूट जो रब्वा में बन रहा है और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बड़ी सुन्दर इमारत है और बड़ा उच्च स्तरीय इंस्टीटियूट बन रहा है, दिल की बीमारियों के लिए। इसके लिए मैंने दुनिया के डाक्टरों को तहरीक की थी कि वे इस में खासतौर पर हिस्सा लें और क़ुर्बानियां करें। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अमरीका के डाक्टरों ने इसके ख़र्च की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली है। लगभग एकवीपमेन्ट (Equipment) इत्यादि का सारा ख़र्च वही अदा करेंगे और ये बहुत बड़ा ख़र्च है। "

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 21 से 27 अप्रैल 2006 ई.)

56. हर अहमदी को जमाअत का सक्रिय अंग बनाएँ

"ग़ैर पाकिस्तानी अहमदियों के यह शिकवे दूर होने चाहिऐ कि हम यहां आकर यूं

महसूस करते हैं जिस तरह जमाअत का हिस्सा नहीं हैं। यह बहुत ख़तरनाक अवस्था हो सकती है। इन नए आने वालों से काम भी लें, उनके शिकवे दूर करें। मैंने जायज़ा लिया है, इन नए आने वालों के लिए कुछ से मैंने यह पूछा है यह किस हद तक सही है, बहरहाल मुझे उनसे जो मालूमात मिली हैं यही हैं कि यहां उनको बाक़ायदा कोई सिखाने का प्रबन्ध नहीं है। औरतों के लिए धार्मिक तर्बीयत का, शिक्षा का प्रबन्ध लजना करे। मर्दों के लिए ज़ैली तंज़ीमें प्रबन्ध करें, सामूहिक तौर पर जमाअत जायज़ा ले। यदि इस सिलसिले में ज़ैली तंज़ीमें पूरी तरह सक्रिय नहीं तो जमाअत के निज़ाम के अधीन प्रबन्ध हो और निगरानी हो। और जो ज़ैली तंज़ीमें सुस्त हैं उनके बारे में मुझे सूचना भी दें। तो जब इस तरह काम करेंगे तभी प्रत्येक अहमदी को जमाअत का सक्रिय हिस्सा बनाएंगे।" (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 12 से 18 मई 2006 ई)

57. रिश्ता-नाता की व्यवस्था को सक्रिय होना चाहिए

"मैं पहले रिश्तों की बात कर रहा था। इस तरह यहां यह भी बता दूं कि मुझे पता है रिश्तों की बड़ी समस्याएं हैं खासतौर पर लड़कियों के रिश्तों के क्योंकि, मैंने प्राय: देखा है शायद छोटे स्थानों पर भी हों। फ़िजी इत्यादि में माशा अल्लाह लड़कियां पढ़ी लिखी हैं। यहां भी रिश्ते हैं। आस्ट्रेलिया में भी अन्य स्थानों पर भी हैं। तो उसके लिए एक तो जमाअत का रिश्ता नाता का निज़ाम है उसको सक्रिय होना चाहिए। और वैसे यदि पता लगे तो बाहर भी कोशिश हो सकती है। इसलिए यह जो आपके यहां चार पांच देश हैं इन में नियमित रूप से हर जगह रिकार्ड रखा जाना चाहिए।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 12 से 18 मई 2006 ई)

58. बच्चों को नमाज़ बाजमाअत का आदी बनाएँ

"फिर बच्चों को नमाज़ों की आदत डालने के बारे में आदेश है। अक्सर को यह आदेश याद भी होगा, सुनते भी रहते हैं, परन्तु अनुकरण की ओर बहुत कम ध्यान है। माँ और बाप दोनों की ज़िम्मेदारी है कि बच्चों को नमाज़ें पढ़ने की आदत डालें। केवल फ़र्ज़ पूरा करने के लिए आदत न डालें बल्कि उनके दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत मज़बूत कर

दें ताकि वे ये समझ कर नमाज़ पढ़ने वाले हों कि ये हमारे लाभ के लिए है और अल्लाह तआला से सम्बन्ध में ही हमारी दुनिया तथा आख़िरत की बक़ा है और यह उस समय तक नहीं हो सकता जब तक आप माता पिता स्वयं भी अल्लाह तआला से ख़ालिस सम्बन्ध न जोड़ें।" (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 2 से 8 जून 2006 ई)

59. अहंकार के बुत तोड़ने की तहरीक

"युग के इमाम, उसके ख़लीफ़ा और उसके निज़ाम के आगे यूं सिर झुकाना होगा कि अहंकार की ज़रा सी भी मिलावट नज़र न आए, लेशमात्र भी बाक़ी न रहे। वर्ना तो यह अहंकार के बुत इस निज़ाम के ख़िलाफ़ खड़े नहीं होते बल्कि फिर यह समय के ख़लीफ़ा के मुक़ाबला पर भी खड़े हो जाते हैं। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सामने भी खड़े हो जाते हैं। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाबला पर भी खड़े हो जाते हैं। वहां से भी आज्ञापालन से बाहर निकल जाते हैं, फिर अल्लाह तआला के मुक़ाबले पर भी खड़े हो जाते हैं।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 30 जून से 6 जुलाई 2006 ई.)

60. मुरब्बी तथा उहदेदार किसी एक की तरफदारी न करें

"मुरब्बियों को ख़्याल रखना चाहिए कि मुरब्बी के लिए कभी भी जमाअत के किसी व्यक्ति के ज़हन में यह प्रभाव नहीं पैदा होना चाहिए कि अमुक मुरब्बी या मुबल्लिग़ के अमुक व्यक्ति से बड़े क़रीबी सम्बन्ध हैं और यदि कोई मामला उसके सामने पेश किया जाए तो अमुक मुरब्बी या मुबल्लिग़ या वाक़िफ़ ज़िन्दगी उसकी नाजायज़ तरफदारी करेगा। मुरब्बी, मुबल्लिग़ या किसी भी मर्कज़ी ओहदेदार का यह काम है कि अपने आपको प्रत्येक मस्लिहत से ऊंचा रखकर, प्रत्येक सम्बन्ध को पीछे डाल कर जमाअत के हित के लिए काम करना है।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 30 जून से 6 जुलाई 2006 ई.)

61. मेहमानों से एक जैसा सुलूक करें

"यह उसूल हमेशा याद रखें विशेष रूप से मेहमान-नवाज़ी विभाग और ख़ुराक वाले

यह बात पल्ले बांध लें कि किसी मेहमान को यह अनुभव न होने दें कि अमुक मेहमान को अधिक पूछा गया और अमुक को कम या अमुक के लिए बैठने के लिए अधिक बेहतर स्थान था और अमुक के लिए कम। ठीक है कुछ स्थान बनाए जाते हैं, कइयों की मांग है, मरीज़ों के लिए, बीमारों के लिए या ऐसे मेहमानों के लिए जो किसी विशेष देश के प्रतिनिधि हैं और उनको वहां भाषा के कारण बिठाना पड़ता है या फिर ऐसे हैं जो ग़ैर हैं वे आते हैं परन्तु सामानयत: जो मेहमान नवाज़ी का नियम है, सब मेहमानों से एक जैसा व्यवहार होना चाहिए।"(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 11 से 17 अगस्त 2006 ई)

62. ईद के अवसर पर पड़ोसियों में तोहफ़ा के द्वारा जमाअती परिचय की तहरीक

"अब ईद के दिन हैं, विभिन्न लोगों के दफ़्तर में काम करने वाले स्थानों पर, पड़ोसी इत्यादि हैं, इन पश्चिमी देशों में यदि ऐसे पड़ोसियों को ईद के हवाले से तोहफ़े इत्यादि भिजवाए जाएं, चाहे छोटी सी कोई चीज़ हो, चाहे मिठाई इत्यादि या कुछ इस किस्म की चीज़। और फिर इस तरह परिचय बढ़ाएं और व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित हों तो दावत इल्लल्लाह भी कर रहे होंगे। अब यहीं UK में जैसे यदि दो हज़ार घर हैं अहमदियों के, शायद इससे अधिक होंगे। वे अपने पड़ोसियों को या अपने काम करने के स्थान के साथियों को कोई छोटा सा तोहफ़ा ही भेजें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि सौ कोस तक पड़ोसी है तो सौ कोस न सही यदि पाँच छ: घर तक भी जारी रखें और एक दो काम करने वाली स्थानों के साथियों को चुन लें तो दस से पंद्रह हज़ार घरों तक एक परिचय हो जाता है।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 17 अक्तूबर 2006 ई.)

63. मज्लिस सुल्तानुल क़लम को सक्रिय करने की तहरीक

"आजकल भी इस्लाम पर, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमले हो रहे हैं। प्राय: देशों में ख़ुद्दामुल अहमदिया के द्वारा मज्लिस सुल्तानुल क़लम अच्छी आर्गेनाईज़ है। परन्तु अभी भी इस में बेहतरी की गुंजाइश है। फिर आजकल

पश्चिमी समाज में तथा कथित सूफ़ी इज़्म बहुत चला हुआ है इससे प्रभावित होकर पश्चिम में नौजवान ग़लत राहों पर चल पड़े हैं। पश्चिमी समाज में ख़ुदा तआला की हस्ती को भी बहुत निशाना बनाया जा रहा है। पिछले दिनों किसी ने एक किताब भी लिखी जो क्रिसमिस से पहले आई और यहां की बेहतरीन किताब बैस्ट सेलर (Best Seller) किताब कहलाती है, इस में भी अल्लाह तआला के वजूद की मनाही और अल्लाह तआला की हस्ती की मनाही करने की कोशिश की गई है। ख़ुदा तआला के वजूद से इन्कार भी यहां पश्चिम में फ़ैशन बनता जा रहा है। तो जमाअत के प्रोग्राम के अधीन भी और ज़ैली तन्ज़ीमों को भी इस चीज़ पर नज़र रखने की कोशिश करनी चाहिए ताकि अपने बच्चे, लड़के, नौजवान बच्चियां इन चीज़ों से प्रभावित न हों। इसके जवाब के प्रोग्राम बनाएँ। केवल यह कहना कि नहीं, फ़ुज़ूल है इसके बजाय बाक़ायदा दलील के साथ जवाब तैयार होने चाहिऐं। जो विभिन्न प्रश्न उठ रहे हैं वे यहां मर्कज़ में भी भिजवाएं, मुझे भी भिजवाएं ताकि उनके ठोस जवाब भी तैयार किए जाएं।"

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 24 से 30 नवम्बर 2006 ई.)

64. जमाअतें वक़्फ़ आरज़ी की ओर ध्यान करें

"फिर एक मुतालिबा वक़्फ़ आरिज़ी का है इस ओर भी ध्यान की ज़रूरत है। बाहर की दुनिया में (बाहर से अभिप्राय यूरोप और पश्चिमी देशों, अफ़्रीक़ा इत्यादि) यदि आर्गेनाईज़ करके इस मांग पर सारे निज़ाम पर काम किया जाए तो अपनों की तर्बीयत के लिहाज़ से भी और तब्लीग़ के लिहाज़ से भी बहुत बेहतरी पैदा होगी, जमाअतें इस ओर भी ध्यान दें।" (अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 24 से 30 नवम्बर 2006 ई.)

65. पश्चिमी देशों में रिटायरमेन्ट के बाद वक़्फ़

"फिर रिटायरमेन्ट के बाद वक़्फ़ है। इन पश्चिमी देशों में भी जमाअत की ज़रूरतें बढ़ रही हैं और यहां क्योंकि हुकूमत की ओर से, संस्थाओं की ओर से सहूलतें मिलती हैं इसलिए जो अहमदी रिटायरमैंट के बाद ये सुविधाएं ले रहे हैं उनको अपने आपको जमाअत की ख़िदमतों के लिए प्रस्तुत करना चाहिए। जमाअत से माली मांग

न हो क्योंकि उनकी ज़रूरतें तो उन सुविधाओं से जो वे हुकूमत से या संस्थाओं से ले रहे हैं या पैंशन इत्यादि से जो रक़म मिली है इससे पूरी हो रही हैं। कुछ लोग तो रिटायरमैंट के बाद पुन: काम तलाश करते हैं क्योंकि कुछ ऐसी ज़िम्मेदारियाँ होती हैं जिन को पूरा करना होता है, बच्चे इत्यादि अभी पढ़ रहे होते हैं। तो बहरहाल जिनकी ज़िम्मेदारियाँ ऐसी नहीं हैं और यदि सेहत अच्छी है तो उनको अपने आपको जमाअत की ख़िदमतों के लिए स्वैच्छिक तौर पर पेश करना चाहिए। परन्तु कई बार ज़हनों में ये बात आ जाती है कि शायद हम स्वैच्छिक काम करके जमाअत पर कोई उपकार कर रहे हैं, तो यदि अपने आपको पेश करना हो तो इस सोच के साथ आएं कि यदि हमसे कोई जमाअत की सेवा ले ली जाए तो जमाअत और ख़ुदा तआला का हम पर उपकार होगा।" (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 24 से 30 नवम्बर 2006 ई.)

66. बेकारी की आदत ख़त्म करने की तहरीक

"एक तहरीक नौजवानों का बेकारी की आदत ख़त्म करने का था। यह भी बड़ी ख़तरनाक बीमारी है और बढ़ती जा रही है। पाकिस्तान में कुछ नौजवान इसलिए बेकार हैं कि या तो उनके जो रिश्तेदार, माता पिता,भाई इत्यादि बाहर हैं वे बाहर से रक़म भेज देते हैं इसलिए ज़िम्मेदारी का एहसास नहीं। या इस उम्मीद पर बैठे हैं कि बाहर जाना है। अब बाहर जाना भी उतना आसान नहीं रहा, उन लोगों को भी ग़लत उम्मीदों पर नहीं बैठना चाहिए और जो आते हैं उनके भी यहां इतनी आसानी से केस पास नहीं होते। इसलिए अकारण के समय न करें और धोखे में न रहें। अपने आप को धोखा न दें और अपने आप को संभालें। जमाअत और ज़ैली तन्ज़ीमों को भी इस बारे में निर्धारित प्रोग्राम बनाने चाहिए और नौजवानों को सँभालना चाहिए। ये लोग जो फ़ारिग़ बैठे हैं, फ़ारिग़ बैठे यह मांग कर रहे होते हैं कि हमारा किसी तरह बाहर जाने का प्रबन्ध हो जाए, कुछ लड़कों के माँ बाप लिख रहे होते हैं कि हमारे हालात ख़राब हैं बाहर बुलवा लें। बाहर बुलवाना कौन सा आसान है। या हमारी शादी बाहर करवा दें या जो भी रास्ता हो और ऐसे लोगों में से जब किसी की शादी यहां हो जाती है और यहां आ जाते हैं तो जब इन देशों में उनका Stay पक्का हो जाता है तो फिर बीवियों

पर ज़ुल्म करने शुरू कर देते हैं या छोड़ देते हैं। यह भी एक ग़लत तरीका खासतौर पर पाकिस्तान में और हिन्दुस्तान में चल पड़ा है। ऐसे नौजवानों को मैं कहता हूँ कि अपने देश में मेहनत की आदत डालें और मेहनत करके खाएं। इस समय यदि बाहर का कोई प्रबन्ध हो जाता है तो ठीक है परन्तु केवल इसलिए हाथ पर हाथ रख के बैठे रहना कि बाहर जाना है, इससे बहुत सारी ग़लत किस्म की आदतें पैदा हो जाती हैं और बहुत सारी बुराइयां पैदा हो जाती हैं और फिर वे बुराइयां समाज में, और माहौल में फैलनी शुरू हो जाती हैं।" (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 24 से 30 नवम्बर 2006 ई)

67. घरेलू झगड़े ख़त्म करने की तहरीक

"आजकल घरेलू झगड़ों की शिकायतें बहुत अधिक हो गई हैं। पति-पत्नी के जो मामले हैं, आपस के झगड़े हैं इन में कई बार ऐसे-ऐसे बेहूदा और घिनौने मामले सामने आते हैं जिन में एक दूसरे पर इल्ज़ाम लगाना भी होता है या मर्दों की ओर से या ससुराल की ओर से ऐसे अत्याचारपूर्ण व्यवहार होते हैं कि यदि अल्लाह तआला का विशेष फ़ज़्ल न हो और अल्लाह तआला का आदेश ज़क्किर सामने न हो कि नसीहत करते रहो, नसीहत यक़ीनन लाभ देती है तो इन्सान निराश होकर बैठ जाए कि इन बिगड़े हुओं को उनके हाल पर छोड़ दो, ये सब हदें फलाँग चुके हैं। परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मसीह तथा महदी की ग़ुलामी और नुमाइंदगी में नसीहत करने के ख़ुदाई फ़रमान के अनुसार नसीहत करते चले जाने की ओर ध्यान पैदा होता है कि जिन लोगों ने इस युग के इमाम को माना है यक़ीनन उनमें शराफ़त का कोई बीज था जिस से यह नेकी की कोंपल फूटी है कि अहमदियत क़बूल कर ली और इस पर स्थापित हैं। अत: अल्लाह के आदेश के अनुसार और जो काम ज़िम्मा लगाया गया है इसको अदा करने की कोशिश करते हुए कि नसीहत करो अवश्य अल्लाह बरकत डालेगा। मैं अल्लाह तआला के इस बरकत डालने के सुलूक की उम्मीद करते हुए आज फिर इस बारे में कुछ समझाने की कोशिश करूँगा। अल्लाह तआला मेरे शब्दों में प्रभाव पैदा कर दे कि उजड़ते हुए घर जन्नत का गहवारा बन जाएं।" (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 1 से 7 दिसम्बर 2006 ई.)

68. समय के ख़लीफ़ा की सम्बोधित पूरी जमाअत होती है

"पिछले दिनों में एक ख़ुत्बा मैंने घरेलू सम्बन्धों, पति-पत्नी के सम्बन्धों और सास बहू के सम्बन्धों पर दिया था, फिर लज्ना इमा इल्लाह U.K. के इज्तिमा पर पर्दे के बारे में औरतों को ध्यान दिलाया था और इस पर ज़ोर दिया था तो सुना है कि कुछ देशों में कुछ औरतें और मर्द यह पूछते हैं या आपस में बातें कर रहे हैं कि क्या ये बातें जिन पर ध्यान दिलाया गया है केवल U.K. के लिए हैं या हम सब उसके सम्बोधित हैं।

पहले वक़्तों में तो शायद कुछ विशेष स्थानों के लिए कुछ बातें कही जाती हों परन्तु अब तो दुनिया प्रत्येक स्थान पर संचार व्यवस्था के कारण एक हो गई है इसलिए बुराइयां भी लगभग साझी हो चुकी हैं और अल्लाह तआला ने इस युग की ज़रूरत को महसूस करते हुए हमें M.T.A की नेअमत से नवाज़ा है ताकि उस रब, जो रब्बुल आलमीन है की शिक्षा से हटने वालों को तुरन्त ध्यान दिलाया जा सके। यदि एक स्थान पर बुराई फैल रही है तो नेकी भी शीघ्र ही उस स्थान पर पहुंच जानी चाहिए। अत: हर अहमदी जहां कहीं भी हो, यदि तो यह समझता है कि वह وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ अर्थात मुझे आदेश दिया गया है कि मैं समस्त संसारों के रब का पूर्ण आज्ञाकार हो जाऊं, का सम्बोधित है तो फिर वे बातें जो हमारे रब ने हमें बताई हैं,जो मैंने अपने ख़ुत्बे और तक़रीर में वर्णन की हैं और जो विभिन्न वक़्तों में वर्णन करता हूँ वे दुनिया में प्रत्येक स्थान के अहमदी के लिए हैं। इसलिए अनुकरण न करने के बहाने तलाश नहीं करने चाहिऐ बल्कि प्रत्येक को इसका सम्बोधन समझना चाहिए।"(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 22 से 28 नवम्बर 2006 ई.)

69. मानव सेवा के विभाग को सक्रिय बनाने की तहरीक

"मानव सेवा के अन्तर्गत बात आ गई है तो कह दूं कि जमाअत में ग़रीबों की शादियों के सिलसिला में, इलाज के सिलसिला में, शिक्षा के सिलसिला में एक निज़ाम प्रचलित है। बच्चों की शादियों के लिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहेमहुल्लाह ने मरियम फ़ंड जारी फ़रमाया था। यह बड़ी अच्छी, बहुत बड़ी मानव

सेवा है, जमाअत के लोगों को इस ओर ध्यान देना चाहिए। फिर मरीज़ों का इलाज है, खासतौर पर ग़रीब देशों में, पाकिस्तान में भी अफ्रीकन देशों में भी और दूसरे ग़रीब देशों में भी इस ओर ध्यान देना चाहिए। इस फ़ंड में मानव सेवा की भावना से पैसे दें, चन्दा दें सदक़े दें तो अल्लाह तआला के इस गुण को अपनाने की कारण उसकी रहमानियत से भी अधिक से अधिक फ़ैज़ पाएँगे। फिर इसी तरह शिक्षा है, बच्चों की शिक्षा पर बड़े ख़र्च होते हैं,बड़ी महंगाई है। इसके लिए जिन को तौफ़ीक़ है उनको देना चाहिए। इसी तरह बात चली है तो मैं वर्णन कर दूं पाकिस्तान में भी, रब्वा में भी और अफ्रीक़ा में भी जमाअत के हस्पताल हैं, वहां डाक्टरों की ज़रूरत होती है। उनको यद्यपि कि तनख़्वाह भी मिल रही होती है और एक हिस्सा भी मिल रहा होता है परन्तु शायद बाहर से कम हो। तो बहरहाल मानव सेवा की भावना के अधीन डाक्टरों को भी अपने आपको वक़्फ़ करना चाहिए। चाहे तीन साल के लिए करें, चाहे पाँच साल के लिए करें या सारी ज़िन्दगी के लिए करें। परन्तु वक़्फ़ करके आगे आना चाहिए।" (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 5 से 11 जनवरी 2006 ई.)

70. तब्लीग़ के लिए लिट्रेचर और सम्पर्क के अन्य नवीन माध्मय अपनाने की तहरीक

"लिट्रेचर जो यहां आपके पास है इसका भी मैंने अंदाज़ा लगाया है कि एक समय में छपा और एक मुहिम के अनुसार लगता है कि कुछ हज़ार में बंटा और फिर ख़ामोशी से बैठ गए। बजाय इसके कि पुन: इसका प्रकाशन करते। या फिर स्टाक में मौजूद है, और काफ़ी संख्या में स्टाक में पड़ा हुआ है, वह भी ग़लत है कि बांटा नहीं गया। आजकल के अनुसार लिट्रेचर आना चाहिए और यह जो प्रश्न उठते हैं यह आज के प्रश्न नहीं हैं। यह हमेशा से उठ रहे हैं। इनके जवाब तैयार पड़े हैं। केवल आगे पहुंचाने की ज़रूरत है। प्रत्येक अहमदी के पास यह लिट्रेचर होना चाहिए। प्रत्येक अहमदी मर्द, औरत, बूढ़े और जवान को हालात के अनुसार भी और उमूमी तब्लीग़ी लिट्रेचर भी प्रत्येक जर्मन तक पहुंचाना चाहिए या पहुंचाने की कोशिश करनी चाहिए।

आजकल इंटरनैट और ई मेल इत्यादि का प्रयोग भी इस काम के लिए हो रहा

है। इसके बारे में भी ग़ौर करें कि किस तरह प्रयोग करना है, किस तरह अधिक से अधिक लाभ उठाया जा सकता है। इसके ग़लत प्रयोग जो हो रहे हैं तो उससे बचा जाए और सही प्रयोग किया जाए।

अतः जैसा कि मैंने पहले भी कहा था लिट्रेचर और तब्लीग़ का प्रत्येक माध्यम अपनाना चाहिए। कुछ हज़ार में लिट्रेचर प्रकाशित करके फिर बैठ रहना कि वे करोड़ों की आबादी के लिए काफ़ी होगा मुर्खता में ख़ुश रहने वाली बात है। ठीक है हमारे संसाधन एक हद तक हैं परन्तु जो हैं उनका तो सही प्रयोग होना चाहिए। एक ओर ध्यान होता है तो दूसरी ओर भूल जाते हैं। अतः केवल मर्कज़ी स्तर पर ही नहीं बल्कि प्रत्येक क्षेत्र में, प्रत्येक शहर में, प्रत्येक उस इलाक़े में जहां अहमदी बसते हैं या नहीं बसते एक परिचयात्मक पम्फ़लेट छोटा सा पहुंच जाना चाहिए और फिर जैसा कि मैंने कहा दूसरे इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का भी प्रयोग करें।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 12 से 18 जनवरी 2006 ई)

71. जमाअत का एक-एक पैसा उद्देश्य के अन्तर्गत ख़र्च होना चाहिए।

"जमाअत अल्लाह तआला के फ़ज़ल से चाहती है कि कम से कम खर्च करके अधिक से अधिक लाभ उठाया जाए। यह आर्थिकता का सादा नियम है और दूसरी दुनिया में तो पता नहीं इस पर अनुकरण हो रहा है कि नहीं परन्तु जमाअत इस पर अनुकरण करने की कोशिश करती है और करनी चाहिए। जो भी जमाअत के ओहदेदार मंसूबा बंदी करने वाले या काम करने वाले या रक़म ख़र्च करने वाले निर्धारित किए गए हों उनको हमेशा इसके अनुसार सोचना चाहिए और मंसूबा बंदी करनी चाहिए। कई बार ग़लतियां भी हो जाती हैं इसलिए जैसा कि मैंने कहा कि जो ज़िम्मेदार लोग हैं वे इस बात का हमेशा ख़्याल रखा करें कि जमाअत का एक-एक पैसा उद्देश्य के अन्तर्गत ख़र्च होना चाहिए। जमाअत में अधिकतर संख्या उन ग़रीब लोगों की है जो बड़ी क़ुर्बानी करते हुए चन्दे देते हैं इसलिए प्रत्येक स्तर पर निज़ाम जमाअत को ख़र्चों के बारे में सावधानी बरतनी चाहिए कि प्रत्येक पैसा जो ख़र्च हो वह अल्लाह तआला की रज़ा प्राप्त करने के लिए ख़र्च हो और अल्लाह तआला की सृष्टि की

हमदर्दी पर ख़र्च हो। जब तक हम इस रूह के साथ अपने ख़र्च करते रहेंगे, हमारे कामों में अल्लाह तआला बे-इंतिहा बरकत डालता रहेगा। इंशा अल्लाह तआला। "

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 2 से 8 फरवरी 2007 ई.)

72. हॉलैंड में मस्जिदों के निर्माण की तहरीक

"याद रखें कि दूसरों का ध्यान अपनी ओर खींचने का बहुत बड़ा माध्यम मस्जिदें भी हैं इस ओर भी मैं ध्यान दिलाना चाहता हूँ। इस समय तक हॉलैंड में मस्जिद की शक्ल में जमाअत अहमदिया की केवल एक मस्जिद है जो हेग (Hague) में है और इसकी तामीर हुए भी शायद लगभग 50 साल से अधिक का समय हो गया है। उस समय भी इस मस्जिद का ख़र्च लजना ने दिया था जिन में अधिकतर संख्या पाकिस्तान की लजना की थी। फिर यह ननस्पैट का सैंटर ख़रीदा गया जहां इस समय जुम्अः अदा कर रहे हैं यह भी मर्कज़ ने ख़रीद कर दिया है। हॉलैंड की जमाअत ने तो अभी तक एक भी मस्जिद नहीं बनाई। अब आप की संख्या यहां इतनी है कि यदि इरादा करें और क़ुर्बानी की सोच पैदा हो तो एक एक करके अब मस्जिदें बना सकते हैं। जब काम शुरू करेंगे तो अल्लाह तआला मदद भी करेगा इंशा अल्लाह। ख़ैर उम्मत होने की एक बहुत बड़ी निशानी यह है कि ख़ुदा तआला पर पूर्ण ईमान होता है। जब अल्लाह तआला पर ईमान भी है तो फिर उस पर भरोसा भी करें और यह काम शुरू करें तो अल्लाह तआला इंशा अल्लाह मदद भी करेगा ... यदि यह लक्ष्य रखें कि प्रत्येक दो साल में कम से कम एक शहर में जहां जमाअत की संख्या अच्छी है मस्जिद बनानी है (यहां दो तीन तो शहर हैं) तो फिर उसके बाद और अधिक जमाअत फैलेगी। इंशा अल्लाह।"

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 26 से 2 फरवरी 2007 ई.)

72. पाकिस्तान तथा हिन्दुस्तान से बाहर रहने वाले बच्चे वक़्फ़-ए-जदीद का सारा बोझ उठाएं

"तो वक़्फ़-ए-जदीद को जिस तरह हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह

ने पाकिस्तान में बच्चों के सपुर्द किया था मैं भी शायद पहले कह चुका हूँ, नहीं तो अब यह ऐलान करता हूँ कि बाहर की दुनिया भी अपने बच्चों के सुपुर्द वक़्फ़-ए-जदीद की तहरीक करे और इसकी उनको आदत डालें, तो बच्चों की बहुत बड़ी संख्या है जो इंशा अल्लाह तआला बहुत बड़े ख़र्च पूरे कर लेगी और यह कोई बोझ नहीं होगा। जब आप छोटी-छोटी चीज़ों में से बचत करने की उनको आदत डालेंगे इसी तरह बड़े भी करें और यदि यह हो जाए तो हिन्दुस्तान के ख़र्च और कुछ हद तक अफ़्रीक़ा के ख़र्च भी पूरे किए जा सकते हैं।"

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 2 से 8 फरवरी 2007 ई.)

74. सहाबा की औलादें क़ुर्बानियों के आदर्श स्थापित करें

"अत: जो सहाबा की औलादें हैं मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि उन्होंने क़ुर्बानियां दीं तो उन्होंने मुक़ाम पाया। अब हम में सहाबा तो कोई नहीं है केवल इतना कह देना कि हम सहाबी की नस्ल में से हैं, काफ़ी नहीं होगा। यदि इस युग में बाद में आने वाले इस हक़ीक़त को समझते हुए जिहाद भी करेंगे और हिजरत भी करेंगे तो वे आप लोगों से कहीं आगे न बढ़ जाएं। इसलिए इस ओर ध्यान रखें और आपके बड़ों ने जो क़ुर्बानियां कीं और जिस स्थान को पाया उसको अगली नस्लों में भी स्थापित रखने की कोशिश करें।"

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 9 से 15 मार्च 2007 ई.)

75. अरब वालों को हक़ (अहमदियत) कुबूल करने की दावत

"अत: हे अरब देश के निवासियो ! आज मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रतिनिधि की हैसियत से ख़ुदाए रब्बुल आलमीन के नाम पर तुम से निवेदन करता हूँ कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस रूहानी बेटे की आवाज़ पर लब्बैक कहो जिसकी शिक्षा और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क़ की कुछ बातें या उदाहरण मैंने प्रस्तुत किए हैं यदि इस मसीह महदी के कलाम में डूब कर देखो तो ख़ुदाए वाहिद से सम्बन्ध और प्यार

और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क़ और आपके लिए ग़ैरत की भावनाओं के इलावा इस में और कुछ नज़र नहीं आएगा। साफ़ दिल होकर यदि देखोगे तो जमाअत अहमदिया का 100 साल से अधिक का इतिहास इस बात का गवाह है कि जमाअत की ज़िन्दगी का प्रत्येक क्षण ख़ुदा तआला के समर्थन तथा सहायता के नज़ारे देखता रहा है। आज इस सैटेलाइट के द्वारा आप तक व्यापक पैमाने पर यह पैग़ाम पहुंचना भी इस समर्थन तथा सहायता की एक कड़ी है।"(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 13 से 19 अप्रैल 2007 ई.)

76. रब्वा वालों को आदर्श बनने की तहरीक

"पिछले दिनों पाकिस्तान से आने वाले किसी व्यक्ति ने मुझे लिखा कि मैं रब्वा गया था वहां फ़जर और इशा पर मस्जिदों में हाज़िरी बहुत कम लगी। ये वहां वालों के लिए चिन्ता का क्षण भी है। रब्वा तो एक आदर्श है और पिछले कुछ सालों से अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इस ओर बहुत ध्यान हो गया था। आने जाने वालों की भी बड़ी रिपोर्टें आती थीं कि रब्वा में मस्जिदों की हाज़िरी बढ़ गई है बल्कि बाज़ारों में भी कारोबार के समय में दुकानें बंद करके नमाज़ें हुआ करती थीं। यद्यपि कि मुझे इस व्यक्ति की बात पर इतना यक़ीन तो नहीं आया। मैं तो रब्वा के बारे में सुधारणा ही रखता हूँ परन्तु यदि इस में सुस्ती पैदा हो रही है तो वहां के रहने वालों को इस ओर स्वयं ध्यान देना चाहिए। एक कोशिश जो आपने की थी, नेकियों को अपनाने की जो एक क़दम बढ़ाया था वह क़दम अब आगे बढ़ता चला जाना चाहिए। अल्लाह करे कि मेरी सुधारणा हमेशा बनी रहे।" (अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 4 से 10 मई 2007 ई.)

77. योग्य ओहदेदार चुनें

"अत: जमाअत का भी काम है कि ऐसे ओहदेदारों को चुना करें जो उसके योग्य हों और व्यक्तिगत रिश्तों और सम्बन्धों और बिरादरियों के चक्कर में न पढ़ें और इसी तरह समय के ख़लीफ़ा की नुमाइंदगी में उहदेदारों की भी बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है और उन जमाअत के लोगों की भी बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है (जैसा कि मैंने पहले

कहा) जिन पर भरोसा करते हुए बेहतरीन ओहदेदार चुनें। करने का काम सपुर्द किया गया है और मालिक के माल की निगरानी यही है जो प्रत्येक जमाअत के व्यक्ति ने, जिसको राय देने का हक़ दिया गया है करनी है।

यह साल जमाअत के चुनाव का साल है। कुछ स्थानों से कुछ शिकायतें आती हैं, प्रत्येक स्थान से तो नहीं, इसलिए मैं अपनी ज़िम्मेदारी अदा करते हुए ऐसे स्थान जहां भी हैं,जो भी हैं और जहां यह अवस्था पैदा होती है उनको इस ओर ध्यान दिला रहा हूँ। जैसा कि मैंने कहा कि प्रत्येक काम दुआ से करें और दुआएं करते हुए अपने ओहदेदार चुना करें और हमेशा दुआओं से आगे भी अपने उहदेदारों की मदद करें और मेरी भी मदद करें। अल्लाह मुझे भी आपके लिए दुआएं करने की तौफ़ीक़ देता रहे और जो काम मेरे सपुर्द है उसको अदा करने की उत्तम रंग में तौफ़ीक़ देता रहे।"

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 27 से 3 मई 2007 ई.)

78. ईसाई पादरियों और बुरे उलमाओं के उपद्रव से सुरक्षित रहने के लिए दुआ की तहरीक

"एक दुआ की ओर भी इस समय ध्यान दिलाना चाहता हूं। जैसा कि हम सब जानते हैं कि जमाअत अहमदिया की शिक्षा हमेशा यह रही है और इंशा अल्लाह रहेगी कि प्यार और मुहब्बत का पैग़ाम समस्त दुनिया तक पहुंचाना है। यदि इस्लाम और जमाअत के ख़िलाफ़ ग़लत प्रोपोगण्डा किया जाता है तो बिना किसी गाली गलौज के हम तर्कों से इसका जवाब देते हैं और इंशा अल्लाह तआला देते रहेंगे। यह हमारा फ़र्ज़ है और इस्लाम का सिर बुलन्द करना हमारा ओढ़ना बिछौना है। अल्लाह तआला की तौहीद का पैग़ाम जिससे प्यार, मुहब्बत और सलामती के चश्मे फूटते हैं दुनिया में फैलाना हमारा मक़सद है।

पिछले कुछ सालों से अरब देशों में इस्लाम पर ईसाइयत की ओर से ऐसे हमले किए जा रहे थे जिनका जवाब साधारण मुसलमानों तो क्या बल्कि उनके उलमा के पास भी नहीं था और न है और न हो सकता है जब तक वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कलाम से फ़ैज़ न पाएं। तो उसके जवाब के लिए हमारे अरब

भाइयों ने एम.टी.ए. के दोनों वन (One) और टू (Two) चैनल्ज़ पर प्रोग्रामों का एक सिलसिला शुरू किया और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से शुक्रिया के बेशुमार ख़त और फैक्स साधारण मुसलमानों की ओर से भी और बड़े बड़े स्कालर्ज़ की ओर से भी आए कि हम तो बड़े बेचैन थे कि कोई उनका जवाब दे .... इस पर वहां के जो ईसाई पादरी और उलमा हैं, वे घबरा गए और उनमें से एक ने वहां मिस्र में जो सम्बन्धित विभाग है इसके ख़िलाफ़ अदालत में मुक़द्दमा दायर कर दिया है कि अहमदियों को कैसे इजाज़त दी गई है।" (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 15 से 21 जून 2007 ई)

79. रिश्तेदारों के हुक़ूक़ अदा करने की ओर ध्यान दें

"अत: अपने रिश्तेदारों के हुक़ूक़ की अदायगी की ओर भी ध्यान दें। मिस्कीनों के अधिकारों की अदायगी की ओर भी ध्यान दें। यहां इन पश्चिमी देशों में जो अल्लाह तआला के फ़ज़लों से सुविधाएं प्राप्त कर चुके हैं अपने प्रियों को, ऐसे प्रिय जो अधीन नहीं बल्कि रिश्तेदार है, जो ग़रीब देशों में रहते हैं और जिनकी माली सुविधाएं नहीं, उनको भी समय समय पर तोहफ़े भेजते रहा करें।

पाकिस्तान में भी और दूसरे देशों में भी मेरी जानकारी के अनुसार कुछ ऐसे ख़ानदान हैं जो अपनी बेहतर शिक्षा के कारण या बेहतर कारोबार के कारण सम्पन्न हैं। उन को भी अपने-अपने देशों में अपने ज़रूरतमंद भाइयों का ख़्याल रखना चाहिए और यह ख़्याल ऐसा हो कि उस में उपकार जताना न हो बल्कि اِيْتَآئِ ذِى الْقُرْبٰى का दृश्य प्रस्तुत कर रहा हो, दिल की गहराइयों से सेवा हो रही हो। इस आदेश के अधीन यह मदद हो रही हो कि दायाँ हाथ यदि दे रहा है तो बाएं हाथ को ख़बर न हो। यह तरीक़ा है जिस से दूसरे का स्वाभिमान भी बना रहता है। यह तरीक़ है जिससे समाज में सलामती फैलती है और यह तरीक़ा है जिससे एक दूसरे के लिए दुआओं से परिपूर्ण समाज का भी निर्माण होता है। आजकल पाकिस्तान में भी महंगाई बहुत है, दुनिया में सामान्यत: महंगाई बढ़ गई है और सुना है कि कुछ सफेदपोश जो हैं उनको सफ़ेद पोशी की मर्यादा स्थापित रखना भी मुश्किल हो गया है। परन्तु अहमदी की तो बहरहाल यह कोशिश होनी चाहिए कि यह जो

मर्यादा है हमेशा स्थापित रहे, किसी के आगे वे हाथ फैलाने वाला न हो। परन्तु जो अज़ीज़ रिश्तेदार बेहतर हालात में हैं उनको चाहिए कि ऐसे तरीक़ पर कि जिससे किसी किस्म का एहसास न हो उनकी मदद की जाए।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 29 जून से 6 जुलाई 2007 ई.)

80. रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक की तहरीक

"अत: प्रत्येक अहमदी को अपने अन्दर यह एहसास पैदा करना चाहिए कि हम सलामती के शहज़ादे के नाम पर धब्बा लगाने वाले न हों। यदि हम अपने रिश्तों का ध्यान रखने वाले, उनसे उपकार का सुलूक करने वाले, उनको दुआएं देने वाले, और उनसे दुआएं लेने वाले न होंगे तो उन लोगों से किस तरह उपकार का सुलूक कर सकते हैं, उन लोगों से किस तरह उपकार का सम्बन्ध बढ़ा सकते हैं, उन लोगों का किस तरह ख़्याल रख सकते हैं जिनसे पारिवारिक रिश्ते भी नहीं हैं।

कुछ उहदेदारों के बारे में भी शिकायतें होती हैं कि बीवी बच्चों से अच्छा सुलूक नहीं होता। पहले भी मैं वर्णन कर चुका हूँ, इस ज़ुल्म की सूचनाएं कई बार इतनी प्रचुरता से आती हैं कि तबीयत बेचैन हो जाती है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क्या इन्क़िलाब पैदा करने आए थे और कुछ लोग आप की ओर सम्बन्धित होकर बल्कि जमाअत की ख़िदमतें अदा करने के बावजूद, कुछ ख़िदमतें अदा करने में बड़े पेश पेश होते हैं इसके बावजूद, किस-किस तरह अपने घर वालों पर ज़ुल्म जारी रखे हुए हैं। अल्लाह रहम करे और उन लोगों को अक़्ल दे। ऐसे लोग जब सीमा से बढ़ जाते हैं और समय के ख़लीफ़ा के इल्म में बात आती है तो फिर उन्हें सेवाओं से भी वंचित कर दिया जाता है। फिर शोर मचाते हैं कि हमें सेवाओं से वंचित कर दिया तो यह पहले सोचना चाहिए कि एक ओहदेदार की हैसियत से हमें क़ुरआन के आदेशों पर कितना अनुकरण करने वाला होना चाहिए। सलामती फैलाने के लिए हमें कितनी कोशिश करनी चाहिए। (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 22 जून से 28 जून 2007 ई)

81. यतीमों का ध्यान रखने के लिए फ़ंड में दिल खोल कर हिस्सा लेने की तहरीक

"मैं यहां यह वर्णन कर दूं कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत में यतीमों का ध्यान रखने का निज़ाम है, पाकिस्तान में भी एक कमेटी बनी हुई है जो नियमित समीक्षा लेकर उनकी शिक्षा का, उनके रहन सहन का सम्पूर्ण ख़्याल रखती है और इसी तरह दूसरे देशों में भी, विशेष रूप से अफ़्रीकन देशों में भी अल्लाह के फ़ज़ल से कोशिश की जाती है कि उनकी ज़रूरतें पूरी की जाएं। इसके लिए यतीमों का ध्यान रखने के लिए एक फ़ंड है, इस में भी जमाअत के लोगों को दिल खोल कर मदद करनी चाहिए ताकि अधिक से अधिक यतीमों की ज़रूरतें पूरी की जा सकें।" (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 22 जून से 28 जून 2007 ई.)

82. मरियम शादी फ़ंड में हिस्सा लेने के लिए याददहानी

"इसी तरह ग़रीब बच्चियों की शादियों के लिए जो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहेमहुल्लाह ने मरियम फ़ंड की तहरीक की थी। शुरू में तो इस ओर बहुत ध्यान था और जमाअत ने भरपूर हिस्सा लिया, बच्चियों की शादियों में कोई रोक नहीं थी। अब भी अल्लाह के फ़ज़ल से कोई रोक तो नहीं है परन्तु जिस प्रचुरता से, जिस शौक़ से जमाअत के लोग इस में हिस्सा ले रहे थे और चन्दा देते थे, रकमें आ रही थीं इस तरह अब नहीं आ रहीं। तो इस ओर भी जमाअत को और ख़ासतौर पर सामर्थ्य रखने वाले लोगों को ध्यान देना चाहिए। ये यतीमों, ग़रीबों और मिस्कीनों से उत्तम सुलूक है जो यक़ीनन उन उत्तम सुलूक करने वालों के लिए जन्नत की ख़ुशख़बरी देता है। अल्लाह और उसके रसूल उसे दारुस्सलाम की ख़ुशख़बरी देते हैं कि उन्होंने कुछ लोगों की बेहतरी और सलामती के लिए कोशिश की, उनकी तकलीफों को दूर करने की कोशिश की। (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 22 जून से 28 जून 2007 ई)

83. ग़ैरज़रूरी ख़र्चों और कर्ज़ों से बचने और किफ़ायत से काम लेने की तहरीक

"हमारे यहाँ जैसा कि मैंने कहा था कि एक बड़े वर्ग में ग़ैर ज़रूरी ख़र्चों के लिए

क़र्ज़ लिया जाता है, इस बात की निशानदही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाई है। जैसे निकाह पर ग़ैर ज़रूरी ख़र्च है, शादी वलीमा पर ग़ैर ज़रूरी ख़र्च है, जमाअत के एक वर्ग में दुनिया के दिखावे के कारण ग़ैर ज़रूरी ख़र्च होते हैं। जमाअत में जो शादी के लिए सहायता दी जाती है और एक Reasonable किस्म की रक़म दी जाती है कि सादगी से शादी हो सके। परन्तु कुछ लोग इस तरह पीछे पड़ जाते हैं कि हमें निकाह और वलीमा के लिए भी इतनी-इतनी रक़म चाहिए, यदि सहायता नहीं मिल सकती तो क़र्ज़ दे दिया जाए। जबकि जानते हैं कि उन में क़र्ज़ वापस करने की ताक़त नहीं होती, निर्धारित समय पर अदा नहीं कर सकते। फिर दरख़्वास्तें शुरू हो जाती हैं कि यदि जमाअत न दे तो हम इधर उधर कहीं से लेंगे और जब लेते हैं तो फिर क़र्ज़ को उतारने के लिए मदद की दरख़्वास्तें शुरू हो जाती हैं। तो यह एक सिलसिला है जब क़र्ज़ बिना ज़रूरत लिया जाता है तो उसको यह कहना चाहिए कि वह एक शैतानी चक्कर में पड़ जाते हैं और इस तरह घर की शान्ति बर्बाद होती है। कर्ज़ों के बाद जो हालत होती है इससे तबीअतों में चिड़चिड़ापन पैदा हो जाता है। पति-पत्नी बच्चों के सम्बन्ध ख़राब हो रहे होते हैं। घरों में ज़ुल्म हो रहे होते हैं तो एक अस्थायी ख़ुशी के लिए वह अपने आपको मुश्किलों में गिरफ़्तार कर लेते हैं चाहे बिना सूद के ही क़र्ज़ ले रहे हों परन्तु सूद पर क़र्ज़ लेना तो बिल्कुल ही लानत है।" (अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 6 से 12 जुलाई 2007 ई.)

84. अहमदी सलामती के पैग़ाम को दुनिया में फैलाएं

"अत: यह अहमदी की ज़िम्मेदारी है कि इस सलामती के पैग़ाम को चारों ओर फैलाता चला जाए। प्रत्येक दिल में यह बात भर दे कि इस्लाम उग्रवाद का नहीं बल्कि प्यार और मुहब्बत का पैग़ाम देने वाला है। प्रत्येक सतह पर इस्लाम की शिक्षा अमन और सलामती को स्थापित करने की शिक्षा है। इस्लाम ने क़ौमों और देशों के स्तर पर भी अमन और सलामती स्थापित करने के लिए जो सुन्दर शिक्षा दी है इसका मुक़ाबला न कोई मानवीय सोच कर सकती है और न कोई मज़हब कर सकता है। इस सुन्दर शिक्षा पर अनुकरण से ही दुनिया में अमन और सलामती स्थापित हो सकती

है।" (अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 13 से 19 जुलाई 2007 ई)

85. अहमदी वकीलों को असायलम वालों से कम फ़ीस लेने और किसी की मजबूरी का नाजायज़ लाभ न उठाने की तहरीक

"यहां मैं यह भी कह दूं कि पहले मैंने अहमदी वकीलों को भी कहा था, कुछ असायलम (Asylum) के केस आते हैं तो अहमदी वकील जो फ़ीस चार्ज करते हैं इसको ज़रा इतनी रखा करें कि उस बेचारे व्यक्ति को बिल्कुल ही मक़रूज़ न कर दिया करें या कम से कम यह शर्त हो कि यदि तुम्हारा केस पास हो जाता है तो उसके बाद जब तुम्हें काम मिल जाएगा तो उस समय मुआहदा के अनुसार इतनी फ़ीस दे देना। परन्तु बहरहाल किसी की मजबूरी से नाजायज़ लाभ उठाना, किसी स्थान पर भी हो, इस्लाम इसकी हरगिज़ इजाज़त नहीं देता।" (अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 6 से 12 जुलाई 2007 ई)

86. क़ज़ा (इस्लामिक न्याय प्रणाली) के फ़ैसलों के अनुपालन की तहरीक

"अत: प्रत्येक अहमदी को यह याद रखना चाहिए कि झगड़ों की अवस्था में (जो व्यक्तिगत झगड़े होते हैं), अपने दिमाग़ में सोचे हुए फ़ैसलों को महत्व न दिया करें बल्कि निज़ाम की ओर से जो फ़ैसला हो जाए, क़ज़ा की ओर होने वाला फैसला जो कई स्तरों में से गुज़रने के बाद होता है उसे महत्व दें। फिर समय के ख़लीफ़ा की ओर से भी उन्हीं फ़ैसलों को जारी किया जाता है। इसके बावजूद यह ज़ोर होता है कि नहीं, फ़ैसला ग़लत हुआ है। ठीक है, फ़ैसला ग़लत हो सकता है परन्तु फ़ैसला करने वाले की नीयत पर शंका नहीं करनी चाहिए क्योंकि इससे फिर फ़ित्ना पैदा होता है और फिर निरन्तर उसके ख़िलाफ़ बातें करना और फिर यह कहना कि अब मुझे सांसारिक अदालतों में भी जाने की इजाज़त दी जाए तो यह एक मोमिन की शान नहीं है। मोमिन वही हैं जो ख़ुशी से इस फ़ैसले को स्वीकार कर लें। यदि किसी ने अपनी लफ़्फ़ाज़ी की कारण या दलीलों के कारण अपने हक़ में फ़ैसला करवा लिया है या ग़लत रिकार्ड के कारण फ़ैसला करवा लिया है और दूसरा पक्ष अपनी कम इल्मी के कारण या रिकार्ड

में कमी के कारण अपने हक़ से वंचित भी हो गया है तो फिर अल्लाह के रसूल का यह इरशाद है कि ग़लत फ़ैसला करवाने वाला आग का गोला लेता है या अपने पेट में भरता है तो फिर वह उसका और ख़ुदा का मामला हो गया। मोमिनों की शान यह है कि फ़ित्ने से बचें। निज़ाम के ख़िलाफ़ बातें करके, बोल कर अपने हक़ से वंचित किए जाने वाला व्यक्ति यदि अपने विचार में, अपने ख़्याल में अपने आपको सही भी समझ रहा है तो अपने आप को और अपने घर वालों को भी ईमान से वंचित कर रहा होता है। कई बार यह चीज़ देखने में आती है। अतः मोमिन की एक बहुत बड़ी विशेषता आज्ञापालन है। अमन स्थापित करने के लिए थोड़ा सी हानि भी बर्दाश्त करनी हो तो कर लेनी चाहिए और आज्ञापालन को प्रत्येक चीज़ पर हावी करना चाहिए और इसको प्रत्येक चीज़ पर मुक़द्दम समझना चाहिए। अल्लाह की रज़ा के हुसूल की कोशिश करनी और उस पर भरोसा करना ऐसी चीज़ है जिस पर अल्लाह तआला इनामों से नवाज़ता है और फिर ऐसे माध्यमों से मदद फ़रमाता है कि इन्सान सोच भी नहीं सकता यह भी अल्लाह तआला का वादा है।"

(दैनिक अल्फ़ज़ल रब्वा 21 अगस्त 2007 ई.)

87. गरीबों के सम्मान का ध्यान रखें

"अपनी प्रयोग की गईं चीज़ों में से देते हैं या पहने हुए कपड़ों में से देते हैं तो ऐसे लोगों को अपने भाइयों, बहनों के सम्मान का ध्यान रखना चाहिए। बेहतर है कि यदि तौफ़ीक़ नहीं है तो तोहफ़ा न दें या यह बता कर दें कि यह मेरी प्रयोग की हुई चीज़ है यदि पसन्द करो तो दूं। फिर कुछ लोग लिखते हैं कि हम ग़रीब बच्चियों की शादियों के लिए अच्छे कपड़े देना चाहते हैं जो हम ने एक-आध दिन पहने हुए हैं और फिर छोटे हो गए या किसी कारण प्रयोग नहीं कर सके। तो इसके बारे में स्पष्ट हो कि चाहे ऐसी चीज़ें ज़ैली तन्ज़ीमों, लजना इत्यादि के द्वारा या ख़ुद्दामुल अहमदिया के द्वारा ही दी जा रही हों या व्यक्तिगत तौर पर दी जा रही हों तो उन ज़ैली तन्ज़ीमों को भी यही कहा जाता है कि यदि ऐसे लोग चीज़ें दें तो ग़रीबों की इज़्ज़त का ध्यान रखें और इस तरह, इस शक्ल में दें कि यदि वह चीज़ देने के योग्य है तो दी जाए।

यह नहीं कि ऐसी उतरन जो बिल्कुल ही प्रयोग के योग्य न हो वह दी जाए दाग़ लगे हों, पसीने की बू आ रही हो कपड़ों में से। तो ग़रीब की भी एक इज़्ज़त है इसका भी ख़्याल रखना चाहिए। और ऐसे कपड़े यदि दिए जाएं तो साफ़ करवा कर, धुला कर, ठीक करवा कर, फिर दिए जाएं।" (दैनिक अल्फ़ज़्ल 4 सितम्बर 2007 ई.)

88. मानव सेवा की तहरीक

"यहां यह एक और बात का भी निवेदन करना चाहता हूँ कि जमाअत की सतह पर यह मानव सेवा की तौफ़ीक़ हो रही है। जमाअत के मुख़लसीन को मानव सेवा के उद्देश्य से अल्लाह तआला तौफ़ीक़ देता है, वे बड़ी बड़ी रक़में भी देते हैं जिन से इन्सानियत की सेवा की जाती है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अफ़्रीक़ा में भी और रब्वा और क़ादियान में भी वाक़फ़ीन डाक्टर और टीचर सेवा कर रहे हैं। परन्तु मैं प्रत्येक अहमदी डाक्टर, प्रत्येक अहमदी टीचर और प्रत्येक अहमदी वकील और प्रत्येक वह अहमदी जो अपने पेशे के लिहाज़ से किसी भी रंग में इन्सानियत की सेवा कर सकता है, ग़रीबों और ज़रूरतमंदों के काम आ सकता है, उनसे यह कहता हूँ कि वे ज़रूर ग़रीबों और ज़रूरतमंदों के काम आने की कोशिश करें। तो अल्लाह तआला आपके माल तथा जान में पहले से बढ़कर बरकत प्रदान करेगा इंशा अल्लाह। यदि आप सब इस नीयत से यह सेवा दे रहे हों कि हम ने युग के इमाम के साथ एक बैअत का अहद बाँधा है जिसको पूरा करना हम पर फ़र्ज़ है तो फिर देखें कि इंशा अल्लाह, अल्लाह तआला के फ़ज़्लों और बरकतों की किस क़दर बारिश होती है जिसको आप सँभाल भी नहीं सकेंगे।" (दैनिक अल्फ़ज़्ल रब्वा 4 सितम्बर 2007 ई.)

89. कम से कम 70 प्रतिशत नौमुबाईन को तजनीद में सम्मिलित करने की तहरीक

"हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मैंने तहरीक की थी कि कम से कम 70 प्रतिशत नौ मुबाईन को निज़ाम जमाअत का सक्रिय हिस्सा बनाया जाए। इस सिलसिला में भी कई देशों में अच्छा काम हुआ है। जैसे घाना ने 98 हज़ार नौमुबाईन से सम्पर्क स्थापित किए

हैं। हुज़ूर अनवर ने कई और देशों के नौमुबाईन से सम्पर्क स्थापित करने की संख्या वर्णन फ़रमाई।" (अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 31 अगस्त से 6 सितम्बर 2007 ई)

90. इस्लाम की सुन्दर शिक्षा दूसरों तक पहुंचाएं

"प्रत्येक अहमदी का फ़र्ज़ है कि जहां विरोधियों के आरोपों का खण्डन करें, उनको जवाब दें वहां उन शरीफ़ों का शुक्रिया भी अदा करें जो अभी तक अख़्लाक़ी क़द्रें रखे हुए हैं। उन तक इस्लाम की सुन्दर शिक्षा पहुंचाएं। उनके अंदर जो नेक फ़ितरत और इंसाफ़ पसन्द इन्सान हैं, उन को एक ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचाएं। आज दुनिया में जो चारों ओर परेशानी है इसके कारण बताएं कि तुम लोग ख़ुदा से दूर जा रहे हो, अपने पैदा करने वाले ख़ुदा को पहचानो, उन में भी एक ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचाएं उनको बताएं कि दिल का चैन और सुकून दुनिया की चकाचौंध और व्यर्थ काम में नहीं है, नशा में नहीं है। दिली सुकून के लिए यहां के लोग नशा की बहुत आड़ लेते हैं, प्रत्येक प्रकार का नशा करते हैं। उनको बताएं कि वास्तविक शान्ति ख़ुदा की ओर आने में है, इसलिए उस ख़ुदा को पहचानो जो एक है और समस्त क़ुदरतों का मालिक है। जो लोग हद से बढ़े हुए हैं और मज़हब से दूर जाने वाले हैं या मज़हब और खासतौर पर इस्लाम से उपहास करने वाले हैं, उनके पीछे न चलो। अल्लाह तआला हद से आगे बढ़ने वालों की पकड़ भी करता है, वेलडर (Wilders) जैसे लोगों को भी बताएं कि अल्लाह के अज़ाब को दावत न दो, और अल्लाह की ग़ैरत को न भड़काओ।"

(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 14 सितम्बर से 20 सितम्बर 2007 ई.)

91. निज़ाम-ए-जमाअत के आज्ञापालन की भावना पहले से बढ़कर अपने दिलों में पैदा करें

"हमेशा याद रखें कि एक अहमदी पर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल जमाअत में सम्मिलित होने के कारण और जमाअत बन कर रहने के कारण हैं। निज़ाम जमाअत के साथ सम्बन्धित रहने के कारण हैं। आज्ञापालन की भावना के अधीन प्रत्येक सेवा करने के कारण हैं। अत: उस चीज़ को हमेशा सम्मुख रखें और निज़ाम

की आज्ञापालन की भावना पहले से बढ़कर अपने दिलों में पैदा करें। जैसा कि मैं पहले भी कई बार कह चुका हूँ कि प्रत्येक अहमदी अल्लाह तआला के आदेशों पर अनुकरण करते हुए अल्लाह तआला से सम्बन्ध के स्तर को बुलन्द से बुलन्द करने की कोशिश करता रहे। निज़ाम की आज्ञापालन के उत्तम आदर्श दिखाए। हमेशा याद रखें कि ख़िलाफ़त की आज्ञापालन, निज़ाम की आज्ञापालन से जुड़ी है।"

(दैनिक अल्फ़ज़्ल रब्वा 30 अक्तूबर 2007 ई)

92. ख़िलाफ़त अहमदिया की नई सदी के लिए दुआओं की तहरीक की याददहानी

"अत: ख़िलाफ़त अहमदिया की नई सदी में दाख़िल होने के लिए भी विशेष रूप से उसका होकर दुआओं में समय गुज़ारना चाहिए ताकि हमेशा उसके इनामों के वारिस बनते चले जाएं। इसलिए मैंने लगभग दो साल हुए ख़ुत्बा जुम्अ: में ख़िलाफ़त की नई सदी के स्वागत के लिए दुआओं और कुछ नफ़ली इबादतों के साथ दाख़िल होने की तहरीक की थी जिसमें लगभग दस महीने का समय रह गया है जब जमाअत पर अल्लाह तआला के इस इनाम को सौ साल पूरे हो जाएँगे। मुझे उम्मीद है कि इस पर अनुकरण भी हो रहा होगा।

आज मैं उन दुआओं के बारे में याददहानी करवाते हुए प्रत्येक अहमदी से कहता हूँ कि बाक़ी समय में एक ध्यान के साथ उन दुआओं को पढ़ें ताकि जब हम अगली सदी में अल्लाह तआला के हुज़ूर विनम्रता करते हुए दाख़िल हों तो अल्लाह तआला के उपकारों और इनामों से पहले से बढ़कर जमाअत अहमदिया फ़ैज़ पा रही हो और अल्लाह तआला अपने उपकार जमाअत पर नाज़िल कर रहा हो।

अत: प्रत्येक अहमदी पहले से बढ़कर अपनी दुआओं के नज़राने अल्लाह तआला के हुज़ूर प्रस्तुत करने वाला बन जाए। प्रत्येक दुआ जिसके पढ़ने की तहरीक की गई थी अपने अंदर बरकतें समेटे हुए है और ख़िलाफ़त के हवाले से भी इसका बड़ा महत्व है। उनका मैं संक्षिप्त वर्णन कर देता हूँ।"(अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 2 से 8 नवम्बर 2007 ई)

93. देग साफ़ करने वाली मशीन बनाने की तहरीक

"फिर बर्तनों की सफाई धुलाई के स्तर को बेहतर करने के लिए हमारे एक इंजीनियर ने देगें धोने के लिए एक सैमी ऑटोमैटिक (Semi Automatic) मशीन बनाई है जिसमें और अधिक बेहतरी पैदा करके इसको ऑटोमैटिक करने की कोशिश कर रहे हैं जिससे एक मिनट में एक देग इस तरह चमक जाती है जैसे कभी उसको प्रयोग ही नहीं किया गया हो बिल्कुल नई हो। तो यह भी इस बार के बेहतर इंतिज़ामों में एक नई चीज़ सम्मिलित है। मैंने इंजीनियर साहिब को कहा है कि और ऐसी मशीनें बनाएँ और इस में और अधिक बेहतरी पैदा करें और इसको पेटैंट (Patent) करवा लें।" (अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 28 सितम्बर से 4 अक्तूबर 2007 ई.)

94. ख़िलाफ़त जुबली जलसा की तैयारी की तहरीक

"अगले साल इंशा अल्लाह तआला ख़िलाफ़त जुबली के साल का जलसा आ रहा है। उम्मीद है इंशा अल्लाह तआला हाज़िरी भी इस साल से अधिक होगी और इंतिज़ाम भी इस साल से शायद अधिक व्यापक करने पड़ें। इसलिए अल्लाह तआला के इस पैग़ाम को भी पहले से बढ़ कर याद रखें कि तुम्हारे इंतिज़ामों की बेहतरी मेरी अधीन है। इसलिए हमेशा मेरे पहले इनामों पर, उपकारों पर, रहमानियत के जल्वे दिखाने पर पहले से बढ़कर शुक्रगुज़ार बंदे बनते हुए मेरे आगे झुकने वाले बनो। इंतिज़ामों को उत्तम रंग में करने के लिए केवल अपनी होशियारी और चालाकी और अक़्ल और मेहनत पर भरोसा न करो अल्लाह तआला के लिए किए गए कामों में, उसी समय बरकत पड़ेगी जब अल्लाह तआला का सच्चा बन्दा बनते हुए जब अल्लाह तआला का शुक्र करने वाला बन्दा बनते हुए अल्लाह के आगे झुकते हुए उसका शुक्रगुज़ार बनोगे।" (अल्फ़ज़्ल इंटरनेशनल 28 सितम्बर से 4 अक्तूबर 2007 ई)

95. अनाथों की देखभाल करने की तहरीक

"अत: हमेशा अनाथों की जरूरतों का ध्यान रखो और ख़ासतौर पर जो धर्म के लिए जान क़ुर्बान करते हैं उनका तो बहुत अधिक ध्यान रखना चाहिए ताकि उनके

बच्चों के दिल में कभी यह ख़्याल न आए कि हमारे बाप ने धर्म के लिए जान क़ुर्बान करके हमें अकेला छोड़ दिया है। बल्कि प्रत्येक शहीद की औलाद को इस बात पर गर्व हो कि हमारे बाप ने धर्म के लिए जान क़ुर्बान करके स्थायी ज़िन्दगी पा ली और हमारे सिर भी गर्व से ऊंचे हो गए। हमेशा ऐसे बच्चों को यह ख़्याल रहे कि दुनियावी लिहाज़ से जमाअत ने और जमाअत के लोगों ने हमें यूं अपने अंदर समो लिया है और हमारी ज़रूरतों और हमारे हुक़ूक़ का यूं ख़्याल रखा है जिस तरह एक भाई अपने भाई का रखता है। जिस तरह एक बाप अपने बच्चे का रखता है। हमेशा उन बच्चों में यह एहसास रहे कि हमारी तर्बीयत का हमारे भाइयों ने भी और जमाअत ने भी हक़ अदा कर दिया है। यदि किसी बच्चे का बाप उसके लिए जायदाद छोड़कर मरा है तो उसके क़रीबी और इर्द गिर्द के लोग उसकी जायदाद पर नज़र रखते हुए उसे हड़प करने की कोशिश न करें, ख़त्म करने की कोशिश न करें। झूठे तरीक़े से यतीम को उसके बाप की जायदाद से वंचित करने की कोशिश न करें।"

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 7 दिसम्बर से 13 दिसम्बर 2007 ई.)

96. तहरीक जदीद और वक़्फ़ जदीद में नौमुबाईन को विशेष तौर पर सम्मिलित करें

"जिस नेक फ़ितरत ने अहमदियत क़बूल की है उसने तो अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राप्त करने और मोमिनों की जमाअत में सम्मिलित होने के लिए अहमदियत क़बूल की है। उहदेदार भी और मुरब्बी भी उसे जब तक इन बातों की सही समझ नहीं पैदा करवाएंगे उनको किस तरह पता चल सकता है कि इन तहरीकों का क्या महत्व है। अतः जैसा कि मैं पहले भी कई बार कह चुका हूँ कि तहरीक जदीद और वक़्फ़ जदीद में नौ-मुबाइन को विशेष रूप से ज़रूर सम्मिलित करें। चाहे वे मामूली सी रक़म देकर सम्मिलित हों और उन को इन विशेषताओं में से किसी से भी वंचित न रहने दें जो मोमिनों की जमाअत की विशेषता है। अल्लाह तआला प्रत्येक फ़र्द जमाअत और उहदेदार को इस रूह को समझने की तौफ़ीक़ दे और क़ुर्बानियों में बढ़ने की तौफ़ीक़ दे।" (दैनिक अल्फ़ज़ल रब्वा 27 दिसम्बर 2007 ई.)

97. किसी से ज़ुल्म का बदला ज़ुल्म से नहीं लेना

"आज अहमदी भी याद रखें कि इंशा अल्लाह तआला यह नज़ारा दुहराया जाने वाला है और हमने किसी से दुश्मनी का बदला ज़ुल्म और प्रतिशोध से नहीं लेना बल्कि वह मार्ग अपनाना है जो हमारे सामने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने आदर्श से प्रस्तुत फ़रमाया। अहमदियत के विरोधी भी याद रखें कि तुम जो अहमदियों को अक़्ल से ख़ाली समझते हो कि उन्होंने मसीह मौऊद को मान कर यह बड़ा ग़लत फ़ैसला लिया है। यह समय बताएगा कि अक़्ल से ख़ाली कौन हैं और अक़्ल वाला कौन है। ग़लत फ़ैसला करने वाला कौन है और सही फ़ैसला करने वाला कौन है। अतः विरोध बंद करो और सर्वशक्तिमान ख़ुदा के सामने झुको और उससे हिकमत माँगो। यह ज़ुल्म जो अहमदियों पर हो रहा है इंशा अल्लाह तआला यह अधिक देर नहीं चलेगा। फ़तह हमारी है और निःसन्देह हमारी है और आज प्रत्येक को यह समझ लेना चाहिए कि इंशा अल्लाह वह दिन दूर नहीं जब यह नज़ारे निकट होने वाले हैं।" (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 4 जनवरी से 11 जनवरी 2008 ई.)

98. क़लम के द्वारा जिहाद की तहरीक

"हकम और अदल ने यह फ़ैसला दिया है कि इस युग में मेरे आने के साथ तीर तथा तलवार बंदूक़ के साथ जिहाद बंद है और अब जिहाद के लिए तुम भी वही माध्यम प्रयोग करो जो विरोधी प्रयोग कर रहे हैं या तुम्हारा दुश्मन प्रयोग कर रहा है। विभिन्न लिट्रेचर और मीडिया के द्वारा इस्लाम के ख़िलाफ़ नफ़रत फैला रहा है तो तुम भी लिट्रेचर के द्वारा न केवल उसकी प्रतिरक्षा करो बल्कि क़ुरआन की शिक्षा को फैला कर प्रमाणित करो कि यही एक शिक्षा है जो नजात दिलाने वाली शिक्षा है जो कि एक ख़ुदा की ओर से है।" (अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 1 फरवरी से 7 फरवरी 2008 ई.)

99. अधिक से अधिक बच्चों को वक़्फ़ जदीद में सम्मिलित करने की तहरीक

"हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हर साल वक़्फ़ जदीद का माली जायज़ा लिया

जाता है और नए साल का ऐलान किया जाता है उसी कारण मैं भी आज वक़्फ़ जदीद के बारे में बात कर रहा हूँ। यह साल 2008 ई. का पहला जुम्अः है और इसके साथ मैं वक़्फ़ जदीद के 51 वें नए साल का ऐलान करता हूँ। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने बच्चों से कहा था कि तुम वक़्फ़ जदीद का बोझ उठाओ और अपने बड़ों को बता दो कि अहमदी बच्चे भी जब एक फ़ैसला करके खड़े हो जाएं तो बड़े-बड़े इन्क़िलाब लाने में मददगार बन जाते हैं। अतः अहमदी बच्चों और बच्चियों ने इस तहरीक में एक दूसरे से बढ़कर माली क़ुर्बानियां देने की कोशिश की। अब जबकि यह वक़्फ़ जदीद की तहरीक समस्त दुनिया में जारी है तो बच्चे और माँ बाप भी इस ओर विशेष ध्यान दें और सेक्रेट्रियान वक़्फ़ जदीद, जमाअत के निज़ाम और इसी तरह नासिरात और अत्फ़ाल की ज़ैली तंज़ीमें भी इस ओर ध्यान दें कि अधिक से अधिक बच्चे वक़्फ़ जदीद के चन्दे में सम्मिलित हों।"

100. जमाअत और ज़ैली तंज़ीमें ऐसे प्रोग्राम बनाएँ जिन से हमारे क़ुर्बानियों के स्तर बुलन्द हों

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि नौमुबाईन के जमाअत से सम्बन्ध में मज़बूती तभी पैदा होती है जब वे माली क़ुर्बानी में सम्मिलित होते हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से नौमुबाईन इस हक़ीक़त को समझ गए हैं। वे जमाअत से सम्बन्ध, हज़रत मसीह मौऊद से मुहब्बत और इख़लास में फ़ना होने की मन्ज़िलें दौड़ते हुए तय कर रहे हैं। अतः नए या पुराने अहमदियों में से जो कमज़ोर हैं वे याद रखें कि निरन्तर कोशिश और कोशिश उन्हें वह स्थान दिलाएगी जो अल्लाह तआला की रज़ा को प्राप्त करने का स्थान है। इंतिज़ामिया का भी कर्तव्य है कि जमाअत के लोगों और नौमुबाईन को इसका महत्व बताएं और जब तक उहदेदारों के अपने क़ुर्बानी के स्तर नहीं बढ़ेंगे उनकी बात का प्रभाव नहीं पड़ेगा। इस युग में जब चारों ओर माद्दियत की अधिकता है माली क़ुर्बानी अख़लाकी सुधार का एक बहुत बड़ा माध्यम है। अब जबकि हम कुछ महीनों में ख़िलाफ़त अहमदिया की नई सदी में दाख़िल होने वाले हैं, जमाओ निज़ाम और ज़ैली तंज़ीमें ऐसे प्रोग्राम बनाएँ जिनसे हमारे क़ुर्बानियों के प्रत्येक प्रकार

के स्तर बुलन्द हों और अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राप्त करने की तड़प प्रत्येक में पैदा हो जाए।

101. आंतरिक एवं बाह्य सफाई की तहरीक

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि पवित्रता से ज़ाहरी सफाई भी अभिप्राय है। अल्लाह तआला बातिनी (आन्तरिक) सफाई के साथ ज़ाहरी सफाई भी पसन्द फ़रमाता है। स्वच्छता और सफाई के बारे में ख़ासतौर पर हिदायत है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जुम्अः वाले दिन विशेष रूप से नहाने और ख़ुशबू इत्यादि लगाने का आदेश दिया है। मस्जिदों में ऐसी चीज़ खा कर आने से मना फ़रमाया है जिससे का मुँह से बू आती हो। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि पाकीज़गी और साफ़ सुथरा रहना ईमान का एक हिस्सा है। फिर हुज़ूर अनवर ने मन की पवित्रता के हवाले से कुछ एक बुराइयों की निशानदेही की ताकि उन बुराइयों को अपने अंदर से निकाल बाहर फेंका जाए और मन की पवित्रता वास्तविक रंग में हो। फ़रमाया उनमें से एक हसद है, झूठ है और क़र्ज़ लेकर वापस न करने की आदत है। आजकल के परिवेश में इन बातों ने बहुत मसले पैदा किए हुए हैं। फ़रमाया कि दिलों की पवित्रता यदि स्थापित रखनी है और इस पवित्र करने वाले की शिक्षा से लाभ उठाना है तो इन बुराइयों से बचने की प्रत्येक को कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला हमें इस महान रसूल और पवित्र करने वाले की शिक्षा पर अनुकरण करते हुए उन लोगों में सम्मिलित करे जिनके बारे में ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि वे सफल हो गया जो पवित्र हुआ। अल्लाह तआला हमेशा हमें नेक लोगों में सम्मिलित करता रहे।

102. नमाज़ बाजमाअत के क़ियाम की ओर विशेष ध्यान देने की तहरीक

ख़ुदा तआला का आदेश है कि तुम स्वयं भी नमाज़ों की ओर ध्यान दो और अपने घर वालों को भी ध्यान दिलाओ क्योंकि यह तुम्हारे ही लाभ के लिए है।

इस दुनिया में भी इसके फल हैं और आख़िरत में भी मुत्तक़ी ही है जो कामयाबी पाने वाला होगा। अत: अल्लाह तआला ये नमाज़ें फ़र्ज़ करके तुम पर कोई टैक्स नहीं लगा रहा बल्कि अपने जन्म के उद्देश्य को पूरा करने वाले इन्सान को इनामों से नवाज़ रहा है। हुज़ूर अनवर ने नमाज़ों की अवस्था नमाज़ पढ़ने के समय विभिन्न हालतों और अंगों की हरकतों की हिकमत और उनको अदा करने के तरीक़ा के बारे में हज़रत मसीह मौऊद के उपदेशों के हवाले से बड़े विस्तार के साथ रोशनी डाली। हज़रत मसीह मौऊद फ़रमाते हैं कि नमाज़ से बढ़कर और कोई वज़ीफ़ा नहीं है क्योंकि इस में अल्लाह तआला की प्रशंसा है इस्तिग़फ़ार है और दरूद शरीफ़, समस्त वज़ीफ़े और दुआ का मजमुआ यह नमाज़ है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अत: हम अहमदियों का काम है कि न केवल नमाज़ों में बाक़ायदगी अपनाएं। बल्कि हमारे शरीर का प्रत्येक ज़र्रा और हमारी रूह भी उसके आगे झुक जाए और हमारे सीने से उबल उबल कर वे दुआएं निकलें जो हमें ख़ुदा का मुक़र्रब बना दें। अल्लाह करे कि ऐसा ही हो।

103. ख़िलाफ़त से सम्बन्धित पुस्तकों की परीक्षा लेने की मुबारक तहरीक

सय्यदना हज़रत अक़दस ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने शत वर्षीय ख़िलाफत जुबली के शुभ अवसर पर विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया पर यह उपकार किया कि सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो की ख़िलाफत से सम्बन्धित विभिन्न पुस्तकों को पढ़ने और उन की परीक्षा लेने की तहरीक फरमाई। अल्हम्दो लिल्लाह इस के द्वारा नई नस्लों पर जहां ख़िलाफत का महत्व प्रकट हुआ वहां सौ वर्षों के इतिहास में अहमदिया ख़िलाफत जिस तरह के उतार चढ़ाव से गुज़री है और जिन विरोध का समाना करना पड़ा है और जिस प्रकार अल्लाह तआला का समर्थन इसे प्राप्त हुआ, उनका ज्ञान होगा और लोगों के अन्दर ख़िलाफत से मुहब्बत पैदा होकर इस का महत्व स्पष्ट हो गया होगा और वे भी अपने बुज़ुर्गों की तरह

रूहानी तथा आकाशीय व्यवस्था को अपने जीवन का इसी तरह हिस्सा समझेंगे जिस के बिना उनका जीवन बेकार है।

ख़िलाफत के बारे में जिन पुस्तकों को परीक्षा के लिए निर्धारित किया गया था उन में पहली पुस्तक "मन्सब-ए-ख़िलाफत" दूसरी पुस्तक "आइना-ए-सदाक़त" और तीसरी पुस्तक "ख़िलाफत हक़्क़ा इस्लामिया" है इन तीनों किताबों के अध्ययन और परीक्षा से पहले जमाअत के लोगों ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की पुस्तक अल्वसीयत की परीक्षा दी थी।

पहले पुस्तक अलवसीयत की परीक्षा लेने और फिर ख़िलाफत से सम्बन्धित पुस्तकों की परीक्षा लेना यह बताता है कि वसीयत का निज़ाम तथा ख़िलाफत का निज़ाम वास्तव में एक अनिवार्य आकाशीय व्यवस्था है। और जमाअत के लोगों को इस का ज्ञान होना चाहिए कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस पुस्तक में अपने बाद ख़िलाफत के बारे में स्पष्ट भविष्यवाणी फरमाई है। और एक ओर जहां आप ने अहमदिया ख़िलाफत को क़ुदरते सानिया के रूप में वर्णन फरमा कर अपने बाद एक चिरस्थायी ख़िलाफत के निज़ाम की ख़ुशख़बरी प्रदान की। तो साथ ही मुबारक निज़ाम को चलाने के लिए वसीय्यत के निजाम का भी वर्णन फरमा दिया कि मोमिनों की एक जमाअत जहां तक्वा तथा पवित्रता एवं दुआओं से समय के ख़लीफ़ा की सहायता करेगी वहां अपने प्रिय मालों के द्वारा भी वे उसका साथ देंगे।

पुस्तक 'अल-वसीयत' के बाद जिस दूसरी पुस्तक की परीक्षा होनी है उसका नाम 'मनसब-ए-ख़िलाफ़त' है 'मनसब-ए-ख़िलाफ़त' वस्तुतः हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो का एक लेक्चर है जो आपने अपने ख़िलाफ़त के पहले वर्ष अर्थात 1914 ई में पहली मज्लिस शूरा में ख़लीफ़ा के स्थान और उसके काम और इसी तरह ख़िलाफ़त के महत्व पर रोशनी डाली है।

'आईना सदाक़त' हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि की वह प्रसिद्ध पुस्तक है जो आपने ख़िलाफत का इनकार करने वालों के सरग़ना मौलवी मुहम्मद अली

साहिब के एक निबन्ध के उत्तर में लिखी थी जो कि उन्होंने "द स्पिल" के नाम से प्रकाशित किया था। मौलवी मुहम्मद अली साहिब के निकट हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद ख़िलाफ़त का निज़ाम नहीं बल्कि सदर अन्जुमन अहमदिया ही स्थापित रहनी चाहिए थी। मौलवी मुहम्मद अली साहब ने यह भी लिखा कि नऊज़ बिल्लाह मिन ज़ालिक ख़िलाफत की बैअत करने वालों ने और विशेष रूप से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की ओर अतिश्योक्ति से भरी हुई बातें वर्णन कर के अकारण आपके स्थान को बढ़ाया है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो ने किताब 'आइना सदाक़त' में प्रमाणों सहित फरमाया है कि न केवल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने बाद ख़िलाफत के स्थापना की ख़ुशख़बरियाँ दी थीं बल्कि ये ख़ुशख़बरियाँ तो कुरआन तथा हदीस की रोशनी में दी थीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने स्पष्ट रूप से फरमाया था कि मेरे बाद अल्लाह तआला इस तरह इस जमाअत की सुरक्षा फरमाएगा जिस तरह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहो के दौर में हुआ था। इसी तरह आप ने फरमाया कि क़ुदरत-ए-सानिया का प्रादुर्भाव आप के देहान्त के बाद होगा। जब अन्जुमन ही क़ुदरत सानिया थी तो इस की स्थापना तो आप ने अपने मुबारक युग में 1908 ई में कर दी थी। जिस के पहले अध्यक्ष आदरणीय मौलाना मुहम्मद नूरुद्दीन साहिब थे जिन को अल्लाह तआला ने ख़लीफ़ा अव्वल बनाया था। और जिस के पहले सेक्रेटरी स्वयं मौलवी मुहम्मद अली साहिब थे। इसी तरह आप ने फरमाया कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी आख़रीन के युग में नबुव्वत की पद्धति पर ख़िलाफत की भविष्यवाणी की थी फिर किस तरह मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद ख़िलाफत की स्थापना न होगी।

ये समस्त उपरोक्त वर्णन की गई बातें विस्तार से बताने के बाद आप ने

स्पष्ट रूप से फरमाया कि मौलवी मुहम्मद अली साहिब और उनके कुछ मानने वाले ख़िलाफत का इन्कार केवल इस कारण कर रहे थे कि उन को विश्वास था कि उन्हें किसी ने ख़लीफ़ा नहीं बनाना और यदि उन को यह विश्वास होता तो वे कभी ख़िलाफत का इन्कार न करते। केवल अपने अहंकार के लिए उन्होंने ख़िलाफत का इन्कार किया और फिर इस इन्कार के लिए अपनी ओर से कुछ इस तरह के तथाकथित तर्क तैय्यार किए जो इतने कमज़ोर थे कि 1914 ई के कुछ सालों बाद ही जमाअत के 99 प्रतिशत आबादी को पता चल गया कि मौलवी मुहम्मद अली साहिब और उन के मानने वाले लोगों के तर्क तथा प्रमाण की कुछ भी वास्तविकता नहीं। और समस्त अहमदियों को पता चल गया कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आस्थाओं से मौलवी मुहम्मद अली साहिब और उन के साथियों ने मुंह मोड़ा है, न कि हज़रत मुस्लेह मौऊद और आप की जमाअत ने।

परीक्षा में इस किताब का दूसरा अध्याय निर्धारित किया गया था जो कि सिलसिला के मतभेदों के इतिहास और उसके सही हालात पर आधारित है इसमें आपने तर्क सहित स्पष्ट फरमाया कि मौलवी मोहम्मद अली साहिब और उनके साथी हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में कमजोर आस्था रखते थे और केवल सांसारिक उद्देश्य के अधीन ही इन लोगों ने अहमदियत को स्वीकार किया था यही कारण है कि इतिहास से स्पष्ट है कि यह लोग इस्लाम की तब्लीग़ के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के नाम को छुपाना और जमाअत अहमदिया की आस्थाओं को पीठ पीछे डालना जरूरी समझते थे। अत: प्रथम ख़िलाफ़त में उन्होंने हज़रत मौलाना नूरुद्दीन ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो की बैअत को केवल एक ऐसी बैअत के तौर पर लिया जो केवल नमाज़ पढ़ाने और निकाह पढ़ाने और खुत्बा पढ़ाने तक सीमित हो। इसके उत्तर में हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो ने उनको समझाया कि जब तक ख़लीफ़ा का हर मामले में संपूर्ण आज्ञापालन न

हो वह बैअत किसी काम की नहीं और फिर उन लोगों की पुनः बैअत ली। यह बीमारी उनके भीतर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाहो के युग में बहुत अधिक बढ़ गई क्योंकि वे लोग आपको हर प्रकार से अपने से छोटा समझते थे और "अना ख़ैरुन मिन्हो" का नारा लगाते थे और फिर अन्त में ये लोग ख़िलाफत-ए-सानिया के चयन के बाद क़ादियान छोड़कर लाहौर चले गए। वहां से हज़रत मुस्लेह मौऊद के विरोध में लेखों और भाषणों के द्वारा गन्द उछालते रहे। मौलवी मुहम्मद अली साहब और उनके साथी जब क़ादियान से गए हैं जो सिलसिला के जिम्मेदार बुजुर्गों में से थे तो जाते समय बिना बताए सारा ख़ज़ाना अपने साथ ले गए और सदर अन्जुमन अहमदिया के ख़ाज़ाने में केवल कुछ आने छोड़ कर चले गए। इसी तरह जाते समय सिलसिला के कुछ कीमती सामान भी साथ ले गए और जाते समय कहा कि अब क़ादियान में क्या रह गया है अब यहां इतनी वीरानी हो गई है कि यहां पर उल्लू बोलेंगे। (नऊज़ बिल्लाह)

दूसरी ओर ख़िलाफ़त का इन्कार करने वालों के चले जाने के 94 वर्ष के बाद अल्लाह तआला ने क़ादियान को इतनी उन्नति प्रदान की है और किस तरह ख़िलाफ़त के द्वारा अल्लाह तआला का समर्थन और सहायता मिल रही है इसे लिखने के लिए कई हज़ार पृष्ठों पर आधारित पुस्तकों की आवश्यकता है। ख़िलाफ़त पर ईमान लाने वाली जमाअत आज क़ादियान से निकल कर संसार के 190 देशों में फैल गई है और अहमदी ख़लीफ़ाओं के फलों के द्वारा हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह इल्हाम कि "मैं तेरे प्रचार को धरती के किनारों तक पहुंचाऊंगा। मैं तुझे बरकत पर बरकत दूंगा यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बढ़कर ढूंढेंगे।" बड़ी शान के साथ पूरा हुआ। इस 100 वर्ष के ज़माने में विरोधों के तूफान उठे और तेज़ आंधियां चलीं परन्तु ख़िलाफ़त की बरकत से अल्लाह तआला ने न केवल जमाअत को सुरक्षित रखा बल्कि दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति प्रदान की और दूसरी ओर वे लोग जिन्होंने इन्कार किया और उनकी हालत यह है कि वे आज अपनी हस्ती को भी खो चुके हैं और

अपनी मस्जिदों सहित स्वयं को दूसरों के हवाले कर चुके हैं।

इसी पुस्तक में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाहो तआला एक स्थान पर फरमाते हैं: अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत और अपने प्रताप का एक ज़बरदस्त प्रमाण दिया उसने अपनी हस्ती को ताज़ा निशानों के साथ फिर प्रकट किया और वह फिर अपने समस्त शौकत और वैभव से चमका और उसने दूसरों के साक्ष्यों पर भी गवाही देकर बताया कि अहमदियत उसका स्थापित किया हुआ पौधा है उसको कोई नहीं उखाड़ सकता ख़िलाफ़त उसका लगाया हुआ वृक्ष है उसको कोई नहीं काट सकता।

आख़िर पर अल्लाह तआला से दुआ है कि अल्लाह तआला हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को सेहत तथा सलामती वाली लम्बी आयु प्रदान फ़रमाते हुए ख़िलाफ़त ख़ामसा को अपने विशेष फ़ज़ल से रहमतों, बरकतों और ग़ैरमामूली विजय वाला बना दे। और विश्वव्यापी इस्लाम के ग़ल्बा की मुबारक घड़ी को निकट से निकट ले आए। आमीन और हम सब को और हमारी क़यामत तक आने वाली नस्लों को हमेशा सच्ची इस्लामी ख़िलाफ़त से जुड़ते हुए ख़िलाफ़त की बरकतों से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

मर्हबा ए आने वाले मर्हबा सद मरहबा
रहमतो फ़ज़्लो करम की बारिशें तुझ पर सदा

नौंवा अध्याय
अन्तिम शब्द

सम्माननीय पाठको ! अल्लाह तआला ने सारे संसार में आज केवल और केवल जमाअत अहमदिया को यह सम्मान और सौभाग्य प्रदान किया है कि वह الاوهى الجماعة की वास्तविक पात्र है। और यही वह जमाअत है जो एक अनुपालन योग्य इमाम की बैअत में मज़बूत बुनियाद का नक़्शा प्रस्तुत कर रही है। सारी धरती पर यही एक जमाअत है जो एक आवाज़ पर उठती और एक आवाज़ पर बैठती है। हाँ हाँ यही वह जमाअत है जहां मुहब्बत के चश्मे दोनों ओर से जारी हैं। एक ओर यदि जमाअत का प्रत्येक व्यक्ति अपने ख़लीफ़ा के लिए क़ुर्बान होने के लिए तैयार है और अपनी दुआओं में उसे याद रखता है तो दूसरी ओर यही वह जमाअत है जिसका इमाम अपनी जमाअत की भलाई और नेकी के लिए रातों को उठ उठ कर अपने प्यारे ख़ुदा के हुज़ूर रोता और गिड़गिड़ाता है।

मोमिनों के दिल में समय के ख़लीफ़ा से मुहब्बत की ये मशअलें अल्लाह तआला ने जलाई हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस हक़ीक़त को एक अवसर पर यूं वर्णन फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला अपने किसी बन्दा से मुहब्बत करता है तो हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम से फ़रमाता है कि मैं अमुक व्यक्ति से मुहब्बत करता हूँ। अत: तुम भी उससे मुहब्बत करो। अत: वह भी उससे मुहब्बत करते हैं। फिर हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम आकाश वालों में यह ऐलान फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला अमुक व्यक्ति से मुहब्बत फ़रमाता है अत: तुम भी उससे मुहब्बत करो। अत: आकाश वाले भी उससे मुहब्बत करते हैं और फिर ज़मीन वालों में भी उसकी मक़्बूलियत फैलाई जाती है। (सही बुख़ारी)

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक और पहलू से इस विषय पर यूं प्रकाश डाला है :

"ख़ुदा के नबियों और रसूलों में जो एक आकर्षण और कशिश पाई जाती है और हज़ारों लोग उनकी ओर खींचे जाते हैं और उनसे मुहब्बत करते हैं यहां तक कि अपनी जान भी उन पर फ़िदा करना चाहते हैं इसका कारण यही है कि मानव जाति की भलाई और हमदर्दी उनके दिल में होती है। यहां तक कि वे माँ से भी अधिक इन्सानों से प्यार करते हैं ओर अपने आप को दुख और दर्द में डाल कर भी उनके आराम के इच्छुक होते हैं। आख़िर उनकी सच्ची कशिश नेक रूहों को अपनी ओर खींचना शुरू कर देती है।" (चश्मा-ए-मसीही, रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 378)

अतः ख़िलाफ़त अहमदिया की सुनहरी तारीख़ में हम जो सामान्यतः ये दृश्य देखते हैं तो यह इस कारण है कि यह ख़िलाफ़त अल्लाह तआला की स्थापित की हुई है। अल्लाह तआला इससे मुहब्बत करता है और वही अपने निर्धारित ख़लीफ़ा के दिल में मानव जाति की सच्ची और निःस्वार्थ मुहब्बत डालता है और फिर ख़ुदा के आदेश से, उसके फ़रिश्तों की सहायता तथा तहरीक से यह मुहब्बत, मुहब्बत को खींचती और अपनी ओर खींचती है और चूँकि समय के इमाम की मोमिनों से और मानव जाति से इस मुहब्बत की नींव मुहब्बत-ए-इलाही पर होती है इसलिए वह बिल्कुल सच्ची, साफ़ और रोशन होती है।

दूसरी ओर वे लोग जो ख़ुदा के इस प्यारे बंदे से मुहब्बत करते हैं उनकी ये मुहब्बत भी विशेष रूप से ابْتِغَاءَ لِوَجْهِ اللّٰهِ होती है और उनका लक्ष्य यह होता है कि इस मुहब्बत के माध्यम से वे अल्लाह तआला की मुहब्बत और उसकी प्रसन्नता को प्राप्त कर सकें। मानवीय फ़ितरत है कि इन्सान उन लोगों से भी प्यार करता है जो उसके प्यारों से मुहब्बत और प्यार का व्यवहार करें तो वह ख़ुदा जिसने इन्सान को यह फ़ितरत प्रदान की है वह ऐसे लोगों से जो उसके प्यारों से मुहब्बत और अक़ीदत और सम्मान और इख़लास और वफ़ा का सम्बन्ध रखेंगे क्यों प्यार नहीं करेगा। अतः इस तरीक़ा से वे लोग अल्लाह की मुहब्बत में और अधिक आगे बढ़ते और उसकी रहमतों और बरकतों से बढ़ चढ़ कर हिस्सा पाते हैं।

और फिर चूँकि वे अपने इमाम से मुहब्बत के नतीजा के तौर उनकी बताई हुई

बातों, उनकी सुनहरी नसीहतों पर अनुकरण करने की कोशिश करते हैं तो समय के इमाम की दुआ और ध्यान की बरकत से वे नेकी और तक़्वा और योग्यता में और अधिक उन्नति करते हैं। उनकी बुराइयां उनकी कमज़ोरियाँ दूर होना शुरू होती हैं। वे श्रखलाबद्ध से अन्धकारों से नजात पा कर नूर में आगे बढ़ते हैं यहां तक कि एक दुनिया देखती है कि ये लोग दूसरों से विभिन्न हैं। उनके चेहरों पर ख़ुदा के इश्क़ का नूर चमकता है और उस नूर की बरकत से वे अपने माहौल में भी रोशनी फैलाने वाले बनते हैं।

चूँकि समय के ख़लीफ़ा से उनकी मुहब्बत की बुनियाद मुहब्बत-ए-इलाही पर होती है इसलिए उनके आपस के सम्बन्धों में भी यही ख़ुदाई मुहब्बत प्रकट हो रही होती है और उन्हें सच्ची एकता प्राप्त होती है। वर्तमान में हज़रत अमीरुल मोमनीन द्वारा अफ़्रीक़ा में भी एक बार फिर यह नज़्ज़ारे ग़ैरमामूली चमक दमक़ के साथ देखने में आए। ये सब उस ख़ुदाई मुहब्बत के करिश्मे हैं और पवित्र क़ुरआन और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके महान रूहानी बेटे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम और आपके ख़ुलफ़ाए किराम की बरकतें हैं जिन्होंने اِعْتِصَامِ بِحَبْلِ اللّٰه के नतीजा में सब को भाईचारे की लड़ी में पिरो दिया है। वे लोग जो अहमदी होने से पहले, क़बाइली, नस्ली एवं क़ौमी हसदों के शिकार थे और एक दूसरे के जानी दुश्मन थे (और आज भी वे जो अहमदियत से बाहर हैं ऐसी ही दुश्मनियों की आग में जल रहे हैं) अहमदी होने के बाद ख़ुदा तआला की सच्ची तौहीद की बरकत से एक आकाशीय इमाम के हाथ पर भाई-भाई बन चुके हैं। ये सब दृश्य इस बात पर गवाह हैं कि ख़िलाफ़त हक़्क़ा इस्लामिया अहमदिया के द्वारा समस्त मानव जाति को उम्मते वाहिदा बनाने का काम तेज़ी से जारी है और इस पहलू से भी यह दिलकश दृश्य बहुत ही ईमान वर्धक और ख़ुदाई वादों के पूरा होने के रोशन निशान हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला इस में बढ़ाता चला जाए और बरकत दे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाहो अन्हो इस बारे में फ़रमाते हैं:

"देखो हम सारी दुनिया में तब्लीग़ इस्लाम कर रहे हैं परन्तु तुम ने कभी ग़ौर किया कि यह तब्लीग़ किस तरह हो रही है? एक केन्द्र है जिसके अधीन वे समस्त लोग जिनके दिलों में इस्लाम का दर्द है, इकट्ठे हो गए हैं और सामूहिक तौर पर इस्लाम के ग़लबा और इसके पुनर्जागरण के लिए कोशिश कर रहे हैं। वे देखने में कुछ लोग नज़र आते हैं परन्तु उनमें ऐसी शक्ति पैदा हो गई है कि वे बड़े बड़े काम कर सकते हैं। जिस तरह आकाश से पानी क़तरों के रूप में गिरता है फिर वही क़तरे धारें बन जाती हैं और वही धारें एक बहने वाले दरिया की शक्ल धारण कर लेती हैं। इस तरह हमें अधिक क़ुव्वत और शौकत प्राप्त होती चली जा रही है... इसका कारण केवल यह है कि अल्लाह तआला ने तुम्हें ख़िलाफ़त की नेअमत प्रदान की है।"

(दैनिक अल्फ़ज़ल रब्वा 25 मार्च 1951 ई)

इसी तरह फ़रमाया-

"इस्लाम कभी उन्नति नहीं कर सकता जब तक ख़िलाफ़त न हो। हमेशा इस्लाम ने ख़लीफ़ाओं के द्वारा उन्नति की है और भविष्य में भी इसी के द्वारा उन्नति करेगा।"

(दर्सुल क़ुरआन पृष्ठ 72 प्रकाशन नवम्बर 1921 ई.)

हमारी ज़िम्मेदारियाँ (हमारा दायित्व)

सम्माननीय पाठको ! अल्लाह तआला का हम पर यह महान उपकार है कि उस ने हमें सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाने की तौफ़ीक़ प्रदान की और आप को ख़ुदा तआला की ओर से भेजा गया मसीह और महदी के मानने की तौफ़ीक़ प्रदान की और आपके बाद स्थापित क़ुदरत-ए-सानिया अर्थात ख़िलाफ़त की बैअत की तौफ़ीक़ प्रदान की। ये इनाम सब इनामों से बढ़कर है और ये उपकार सब उपकारों से बढ़कर। दुनिया की समस्त दौलतें इस उपकार तथा इनाम के मुक़ाबला पर तुच्छ हैं। ख़ुदा तआला ने अपने विशेष फ़ज़्ल से आज सारी धरती पर केवल हमें और हाँ केवल हमें एक महान अमानत का अमीन बनाया है और महान इनाम से नवाज़ा है परन्तु याद रहे यह अमानत हमसे कुछ मांग करती है, यह सौभाग्य अपने साथ महान ज़िम्मेदारियाँ लेकर आया है। प्रत्येक अहमदी को हर समय

इन ज़िम्मेदारियों से अवगत रहना चाहिए और कोशिश करनी चाहिए कि अपने ईमान और कर्मों से इस ख़ुदाई नेअमत को अधिक से अधिक स्थायित्व और दृढ़ता प्रदान करने की कोशिश करें।

ख़ुदा का शुक्र

सम्माननीय पाठको ! ख़िलाफ़त की स्थापना और हमारा उसकी बैअत करके ख़िलाफ़त के क़दमों में आना इस में हमारी अपनी कोई व्यक्तिगत विशेषता नहीं है बल्कि अल्लाह तआला का हम पर महान उपकार है कि उस ने हमें ख़िलाफ़त के अधीन पनपने की तौफ़ीक़ प्रदान की। इसलिए हमें चाहिए कि हम अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें और उसकी प्रशंसा के तराने गाएँ कि उसने यह महान नेअमत हमें प्रदान की।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहेमहुल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

"हमारे लिए आवश्यक है कि हम उसके शुक्रगुज़ार बंदे बनकर अपनी ज़िन्दगियों के दिन गुज़ारें और जमाअत के अंदर एकता और इत्तिफ़ाक़ को हमेशा स्थापित रखें और इस हक़ीक़त को नज़र अंदाज न करें कि सब सम्मान और सारी वलायत ख़िलाफ़त राशिदा के पांव के नीचे है।"

(तामीर बैयतुल्लाह के 23 महान उद्देश्य पृष्ठ 116)

आज्ञापालन और वफादारी

क़ुदरत-ए-सानिया की दृढ़ता और मज़बूती का दूसरा माध्यम यह है कि समय के इमाम की सम्पूर्ण आज्ञापालन और वफ़ादारी का बेहतरीन आदर्श दिखाया जाए।

पवित्र क़ुरआन और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों में बार-बार कई स्थानों पर इमाम की आज्ञापालन की नसीहत फ़रमाई गई है अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन में फ़रमाया है कि:

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا

(सूरत अल-अहज़ाब आयत 72)

अर्थात जो अल्लाह और इसके रसूल की आज्ञापालन करेगा वह निःसन्देह बहुत बड़ी सफलता प्राप्त करेगा।

हमारे प्यारे आक़ा सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं कि :

"क़ुदरत-ए-सानिया ख़ुदा की ओर से एक बड़ा इनाम है जिस का मक़सद क़ौम को इकट्ठा करना और मतभेदों से बचाना है। यह जो लड़ी है जिसमें जमाअत मोतियों की तरह पिरोई हुई है यदि मोती बिखरे हों तो न तो सुरक्षित होते हैं और न ही सुन्दर दिखते हैं। एक लड़ी में पिरोए हुए हों तो सुन्दर और सुरक्षित होते हैं। यदि क़ुदरत-ए-सानिया न हो तो इस्लाम कभी उन्नति नहीं कर सकता, अतः इस क़ुदरत के साथ पूर्ण निष्ठा और मुहब्बत और वफ़ा और अक़ीदत का सम्बन्ध रखें और ख़िलाफ़त की आज्ञापालन की भावना की घोषणा करने वाला बनें।"

(दैनिक अल्फ़ज़ल रब्वा 30 मई 2003 ई)

अपने एक पैग़ाम में आप ने जमाअत के लोगों को फ़रमाया :

"यह ख़िलाफ़त की नेअमत है जो जमाअत की जान है। इसलिए यदि आप ज़िन्दगी चाहते हैं तो ख़िलाफ़त के साथ इख़लास और वफ़ा के साथ चिमट जाएं। पूरी तरह से जुड़ जाएं कि आपकी प्रत्येक उन्नति का राज़ ख़िलाफ़त से जुड़ने में ही छुपा है। ऐसे बन जाएं कि समय के ख़लीफ़ा की रज़ा आपकी रज़ा हो जाए। समय के ख़लीफ़ा के क़दमों पर आपका क़दम और समय के ख़लीफ़ा की प्रसन्नता आपका लक्ष्य हो जाए।" (मासिक ख़ालिद रब्वा सय्यदना ताहिर नम्बर मार्च अप्रैल 2004 ई.)

समय के ख़लीफ़ा से व्यक्तिगत सम्बन्ध

नबी का उत्तराधिकारी होने के हवाला से ख़लीफ़ा का स्थान बहुत बुलन्द होता है। अल्लाह तआला जब किसी व्यक्ति को ख़िलाफ़त के ताज से सरफ़राज़ फ़रमाता है तो वही इन्सान जो लोगों की नज़रों में कल तक एक साधारण इन्सान था अल्लाह तआला के नूर से प्रकाशित होकर एक नूरानी वजूद बन जाता है। वह नूर का स्रोत ही नहीं होता बल्कि उसके वजूद से दुनिया में ख़ुदा का नूर फैलने लगता है और वह उस

रूहानियत को फैलाने का केन्द्र बन जाता है। इस बुलन्द स्थान पर फ़ायज़ होने के बाद ख़ुदा तआला से उसका ऐसा क़रीबी सम्बन्ध पैदा हो जाता है कि ख़ुदा तआला उसको दुआ की क़बूलियत का चमत्कार प्रदान करता है ख़ुदा तआला स्वयं उसका उस्ताद (गुरू) बन कर उसे रूहानी ज्ञान प्रदान फ़रमाता है। इस महान तब्दीली के बारे में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने वर्णन फ़रमाया है:

"ख़लीफ़ा स्वयं अल्लाह तआला बनाता है और उसके चयन में कोई त्रुटि नहीं। वह अपने एक कमज़ोर बंदे को चुनता है जिसे लोग बहुत तुच्छ समझते हैं। फिर अल्लाह तआला उसको चुन कर उस पर अपनी महानता और प्रताप का एक जलवा प्रकट है और जो कुछ उसका था उस में से वह कुछ भी शेष नहीं रहने देता और ख़ुदा तआला की महानता और प्रताप के सामने सम्पूर्ण तौर पर फ़ना और बे-नफ़सी का चोला वह पहन लेता है और उसका वजूद दुनिया से ग़ायब हो जाता है और ख़ुदा की क़ुदरतों में वह छुप जाता है तब अल्लाह तआला उसे उठा कर अपनी गोद में बिठा लेता है।" (दैनिक अल्फ़ज़ल रब्वा, 17 मार्च 1967 ई)

क़बूलियत दुआ का जो स्तर समय के ख़लीफ़ा को प्रदान किया जाता है उसकी हिकमत हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह ने इन शब्दों में वर्णन फ़रमाई :

"अल्लाह तआला जिस किसी को मन्सब-ए-ख़िलाफ़त पर सरफ़राज़ करता है तो उसकी दुआओं की क़बूलियत को बढ़ा देता है क्योंकि यदि उसकी दुआएं क़बूल न हों तो फिर उसके अपने चयन का अपमान होता है।

समय के ख़लीफ़ा को ख़ुदा तआला की ओर से मिलने वाले नूर,ज्ञान तथा आध्यात्म और क़बूलियत के स्तर, दुआ से बरकत प्राप्त करने के लिए मोमिनों की एक अहम ज़िम्मेदारी यह है कि वह समय के ख़लीफ़ा के साथ मुहब्बत तथा अक़ीदत और फ़िदा होने का एक व्यक्तिगत और क़रीबी सम्बन्ध रखें।

यह वह नेअमत है जो अल्लाह तआला ने इस युग में हमें इतने अच्छे अंदाज़ में और इतनी सहूलत से उपलब्ध की है जैसी इससे पहले कभी न थी। समय के ख़लीफ़ा से व्यक्तिगत और फ़ैमिली मुलाक़ात की अवस्था आज प्रत्येक अहमदी को उपलब्ध

है। चाहे वह दुनिया के किसी देश में रहता हो, समय के ख़लीफ़ा के क़दमों में हाज़िर होकर वह यह सौभाग्य प्राप्त कर सकता है। फिर हुज़ूर अनवर के विश्वव्यापी दौरों के समय इन देशों के अहमदियों को यह सौभाग्य अपने देश में रहते हुए मिल जाती है। पत्रों,फैक्सों और ई मेलों के द्वारा हुज़ूर अनवर से सीधा सम्पर्क का पूरा निज़ाम मौजूद है। इससे भरपूर लाभ उठाना और समय के ख़लीफ़ा से निरन्तर सम्पर्क रखना हमारी अहम ज़िम्मेदारी है।

समय के ख़लीफ़ा के उपदेशों को सुनना

पवित्र क़ुरआन में मोमिनों की जमाअत का गुण समिअना वा अतअना के शब्दों में वर्णन किया गया है। वे हमेशा नेकी की बातों को ध्यान से सुनते, समझते और याद रखते हैं और फिर इन बातों पर दिल तथा जान से अनुकरण भी करते हैं। आज्ञापालन की पहली सीढ़ी सुनना है इसीलिए इस गुण को पहले रखा गया है। जो व्यक्ति सुनेगा नहीं वह अनुकरण कैसे कर सकेगा? आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों में भी निज़ाम से जुड़ने और निज़ाम के अगुवा की सम्पूर्ण आज्ञापालन का वर्णन बहुत अधिक मिलता है। एक हदीस में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- أُوْصِيْكُمْ بِتَقْوَى اللّٰهِ وَالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ

(तिरमिज़ी किताबुल ईमान, बाब अख़रज बिस्सुन्नत)

अनुवाद: मैं तुम को अल्लाह के तक़्वा की और सुनने की और आज्ञापालन करने की वसीयत करता हूँ।

इस हदीस से यह रहस्य की बात भी मिलती है कि तक़्वा को प्राप्त करने के दो बड़े माध्यम कान खोल कर हिदायतों को सुनना और उन पर अनुकरण करना है एक और हदीस में आता है।

(बुख़ारी किताबुल अहकाम, बाब वल इताअत) اِسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا

मानो एक सच्चे मुसलमान की शान यह है कि वह नसीहत को सुनने और उसका आज्ञापालन करने का मूर्त रूप होता है। आज्ञापालन के अन्तर्गत यह बात भी याद रखने के योग्य है कि पवित्र क़ुरआन की जिस सूरत में आयत इस्तिख़लाफ़ आई हुई

है उसी सूरत अन्नूर में अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमाया है कि:

لَا تَجۡعَلُوۡا دُعَآءَ الرَّسُوۡلِ بَیۡنَکُمۡ کَدُعَآءِ بَعۡضِکُمۡ بَعۡضًا (नूर- 64)

अनुवाद: तुम्हारे बीच रसूल का तुम्हें बुलाना इस तरह न बनाओ जैसे तुम एक दूसरे को बुलाते हो।

इस आयत की तफ़सीर करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया है:

"तुम्हारा फ़र्ज़ है कि जब भी तुम्हारे कानों में ख़ुदा तआला के रसूल की आवाज़ आए। तुम शीघ्र उस पर लब्बैक कहो और उसके अनुकरण के लिए दौड़ पड़ो कि इसी में तुम्हारी उन्नति का राज़ छुपा है बल्कि यदि इन्सान उस वक़्त नमाज़ पढ़ रहा हो तब भी उसका फ़र्ज़ होता है कि वह नमाज़ तोड़ कर ख़ुदा तआला के रसूल की आवाज़ का जवाब दे ... यही आदेश अपने दर्जा के अनुसार ख़लीफ़ा-ए-रसूलुल्लाह पर भी वारिद होता है और उसकी आवाज़ पर जमा हो जाना भी ज़रूरी होता है।"

(तफ़सीर कबीर भाग 6 पृष्ठ 408,409)

फिर आप ने यह भी फ़रमाया-

"जो जमाअतें अनुशासित होती हैं उन पर कुछ ज़िम्मेदारियाँ होती हैं जिनके बिना उनके काम कभी भी सही तौर पर नहीं चल सकते ... उन शर्तो और ज़िम्मेदारियों में से एक प्रमुख शर्त और ज़िम्मेदारी यह है कि जब वह एक इमाम के हाथ पर बैअत कर चुके तो फिर उन्हें इमाम के मुँह की ओर देखते रहना चाहिए कि वह क्या कहता है और उसके क़दम उठाने के बाद अपना क़दम उठाना चाहिए... इमाम का स्थान तो यह है कि वह आदेश दे और जिस को आदेश दिया गया उसका स्थान यह है कि वह पाबंदी करे।" (दैनिक अल्फ़ज़ल क़ादियान 5 जून 1937 ई)

अत: प्रत्येक अहमदी की एक बुनीयादी ज़िम्मेदारी यह है कि वह समय के ख़लीफ़ा के उपदेशों को ध्यान से सुने और उसकी ओर से आने वाली प्रत्येक आवाज़ पर कान धरे। समय के ख़लीफ़ा को अल्लाह तआला का ग़ैरमामूली समर्थन और राहनुमाई प्राप्त होती है। वह ख़ुदा तआला की आज्ञा और हिदायत से बोलता है। ज्ञान तथा इर्फ़ान के चश्मे उसकी मुबारक ज़बान पर जारी होते हैं। वह उन बातों की ओर

मोमिनों की जमाअत को बुलाता है जो समय की ज़रूरत और प्रत्येक सुनने वाले के लिए बहुत अधिक लाभदायक और बरकतों वाली होती हैं अतः हुज़ूर अनवर के अध्यात्मज्ञान से भरे वाले जुम्अः के ख़ुत्बों को नियमित और पूरे ध्यान से सुनना, बच्चों को सुनाना और समझाना प्रत्येक अहमदी की एक बुनियादी ज़िम्मेदारी है। हुज़ूर अनवर के ख़िताबों और पैग़ामों को सुनना भी बहुत अनिवार्य है। इन बातों को सुनने से ही हमें मालूम हो सकता है कि प्यारे हुज़ूर हम से क्या कर रहे हैं और हम से क्या आशाएं रखते हैं। अतः जो अहमदी इन ख़ुत्बों और ख़िताबों को बाक़ायदा ध्यानपूर्वक नहीं सुनेगा वह हुज़ूर के उपदेशों के अनुकरण के सौभाग्य से भी वंचित रह जाएगा।

एक और अवसर पर आपने फ़रमाया-

"याद रखो ... ईमान नाम है इस बात का कि ख़ुदा तआला के खड़े किए गए प्रतिनिधि के मुंह से जो भी आवाज़ बुलन्द हो उसका आज्ञापालन की जाए ... हज़ार बार कोई व्यक्ति कहे कि मैं मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर ईमान लाता हूँ। हज़ार बार कोई कहे कि मैं अहमदियत पर ईमान रखता हूँ। ख़ुदा के हुज़ूर उसके इन दावों की कोई क़ीमत नहीं होगी जब तक वह उस व्यक्ति के हाथ में अपना हाथ नहीं देता जिसके द्वारा ख़ुदा इस युग में इस्लाम को ज़िन्दा करना चाहता है। जब तक जमाअत का प्रत्येक व्यक्ति पागलों की तरह उसका आज्ञापालन नहीं करता और जब तक उसके आज्ञापालन में अपने जीवन का प्रत्येक लम्हा नहीं व्यतीत करता, उस समय तक वह किसी किस्म के सम्मान और बड़ाई का हक़दार नहीं हो सकता।"

(दैनिक अल्फ़ज़ल क़ादियान 15 नवम्बर 1946 ई. पृष्ठ 6)

हर तहरीक पर शौक से लब्बैक कहना

आज्ञापालन की मांग यह है कि समय के ख़लीफ़ा की ओर से आने वाली प्रत्येक आवाज़ पर शौक से लब्बैक कहा जाए। किसी इरशाद को भूलना या उसकी ओर ध्यान न देना एक अहमदी की शान नहीं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया :

बैअत वह है जिसमें पूर्ण आज्ञापालन किया जाए और ख़लीफ़ा के किसी एक

आदेश से भी मुंह न मोड़ा जाए। (मासिक अल-फ़ुर्क़ान रब्वा ख़िलाफ़त नम्बर मई जून 1967 पृष्ठ 28)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने फ़रमाया

ख़लीफ़ा उस्ताद है और जमाअत क़ा प्रत्येक व्यक्ति शागिर्द। जो लफ़्ज़ भी ख़लीफ़ा के मुँह से निकले उसका पालन किए बिना नहीं छोड़ना।

(दैनिक अल्फ़ज़ल क़ादियान 2मार्च1946 ई.)

फिर आप फ़रमाते हैं:

तुम सब इमाम के इशारे पर चलो और उसकी हिदायात से ज़र्रा भर भी इधर उधर न हो। जब वह आदेश दे बढ़ो और जब वह आदेश दे ठहर जाओ और जिधर बढ़ने का वह आदेश दे उधर बढ़ो और जिधर से हटने का वह आदेश दे उधर से हट जाओ।

(अनवार उल-उलूम जलद 14, पृष्ठ 515-516)

फिर आपने एक और अवसर पर फ़रमाया :

"ख़िलाफ़त के तो अर्थ ही यह हैं कि जिस समय ख़लीफ़ा के मुँह से कोई लफ़्ज़ निकले उस समय सब स्कीमों, सब परामर्शों और सब उपायों को फेंक दिया जाए और समझ लिया जाए कि अब वही स्कीम वही तजवीज़ और वही उपाय मुफ़ीद है जिस का समय के ख़लीफ़ा की ओर से आदेश मिला है। जब तक यह विचार जमाअत में न पैदा हो उस समय तक सब ख़ुत्बात व्यर्थ, समस्त स्कीमें झूठी और समस्त कोशिशें व्यर्थ हैं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 जनवरी 1936 ईं दैनिक अल्फ़ज़ल क़ादियान 31जनवरी 1936 ई)

औलाद को नसीहत

निज़ाम ख़िलाफ़त के सम्बन्ध में मोमिनों की एक और ज़िम्मेदारी यह भी है कि वे न केवल स्वयं ख़िलाफ़त के निज़ाम की सुरक्षा और उसकी मज़बूती के लिए सेवा के प्रत्येक मैदान में कोशिश करते रहें बल्कि अपनी औलाद में भी यही रूह और भावना पैदा करें। आज के बच्चे और नौजवान कल को जमाअत के अलमबरदार और प्रतिनिधि बनने वाले हैं। उनके दिलों में ख़िलाफ़त के निज़ाम की मुहब्बत पैदा करके

उनको इस बरकतों वाले निज़ाम से जोड़ना माता पिता की एक महान ज़िम्मेदारी है। ज़िन्दा और उन्नति करने वाली क़ौमों की यही निशानी है कि उनकी अगली नस्लें उन उद्देश्यों को बुलन्द रखने वाली हों जिन के लिए उनके पूर्वजों ने अपने समय में अपनी जानें कुर्बान कीं। इसी महत्व के सम्मुख हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने जमाअत से एक वादा लिया था जो आज भी याद रखने के योग्य है। वादे के शब्द यह थे।

हम ख़िलाफ़त की प्रणाली की सुरक्षा और इसकी दृढ़ता के लिए आख़िर दम तक कोशिश करते रहेंगे और अपनी औलाद और उन की औलाद को हमेशा ख़िलाफ़त से जोड़ने और उसकी बरकतों से लाभान्वित होने की नसीहत करते रहेंगे ताकि क़यामत तक ख़िलाफ़त अहमदिया सुरक्षित चली जाए और क़यामत तक सिलसिला अहमदिया के द्वारा इस्लाम का प्रचार प्रसार होता रहे और मुहम्मद रसूलुल्लाह का झंडा दुनिया के समस्त झंडों से ऊंचा लहराने लगे। हे ख़ुदा तू हमें इस वादे को पूरा करने की तौफ़ीक़ प्रदान कर। अल्ला हुम्मा आमीन। अल्ला हुम्मा आमीन। अल्ल हुम्मा आमीन। (दैनिक अल्फ़ज़ल रब्वा,16 फरवरी 1960 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने भी अपने एक पैग़ाम में जमाअत को इस बारे में याद दिलाया है। फ़रमाया :

इस्लाम, अहमदियत की मज़बूती और प्रकाशन और निज़ाम ख़िलाफ़त के लिए आख़िर दम तक कोशिश करनी है और इसके लिए बड़ी से बड़ी क़ुर्बानी प्रस्तुत करने के लिए हमेशा तैयार रहना है। और अपनी औलाद को हमेशा ख़िलाफ़त अहमदिया से जोड़ने की नसीहत करते रहना है। और उनके दिलों में समय के ख़लीफ़ा से मुहब्बत पैदा करनी है। यह इतना बड़ा और महान लक्ष्य है कि इस अहद पर पूरा उतरना और इसके तक़ाज़ों को निभाना एक इरादा और दीवानगी चाहता है।

(त्रैमासिक अन्नासिर जर्मनी जून से सितम्बर 2003 ई पृष्ठ 1)

सम्माननीय पाठको ! यदि आज हम अपनी ज़िम्मेदारियों को उत्तम रूप में अदा करें और ख़िलाफ़त की मज़बूती के लिए आज्ञापालन का व्यावहारिक प्रमाण देते रहेंगे जैसा कि हमारे पूर्वज देते रहे। तो ख़ुदा की क़सम ख़िलाफ़त अहमदिया सारी दुनिया में इस्लाम को फैलाकर सच्ची तौहीद को स्थापित कर देगी। और हमारे ईमान तथा

कर्मों की सच्चाई के कारण ख़िलाफ़त का साया देर तक हमारे सिरों पर स्थापित रहेगा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहेमहुल्लाह यह ख़ुशख़बरी दे चुके हैं कि:

भविष्य में इंशा अल्लाह ख़िलाफ़त अहमदिया को कभी कोई ख़तरा नहीं होगा। जमाअत अपनी बलूग़त की आयु को पहुंच चुकी है। कोई बुरा चाहने वाला अब (ख़िलाफ़त अहमदिया) का बाल भी बीका नहीं कर सकता। और जमाअत इसी शान से उन्नति करेगी। ख़ुदा का यह वादा पूरा होगा कि कम से कम एक हज़ार साल तक जमाअत में ख़िलाफ़त स्थापित रहेगी। (ख़ुत्बा जुम्अः जून 1982 ई)

एक और अवसर पर आप फ़रमाते हैं कि :

भविष्य में भी विभिन्न ज़रूरतें होंगी इससे कोई इन्कार नहीं है क्योंकि जमाअत की तक़दीर में यह लिखा हुआ है कि मुश्किल रास्तों से गुज़रे और तरक्कियों के बाद नई तरक्कियों की मंज़िलों में दाख़िल हो। यह कठिनाइयां ही हैं जो जमाअत की ज़िन्दगी का सामान उपलब्ध करती हैं। इस विरोध के बाद जो वसीअ पैमाने पर अगले विरोध मुझे नज़र आ रहे हैं वे एक दो हुकूमतों की घटना नहीं इस में बड़ी बड़ी हुकूमतें मिलकर जमाअत को मिटाने की साज़िशें करेंगी और जितनी बड़ी साज़िशें होंगी उतनी ही बड़ी नाकामी उनके मुक़द्दर में भी लिख दी जाएगी।

मुझ से पहले ख़लीफ़ाओं ने आने वाले ख़लीफ़ाओं को हौसला दिया था और कहा था कि तुम ख़ुदा पर भरोसा रखना और किसी विरोध से ख़ौफ़ नहीं खाना। मैं आने वाले ख़लीफ़ाओं को ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ कि तुम भी हौसले रखना और मेरी तरह हिम्मत तथा सब्र से काम लेना और दुनिया की किसी ताक़त से ख़ौफ़ नहीं खाना। वह ख़ुदा जो छोटी मुख़ालफ़तों को मिटाने वाला ख़ुदा है वह भविष्य में आने वाली बड़ी- बड़ी मुख़ालफ़तों को भी चकना-चूर करके रख देगा और दुनिया से उनके निशान मिटा देगा। जमाअत अहमदिया ने बहरहाल विजय के बाद एक और विजय की मंज़िल में दाख़िल होना है। दुनिया की कोई ताक़त इस तक़दीर को किसी हाल में बदल नहीं सकती।

(ख़िताब 29 जुलाई 1984 ई पहला यूरोपियन इज्तिमा मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया यू के)

सम्माननीय पाठको! हमारी कितनी ख़ुश क़िस्मती और सौभाग्य है कि आज दुनिया

के पर्दे पर केवल अहमदियत ही है जिसे अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त की बरकतों वाला निज़ाम प्रदान किया है। विभिन्न प्रकार के नेतृत्व के अधीन चलती व्यवस्थाएं तो नज़र आती हैं परन्तु कोई ऐसा नेतृत्व करने वाला नहीं जिसको ख़ुदा ने निर्धारित किया हो। कोई ऐसा मार्गदर्शक नहीं जिसके सिर पर ख़ुदा की छत्रछाया हो, कोई ऐसा नहीं जिसकी ख़ुदाई मदद और सहायता की गई हो, कोई नहीं जिसके क़दमों में ख़ुदाई आज्ञा से विजय बिछती चली जाती हों !

आइए हम दिल और जान से यह वादा करें कि हमारा और हमारी नस्लों का जीना और मरना ख़िलाफ़त के लिए होगा और हम उसके लिए हर क़ुर्बानी प्रस्तुत करने के लिए प्रति क्षण तैयार रहेंगे। वास्तव में ख़िलाफ़त का महत्व और सारी बरकतें इस में हैं कि हम क़ुदरत-ए-सानिया की मांगों को पूरा करने वाले और ज़िम्मेदारियों को समझने और अदा करने वाले हों।

अल्लाह तआला हमारे दिल तथा जान से प्यारे आक़ा और ख़लीफ़ा सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ को सेहत तथा सलामती वाली लंबी आयु प्रदान करे और हमें अपने महबूब आक़ा के मार्गदर्शन में सही प्रकार से आज्ञापालन का सामर्थ्य प्रदान करे। हे ख़ुदा ! तू हमें इस बात का सामर्थ्य प्रदान कर ताकि हम अपने वादे को निभाते हुए अपने जन्म के उद्देश्य को उत्तम ढंग से पूरा कर सकें और तेरी प्रसन्नता प्राप्त करने वाले हों।

आमीन, सुम्मा आमीन

* * * * *

सर डाक्टर इफ़्तिख़ार अहमद अयाज़

अमीर जमाअत अहमदिया यूनाइटेड किंगडम (1997-2001)

ओ.बी.ई (आफ़िसर आफ़ एक्सेलैन्ट आर्डर आफ़ ब्रिटिश एम्पायर)

के.बी.ई (नाइट कमाण्डर आफ़ दी ब्रिटिश एम्पायर)

लेखक परिचय

आदरणीय डाक्टर सर इफ़्तिख़ार अहमद अयाज़ साहिब

आपने आरम्भिक शिक्षा क़ादियान में प्राप्त की। छोटी आयु में तन्ज़ानिया अफ़्रीका चले गए। शेष शिक्षा वहां प्राप्त की। इस के बाद कौमनवैल्थ फैलोशिप पर उच्च शिक्षा के लिए इंग्लिस्तान गए। वहां न्यूकैसल यूनिवर्सिटी से बी ऐड जनरल की डिग्री प्राप्त की और फिर लंदन से पोस्ट ग्रैजुएट डिप्लोमा इन टीचिंग आफ़ इंग्लिश और डिप्लोमा इन कम्पैयर एजूकेशन प्राप्त करने के बाद आपने यूनीवर्सिटी आफ़ लंदन से एम.ए की डिग्री प्राप्त की। इस के बाद अमरीका से हियूमन डेवलपमेंट से पी.एच.डी की। तंज़ानिया में निवास के समय जमाअत के विभिन्न पदों पर सेवा की तौफ़ीक़ मिली। विशेष रूप से पश्चिमी क्षेत्र में जमाअत की स्थापना और दृढ़ता का अवसर मिला। आप को प्रशांत महासागर के द्वीप तुवालो में अहमदियत का पौधा लगाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप ने क़ुरआन क़रीम का तुवालो भाषा में अनुवाद करवा कर प्रकाशित करवाया। इस के बाद वहां अहमदिया मस्जिद और मिशन हाऊस का निर्माण हुआ। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहिमहुल्लाह ने आप को सम्मान स्वरूप 'मुबल्लिग़' के ख़िताब से नवाज़ा। तुवालो के बाद प्रशांत महासागर के अन्य द्वीपों में अहमदियत का पौधा लगाने की तौफ़ीक़ मिली। 1996 में इंग्लिस्तान आने पर ऑनरेरी कौंसल जनरल आफ़ तुवालो नियुक्त हुए। इंग्लिस्तान में जमाअत के तब्लीगी वभाग के साथ जुड़े रहे। फिर क़ायद तब्लीग़ मज्लिस अन्सारुल्लाह के रूप में सेवा की और फिर सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह यू.के के तौर पर भी सेवा करने की तौफ़ीक़ मिली। आप जमाअत अहमदिया यू.के के अमीर भी रहे। क़ज़ा बोर्ड के मैंबर और क़ाइम मक़ाम सदर रहे। मर्कज़ी मज्लिस इफ्ता के सदस्य भी और जमाअत अहमदिया यू.के के सेक्रेटरी उमूर ख़ारिजा की सेवा भी आपके सपुर्द हुई। अब आप इंटरनेशनल हियूमन राईट्स कमेटी के अध्यक्ष हैं। आप को अहमदी रीफ़्यूजीज़ और असाइलम के चाह रखने वालों की सेवा का विशेष अवसर मिल रहा है। आप

वकालत तसनीफ़ की अंग्रेज़ी अनुवाद करने वाली टीम में शामिल हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और जमाअत के कई सम्मान्नीय लेखकों की पुस्तकों के अंग्रेज़ी अनुवाद कर चुके हैं। आप ताहिर फ़ाउंडेशन के डायरेक्टर हैं इसी तरह वर्ल्ड मीडिया फ़ार्म इंटरनेशनल के डायरेक्टर हैं। हियूमन राईट्स में विशेष दिलचस्पी है। कौमनवैल्थ के हियूमन राईट्स यूनिट और UNO हियूमन राईट्स कौंसिल के साथ सम्बन्धित हैं। ह्योमेनेटी इंटरनेशनल के मैंबर हैं। इस तरह अन्य कई इंटरनेशनल और क्षेत्रीय संस्थाओं के साथ इन्सानियत की सेवा करने की तौफ़ीक़ मिल रही है।

आप एक अच्छे वक्ता और लेखक हैं। आपके भाषण, निबन्ध और इंटरव्यूज़ इंटरनैट पर और विभिन्न पत्रिकाओं और अख़बारों में प्रकाशित होते रहते हैं। आपकी पुस्तक "वक़्फ़ ज़िन्दगी का महत्त्व तथा बरकतें" बहुत पसन्द की गई। इस का अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद भी प्रकाशित हो चुका है और इस का फ्रैंच अनुवाद भी शीघ्र प्रकाशित हो रहा है। इस का अरबी भाषा में भी अनुवाद हो रहा है और इस के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का इरशाद है कि इसे सारी जमाअतों में भिजवाया जाए और सब इसके अध्ययन से लाभ उठाएं। "पर्दा का महत्व और बरकतें" आपकी छठी पुस्तक है जो प्रकाशित हो चुकी है अल्लाह तआला आपकी चेष्टाओं को स्वीकार करे और उनके उत्तम परिणाम निकलें।

आपने नौकरी का आरम्भ टीचर के रूप में तंज़ानिया से किया। बहुत तेज़ी से उन्नति के पड़ाव तय किए। टीचर से एजूकेशन अफ़्सर, इन्सपैक्टर आफ़ स्कूल्ज़, चेयरमैन टीचर एजूकेशन बोर्ड के पदों पर भी काम किया। फिर इंस्टीटियूट आफ़ एजूकेशन और यूनिवर्सिटी आफ़ दारुस्सलाम में सीयनर लैक्चरार के पदों पर काम किया। इस के बाद यू एन की संस्था FAO के सैंटर बराए रूरल डेवलपमेंट फ़ार अफ़्रीक़ा (CIRD AFRICA) के साथ काम किया। फिर कई सालों तक Commonwealth और UNDP और UNESCO के साथ फ़ील्ड एक्सपर्ट और परामर्शदाता के रूप में सेवा का अवसर मिला।

आपकी कुशलता, योग्यता और मानवता की सेवा के लिए विशेष रुचि को

विभिन्न देशों , संस्थाओं, यूनिवर्सिटीज़ और विभागों की ओर से विभिन्न सम्मानों के रूप में स्वीकार किया गया। उनमें से कुछ विशेष रूप से वर्णन योग्य हैं।

बर्तानिया की महारानी की ओर से OBE और KBE के सम्मान जिनके साथ SIR का ख़िताब है। इसके अतिरिक्त जमाअत अहमदिया की तरफ़ से इन्सानियत की विशेष सेवा का ऐवार्ड भी प्राप्त किया। कुछ दूसरे सम्मान भी अल्फ्रेड आइन्स्टाइन नोबल मैडल फ़ार पीस, एज़ाज़ी डाक्टरेट इन एजुकेशन, एंबेसडर आफ़ पीस, मैन आफ़ दी ईयर 2009 ई, एन हियूमन राईट्स, इंडिया की तरफ़ से हिन्द रतन और नौरतन के गोल्ड मैडल, पाकिस्तान की ओऱ से रोल मॉडल 2016 ई, वर्ल्ड नेंशज़ कांग्रेस के सेंटेटर और अमरीकन बायो ग्राफ़ीकल इंस्टीटियूट के डिप्टी गवर्नर, हाल ही में कैंब्रिज यूनीवर्सिटी की तरफ़ से एंबेसडर आफ़ नॉलिज का सम्मान। इसी तरह 21 वीं सदी के ग्रेट माईंडज़ और दुनिया को लाभ पहंचाने वाली विभूतियों में आपको सम्मिलित किया गया। अल्हमदुलिल्लाह अला ज़ालिक (इस पर अल्लाह की भूरि-भूरि प्रशंसा) अल्लाहुम्मा बारिक (हे अल्लाह इस में बरकत दे।)